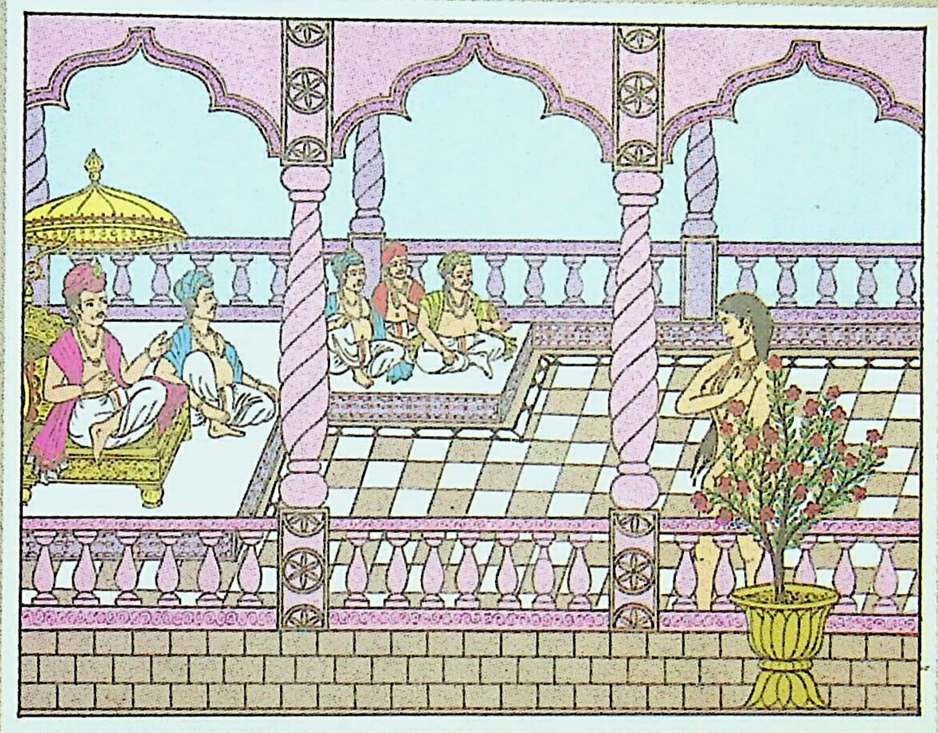
कोकसार-वैद्यक

कामकलासार-सहित



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

लखीमपुरनिवासी पं० नारायणप्रसाद मिश्रकृत-

कोकसार-वैद्यक

इंक्षागिरि-कृत-

कामकलासार-सहित

(कोका पंडितकृत वैद्यकग्रन्थका सार)

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

संस्करण : मार्च २०१८, संवत् २०७४

मूल्य : २५० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

प्रस्तावना

★

प्रगट हो कि, दश वर्षकी अवस्थामें जब हम कसवा महमदी स्कूलमें अंग्रेजी उर्दू पढ़ते थे उस समय पंडित सर्वजीतसिंह पढाते थे उनके पास हम नागरी पढते थे एक दिन उनके पास लिथोमें छपी एक छोटी पुस्तक हमने देखी, उसमें स्त्री पुरुषोंके नग्न चित्र बने हुए थे उनको देखनेकी इच्छासे हमने पूछा कि, पंडितजी ! यह कौन पुस्तक है ? पंडितजीने कहा यह कोकसार है. तुम्हारे देखने योग्य नहीं है. चित्रोंके कारण उसको देखनेके विषे हमने कईवार कहा, परंतु पंडितजीने पुस्तकको नहीं दिया, उसका नाम हमको स्मरण रहा. कुछ वर्षोंके बाद हमने सुना कि, कोकसारका छपना निर्लज्ज चित्रोंके कारण सरकारने बन्द कर दिया सो अच्छा ही किया.

हालमें जब कोकशास्त्र नामक पुस्तकें नागरी उर्दूमें छपी हुई हमने देखीं तब हमारी यह इच्छा हुई कि, ऐसा ग्रन्थ संस्कृतमें देखनेको मिले तो अच्छा हो । एक दिन एक पर्वती पं. भवानीदत्त गोला गोकरणनाथमें आये, उनके पास हमने कोकशास्त्र पुस्तक संस्कृत भाषामें देखी. पंडितजीने कहा कि, यह तो कोककृत वैद्यक भाग है, इस ग्रंथके अन्य भी शकुन आदि अनेक भाग हैं. परंतु हमारे पास यह वैद्यक भाग है, कई दिनपर्यन्त हम उस पुस्तकको देखते रहे, अनन्तर पंडितजीकी आज्ञासे हमने उसका आशय लिख लिया. उसी आशयको कुछ बढाकर यह पुस्तक हमने परोपकारबुद्धिसे लिखी है. इसमें दो भाग हैं १ पूर्व भाग, २ उत्तर भाग-तहां पूर्वभागमें वीर्यरक्षा स्त्रीपुरुषलक्षण आदि वर्णन किये हैं, उत्तर-भागमें स्त्री पुरुषोंके गुप्त रोग उपायसहित वर्णन किये हैं इसको छापनेका सर्वाधिकार सेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी, मालिक 'लक्ष्मीवेंकटेश्वर' स्टीम् प्रेस कल्याणको दे दिया है.

शुभाकांक्षी–नारायणप्रसाद मिश्र

लखीमपुर खीरी

कामकलासार

★

प्रत्येक नवयुवकको और मैं तो कहूँगा प्रत्येक नवयुवतीको भी अपना वैवाहिक-जीवन आरम्भ करनेके पूर्व, कामशास्त्र जिसका कोकजी द्वारा सम्यक् वर्णन करनेके कारण उन्हींके नामपर कोकशास्त्र ही नाम पड़ गया है—का भलीभाँति अध्ययन कर लेना चाहिये। बिना कामशास्त्रकी शिक्षाके हमारे युवक और युवतियाँ, ऐसी कितनी ही बातोंसे, जिनका जानना आवश्यक और अनिवार्य है, अभिज्ञ ही रह जाते हैं।

हिन्दीभाषामें कामशास्त्र—सम्बन्धी पुस्तकोंका अभाव नहीं है कामशास्त्रकी प्राचीन पुस्तकें तो कुछ इनी—गिनी ही हैं; परन्तु जबसे मुद्रण-यंत्रोंका प्रचार हुआ, इस विषयकी बहुतसी पुस्तकें लिखी गईं। सच तो यह है कि, जनताकी कामशास्त्र—विषयक अभिरुचि और रसिक मनोवृत्तिका खूब लाभ उठाया गया। करीब दो दर्जन कामशास्त्र सम्बन्धी पुस्तकें मेरे देखनेमें आई होंगी, यह तो नहीं कहा जा सकता कि, वे सभी पुस्तकें बिलकुल निकम्मी और अनावश्यक ही हैं; परन्तु यह सच है कि अधिकांश पुस्तकोंमें सारभूत बातें बहुत कम हैं, बेकार पृष्ठ संख्या बढाई गई है और प्रायः सभीमें एक दूसरेका पिष्ट-पेषण किया गया है। सबसें बड़ी प्रवंचना भड़कीले (विज्ञापनों द्वारा पाठकोंको यह दी जाती है कि) विज्ञापनमें तो रति—सम्बन्धी चौरासी आसनोंकी चर्चा की जाती हैं; परन्तु जब पाठक बड़ी उत्सुकतासे पुस्तक मँगवाता है और चौरासी आसन रतिसम्बन्धी न निकलकर स्वास्थ्यसम्बन्धी निकलते हैं, तो उसे बड़ी निराशा होती है, वह माथा ठोंककर रह जाता है और प्रकाशक को कोसता है।

प्रस्तुत पुस्तक कामकलासार, आजसे करीब ५—६ वर्ष पहले जब मेरे सामने आई तो मुझे इसमें ऐसी बहुतसी बातें मिलीं, जो आजकलके उपलब्ध कोकशास्त्रोंमें नहीं मिलतीं; तभी मेरा विचार हुआ कि, यदि यह पुस्तक सर्व साधारणके सामने लाई जाय तो जनताका बड़ा उपकार हो।

इस पुस्तकमें पाठकोंको स्त्री—पुरुष-सामुद्रिक, कामजागृति करनेके विविध साधन, रति-सम्बन्धी आसनोंका वर्णन, काम सम्बन्धी औषधियां तथा अन्यान्य बहुतसी बातोंका ऐसा विशद और अनूठा वर्णन मिलेगा, जो अन्य कोकशास्त्रोंमें दुष्प्राप्य है। इस पुस्तकमें यत्र—तत्र कुछ स्थल ऐसे भी मिलेंगे, जो कुछ लोगोंकी दृष्टिमें कुरुचिपूर्ण, अश्लील और विकारोत्तेजक कहे जा सकते हैं परन्तु इसपर टीका करनेके पहले यह बत ध्यानमें रखना चाहिये कि, पुस्तकका निर्माण—काल ही वह काल था, जब पतनोन्मुख विलासप्रिय मुस्लिम-सत्ताका साम्राज्य था और तत्कालीन वातावरण ही कुछ ऐसा हो चला था कि, लोग वैभव-

विलास और काम–क्रीड़ाको ही जीवनका सच्चा सुख और उद्देश्य मानने लगे थे । फिर यह बात भी तो है कि स्वाभाविकतः यह विषय ही कुछ ऐसा है । अस्तु ।

जैसा कि मेरा खयाल है, यदि यह पुस्तक हिन्दी–पठित जनता को कुछ भी रुचिकर और सन्तोषप्रद प्रतीत हुई तो मैं अपने अन्वेषण और परिश्रमको सफल समझूंगा ।

अंतमें मैं "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्–प्रेसके स्वत्वाधिकारियोंको भी धन्यवाद दिये विना न रहूँगा, जिन्होंने इसे पूर्णतया शुद्ध करवाकर और काफी व्यय उठाकर, इस पुस्तकका प्रकाशन कर, सर्व साधारणके सामने इस रूपमें लानेका उपक्रम किया ।

सरसई
पो. खागा; जि. फतेहपुर

विनीत–
गंगाप्रसाद शर्मा

आवश्यक सूचना

★

संपूर्ण कोकशास्त्रको भलीभांति पढ़नेवाला मनुष्य सर्वज्ञ कहा जा सकता है, इसीसे एक हिन्दी मसल मशहूर है कि क्या 'तुम कोक पढे हो ।' आजकलके विज्ञापनोंकी ओर देखो तो काट छाट की हुई थोड़ी सी बातें लिखकर असली कोकशास्त्र छपकर तैयार है, दाम चार पांच रुपये रख कर भोले भाले लोगोंको धोखा देते हैं ।

हमारी यह पुस्तक केवल एक "वैद्यक" भागका सार है, इसीसे हमने इस पुस्तकका नाम कोकसार-वैद्यक रक्खा है, पहले जो पुस्तक लिथोमें छपी थी-जिसको छापना सरकारने बन्द कर दिया है । उसके बारेमें हमने सुनाया था कि, उसमें पद्मिनी आदि स्त्रियोंके लक्षण और चौंसठ आसनोंके चौंसठ नग्न चित्र और कुछ औषधियां छपी थीं, इनसे पृथक् और कुछ नहीं था चौसठ नग्न चित्रोंको अनुपकारी और अश्लील समझकर सरकारने उसका छापना बन्द कर दिया है. आजकल कोकशास्त्रके नामसे कई जगह ग्रन्थ हिन्दी उर्दूमें छपे हैं परंतु उनमें कोई अश्लील शब्द नहीं है । गुप्तेन्द्रियका नाम परोपकार बुद्धिसे आशय समझानेके निमित्त लिखा गया है. इस कारण उनमें सरकारने हस्ताक्षेप नहीं किया । जिस प्रकार यहांकी प्रजा राजभक्त है अपनी सरकारी भलाई सर्वदा चाहती है, इसी प्रकार सरकार भी अपनी प्रजाकी भलाईकी बातको अंगीकार करती है. यही समझकर हमने इस पुस्तकको सबकी भलाईके निमित्त यह ग्रन्थ लिपिबद्ध किया है. इसके आगे अन्यभाग प्राप्त होनेपर द्वितीय भागमें प्रकाशित किया जायगा.

शुभाकांक्षी-नारायणप्रसाद मिश्र

लखीमपुर खीरी

श्रीगणेशाय नमः

कोकसारवैद्यक-विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका

इति कोकसारवैद्यक–विषयानुक्रमणिका समाप्त.

राज्य सभा.

देखो पुस्तकका पांचवां पृष्ठ.



कोयशास्त्रके प्रधान.

कामकुशल कामिनी — पं. कोकाजी



रति स्वरूप.



कोकशास्त्रके यह सोलह चित्र राजकीय चित्रकार गंगाबक्षजीसे हनुमानशर्मा जैपुर सिटीके मार्फत छापकर प्रकाशित किये हैं.

श्रीकामदेव स्वरूप.



पद्मिनी स्वरूप.



चित्रिणी स्वरूप.



हस्तिनी स्वरूप.



शंखिनी स्वरूप.



मृगप्रकृतिकः पुरुषः ।



शशप्रकृतिकः पुरुषः ।



वृषप्रकृतिकः पुरुषः ।



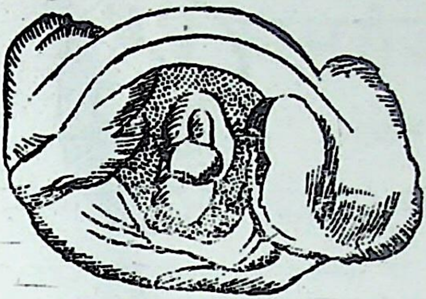
अश्वप्रकृतिकः पुरुषः ।




(१२)
मदन निवास ज्ञानाकृति
कृष्णपक्षेऽधोयाति
शुक्ले ऊर्ध्वंगमिष्यति।
नयन
कपोल
ओष्ठ
काँख
कुच
पेट
जननेन्द्रिय
जंघा
अंगूठे
कपोल
नयन
ओष्ठ
काँख
कुच
पेट
जननेन्द्रिय
जंघा
अंगूठे


(१४)
प्रत्येकतिथिमें कामदेवका चढ़ाव उतार
कृष्णपक्ष
शुक्ल पक्ष
१ मस्तक १५
२ नेत्र १४
३ कपोल
४
होठ गाल
१२
५ गला
६ काँख १०
७ कुच ९
८ हृदय ८
९ सूँडी ७
१० कटि
कमर ६
११ योनि
इन्द्रिय ५
१२ जंघा ४
१३ पींडी ३
१४ तलुऐ २
अंगुलिया
स्त्री अंग
पुरुषांग

१ गर्भाशय स्थिति



२ गर्भस्थ शिशु





७ अनिष्टप्रसव

३ यमलगर्भ

६ गर्भवती





८ आसन्न प्रसव



८

सुख प्रसवकाल



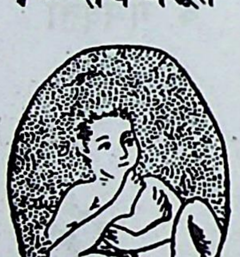
९

गर्भस्थसुस्थिति



४

१० सद्य प्रसूत



५ आभिमुखस्थिति



श्रीः

कामसंजीवनी

अर्थात्–

पं० कामनाथ (कोका) का संक्षिप्त जीवनचरित

दोहा–धनि जीवन उन नरनको, जो परहितमें देत ।
तन मन धन अरु सम्पदा, सब जग सुखके हेत ।।

महाराज भोजके समयमें काश्मीराधिपति महाराज शान्तिदेव "यथा नाम तथा गुणः" वाले थे और न्यायपूर्वक अपनी प्रजाका पुत्रवत् पालन करते थे, महाराजके प्रधानमंत्री पंडित दीनानाथजी थे । वे अपने उत्तम स्वभावसे प्रजाको अति प्रसन्न रखते थे । महाराजकी सब प्रजा उनको पिताके समान मानती थी । एक दिन सोते समय पंडितजीने एक महासुन्दर पुरुष देखा कि वह स्वप्नमें कह रहा है कि हम आपके घर जन्म लेंगे, उस दिन शिवरात्रिका व्रत था, स्वप्न देखतेही पंडितजीकी निद्रा भंग हो गई, तब पंडितजी उठकर बैठगये और शिवजीका ध्यान करने लगे, पंडितानीके गर्भके दिन पूरे होनेको थे, फाल्गुन शुक्लपक्षमें बालकका जन्म हुआ। पंडितजीने प्रसन्न होकर बालकके जन्मका उत्सव और जातकसंस्कार आदि बड़ी धूमधामके साथ किया कि जिसके वर्णन करनेकी यहां आवश्यकता नहीं, बालकके नामकरणके समय पंडितोंको बुलाकर बालकके लक्षण पूछे, तब ज्योतिषियोंने उस बालकको भाग्यवान् बतलाया और कहा कि यह बालक बडा विद्वान् होगा और इसका नाम संसारभरमें प्रसिद्ध होगा । यह सुनकर पंडितजी बहुत प्रसन्न हुए, ज्योतिषियोंने उस बालकका नाम काशीनाथ रक्खा परंतु पंडित दीनानाथजीने उस बालकको सुन्दररूपवाला देखकर , कामनाथ , नाम प्रसिद्ध किया । महाराज शान्तिदेवजी अपने प्रधान मन्त्री पंडित दीनानाथजीके घर बालकका जन्म सुनकर बहुत आनन्दित हुए, क्योंकि उनकी महारानी भी गर्भवती थीं और दिन पूरे हो चुके थे, चैत्र कृष्णपक्षमें महाराज शान्तिदेवजीके घरमें भी बालकका जन्म हुआ, सुनतेही महाराजके आनन्दकी सीमा न रही । राज-

धानीभरमें आनन्द छा गया, कारण यह कि, महाराजकी आयु पचास बर्षसे अधिक हो चुकी थी और तीन रानियोंमेंसे किसीके सन्तति नहीं थी, हमारे पीछे उत्तराधिकारी कौन होगा ? इस बातकी चिंतासे महाराज शान्तिदेवका चित्त प्रायः दुःखी रहता था, बालक उत्पन्न होतेही महाराजकी चिन्ता दूर हो गई। प्रधानमन्त्रीजी भी वृद्धावस्थामें पदार्पण कर चुके थे । महाराजने बालजन्मोत्सव किया और बालकका नाम शम्भूसिह प्रसिद्ध किया, तथा बालकके लालन पालनका प्रबन्ध उत्तम रीतिसे किया, प्रधानमंत्रीजीका बालक कामनाथ जब कुछ बोलने लगा तो उसकी वाणी ऐसी मधुर थी कि मानो कोकिला बोल रही हो, कोकिलाके समान उस बालकका स्वर सुनकर लोक उसको प्यारके भावसे कोका कह कर पुकारने लगे, कोकाकी मोहनी-मूर्तिको देखकर लोग मोहित हो जाते थे, नगरकी अनेक स्त्रियां प्रति दिन कोकाके दर्शन करनेको आया करती थीं, पंडित दीनानाथजी स्वयं बडे विद्वान् थें, कोकाको अक्षराभ्यास कराकर एक एक पद करके अनेक श्लोक और व्याकरणके अनेक सूत्र कंठस्थ करादिये, यह प्राकृतिक नियम है कि विद्वान्के विद्वान्ही पुत्र होता है, जैसे तिलोंमें तेल है परन्तु विना प्रयत्न किये नहीं निकलता । इसी प्रकार विना शिक्षाके कोई शिक्षित नहीं हो सकता, जब कोकाकी आयु सात बर्षकी हुई और आठवें वर्षका आरंभ हुआ तब पंडित-जीने उपनयन संस्कार कराकर कोकाको विद्यारंभ कराया, प्रथम व्याकरण पढ़ाया । साथही काव्य कोषमें अभ्यास कराया, अनन्तर अन्य शास्त्रोंमें अभ्यास कराया, तदनन्तर वेद-वेदांगोंमें भी अभ्यास कराया, आयुर्वेद (वैद्यक) में कोकाकी बुद्धि बडी तीव्र थी । इस प्रकार कोकाजी थोडेही कालमें विद्वान् हो गये । कोकाजीकी स्मरणशक्ति असीम थी एक दिन पंडि-तजी अपने बालक कोकाको राजसभामें ले गयें तो कोकाजीकी मोहनी मूर्ति देखकर महाराज शांतिदेव मारे आनन्दके फूले नहीं समाये । और जब कोकाकी विद्या बुद्धिका चमत्कार सुना तो बोले कि इस बालकको प्रतिदिन राजदरबारमें लाया करो, अब कोका भी राजदरबारमें नित्य जाने लगे । कोकाको विना देखे महाराजका चित्त शान्त नहीं होता था । जिस दिन किसी कारणसे कोकाका जाना नहीं होता था उस दिन महाराज कोकाको बुलवा-लेते थे । एक दिन राजकुमार शंभूसिहभी दरबारमें बैठे थे उसी समय अपने पिताके साथ कोका भी दरबारमें पहुंचे । कोकाको देखतेही शंभूसिंहके चित्तमें कोकासे मिलनेकी उत्कंठा हुई । क्योंकि कोकाकी विद्या और बुद्धि प्रशंसा

राजकुमारने सुन रक्खी थी परंतु मिलनेका समागम नहीं हुआ था । अपने पिताके भयसे शंभूसिह संकोचवश चुप बैठे रहे । महाराजने कोकाकी ओर संकेत कर राजकुमारसे कहा—युवराज ! देखो जिस प्रकार हमारे प्रधान-मंत्री पंडित दीनानाथजी हैं उसी प्रकार यह कोकाराम तुम्हारा प्रधानमंत्री है इसीकी संमतिसे तुमको राजकार्य करना होगा । यह सुनकर राजकुमारने हाथ जोड़कर बड़ी नम्रतासें कहा कि, पिताजी ! जो आज्ञा । उसी दिनसे शंभूसिहने चित्तमें कोकाजीसे अथाह प्रेम उत्पन्न हो गया । अब प्रतिदिन राज-कुमार भी कोकासे मिलनेकी इच्छासे आने लगे । राजकुमार धनुर्विद्या पढ रहे थे । यह सुन कोकाने अपने पितासे आज्ञा मांगी कि, राजकुमारके साथ हम भी धनुर्विद्या पढेंगे । यह बात कोकाकी सुनकर और पुत्रके चित्तका अभि-प्राय समझकर पंडितजीने कहा कि अच्छा, धनुर्विद्याके तत्वको अवश्य सम-झलो । आज्ञा पातेही उसी दिनसे कोकारामजी राजकुमारके साथ धनुर्विद्या पढने लगे और कुछही दिनोंमें राजकुमारसे आगे निकल गये, क्योंकि अभ्यास तो पहलेहीसे था । धनुर्वेदमें निपुण होनेके पश्चात् दोनोंमें इतनी गाढ मैत्री हो गई कि, एक दूसरेसे पृथक् होना नहीं चाहते थे । जब कभी बाहरको निकलते तो राजकुमार और कोका दोनों मिलकर अश्वशालामें जाय एक एक घोडा लेकर उसको सजाय उसपर चलते थे और एकसाथ रहते थे । कोकाजी उसी घोडेको अपने लिये लेते थे जिसको सबसे अधिक चञ्चल समझते थे, राज-कुमारसे इनका नंबर सब बातमें अव्वल रहता था इसीसे राजकुमार बडी प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे देखते थे और सब प्रकारसे इनको योग्य समझते थे । एक दिनकी बात है कि, राजकुमारके जन्मदिनका उत्सव था, राजसभामें छोटे छोटे राजा और नगरके सब प्रतिष्ठितजन तथा सब राजकर्मचारी यथा-योग्य स्थानपर उपस्थित थे, उस समय महाराजके चित्तमें उमंग उठी तो युवराजको अपने समीप गद्दीपर बिठा कर राजतिलक कर दिया और शिर-पर राजमुकुट रख दिया, अनन्तर कोकाको प्रधान मंत्रीके आसनपर बिठाकर कहा कि, देखो युवराजके लिये कैसा उत्तम मंत्री हमने नियत किया है, यह देखकर सब लोग प्रसन्न हुए और राजालोग एक स्वरमे बोल उठे कि धन्य है, महाराजने युवराजके लिये बहुत सुयोग्य मन्त्री नियत किया है, तदनन्तर महाराजने उस भरी सभामें एक प्रश्न किया वह प्रश्न यह है कि, संसारमें जितना प्रेम माता पिताका अपनी सन्तानपर होता है, उतना प्रेम सन्तानको अपने माता पितापर नहीं होता, इसका क्या कारण है ? महाराजके इस

प्रश्नके उत्तर दोनेका साहस किसीको नहीं हुआ, तब कोकाने उठकर बडी नम्रताके साथ उत्तर दिया कि महाराज ! प्रश्नका उत्तर यह है कि, –

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् ।
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिव सर्वतः ।। १ ।।
ततः स्वयंभूर्भगवानव्यक्तो व्यञ्जयन्प्रजाः ।
महाभूतादिवृत्तौजाः प्रादुरासीत्तमोनुदः ।। २ ।।

मनु० अ० १ श्लोक ५।६

यह जगत् आदिमें अप्रज्ञात (प्रत्यक्षके अयोग्य) अर्थात् प्रत्यक्ष नहीं देख पडता था, अवलक्षण (लक्षणरहित) अन्धकाररूप था और तर्करहित अविज्ञेय (जाननेके अयोग्य) सब ओरसे सोये हुए समान था । अनन्तर स्वयंभू (प्रकट होनेवाला) भगवान् (परमेश्वर) प्रजाके व्यक्त अवस्थामें प्राप्त करता हुआ अर्थात् स्थूलरूपसे प्रकाश करता हुआ अन्धकारको दूर करके प्रगट हुआ जिसका बल महाभूतोंसे घेरा हुआ है ।। १ ।। २ ।।

उस स्वयंभू भगवान्की हम प्रजारूप सन्तान हैं कि जिसके माता पिता नहीं हैं, सन्तानपर उत्पन्न करने और पालन करनेवालेका प्रेम होता है, अतः स्वयंभू भगवान्का हमपर प्रेम है और स्वयंभू भगवान्के माता पिता नहीं इस कराण प्रेम भी नहीं यह उसका गुण हममें आया। पिताका गुण पुत्रमें आता है, पुत्रका गुण पितामें नहीं आता, इसीसे सन्तानपर माता पिताका प्रेम होता है और माता पितापर सन्तानका प्रेम नहीं होता, क्योंकि , कारणाभावे कार्याभावः , कारणके अभावमें कार्यका अभाव होता है । स्वयंभू भगवान्के माता पितारूप कारणका अभाव होनेसे प्रेमरूप कार्यका अभाव हुआ, यह समयानुसार युक्तियुक्त उत्तर सुनकर महाराज शांतिदेवजी बहुत प्रसन्न हुए ।

युक्त्या युक्तं वाक्यं बालेनाऽपि प्रभाषितं ग्राह्यम् ।
त्याज्यं युक्तिविहीनं श्रौतं स्यात्स्मार्तकं वा स्यात् ।। ३ ।।

युक्तिसे युक्त वचन बालक भी कहे तो उसका वह वचन ग्रहण करना चाहिये और युक्तिसे हीन वचन* त्याग करे चाहे श्रुति वा स्मृतिका हो यह युक्तियुक्तासामयिक सिद्धान्त है, इस सिद्धान्तके अनुसार प्रसन्नता प्रकट करके महाराज शांतिदेवजी कोकासे कहने लगे कि तुम अपने पिताके कार्यमें पूर्ण-

---

* यहां वचन त्यागनेका भाव यह है कि युक्तिहीन वचन सभामें न कहे ।

रीतिसे सहायताकिया करो । यह सुन कोकाने नम्रभावसे उत्तर किया कि महाराज ! कुछ समय हमको देशान्तर जानेके निमित्त आज्ञा दीजिये, क्योंकि जबतक मनुष्य देशाटन करके सब देशोंकी रीतिभांति नहीं जानता तबतक वह चतुर नहीं कहा जा सकता, यह सुनकर महाराजने कोकाके देशान्तर भ्रमणका प्रबन्ध करना चाहा। तब कोकाने कहा कि, हम अकेलेही देशाटन करेंगे, एकाकी देश भ्रमण करनेमें हमारा अभीष्ट सिद्ध होगा, कोकाका अभिप्राय समझकर महाराजने आज्ञा दी । आज्ञा पातेही पिताले सम्मति कर उनकी आज्ञा लेकर कोकाजी घरसे चल दिये और देशाटन करने लगे, देशभ्रमणमें जहां जिस विद्यावालेको सुना वहां उसके समीप जाकर यथासाध्य उस विद्याको समझलिया, कोई समय व्यर्थ नहीं गया, पांच वर्षतक देशाटन करते रहे, देश देशकी भाषा देश देश देशके मनुष्य और स्त्रियोंकी रीतिभांति तथा व्यवहारसे पूर्ण विज्ञ होकर अपने घरको लौट आये, इसके आनेपर महाराजने बडा दरबार किया और युवराज शंभूसिंहको गद्दीपर बिठाकर राज्यका सब काम सौंपदिया, कोकाजीको प्रधानमंत्री नियत किया, तब शंभूसिंहजी अपने प्रधानमंत्री पंडित कोकारामजीकी सम्मतिसे राजकाज करने लगे । महाराज शांतिदेव तथा पंडित दीनानाथजी कुछही समय बीते परमात्माका भजन करते हुए परलोकगामी हो गये ।

एक दिन महाराज शंभूसिहजीकी भरी सभामें एक सुन्दरी नग्न स्त्री आकर खडी हो गई, उसको देखतेही सब लोक चकित हो गये और अपना-अपना मुख फेर लिया, महाराजने भी मुख फेर लिया और कहा– तू बडी निर्लज्ज है, पुरुषोंके संमुख नग्न खडी है, उसने उत्तर दिया कि, मैं तुम्हारे राज्यभरमें भ्रमण करती हुई यहां आई हूं ; परंतु कोई पुरुष मुझको नहीं मिला, मैं तुम सबको नामर्द समझती हूं इस कारण लाज नहीं करती, यदि कोई पुरुष हो तो मुससे बात करे, यह सुनकर महाराजने कहा कि, तू अपने नीचेके अंगको ढंक ले तब बात की जाय । स्त्रीने महाराजकी आज्ञासे नीचेका अंग ढंक लिया तब सब लोग उसके सम्मुख देखने लगे । महाराजने सभाके लोगोंसे कहा कि, तुम सबमेसें यदि कोई इस योग्य हो तो इस स्त्रीको प्रसन्न करे । महाराजका वचन सुनकर सब मौन रहे । किसीको भी उससे बात करनेका साहस न हुआ, तब महाराजने उदास होकर सबसे कहा कि शोक है ! हमारी सभामें कोई भी पुरुष इस योग्य नहीं ? महाराजका यह वाक्य पूरा भी नहीं होने पाया था कि, पंडित कोकारामजीने महाराजसे निवेदन किया

कि, हमने देश परिभ्रमण करते हुए पूर्वोत्तर देशमें एक पर्वतीय पंडितके यहां चार महीने निवास करके इस विद्याको भी सीखा है और इस विषयके चार ग्रन्थ जो मुख्य हैं उनको हमने पढा है, इसीसे हमको निश्चय है कि, हम इस स्त्रीको प्रसन्न कर सकेंगे। पंडित कोकारामजीका यह वचन सुनकर महाराजने कहा कि हमने सुना है कि, इस विद्याका जाननेवाला स्पर्श मात्रसेही स्त्रीको प्रसन्न कर सकता है । पंडितजीने कहा कि हां आपका यह कहना ठीक है। आपके इस कथनकी पुष्टि इस स्त्रीके मुखसेही हो जायगी । यह कहकर पंडितजी अपने स्थानसे उठे और उस स्त्रीके समीप जाकर उसका हाथ पकडकर बोले कि तुमको हमारे अधिकारमें रहना होगा, हम तुमको प्रसन्न करनेका प्रयत्न करेंगे। यह सुनतेही वह सुन्दरी कोकाजीके साथ चल दी । कोकाजीने उसको अपने साथ लेजाकर एक उत्तम स्थानमें रहनेका प्रबन्ध कर दिया और प्रतिदिन उसके समीप आकर जिस दिन जिस अंगमें कामका निवास होता है उस दिन उस अंगको स्पर्श मर्दन आदि करनेसेही उस सुन्दरीकी तृप्ति कर देते रहे, मैथुनकर्म (सहवास) किसी दिन नहीं किया । दश दिनके उपरान्त उस सुन्दरीने अनेक स्त्रियोंके सम्मुख पंडितजीकी बहुत प्रशंसा की और महाराजकी सभामें कह ला भेजा कि, मुझको इच्छानुसार पुरुष प्राप्त हो गया है, मैं अब राजसभामें नहीं आ सकती । यह सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए और पंडित कोकारामजीसे कहने लगे कि, आप ऐसी विद्याको परोपकारार्थ प्रकाशित कर दीजिये । तब पंडितजीने कहा कि, इस विद्याकी चार पुस्तकें प्रथम , आदि शास्त्र , जिसको शिवजीने वर्णन किया है । द्वितीय , कामशास्त्र , जिसको वात्स्यायन ऋषिने निर्माण किया है, तृतीय , कामसंजीवन , जिसको सिद्धनागार्जुनने कथन किया है, चतुर्थ , रतिशास्त्र , जिसको गर्गाचार्यजीने कहा है, इनमें ब्रह्मचर्यद्वारा वीर्यरक्षाका उपाय, सौवर्ष पर्यन्त आरोग्य रहनेका उपाय, स्त्रियों और पुरुषोंके लक्षण, अपनी स्त्रीको प्रसन्न रखनेवाली विधि, कामवास, मैथुनप्रकार, गर्भाधानविधि, गर्भपरीक्षा, गर्भरक्षा, पुरुशोंके गुप्तरोग और चिकित्सा, स्त्रियोंके कठिन रोग और चिकित्सा, इच्छानुसार सन्तान उत्पन्न करना, गर्भिणीधर्म, धात्रीशिक्षा, बालरक्षा, बालचिकित्सा, केशकृष्णीकरण इत्यादि उपयोगी विषय संसारके उपकारार्थ वर्णन किये हैं वे सब विषय सरल रीतिसे लिखकर हम आपकी आज्ञाका परिपालन करेंगे ।

इस प्रकार कहकर पंडित कोकारामजीने उसी दिनसे ग्रन्थ लिखना

आरंभ किया और छः महीने उपरान्त , कोकमंजरी , नामक ग्रन्थ लिखकर महाराजके सम्मुख लाकर रखदिया । महाराजने उस ग्रन्थको आद्योपंत देखकर और उसके आशयको समझकर अति प्रसन्नता प्रगट की और कहने लगे कि, इस ग्रन्थको कोकशास्त्र कहना चाहिये । तभीसे कोकमंजरीका नाम कोकशास्त्र भी प्रसिद्ध हुआ ।

जो लोग कोकशास्त्रमें चौसठ आसनोंका होना प्रसिद्ध करते हैं उनकी भूल है, कोकाजीने अपने ग्रन्थमें आसन नहीं लिखे, अनंगरंग ग्रन्थके रचयिताने चौसठ आसन लिखे हैं और अन्य भी ऐसेही प्रयोग अपने ग्रन्थमें लिखे हैं उसी अनंगरंगमेंसे कोकसार लिखनेवालेने चौसठ आसन मिलाये होंगे । योगशास्त्रसम्बन्धी ग्रन्थोंमें अवश्य आसनों का प्रकार शरीरके साधन निमित्त वर्णन है उन आसनोंमें से चार आसन मुख्य माने गये, परंतु श्रेष्ठ योगीजन योगके निमित्त केवल एक पद्मासनको ही मुख्य मानते हैं, इसी प्रकार अनंगरंग ग्रन्थमें कहे हुए चौसठ आसनोंमेंसे सन्तानोत्पत्ति निमित्त बुद्धिमान् जनोंने सुख आसनको मुख्य माना है जिनको सबही जानते हैं । पूर्वाचार्योंने जितने ग्रन्थ रचे हैं वे सब मनुष्योंके उपकार निमित्त कथन किये हैं । कोई ग्रन्थ ऐसा नहीं है कि जिससे मनुष्योंको हानि पहुंचे । तो भी जो कोई अपनी मूढ बुद्धिसे उन ग्रन्थोंके आशयको न समझकर विपरीत कर्म करने लगे तो उन पूर्वाचार्योंका अथवा उन ग्रन्थोंका क्या दोष है ?–विचार करनेकी बात है कि, धातुओंको फूंककर रस बनाना और उस रसको मात्रानुसार उचित अनुपानके साथ रोगीके रोग निवारणार्थ उचित समयमें देना पूर्वाचार्योंने लिखा है परन्तु यदि कोई मूढ मनुष्य अनुचित रीतिसे धातुको फूंके और रस कच्चा रहजाय । फिर उस रसको अनुपान और समयके विरुद्ध रोगीको देवे और वह रोगी मर जावे तो पूर्वाचार्योंका क्या दोष है ? परन्तु यह प्रश्न उठता है कि, अनंगरंगके रचयिताने आसनोंको किस दृष्टिसे लिखा है ? इसका उत्तर यह है कि, स्त्री प्रबल हो और पुरुष निर्बल हो तो उस प्रबल स्त्रीको प्रसिद्ध करनेके लिये नग्न होकर खडे बैठे तिरछे बेडे आसनोंसे * काम लेना लिखाहोतो कुछ आश्चर्य नहीं । अनंगरंग रचयिताकी स्त्री प्रबल होगी इसीसे उसने दूसरोंके

---

* चौसठ आसनोंके कारण आजकलके नवयुवक कोकसारकी खोज करते हैं आसनोंके अभिप्रायको न समझकर कामीजन पशुवत् प्रसंग करने लगते हैं कि जिससे अस्थिहीन नसको हानिपहुंचती है इस हानिकी ओर ध्यान देकर वर्तमान नरपति (अंगरेजसरकार) ने आसनसहित कोकसारके प्रकाशन करने (छापने) का निषेध किया है ।

उपकार निमित्त आसन लिखादिये हों अथवा अनंगरंगका लेखक वाममार्गी हो तो क्या आश्चर्य है ? क्योंकि प्रायः वाममार्गियोंने मिलावट करके अनेक शुद्ध ग्रन्थोंको दूषित कर दिया है, निर्बुद्धि मनुष्योंके हाथमें पडकर असली ग्रन्थ कुछके कुछ हो जाते हैं। इसी प्रकार कोकशास्त्रमें भी मिलावट हो जाना संमत है । परन्तु बुद्धिमान जन अपनी सूक्ष्म बुद्धिसे मिलावटको समझकर हंसके समान सार वस्तुको ग्रहण कर लेते हैं । , हंसो यथा क्षीरमिवांबुमध्ये, जैसे हंसके संमुख जल मिलाकर दूध रखदिया जाय तो वह तो जलको रहने- देता है और दूध पीलेता है । प्रायः आचार्योंका यह भी मत है कि अधिकारी और अनधिकारीको देख समझकर विद्या प्रदान करना चाहिये । क्योंकि जिस विद्यासे सज्जनोंका उपकार होता है, दुर्जनलोग उसी विद्यासे अपनेको हानि पहुंचाते हैं इसीसे यह प्रथा अबतक प्राचीन लोगोंमें वर्तमान रही कि अनधि- कारीको विद्या नहीं देते थे । अब हम कामसंजीवनी (कोका पंडितका संक्षिप्त जीवन चरित्र (समाप्त करते हैं और कोकाकृत कोकशास्त्रका सार ग्रहण करके हम कोकसार-वैद्यक ग्रन्थ लिखते हैं कि जिसके पढनेसे मनुष्योंका बहुत उपकार होता होगा, इति ।

श्रीः

कोकसार-वैद्यक

पूर्वभाग

मङ्गलाचरण

नमस्कृत्य महादेवं सुखदं ज्ञानदं विभुम् ।
जगद्धिताय कोकस्य क्रियते सारसंग्रहः ।। १ ।।

अन्वयः–सुखदं (सुखदायकम्) ज्ञानदं (ज्ञानप्रदम्) विभुं (स्वामिनम्) नमस्कृत्य (नमस्कारं कृत्वा) कोकस्य (कोककृतवैद्यकस्य) सारसंग्रहः क्रियते इत्यन्वयः ।। १ ।।

(मयेति शेष :)

भाषार्थ–सुख और ज्ञानके देनेवाले प्रभु महादेवजीको नमस्कार करके जगत्के हितके अर्थ कोककृत वैद्यकका सार मुझ करके संग्रह किया जाता है ।।१

दोहा–पदललाम घनश्यामके, कंजसरिस अभिराम ।
बारबार वन्दन करत, नारायण सब ठाम ।। १ ।।

प्रायः मनुष्योंको कोकशास्त्र देखनेमें रुचि है, क्योंकि कोकशास्त्रके विषयमें यह कहावत प्रसिद्ध है कि;–

दोहा–विन पिंगल छन्दहि रचें, विन गीताको ज्ञान ।
विना कोक जे रति करैं, ते नर पशू समान ।। २ ।।

इस दोहेका भावार्थ यह है कि, पिंगल ग्रन्थके विना पढे जो छन्द रचना करते हैं और विना गीता पढे अपनेको ज्ञानी समझते हैं तथा विना कोकशास्त्र विचारे जो रति करते हैं वे नर पशुके समान हैं, कोकशास्त्र जाननेके विषयमें किसीने कहा है कि;–

दोहा–रहनि कबूतरकी रहै, गहनि गहै जस बाज ।
अंग अंग मर्दन करै, कहा कोकसों काज ।। ३ ।।

इस दोहेके बनानेवालेने कोकशास्त्रका भाव न जानकर केवल एकही बातको तत्त्व समझलिया है, कोकशास्त्रका जानना परमावश्यक है, इसके

जाननेसे मनुष्योंको काम-सम्बन्धी सब बातोंका ज्ञान हो जाता है बिन इसके जाने कामको जीतना सर्वथा असंभव है. ।

इस कारण आगे सांसारिक मनुष्योंके उपकारार्थ कोकशास्त्रमेंसे वैद्यक-भागका सार लिखा जाता हैं. इसीसे इस ग्रन्थका नाम ,कोकसार वैद्यक, रक्खा है.

तत्रादौ कामदेवप्रशंसा

शम्भुस्वयम्भुहरयो हरिणेक्षणानां येनाक्रियन्त सतत गृहकर्मदासः । वाचामगोचरचरित्रविचित्रिताय तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ॥ २ ॥

जिसने अपने कर्तव्यसे महादेव, ब्रह्मा और हरिभगवानको भी मृगनयनियों (स्त्रियों) के गृहकर्म करनेके निमित्त निरन्तर दास बना रक्खा है और जो अनेक प्रकारके चरित्र करनेमें विचित्र है तथा जिसकी चतुरताका वर्णन नहीं हो सकता, ऐसे कामदेव भगवानको नमस्कार है ॥ २ ॥

तात्पर्य यह कि जब ऐसे महाबलवान् देवताओंको कामदेव अपने आधीन कर लेता है तो मनुष्योंकी क्या गणना है ? परमात्माने इस जगत्में नाना प्रकारके कौतूहल रचे हैं जिनमें आसक्त होकर मनुष्य परम आनन्दपूर्वक मग्न रहते हैं, परंतु कलिकालमें प्रायः सबही मनुष्य कामकौतूहलमें मग्न हो भामिनीकेलिको ही सार समझते हैं. कामदेवकी विलक्षण महिमाको देखो कि, इसने प्रत्येक नरनारीको अपने अधीन कर रक्खा है. वास्तवमें कामदेवके समान बलवान् इस संसारमें कोई नहीं है जिसके प्रभावसे परमोत्तम सन्तान और महा आनन्दरूप विषयसुख प्राप्त होता है, जो इस सुखसे रहित है उसका जन्म संसारमें वृथा है । रंभाशुक संवादमें रंभाका वचन है कि–

पीनस्तनी चन्दनर्चचिताङ्गी विलोलनेत्रा तरुणी सुशीला । नालिङ्गिता प्रेमभरेण येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीविम् ॥ ३ ॥

पीनस्तनी अर्थात् गोल और कठोर स्तनोंवाली, चन्दनसे र्चचित अङ्गोंवाली, चञ्चल नेत्रोंवाली, युवा अवस्थावाली और सुशीला ऐसी कामिनीको जिसने प्रेमपूर्वक आलिगन नहीं किया, उस मनुष्यका जीवन वृथाही गया ॥ ३ ॥

आनन्दरूपा तरुणी नताङ्गी सद्धर्मसंसाधनसृष्टिरूपा । कामार्थदा यस्य गृहे न नारी वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम्. ॥ ४ ॥

आनन्द देनेवाला (मनोहर) रूप जिसका, युवा अवस्थावाली, कुचोंके भारसे नत अंगवाली, पतिव्रता आदि श्रेष्ठ धर्मको साधनेवाली और सन्तान उत्पन्न करनेवाली, काम और अर्थको देनेवाली ऐसी स्त्री जिसके घरमें नहीं है उस मनुष्यका जीवन वृथाही गया ।। ४ ।।

बाहू द्वौ च मृणालमास्यकमलं लावण्यलीलाजलं श्रोणी तीर्थशिला च नेत्रशफर धम्मिल्लशैवालकम् । कान्तायाः स्तनचक्रवाकयुगलं कन्दर्पबाणानलैर्दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्यं सरो निर्मितम् ५

दोनों बाहु (भुजा) कमलकी डंडी, मुख कमल, लावण्य (सुन्दरता) लीलारूपी जल, जंघा सीढी, नेत्र मछली, केश सेवार, दोनों स्तन (कुच) दोनों चक्रवाक (चकई चकवा) ऐसा स्त्रीरूप सुन्दर सरोवर ब्रह्माजीने कामदेवके बाणकी अग्निसे दग्धहुए जनोंको स्नान करनेके निमित्त बनाया ।। ५ ।।

जो संसारसे विरक्त होकर वनमें जप, तप और योगसाधन करते हैं उनकी तो बातही निराली है, परन्तु जो संसारमेंआसक्त रहते हैं वे विना किसी विशेष कारणके इस सुखसे रहित होनेकी इच्छा नहीं करते हैं.

विषयी जन विषयसुखमें बहुतही आनन्द मानते हैं, परन्तु ,अति सर्वत्र वर्जयेत्, अति आनन्दमें भी निरानन्दता आ जाती है अर्थात् बहुत विषय सुख भोगनेसे भांति भांतिके रोग शरीरमें उत्पन्न होजाते हैं, जिन दुष्टके कर्मोंके श्रवणमात्रसे आश्चर्य होता था आजकल वेही दुष्टकर्म प्रायः कुचालीजन अधिकतासे करते हैं इसी कारण यह भारतवर्ष अधिक रोगोंकी खानि होगया है. जबसे यहां स्वास्थ्यका सर्वथा सत्यानाश करनेवाले अपरिमित मैथुनका अधिक प्रचार कुचाली मनुष्योंद्वारा हुआ है, तबसे यह भारत गारत होता चला जाता है और धर्मके विरुद्ध, मनष्यजातिके विरुद्ध, बुद्धिके विरुद्ध तथा सृष्टिके विरुद्ध इन दुष्कर्मोंकी वृद्धि होती सुनीजाती है, इसीसे हमने कोकशास्त्र संस्कृत ग्रन्थोंसे सर्वोपकारी अंशोंको मनुष्योंके हितार्थ सरल देशभाषामें लिखना उचित समझा है.

कोकशास्त्रमें जो कामध्वज और स्त्रीजनोंके कामसम्बन्धी अंगोंका पृथक् पृथक् वर्णन विस्तारपूर्वक किया है उनको पृथक् पृथक् न लिखकर इस ग्रन्थमें यथास्थान प्रसंगवश संक्षिप्त रीतिसे लिखेंगे. कामदेवसम्बन्धी वार्ताओंको जानलेनेका मुख्य प्रयोजन यह नहीं है कि, कामके वश होकर सर्वदा उसीके ध्यानमें मग्न होजावे. किन्तु मुख्य प्रयोजन उसका यह है कि, ग्रन्थमें

कहे अनुसार वर्ताव करते हुए अपने शरीरकी रक्षा करे और कामको अपने वशमें सर्वदा रखनेका प्रयत्न करता रहे. प्रायः कामीजनोंका विश्वास है कि, कोकशास्त्रमें विषयसुख (स्त्रीसंभोग) की रीतिको भलीभांति वर्णन किया है उसके पढनेसे हमको परमानन्द प्राप्त होकर सुख मिलेगा, सो उनका विश्वास तो ठीक है, परन्तु विना देखे पढे समझनेमेंभेद हो जाना संभव है, परन्तु यदि इसको पढकर भी इसके विरुद्ध वर्ताव करेगा तो वह अवश्य दुःखी होगा, निरन्तर सुखी रहनेकी इच्छावाले पुरुषको योग्य है कि, इसी लेखके अनुसार वर्ताव करे, तहां प्रथम हम वीर्यरक्षाका उपाय लिखते हैं.

वीर्यरक्षा

प्रत्येक मनुष्यको योग्य है कि, वीर्यकी रक्षाके निमित्त अपने बालकोंको सबसे प्रथम ब्रह्मचर्यकी शिक्षा देकर ब्रह्मचर्य रखनेका प्रयत्न भलीभांति करे, विना ब्रह्मचर्यके वीर्य की रक्षा नहीं हो सकती और विना वीर्यरक्षाके ब्रह्मचर्यका फल (दीर्घायु, पराक्रम, सौन्दर्य, तेज आदि) प्राप्त होना दुर्लभ है, अतः ब्रह्मचर्यधारण करके वीर्यकी रक्षा करना मनुष्यका पहला कर्तव्य है. ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास ये चार आश्रम हैं, इन चारों आश्रमोंका मूल (जड) ब्रह्मचर्य आश्रममें विद्या पढना और वीर्यकी रक्षा करना मुख्य है, विद्यासे उत्तम शिक्षा प्राप्त होती है कि, मनुष्यका जन्म सुधर जाता है और वीर्यरक्षासे बल पराक्रम बढता है, आयु अधिक होती है, शरीर पुष्ट रहता है, कान्ति (तेज) की वृद्धि होती है, जिसका ब्रह्मचर्य अर्थात् पहली अवस्थामें. विद्याध्ययन (शिक्षा) और वीर्यरक्षाका क्रम बिगड़ जाता है उस मनुष्यका जन्म निरर्थक हो जाता है अर्थात् उसके शरीरका तेज घट जाता है. बल नहीं बढने पाता, सुन्दरता जाती रहती है और रोगोंका भय सर्वदा बनारहता है. शरीर अंगभंग हो जाता है. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थोंको साधनकरनेवाले मनुष्यको शरीरकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये.

धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनं यतः,

वीर्यही मनुष्यके शरीरका पूर्ण अंश है, वीर्यहीसे मनुष्यका जीवन है, ध्यान देकर विचार करनेकी बात है कि आहार किया हुआ अन्न वायुकी प्रेरणासे प्रथम आमाशयमें पहुंचता है. अनन्तर वह आहार मधुरभावको प्राप्त होता है-फिर वही आहार पाचक पित्तके प्रभावसे कुछ पककर खट्टा होजाता है. तदनन्तर नाभिमें स्थित समान वायुसे प्रेरित होकर छठवीं

ग्रहणीकालमें पहुंचता है. फिर वहां कोठेकी अग्निसे पककर कडुआ होताहै और उत्तमरसरूप हो जाता है. वही रस नाभिस्थित समान वायुके बलसे प्रेरित होकर हृदयमें पहुंचता है फिर वही रस पित्तसे पककर रुधिर (खून) बनजाता है और सब शरीरमें रहता है. जो जीवका पूर्ण आधार है उस रुधिरसे मांस, मांससे मेद, मेदसे अस्थि (हड्डी), अस्थिसे मज्जा, मज्जासे वीर्य ये सात धातु क्रमसे सवाचारचार दिनमें उत्पन्न होते हैं. भावार्थ यह कि, भोजन कियेहुए आहारका एक महीनेमें वीर्य बनता है और वीर्यहीमें जीवका निवास है, जैसा सुश्रुतमें लिखा है कि—

जीवो वसति सर्वस्मिन्देहे तत्र विशेषतः ।
वीर्ये रक्ते मले यस्मिन्क्षीणे याति क्षयं क्षणात् ।। ६ ।।

जीव सब शरीरमें वास करता है, वीर्य रुधिर और मल में विशेष करके रहता है. जिसके क्षीण होनेसे जीव क्षणभरसे निकल जाता है. अब इसमें विचारना चाहिये कि जो वीर्य एक महीनेमें उत्पन्न होता है उसको एक क्षणमात्रके सुखमें नष्ट करदेना कितनी भारी मूर्खताका काम है.

केवल अपनीही स्त्रीके साथ ऋतुसमयमें सन्तानोत्पत्ति निमित्त सम्भोग करना उचित है ऐसाही समस्त आचार्योंका मत है, जो बुद्धिमान् जन केवल सन्तानोत्पत्तिकेही निमित्त कामकेली करते हैं उनके शरीरमें वीर्यकी अधिकतासे कारण अधिक बल, पराक्रम, सौन्दर्य, साहस, बुद्धि और आरोग्यताकी वृद्धि होती है. यह समझकर अवश्य वीर्यकी रक्षा करनी चाहिये. जिस प्रकार उत्तम बीज और अच्छा खेत होनेसे धान्य आदि पदार्थ भी अच्छे प्रकार उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार रज और वीर्यकी उत्तमतासे सन्तान भी परमोत्तम होती हैं. सो उत्तम वीर्य और रज तब होसकता है कि जब पचीस वर्षपर्यन्त पुरुष और सोलह वर्ष पर्यन्त स्त्रीजन ब्रह्मचर्य रहें. धन्वन्तरिजीने मनुष्यकी चार अवस्थायें वर्णन की हैं. १ वृद्धि, २ यौवन, ३ संपूर्णता ४ किंचित् हानि. इन चारों अवस्थाओंका भेद यह है कि सोलह वर्षकी आयुसे पचीस वर्षकी आयुपर्यन्त वृद्धि अवस्था, इसको वृद्धि अवस्था इस कारण कहा कि सोलह वर्षकी अवस्थासे वीर्यकी वृद्धि होनेलगती है, पचीस वर्षकी अवस्थातक वीर्य बढता है. इन नव वर्षोंमें धातुकी वृद्धि होनेका कारण वृद्धि अवस्था जानकर बुद्धिमान् जन ब्रह्मचर्य धारण करें. विद्या पढने और वीर्यकी रक्षा भलीभांति करनेको ब्रह्मचर्यव्रत कहते हैं. यही व्रत सब आश्रमोंकी जड है.

इस अवस्थामें वीर्य गिरने अथवा जानबूझकर वीर्यको निकाल देनेसे जन्मपर्यन्त शरीर निर्बल रहता है कि जिससे सन्तान भी निर्बल उत्पन्न होती है, अनन्तर पचीस वर्षसे चालीस वर्ष पर्यन्त युवा अवस्था जानना, इन पन्द्रह वर्षोंतक धातु पुष्ट होती है. तदुपरान्त अडतालीस वर्ष पर्यन्त संपूर्णता रहती है अर्थात् इन आठ वर्षोंतक वीर्य न घटता है न बढता है, अडतालीस वर्षके उपरांत कुछ हानि होने लगती है. तब सब प्रकारकी शक्ति घटतीही जाती है.

दोहा—ज्यों अनाज तरु फल चुकत, जल सींचत मुरझात ।
समय पाय यह देह त्यों, पोषत जात नशात ।। ३ ।।

पचीस वर्षका पुरुष और सोलह वर्षकी स्त्री इन दोनोंका वीर्य रज उक्त अवस्थापर समभावको प्राप्त होता है. वही अवस्था विवाहकी जानना, सोलह वर्षसे कमती अवस्थावाली स्त्रीमें यदि पचीस वर्षसे कमती अवस्थावाला पुरुष गर्भधारण करता है तो उस गर्भसे उत्पन्न बालक पूर्ण बलवान् नहीं होता है यह वैद्यकशास्त्रका मत है. इसके विरुद्ध समयमें आजकल विवाह होते हैं थोडी अवस्थावाले वर और कन्याका विवाह करके माता पिता अपनी सन्तानको निर्वीर्य करदेते हैं, जिससे उनका बल पौरुष नष्ट हो जाता है. इसके विषयमें अधिक क्या कहाजाय.

दोहा—बैठे जौनी डारपर, काटत सोई डार ।
जियन मरनको नहिं डरत, यह गति है संसार ।। ४ ।।

प्रायः जन इस संसारमें ऐसे हैं जो विना उपदेश पाये किसी उत्तम बातका विचार नहीं करते. परन्तु उपदेश पाकर जो विचार करते हैं उन सज्जनोंसे हमारी प्रार्थना है कि, आप स्वयं वीर्यकी रक्षा करते हुए अपने तथा पराये बालकोंको वीर्यरक्षा करनेका उपदेश करें और कुकर्मोंसे तथा दुष्टजनोंकी संगतिसे बचाते रहें कि जिससे उनका बल पराक्रम दिनदिन बढता रहे.

वीर्यकी रक्षा करनेसे पुरुष महासामर्थ्यवान् होता है, जो वीर्यकी रक्षा नहीं करता और व्यर्थ अपने वीर्यको नष्ट करता है, वह एक सामान्य ग्रामीण-जनसे भी बुद्धिहीन कहा जा सकता है. देखो किसान अपनेही खेतमें समयानुसार बीज होता है कि जिससे वह बीज अन्नरूप होकर सब संसारका भला करता है तो जो मनुष्य किसी अन्यक्षेत्रमें कुसमय अपने वीर्यको डालदेता है उसकी पशुसंज्ञा है ? किन्तु पशुसेभी बढकर इसमें प्रमाण यह है कि—

चौपाई—कातिक कुत्ती माघ बिलाई ।
चैत चिडी बैशाख [1]गधाई ।। ५ ।।

---

१ लुगाई यह भी पाठ है।

कुत्ती कार्तिकमासमें, बिलाई माघमासमें, चिडी चैत्रमासमें, गदही वैशाखमें संभोगकी इच्छा करती है, अन्य मासमें नहीं. एवं अन्य पशु पक्षी भी अपने अपने नियमित समयमें केलि करते हैं. जो उनकी उत्पत्तिसे प्रगट होता है. कोई वर्षभरमें एक बार, कोई दो बार जिस जिस ऋतुमें बच्चे जनता है, उसी उसी ऋतुमें फिर जनता है. ऋतुमें अदल बदल कभी नहीं होता है, जब पशु पक्षियोंमें नियमानुसार काम होता है, तब मनुष्योंको क्यों नहीं नियमानुसार काम करना चाहिये, सृष्टिके नियमानुसार ऋषियोंने मनुष्योंके कल्याणनिमित्त नियम बांधे हैं सो जब वृक्ष आदि जडपदार्थ नियमानुसार चलते हैं तो सब प्राणियोंमें श्रेष्ठ मनुष्य क्यों नहीं उन नियमोंका परिपालन करते ? यह महाशोककी बात है.

वीर्यरक्षाके विषयमें हम यहां एक छोटासा दृष्टांत लिखते हैं एक वैद्यराजने चालीस वर्षपर्यन्त अपना विवाह नहीं किया. बहुत कुछ मित्रोंद्वारा कहागया तब एक श्रेष्ठ गृहस्थजनके यहां विवाह करके केवल एकवार स्त्रीसंभोग किया. जिससे गर्भ रहकर एक पुत्र उत्पन्न हुआ. वह पुत्र जब कुछ समझदार हुआ तब उसकी माताने उसको एक दिन वैद्यराजके पास यह कहकर भेजा कि, अपने पिताको प्रसन्न जानकर यह कहना कि, पिताजी ! हम चाहते हैं, कि हमारा एक भाई और होवे. यह सुनकर बालक अपने पिताके पास गया, पिताने पुत्रको देखकर बहुत आदर किया और गोदमें बिठा लिया । पिताको प्रसन्न जानकर बालकने कहा कि, पिताजी ! हम चाहते हैं कि, हमारे एक भाई और हो. यह सुनकर पिताने कहा पुत्र ! जब तू उत्पन्न हुआ तब हमारे शरीरका आधा बल जाता रहा. अब आधा बल शेष रह गया है. सो हम अब अपना शेष बल नष्ट करना नहीं चाहते. वैद्यराजकी इस बातपर ध्यान देना चाहिये, कि वीर्यरक्षाको वैद्यराजजीने परम प्रधान माना है और सूचित किया है, कि वीर्यही मनुष्यका बल (पराक्रम) और जीवन है. अधिक विषयी पुरुषोंकी यह गति है कि, जैसे श्वान कोई सूखा हाड पाकर चचोडता है और कटकटाकर अपनेही मुखमेंही निकले हुए रुधिरको चूसकर प्रसन्न होता है. यह नहीं जानता कि इस हाडमें क्या रखा है. यह जो रुधिर मैं चूस रहाहूं यह मेरेही मुखमेंसे प्रगट हुआ है.

अंडनिर्माणकयंत्र (अंडकोशों) में रुधिरका वीर्य तत्काल बनजाताहै. कामेच्छाकी प्रबलता, पुरुषांगकी दृढता और स्थिरता यह वीर्यकी शक्तिका कार्य है. शरीरमें बल, रक्त, वर्ण, ओज, तेज, चञ्चलता और स्मरणशक्तिका तीव्र होना यह वीर्य शक्तिका गुण है.

जिन पुरुषोंको वीर्यरक्षानिमित्त अधिक जानना हो तो इस बातको ध्यानमें रक्खें कि वीर्यही शरीरमें प्राणोंकी रक्षा करनेवाला है. वीर्यरक्षा न करनेसे प्राणोंपर बाधा है. वीर्यरक्षा करनाही पहला कर्तव्य है. वीर्यकी रक्षा चाहनेवाला पुरुष अपने चित्तको विषयोंकी ओर न जाने देवे, मनको चंचल न होने देवे, व्यर्थ न बैठे, ज्ञानयुक्त पुस्तकोंको पढे, व्यर्थ पुस्तकोंको हाथसे भी न छूवे, कन्दुक-क्रीडा (गेंद खेलने) में अभ्यास करे, व्यायाम (दंडकसरत) करे, पैदल चलनेका अभ्यास करे, प्रातः सायं टहले, कामध्वजको शीतल जलसे स्वच्छ रक्खे, कि जिससे कामोद्दीपन न हो, मल मूत्रको त्यागकर शयन करनेका अभ्यास सर्वदा रक्खे, कामकी इच्छा कदापि न करे, वीर्यरक्षाके गुणोंको सर्वदा स्मरण करता रहे इससे बढ़कर वीर्यरक्षाका दूसरा उपाय नहीं है. बुद्धिमानोंको संकेतही बहुत है, परन्तु मूढ बुद्धिवालोंको एक बड़ा भारी ग्रन्थ लिखकर सुनाया जाय तो भी कुछ नहीं. अब आगे हम स्त्री पुरुषोंके लक्षण लिखते हैं.–

तत्रादौ नारीभेदः

पद्मिनी चित्रिणी चैव शंखिनी हस्तिनी तथा ।
चतस्रो जातयोनार्या रतौ ज्ञेया विशेषतः ।। ७ ।।

१ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ शंखिनी, ४ हस्तिनी ये चार प्रकारकी नारियां विशेष करके रतिमें जाननेके योग्य हैं ।। ७ ।।

पद्मिनी लक्षण

भवति कमलनेत्रा नासिका क्षुद्ररंध्रा
अविरलकुचयुग्मा दीर्घकेशी कृशाङ्गी ।।
मृदुवचन सुशीला नृत्यगीतानुरक्ता
सफलतनुसुवेषा पद्मिनी पद्मगन्धा ।। ८ ।।

कमलसमान नेत्रोंवाली, छोटे छिद्रोंसे युक्त नासिकावाली, सघन कुचोंवाली, बड़े केशोंवाली, सूक्ष्म अंगोंवाली, कोमल वचन बोलनेवाली, सुशीला, नृत्य और गीतोंमें अनुरागवाली, सब शरीर सुन्दर, मनको हरनेवाली, कमलके समान गन्धवाली ऐसी स्त्री पद्मिनी होती है ।। ८ ।।

कमलनयनयुग्मा क्षुद्ररन्ध्रा च नासा
कृशतनु मृदुवाक्या दीर्घकेशी शुभांगी ।

परहितमतियुक्ता पद्मगन्धा सुवेषा
अविरलकुचयुग्मा कीर्तिता पद्मिनी सा ।। ९ ।।

कमलसमान दोनों नेत्र जिसके, छोटे छोटे छिद्रोंसे युक्त नासिकावाली, सूक्ष्मशरीरवाली, कोमलवचन बोलनेवाली, लम्बे केशवाली, सुन्दर अंगोंवाली, दूसरेका हित चाहनेवाली, बुद्धिमती, कमलके समान गन्धवाली, मनोहर वेषवाली अर्थात् सुन्दररूपवाली, सघन कुचोंवाली ये लक्षण जिस स्त्रीमें हों वह पद्मिनी कहाती है ।। ९ ।।

सवैया–कंजसे कोमल अंग सबै, गजगौनी सुवास रहै तन छाई ।
चन्दसों आनन कुन्दनसों तन, मैनकी भूमि महासुखदाई ।।
श्वेत दुकूल रुचै सुरपूजन, है कविराज सुबुद्धि सुहाई ।
रूप सियासी हिया हुलसै, लखी ऐसी तिया अति पुण्यसों पाई ।। ९ ।।

चित्रिणी लक्षण

कठिनघनकुचाढ्या नातिदीर्घा मनोज्ञा
रतिरसगुणयुक्ता सुन्दरी नातिखर्वा ।
कमलनयनयुग्मा लोभहीना सुशीला
तिलकुसुमसुनासा कीर्तिता चित्रिणी सा ।। १० ।।

कठोर और घने कुचोंवाली, जिसका शरीर बहुत लंबा नहीं अर्थात् शरीर सुडौल और देखनेमें मनोहर रतिरसके गुणसे युक्त, सुन्दरी, बहुत छोटी नहीं, कमलसमान दोनों नेत्र, लोभरहित और सुशीला, तिलके फूलके समान सुन्दर नासिका जिसकी ऐसे लक्षण जिस स्त्रीमें हों उसको चित्रिणी कहते हैं ।। १० ।।

भवति रतिरज्ञा रतिदीर्घा न खर्वा
तिलकुसुमसुनासा स्निग्धदेहोत्पलाक्षी ।
कठिनघनकुचाढ्या सुन्दरी सा सुशीला
सकलगुणविचित्रा चित्रिणी चित्रवक्त्रा ।। ११ ।।

रतिसरको जाननेवाली, न बहुत लंबी, न बहुत छोटी, तिलके फूलके समान सुन्दर नासिकावाली, चिकने शरीरवाली, कठोर और घने कुचोंवाली, सुन्दरी और सुशीला, सब गुण विचित्र जिसमें, तथा विचित्र अर्थात् अद्भुत

सुन्दरतासे युक्त मुख जिसका ऐसे लक्षणोंवाली स्त्री चित्रिणी कहाती है ।। ११ ।

दयाक्षमावती या हि देवपूजापरायणा ।
चित्रिणी रमणी सा हि रतिशास्त्रे प्रकीर्तिता ।। १२ ।।
पत्यौ परायणा या हि नेक्षते परपूरुषम् ।
धर्मे मतिः सदा यस्याश्चित्रिणी सा प्रकीर्तिता ।। १३ ।।

जो दया और क्षमावाली हो, देवपूजामें तत्पर हो अथवा अपने बडे और उत्तमजनोंके यथायोग्य सत्कार करनेमें निपुण हो, ऐसी स्त्रीको रतिशास्त्रमें चित्रिणी कहा है. किंवा जो स्त्री पतिव्रता हो, परपुरुषको न देखनेवाली हो, धर्ममें सदा तत्पर रहनेमें जिसकी मति हो ऐसी स्त्री चित्रिणी कही है ।। १२ ।। १३ ।।

दोहा–पद्मिनी चित्रिणी एकसम, भेद एक तिन माहिं ।
चित्रिणी तहां हँसोड अति, वह हँसोड बहु नाहिं ।। ७ ।।

सवैया–उंचे उरोज विलोचन चंचल, लोककी लीक न जात है जानी । कारे महा सटकारे हैं केश, निकारे मयूरन की कछु वानी ।। गन्ध लियो मधुको मथि सुंदरि, मैनके मन्दिर मैनको पानी । मित्रको चित्र लखे कविराज, विचित्रिणी चित्रिणी ऐसी बखानी ।। ८ ।।

शंखिनी लक्षण

दीर्घा सुदीर्घनयना वरसुन्दरी या कामोपभोगरसिका गुणशीलयुक्ता । रेखात्रयेण च विभूषितकण्ठदेशा संभागकेलिचतुरा किल शंखिनी सा ।। १४ ।।

लंबी बडे बडे नेत्रोंवाली और सर्वाङ्गसुन्दरी, कामके उपभोग अर्थात् हाव भाव कटाक्षादिमें रसीली, गुण और शीलसे युक्त, तीन रेखाओंसे सुशोभित कंठवाली और कामकेलिमें चतुरा ऐसे लक्षणोंवाली स्त्री शंखिनी कही है ।। १४ ।।

सवैया–सूखि रह्यो तन मांस न है, निकसीसी परै न सखीन खरी है । रोस बडो कुच ओछनसों कछु, पीपरके फल होड परी है । सारी धरे रंगराती मनोज, भुताती विगन्धिनि भूरि भरी है । शंखिनीसों करतार असंखन, शंखिनीसों करतार करी है ।। ९ ।।

हस्तिनी लक्षण

स्थूलाधरा स्थूलनितम्बभागा स्थूलांगुली स्थूलकुचा सुशीला ।
कामोत्सुक गाढ़रतिप्रिया च नितम्बखर्वा खलु स्हस्तिनी सा ।। १५ ।।

मोटे होंठोवाली और मोटे नितम्बवाली, मोटी अंगुलियों वाली, मोटे अथवा बडे कुचोंवाली, सुशीला, कामकी अत्यन्त अभिलाषा करनेवाली, रतिकेलिमें अतिलीन और नीचे नितम्बवाली ऐसे लक्षणोंवाली स्त्री हस्तिनी कहाती है ।। १५ ।।

सवैया–ईक्षण हैं लघु तीक्षण केश, सुवेष नये कटु गन्ध सदाई ।
कान दयेकर कान सुनै धुनि, कानन शेष अनंग भुछाई ।।
मोटी महा कविराज कहा कहौं, चाल चलै तिय मंद सुहाई ।
औ निहई सब छोडिदई करि, नोक लई करि नीकी निकाई ।।१०।।

पद्मिनी पद्मगन्धा च × मधुगन्धा च चित्रिणी
शंखिनी क्षारगंधा स्यान्मद्यगन्धा च हस्तिनी ।। १६ ।।

पद्मिनीस्त्रीमें कमलकीसी सुगन्ध आती है, चित्रिणी स्त्रीमें शहतकीसी सुगन्ध और शंखिनीमें क्षारकीसी गन्ध और हस्तिनीस्त्रीमें मदिराकीसी गंध आती है ।। १६ ।।

जिस प्रकार नारीभेद चार हैं उसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकारके यहां वर्णन किये हैं–

पुरुष भेद

चत्वारः पुरुषा ब्रह्मनामानि च यथाक्रमम् ।
शशो मृगो वृषश्चैव चतुर्थस्तुरगस्यथा ।।१७।।

हे ब्रह्मन् ! चार प्रकारके पुरुष होते हैं–१ शशक, २ मृग, ३ वृषभ, ४ तुरग (अश्व) ।। १७ ।।

शशकपुरुषलक्षण

मृदुवचनसुशीलः कोमलाङ्गः सुकेशः
सकलगुणनिधानः सत्यवादी शशोऽयम् ।। १८ ।।

मृदुभाषी, सुशील, कोमल अंगवाला, सुन्दर केश जिसके, सकल गुणनिधान, सत्यवादी यह लक्षण जिस पुरुषमें हों उसकी शशक संज्ञा है ।। १८ ।।

× मीनगन्धा इत्यपि. पाठः ।

न खर्वो नाती दीर्घश्च गुरुद्विजपरायण ।
विमुखः परदारेषु सदा परहिते रतः ।। १९ ।।
साधूनां संगमे चैव अनुगामी समुत्सुकः ।
लक्षणैर्लक्षितः श्रीमान् शशोऽयं देवपूजकः ।। २० ।।

न छोटा न बहुत लंबा, गुरु और ब्राह्मणका भक्त, पराई स्त्रीसे विमुख, दूसरेका सदा हित करनेवाला अर्थात् निरन्तर परोपकारी और साधुजनोंकी संगतिमें अनुरक्त-समुत्सुक (भलीभांति प्रीति करनेवाला), उत्तम लक्षणों-वाला, श्रीमान् (धनी), देवपूजन करनेवाला अथवा आदर सत्कार करनेमें निपुण यह लक्षण जिसमें हों वह पुरुष शशकसंज्ञक होता है ।। १६ ।। २० ।।

पद्य-शशक शरीर शुभ्र अतिकोमल चित्त दया अतिभारी ।।
शांतचित्त गंभीर साधु शुभ लक्षण आचारी ।।
सत्यवचन रुचि गुणी दयाकर प्रियवादी प्रणवारो ।।
राजारत मत सत उद्योगी काम स्वल्प अति भारो ।।
परतिय त्यागी सदा जो सत्य वचन भाषत रहत ।।
शशक पुरुष संसार महँ सत जीवनको सुखलहत ।। ११ ।।

मृगपुरुष लक्षण

वदति मधुरवाणीं दीर्घनेत्रोऽतिभीरु
श्चपलमतिसुदेहः शीघ्रवेगो मृगोऽयम् ।।
अथवा-भवति कमलनेत्रः पद्मगन्धः सुवेषः
उपकृतिपरधीरो नित्यमोदी मृगोऽयम् ।। २१ ।।

मधुर वचन बोलनेवाला, बडे २ नेत्रोंवाला, अतिडरपोक, चञ्चल बुद्धि, सुन्दर देहवाला और शीघ्रगामी ऐसा पुरुष मृगसंज्ञक होता है. अथवा कमलसमान नेत्रोंवाला, कमलके तुल्य गन्धवाला, मनोहर वेषवाले, परोप-कारी, धीर और सर्वदा आनन्दपूर्वक रहनेवाला ऐसा पुरुष मृगसंज्ञक होता है ।। २१ ।।

स्मितास्यः स्निग्धगात्रश्च बह्वाशी बलवान्सदा ।
नृत्यगीतप्रियो ब्रह्मन्मृगोऽयं पुरुषः स्मृतः ।। २२ ।।

हास्ययुक्त मुखवाला, स्निग्ध (चिकने) शरीरवाला, बहुत भोजन करनेवाला, सदाबलवान् नाच और गान जिसको प्रिय, हे ब्रह्मन् ! ऐसे लक्षणवाले पुरुषको मृगसंज्ञक कहा है ।। २२ ।।

पद्य-मृगके दृग मॅगसंम सुन्दर अति कोमल कनक शरीरा ।
सम वपु वदन हास्य मुख दीरघ दया चित्त मतिधीरा ।।
नृत्य गान प्रिय रुचि अति जाकी मिठबोला अतिप्यारा ।
कृष्ण खेलरत चित अतिप्रेमी नारी सतभारा ।।
श्रद्धा वचन गुरु प्रणपालत मित्र सुनेह दुलरा ।
मुगके लक्षण कहे प्रेमयुत कोककला आधारा ।।१२।।

वृषभपुरुषलक्षण

बहुगुणबहुबन्धुः शीघ्रकामो नताङ्गः
सकलरुचिरदेहः सत्यवादी वृषोऽयम् ।। २३ ।।
ह्रस्वौ च चरणो यस्य हृष्टपुष्टकलेवरः ।
योऽसौ लज्जाविहीनश्च स वृषः परिकीर्तितः ।। २४ ।।

अतिगुणी, बहुबंधुवाला, शीघ्र कामकेलिमें चैतन्य और कोमल अंगवाला, सब शरीर सुडौल और मनोहर तथा सत्यवादी, ऐसे लक्षणोंवाला पुरुष वृषभ संज्ञक होता है. अथवा जिसके दोनों पांव छोटे, हृष्टपुष्ट शरीर और लज्जाहीन हो तो ऐसा पुरुष वृष संज्ञक कहा है ।। २३ ।। २४ ।।

दोहा-पूत गन्ध तन जासुके, युग पग होवें छोट ।
लाजहीन तिय प्रिय पुरुष, वृषभ सुतनुकों मोट ।। १३ ।।
तिय लखि जाके चित्तमें, उमनत प्रेम अधीर ।
मतवारो कामी अधिक, परतियरति गंभीर ।। १४ ।।
पापकर्म निर्भय करत, स्वल्पनींदसो सुख लहत ।
वृषभ पुरुष संसार महँ मित्रनसों रत नहिं चहता ।।१५।।

अश्वपुरुषलक्षण

कर्कशांगः कदाचारी सदा निर्भीकमानसः ।
दीर्घांगो द्रुतगामी च तुरगः पुरुषः स्मृतः ।। २५ ।।
काष्ठतुल्यवपुर्धृष्ठो मिथ्याचारश्च निर्भयः ।
कर्कशो दीर्घदेहश्सु दरिद्रस्तु हयो मतः ।। २६ ।।

कर्कश (कठोर) अंगवाला, खोटे चालचलनवाला, सदा निर्भय रहनेवाला, लंबे शरीरवाला और शीघ्रगामी ऐसा पुरुष तुरग (अश्व(संज्ञक कहा है. अथवा काठके समान कठोर शरीरवाला, झूंठ बोलनेवाला और झूठ व्यवहारवाला तथा निर्भर और कर्कश (दुष्टस्वभाव(, लंबे शरीरवाला, दरिद्र (धनहीन) ऐसा पुरुष अश्वसंज्ञक कहा है ।। २५ ।। २६ ।।

पद्य-अश्व पुरुष आलसी महा निद्रा मतवारो ।
लाजहीन अतिखोट क्रूरकर्मन पनहारो ।।

श्यामवर्ण बुधिहीन धर्म अरि निपट कुकर्मी ।
परतिय लंपट छली महाकामी हठधर्मी ।।
तकि परतिय निशदिन रमत व्याकुल सो अतिही रहत ।
क्रूरस्वभाव उतावला अश्वन यश भूपर लहत ।।१६।।

देव आदि पुरुष भेद

देवगन्धर्वयक्षाणां ये राक्षसपिशाचयोः ।
लक्षणैः संयुतास्ते स्युर्नरास्तैरेव नामभिः ।। २७ ।।

१ देव, २ गन्धर्व, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ पिशाच इन लक्षणोंसे युक्त मनुष्य उसी नामवाले कहाते हैं ।। २७ ।।

उन पांच महापुरुषोंके पृथक् पृथक् लक्षण आगे लिखते हैं–

देवपुरुष लक्षण--पद्य

सत्त्वगुणी ज्ञानी दानी अरु सत्यप्रिय बलवाना ।
सत्य मधुरभाषी शुचि कोमल सुन्दर रंग समाना ।।
काम क्रोधसे रहित कान्तियुत भोजन मधुर पियारे ।
लंबी भुजा सुगन्धियुक्त तनु नयन कमल अनियारे ।।
मृगगतिसम चंचल नारायणभक्त मनोहररूप ।
घनसमान गम्भीर नाद तेहि साधुस्वभाव अनूप ।।
ये लक्षण शुभ होयँ मनुजमें जानिय देव समाना ।
कामशास्त्र रतिशास्त्र आदि लखि सुर न र कोक बखाना ।।१७।।

गन्धर्वपुरुषवलक्षण–पद्य

सत रज गुणयुत श्यामरंग अरु चम्पक वर्ण समाना ।
रूप शील शुचि शब्द मनोहर लागत अतिप्रिय गाना ।।
खट्टे अरु मधुरे भोजनमें अतिरुचि कोमल बैना ।
मित्रभाव मानत सबहीसों मृगवत् सुन्दर नैना ।।
ये लक्षण गन्धर्व मनुजके समुझौ सकल सुजाना ।
कामशास्त्र रतिशास्त्र आदि लखि पंडित कोक बखाना ।। १८ ।।

यक्षपुरुप--पद्य

पुष्ट शरीर दीनरक्षक अरु दयावान गुणधामा ।
स्थूलोदर अरु कंठ जंघ युग रक्तवर्ण अभिरामा ।।
दृढ मति रक्तनेत्र धनयुत अरु रज तम गुण बलवाना ।
सकल अंग सामान्य रोम कुछ अतिरव सिंहसमाना ।।
ये लक्षण सब यक्ष मनुजके समुझौ सकल सुजाना ।
कामशास्त्र रतिशास्त्र आदि रखि पंडिल कोक बखाना ।। १९ ।।

राक्षसपुरुष लक्षण-पद्य ।

रक्त श्याम रँग अरु मुख डाढ़ें जासु भयंकर घोरा ।
तमोगुणी कामी क्रोधी अरु निर्दय चित्त कठोरा ।।
लंब स्थूल अंग सब दुर्मति नेत्र बिडाल समाना ।
मद्यपानरत नित सुर नरते मानत द्वेष महाना ।।
ये लक्षण सब राक्षस नरके समुझो सकल सुजाना ।
कामशास्त्र रतिशास्त्र आदि लखि पंडित कोक बखाना ।। २० ।।

पिशाचपुरुष लक्षण-पद्य

बहुभोजी बहु पाप कर्मरत क्रोधी दया विहीना ।
क्रूर स्वभाव गन्ध बकरी सम अतिशय वेष मलीना ।।
अति कटु अम्ल वस्तु भोजी अति शब्द काकसम ताको ।
करत रहत विश्वास घात सो मनमलीन नित जाको ।।
ये लक्षण सब पिशाचनरके समुझो सकल सुजाना ।
कामशास्त्र रतिशास्त्र आदि लखि पंडित कोक बखाना ।। २१ ।।

देवी आदि स्त्री भेद

चार प्रकारकी स्त्रियाँ जो पूर्व कहचुके हैंउनमें पद्मिनीको देवी, चित्रिणीको गन्धर्वपत्नी (अप्सरा), शंखिनीको यक्षिणी, हस्तिनीको राक्षसी संज्ञावाली जानना ।

देवीमप्सरसो यक्षकान्तां राक्षसकामिनीम् ।
कृत्यामिति जगुर्नारीं युक्तां तैरेव नामभिः ।।२८।।

१ देवी, २ अप्सरा, ३ यक्षिणी, ४ राक्षसी, ५ कृत्या इनके लक्षणोंसे युक्त जिसका लक्षण हो वह स्त्री उसके नामसे कहाती है अर्थात् देवपुरुषके समान लक्षणोंवाली देवी और गन्धर्व पुरुषके समान लक्षणोंवाली स्त्री अप्सरा और यक्षपुरुषके समान लक्षणोंवाली यक्षिणी तथा राक्षस-पुरुषके तुल्य लक्षणोंवाली स्त्री राक्षसी और पिशाचपुरुषके समान लक्षणोंवाली स्त्री कृत्या कहाती है ।। २८ ।।

कृत्याका विशेष लक्षण यह है, कि कलहप्रिया, स्थूल शरीरवाली, अतिक्रोधवाली, श्याम वर्ण, लंबे होंठ अथवा मोटे होंठ, छोटी नाक, शिथिल स्तनविभाग, सूखी कमर, ऊंचा पेट और तमोगुणवाली ये पांच प्रकारकी स्त्रियां हैं इनमें देव और देवी, गन्धर्व और अप्सरा, यक्ष और यक्षिणी, राक्षस

और राक्षसी, पिशाच और कृत्याका लक्षण एकही है, एकलक्षणवाले पुरुष स्त्रीका संयोग ठीक होता है. विरुद्ध लक्षणवाले स्त्रीपुरुषके संयोगसे परस्पर ईर्ष्या, कलह, द्वेषभाव होजाना संभव है. विरुद्ध संयोगही अनर्थका हेतु है. भावार्थ यह, कि यदि देव गन्धर्व लक्षणवाले पुरुषका देवी व अप्सरा लक्षण-वाली स्त्रीके साथ विवाह होता है तो आनन्दसे दिन व्यतीत होते हैं और यदि देवसंज्ञक पुरुष और राक्षसी अथवा कृत्या स्त्री हो तो विवाह होनेसे दुःख होता है. इस कारण इन लक्षणोंको देखकर जहांतक हो सके समान लक्षणोंसे युक्त नर नारीका विवाह सम्बन्ध करना. अन्यथा दुःख, शोक, कलह उत्पन्न होकर दोनोंका जन्म निरर्थक होजाता है ।

कुपुत्रेण कुलं नष्टं जन्म नष्टं कुभार्यया ।
कुभोजनैर्दिनं नष्टं यन्नष्टंतन्न गृह्यते ॥ २९ ॥

कुपुत्र (कपूत) से कुल नष्ट होजाता है, दुष्ट स्त्रीसे जन्म नष्ट हो जाता है, कुभोजनसे दिन नष्ट हो जाता है, इस कारण जो नष्ट हो उसको ग्रहण नहीं करे ॥ २९ ॥

वातप्रकृति स्त्री लक्षण-पद्य

वात प्रकृतिवाली नारीका नहिं कोमल कोउ अंग ।
रूखे स्वल्प केश चंचल चित अतिप्रलाप बहुरंग ॥
कारी आंख साख नहिं जाकी भोजन करत अघाई ।
श्याम घूसरा अंग गातकर सुरत चित्त अधिकाई ॥
स्वप्न गगनचर बातें रूखीं करैं प्रीति नहिं धारैं ।
वातप्रकृति स्त्रीको लक्षण ऐसे कोक उचारैं ॥ २२ ॥

पित्तप्रकृति स्त्री लक्षण-पद्य

गोरा रंग अंग उजलासा लोचन चंचल स्यानी ।
क्षणमें होय प्रसन्न क्षणकमें रूठि रहै दीवानी ॥
पीन पयोधर कुच कठिनाई रतिसों हित अति जाको ।
कृशतन कछुक अस्थूल द्रविणता स्वल्प संगत रत ताको ॥
प्रीतिरीति भल रखत सबनसों क्रोध स्वभाव सुभारी ।
पित्तप्रकृति कामिनी इहि भांति कामकला आगारी ॥ २३ ॥

कफप्रकृति स्त्री लक्षण-पद्य ।

कोमलगात दांत चिकने अति नख शिख लोचन श्वेत ।
माननीय मदमत्त और अनुराग सुदृढ कर हेत ॥
श्यामरंग मृदु अंग मनोहर लवण सुछवि अतिभारी ।
प्रीति रीति अनुराग राग चित स्वल्प सुरत मतवारी ॥

अतिहित चितमें चाव जासुके केलिकाम चतुराई ।
प्रेमप्रकृति कफकामिनि प्यारी प्रीति करत सुखदाई ।। २४ ।।

वातप्रकृति पुरुष लक्षण

दोहा—कृश तन मोटे केश अति, रूखा होय शरीर ।
चञ्चल वाचाली घना, वातमनुज मतिधीर ।। २५ ।।

पित्तप्रकृति पुरुष लक्षण

दोहा—तरुणाईमें श्वेत हो, केश बुद्धि गंभीर ।
क्रोधी प्रस्वेदी महा, पित्तमनुज अतिवीर ।। २६ ।।

कफप्रकृति पुरुष लक्ष

दोहा—चिक्कन केश स्थूल तनु, बलयुत बुद्धि गंभीर ।
कफज मनुज लक्षण यही, स्वप्ने लखै सुनीर ।। २७ ।।

प्रकृति संयोग (जोडा) ।

एक प्रकृति और एकही प्रकारके स्वभाववाले स्त्री पुरुषको जोडा कहते हैं. जिनके रूप रंग और वय (अवस्था) में कुछ अन्तर भी होता है । परन्तु गुण और स्वभाव एक ही होतो जोडा मिलजाता है. साथही इसके यह भी ध्यान रखना कि स्त्रीकी आयु (उमर) से पुरुषकी आयु अधिक होना चाहिये क्योंकि बारह वर्षकी नारी षोडश (सोलह) वर्षवाले पुरुषके समान होती है और विवाहका ठीक समय तब ही ठीक होता है कि, जब स्त्री पुरुष दोनोंकी अवस्था विवाहके योग्य हो और दोनोंके चित्तमें विवाहकी इच्छा भी कामोद्दीपनके साथ हो तभी परस्पर प्रीति भी बनी रहती है और जोडा भी ठीक मिल जाता है.

पद्मिनीआदि स्त्री लक्षण

कविमाधव लिखित—पद्मिनी लक्षण

सम्पूर्णेन्दुमुखी कुरंगनयना पीनस्तनी दक्षिणा मृद्वंगा विकचारविंदसुरभिः श्यामाथ गौरद्युतिः । स्वल्पाहाररता विलासकुशला हंसस्वना गायनी सव्रीडा गुरुदेवपूजनरता सा पद्मिनी प्रोच्यते ।। ३० ।

पूर्णचन्द्रमुखी अर्थात् पूर्णिमाके चन्द्रमाके समान (बहुत गोरे) मुखवाली, मृग (हरिण) के समान नेत्रोंवाली (मृगनयनी,) कठोर स्तनोंवाली, बुद्धिमती और कोमल अंगोंवाली तथा खिलेहुए कमलके समान सुगन्धिवाली, श्यामा अर्थात् गौर कांतिवाली, थोडा भोजन करनेवाली, कामक्रीडामें चतुरा, हंसके समान शब्दवाली और गान करनेवाली, लज्जावाली तथा

गुरुदेवताओंकी पूजामें तत्पर रहनेवाली, इन लक्षणोंवाली स्त्री पद्मिनी कही है ।। ३० ।।

चित्रिणी लक्षण

श्यामा पद्ममुखी कुरंगनयना क्षामोदरी वत्सला सङ्गीतागमवेदिनी वरतनुस्तुंगस्तनी शिल्पिनी । बाह्या लापरता मतङ्गजगतिः सत्कुंकुमार्द्रस्तनी मत्तेयं कविमाधवेन कथिता चित्रोपमा चित्रिणी ।।३१।।

श्यामा (श्यामवर्णवाली) अथवा षोडश वर्षकी अवस्थावाली जिसको बाला भी कहते हैं, किंवा, शीतकाले भवेदुष्णा ग्रीष्मे वा सुखशीतला। तप्तकांचनवर्णाभा सा स्त्री श्यामेति कीर्तिता ।।, अर्थ–शीतकालमें जिसका शरीर गरम हो और गरमीके समयमें जिसकी देह सुखशीतल हो और तपाये हुए सुवर्णके समान जिसकी कांति हो ऐसी स्त्री श्यामा कही है तथा कमलसमान मुखवाली, मृगके सदृश नेत्रोंवाली, सूक्ष्म उदरवाली, प्यारी मूर्ति जिसकी गानविद्याको जाननेवाली, उत्तम शरीरवाली, ऊंचे स्तनोंवाली, शिल्पविद्या जाननेवाली, इधर उधरकी बात करनेवाली, हाथीके समान गतिवाली (गजगामिनी), उत्तम कुंकुमसे आर्द्र स्तन जिसके, उन्मत्त रहनेवाली ऐसी विचित्र उपमावाली स्त्रीको कवि माधवने चित्रिणी कहा है ।। ३१ ।।

शंखिनीलक्षण

सूक्ष्माङ्गी कुटिलेक्षणा लघुकुचा संभोगसंवर्धिनी प्रायो दीर्घकचा स्वभावपिशुना कष्टोपभोग्या रतौ ।
पिङ्गा लोलगतिश्च बर्बरकृतप्राङ्गार्चनाह्लादिनी नानास्थाननखप्रचिह्निततनूः सेयं मता शंखिनी ।। ३२ ।।

छोटे छोटे अंगोंवाली, टेढे नेत्रोंवाली, छोटे छोटे स्तनों वाली, रतिक्रीडा बढानेवाली, प्रायः बडे (लंबे) केशवाली, खोटे स्वभाववाली, रतिसमयमें कष्टसे भोगीजाने वाली, पिंगल वर्ण, चंचलगतिवाली, अपने अंग सुधारनेमें प्रसन्न रहनेवाली तथा उनके स्थानोंपर नखों करके चिह्नित देहवाली ऐसी स्त्रीको शंखिनी कहा है अर्थात् ये लक्षण शंखिनी स्त्रीके हैं ।। ३२ ।।

हस्तिनीलक्षण

पीनस्वल्पतनुर्भृशं मृदुगतिः क्रूरा नमत्कन्धरा स्तोकं पिङ्गलकुन्तला पृथुकुचा लज्जाविहीनानना ।

बिम्बोष्ठी बहुभोज्यजनरुचिः कष्टैकसाध्या रतौ गौराङ्गी करि-दानगंधरुचिरा सेयं मता हस्तिनी ।। ३३ ।।

कठोर और सूक्ष्म शरीरवाली, मन्दगतिवाली, क्रूरस्वभाववाली, चलते समय ऊंचे कन्धोंवाली, छोटे २ पिंगलवर्ण हैं केश जिसके, बडे बडे कुचोंवाली, लज्जाहीन मुखवाली, कुंदरूके समान होंठवाली और बहुत भोज्यपदार्थके भोजन करनेमें रुचिवाली, कामक्रीडामें कष्टसे भोगीजानेवाली, गोरें अंग-वाली, जिस प्रकार हाथीके मद चूताहै उसी प्रकार स्राव होनेवाली ऐसे लक्षणवाली स्त्री हस्तिनी कही है ।। ३३ ।।

पद्मिनीचित्रिणीभेद

दोहा–बात करतमें नहिं हँसे, नहि परसों कछु प्रीति ।
पद्मिनिकी पहिचानि यह, कही कोककी रीति ।। २८ ।।
करैं प्रीति परपुरुषसों, बात करत मुसक्याय ।
चतुर चित्रिणी नारि जग, कोक कह्यो समझाय ।। २९ ।।
पद्मिनि चित्रिणि नारिको, इतनोई अन्तर मान ।
चित्रिणि हँसि बातैं करैं, पद्मिनि हँसे न जान ।। ३० ।।

शंखिनीलक्षण

दोहा–अंग स्थूल सु दुहुनके, अन्तर एतो जान ।
शंखिनिकी पतरी कमर, हस्तिनि मोटी जान ।। ३१ ।।
बात करतमें हँसि परत, शंखिनि कहिये जाय ।
हँसिहँसिके बातें करैं, हस्तिनि सोइ कहाय ।। ३२ ।।

योग्यायोग्य संभोग

शशकं पद्मिनी तुष्टा चित्रिणी रमते मृगम् ।
वृषभं शंखिनी तुष्टा हस्तिनी रमते हयम् ।। ३४ ।।

शशकसंज्ञक पुरुष और पद्मिनीका जोडा प्रसन्नचित्त रहताहै, एवं मृग-संज्ञक पुरुष और चित्रिणी स्त्रीका जोडा रमणमें सुयोग्य जानिये तथा वृषभ-संज्ञक पुरुष और शंखिनी स्त्रीका जोडा प्रसन्न रहता है और हस्तिनी स्त्री अश्वसंज्ञक पुरुषका रमणकार्यमें अच्छा जोडा होता है ।। ३४ ।।

सामान्ये नरनारीणां गर्भाधानं च जायते ।
हीनाधिक्येऽप्रजत्वंच कृशत्वं च परस्परात् ।। ३५ ।।

पुरुष स्त्रियोंके समान लक्षण होनेसे जो गर्भाधान होता है तो उत्तम

संतान उत्पन्न होती है तथा परस्पर हीन अधिक संयोगसे अर्थात् बेमेल पुरुष स्त्रियोंके योगसे उत्पन्न संतान दुर्बल अंग अथवा विकृत अंगवाली होती है ॥ ३५ ॥

पद्मिनी स्त्री और शशकसंज्ञ पुरुषसे उत्पन्न पुत्र धर्मात्मा व सुशील होता है और कन्या पतिव्रता व धर्ममें तत्परबुद्धिवाली होती है तथा चित्रिणी स्त्री और मृगसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र रूपवान् धनवान् होता है और कन्या विद्याधरीसे भी अधिक रूपवती होती है. शंखिनी स्त्री और वृषभसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र महाबाहु, महाभुज और महाबलवान् होता है और कन्या डाकिनी तथा अपने पुरुषका त्यागकर परपुरुषगामिनी होती है. हस्तिनी स्त्री और अश्वसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र महायोधा और महाबली होता है और कन्या सदैव परपुरुषगामिनी होती है.

पद्मिनी मृगसंयोग

पद्मिनी स्त्री और मृगसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र महाबलवान् व सुख दुःख भोगनेवाला होता है और कन्या अल्प आयु व धन धान्य आदिसे पूर्ण होती है.

पद्मिनी वृषभसंयोग

पद्मिनी स्त्री और वृषभसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र बैलके समान मत्त व दुराचारी होता है और कन्या दुराचारिणी व कुलको कलंक लगानेवाली होती है.

पद्मिनी अश्वसंयोग

पद्मिनी स्त्री और अश्वसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र नपुंसक अथवा राजयक्ष्मारोगी व दुःखी रहता है और कन्या धर्ममें तत्पर साध्वी व शुद्ध बुद्धिवाली होती है.

चित्रिणी शशकसंयोग

चित्रिणी स्त्री और शशकसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र सुशील स्वल्पायु होता है और कन्या दुःख भोगनेवाली व वृद्धपतिवाली होती है ।

चित्रिणी वृषभसंयोग

चित्रिणी स्त्री और वृषभसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र अकाल मृत्युको प्राप्त होता है और कन्या गर्भमेंही मरजाती है.

चित्रिणी अश्वसंयोग

चित्रिणी स्त्री और अश्वसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र थोडेही कालतक जीता है और कन्या एकनेत्रवाली श्वेतवर्ण होती है.

शंखिनी शशकसंयोग

शंखिनी स्त्री और शशकसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र धर्मात्मा होता है और कन्या सदा क्रोधयुक्त और दीर्घ आयुवाली होती है.

शंखिनी मृगसंयोग

शंखिनी स्त्री और मृगसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र दयाशील आदि सर्व गुणसंपन्न होता है और कन्या महासुंदरी बुद्धिमती गुणवती और पुत्र, पौत्र आदिको बढानेवाली होती है.

शंखिनी अश्वसंयोग

शंखिनी स्त्री और अश्वसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र जन्मान्ध व दुर्बल होता है और कन्या महाव्यभिचारिणी पतिघातिनी होती है.

हस्तिनी शशकसंयोग

हस्तिनी स्त्री और शशक संज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र अल्पायु (थोडी आयुवाला) और निर्बल होता है और कन्या रूपवती और अल्पायु (थोडे समयतक जीनेवाली) होती है. शशकसंज्ञक पुरुषसे हस्तिनी स्त्री कभी तृप्त नहीं होती है और न प्रसन्न रहती है इस कारण यह संयोग ठीक नहीं जानना.

हस्तिनी मृगसंयोग

हस्तिनी स्त्री और मृगसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र पशुके समान आचरण करनेवाला होता है और कन्या महाव्यभिचारिणी व पतिको मारनेवाली होती है.

हस्तिनी वृषभ संयोग

हस्तिनी स्त्री और वृषभसंज्ञक पुरुषसे उत्पन्न पुत्र महाबलवान् योधा व दुराचारी होता है और कन्या परपुरुषगामिनी होती है.

बालाद्यवस्था ।

सोलह वर्षकी स्त्रीकी बाला संज्ञा है, तदुपरान्त बत्तीस वर्षकी स्त्रीकी तरुणी संज्ञा है, उस पीछे पचास वर्षकी स्त्रीकी प्रौढा संज्ञा है, पचास वर्षके उपरान्त वृद्धा संज्ञा है, वृद्धा स्त्रीसे रमण कदापि न करे.

वृद्धोऽपि तरुणीं गत्वा तरुणत्वमवाप्नुयात् ।
वयोऽधिकां स्त्रियं गत्वा तरुणः स्थविरायते ।। ३६ ।।

वृद्ध अवस्थावाला (बूढा) पुरुष तरुण अवस्थावाली स्त्रीके रमण

करके तरुण हो जाता है और अधिक अवस्थावाली स्त्रीके साथ रमण करके तरुणपुरुष बूढेके समान हो जाता है ॥ ३६ ॥

उत्तमा स्त्री

जो स्त्री न बहुत श्यामवर्ण हो और न बहुत गौरवर्ण हो, किन्तु उज्ज्वल श्यामवर्ण हो, जिसका शरीर न बहुत छोटा न बहुत लंबा और जिसकी गति गजराजके समान हो, जिसके दांत बडे नहीं हों तथा जिसका करतल लोहित पद्मके सदृश हो वह स्त्री सती पतिव्रता और धर्मतत्परा होती है, उसीको उत्तमा कामिनी कहते हैं.

मध्यमा स्त्री

जिस नारीका शरीर न बहुत छोटा हो और न बहुत लंबा हो किन्तु सामान्य होवे और केश लम्बे हों, नाभि गहरी हो, जिसके देहमें आलस्य न हो, सुख पाकर बहुत प्रसन्न और दुःख पाकर बहुत व्याकुल न होती हो, सदैव प्रसन्नमुख और सबसे प्रेमपूर्वक सम्भाषण करनेवाली हो, नियम अचार और धर्ममें जिसकी निष्ठा रहती हो, जो भोजन प्राप्त होजायँ उसीमें सन्तुष्ट रहती हो, जो सबको समान दृष्टिसे देखती हो तथा देवता ब्राह्मण और गुरुजनोंमें जिसकी पूर्णभक्ति हो वह स्त्री मध्यमा कही है.

अधमा स्त्री

जिस स्त्रीके शरीरमें रोम बहुत हों, हाथ पांव क्षीण हो, दोनों नेत्र पिंगलवर्ण हों, जिसका शरीर हस्तिनी स्त्रीके समान लक्षणवाला हो, ऊंचे स्वरसे ठठ्ठा मारकर हंसनेवाली हो, लज्जाहीन हो, क्रोध करनेवाली हो, बहुत बात करनेवाली हो, हाथ पांव कठोर हों, केश थोडे हों और आचार निन्दनीय हो ऐसी स्त्री अधमा कही है.

पुरुषार्थ हेतु

जिस प्रकार स्त्रियाँ अकाल ऋतुकी पीडाओंकी यंत्रणा भोगती हैं उसी प्रकार भी अकाल (कुसमयमें) वीर्य नष्ट करके सदा निर्बल, आलसी, नपुंसक और संतानहीन तथा संसारसुखसे शून्य रहते हैं, इस कारण वीर्यकी सर्वदा रक्षा करना पुरुषमात्रका मुख्य काम है. पुरुषोंका यौवन व पुरुषार्थ वीर्यही है. वीर्यको पुष्ट व स्थिर रखना और संचय किया हुआ वीर्य उचित समयम व्यय (खर्च) करनाही परम पुरुषार्थका हेतु है, इसके रक्षणसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ सहजमेंही साधन किये जा सकते हैं.

विवाहयोग्यायोग्य कन्या

पिंगाक्षी कूपगंडा प्रविरलदशना क्षुद्रनेत्रातिखर्वा दीर्घा छिद्रांगलिर्वे वितरति कपिला दीर्घकेशी कुरूपा । लंबोष्ठी स्थूलनासा द्रुततर-गमना दन्तुरा कृष्णवर्णा सा नारी दासपत्नी भवति सुनियतं राज-पुत्री यदि स्यात् ।। ३७ ।।

जिस स्त्रीके नेत्र पीले हों, गंडस्थलमें कूप हो अर्थात् कपोलोंमें गढे पड जाते हों और दांत बिरले हों अर्थात् पृथक् २ दांत हों; नेत्र छोटे हों, आकृति बहुत छोटी हो अथवा बहुत बडी हो, अंगुलियोंमें छिद्र हों अर्थात् अंगुलियां पृथक् २ होवें और पिंगलवर्ण देह हो, केश बहुत हों तथा कुरूपा हो, होंठ लंबे हों, नासिका मोटी हो और बहुत शीघ्र गमन करनेवाली हो, ऊंचे दांतोंवाली तथा काले रंगकी जिह्वा जिसकी ऐसी नारी यदि राजकन्या भी हो तोभी दासकी स्त्री (दासी(होती है ।। ३७ ।।

पीनोरुः कंबुकण्ठी समसितदशना पद्मपत्रायताक्षी त्रिबोष्ठी तुङ्गनासा गजपतिगमना दक्षिणावर्तनाभिः । स्निग्धा चोत्तानकेशी कनकरुचिरता पूर्णचन्द्रानना वा भर्त्ता तस्याः क्षितीशो भवति च सुभगा पुत्रपौत्रान्विता च ।। ३८ ।।

जिस स्त्रीका ऊरुभाग स्थूल, शंखके सदृश कण्ठ, सम श्वेत दशन अर्थात् बराबर और उज्ज्वल दांतोंकी पंक्ति, कमलके समान विशालनेत्र, बिम्बा-फलके समान होठ, ऊंची नाक तथा नजराजके तुल्य गति (चाल(, दक्षिणावर्त नाभि, स्निग्ध (चिकने) अंग, कुंचित केश, कनककी सुंदरता व पूर्णचन्द्रमाके समान मुख ये लक्षण जिसमें हों उसका पति राजा हो और वह सौभाग्यवती पुत्रपौत्रोंसे युक्त होती है ।। ३८ ।।

कपिनेत्रा दीर्घकेशी काकवत्स्वरभाषिणी । कृष्णा कपिलकेशी च त्यक्तव्या सा सदा बुधैः ।। ३९ ।।

जिस स्त्रीके नेत्र कपि (वानर) के सदृश हों, केश घने हों, कौवेके समान शब्दवाली हो, कृष्णवर्ण हो, केशोंका रंग कपिल हो ऐसी स्त्री बुधजनों करके सदा त्याग करदेने योग्य है ।। ३९ ।।

यस्या गमनमात्रेण भूमिकम्पः प्रजायते । बह्वाशिनी प्रगल्भा च तां नारीं परिवर्जयेत् ।। ४० ।।

जिस स्त्रीके गमनमात्रसे भूमि कंप हो अर्थात् इस प्रकार चले मानो धरती हिलाती हो और जो स्त्री बहुत आहार करती हो, लज्जाहीन हो उस स्त्रीको त्याग करे ।। ४० ।।

यस्या गुल्फस्तु दीर्घः स्याच्छिद्रं पाणितले तथा ।
प्रलापं भाषते नित्यं तां नारी परिवर्जयेत् ।। ४१ ।।

जिस स्त्रीकी एंडी अथवा गांठ बडी हों तथा चरणतलमें छिद्र (खाली) हो और सदा बहुत बात करती हो उस स्त्रीको त्याग करे ।। ४१ ।।

विरला दशना यस्याः कृष्णाङ्गी कृष्णजिह्विका । भर्तारं प्रथमं हन्ति द्वितीयं सा च विन्दति ।। ४२ ।।

जिस स्त्रीके दांत विरले हों, कृष्णवर्ण हों और जिह्वा भी कृष्णवर्ण हो तो वह प्रथम पतिको हनती और दूसरे पतिको प्राप्त होती है ।। ४२ ।।

अत्युत्कटौ पदौ यस्या वक्षश्च विस्तृतं भवेत् । उत्तरोष्ठे च रोमाणि शीघ्रं सा भक्षयेत्पतिम् ।। ४३ ।।

जिस स्त्रीके दोनों पद अति उत्कट (बहुत कठोर) हों अर्थात् उतावलेकी नाई गमन करनेवाली हो और जिसका वक्षःस्थल विस्तृत हो तथा ऊपरवाले होंठके ऊपर लोम हों तो ऐसे लक्षणवाली स्त्रीका पति नहीं रहता है ।। ४३ ।।

पृष्ठावर्ता पतिं हंति नाभ्यावर्ता पतिव्रता ।
कक्षावर्ता तु स्वच्छन्दा पार्श्वावर्ता च बंधकी ।। ४४ ।।

जिस स्त्रीके पृष्ठ (पीठ) में आवर्त (भंवर) हो तो वह पतिको हनती है. नाभिपर आवर्त हो तो पतिव्रता होती है और कक्ष (कांख) पर आवर्त हो तो स्वेच्छाचारिणी होती है तथा पार्श्व बगलके नीचेके भागपर आवर्त हो तो वंध्या होती है ।। ४४ ।।

पारावताक्षी या काचिद्या काचित् स्थूलनासिका । सहस्रस्वामिनं हंति विशालाक्षीं विवर्जयेत् ।। ४५ ।।

जो कोई स्त्री कबूतर पक्षीके समान नेत्रवाली हो और जो कोई स्थूल नासिकावाली हो तो वह हजार स्वामियोंको हननेवाली होती है ऐसी विशालाक्षीको त्याग करे ।। ४५ ।।

चरणानामिका यस्याः क्षितिं न स्पृशते यदि । द्वितीया वा तृतीया वा सा कन्या सुखवर्जिता ।। ४६ ।।

जिसके दोनों चरणोंकी अनामिका अंगुलीका स्पर्श यदि पृथ्वीसे न हो अथवा दूसरी तीसरी अंगुली पृथ्वीपर न छू जाती हो वह कन्या सुखसे हीन होती है ।। ४६ ।।

कपिला पिंगला चैव कुटिलातिविशेषतः ।
रूक्षा च सर्वदा या स्यात्तां कन्यांपरिवर्जयेत् ।। ४७ ।।

जो कपिलवर्ण अथवा पिगल वर्ण हो और विशेष करके कुटिल स्वभाववाली हो, रूखे स्वभावकी अथवा कटुवादिनी और सदा क्रोध करनेवाली हो उस कन्याको परित्याग करदेवे ।। ४७ ।।

रम्याङ्गी सूयते पुत्रान् प्राप्नोति विपुलं सुखम् । या हि चम्पकवर्णा च नीलपंकजलोचना ।। राजपत्नी भवेत्सा तु ध्रुवं दासकुलेऽपि सा ।। ४८ ।।

जिसके सब अंग मनोहर होते हैं वह अनेक पुत्रोंको उत्पन्न करनेवाली होती है और बहुत सुख पाती है. जो चम्पाके समान वर्ण हो और नीलकमलके समान नेत्रोंवाली हो वह कन्या दासकुलमें होनेपर भी राजाकी पत्नी होती है ।। ४८ ।।

मध्ये कृशा कम्बुकण्ठी सुन्दरी कनकप्रभा । भृत्यानां च सहस्राणां स्वामिनीं तां बिदुर्बुधाः ।।

जिसका मध्यभाग क्षीण हो, शंखके सदृश कंठ हो, सुन्दरी हो, सुवर्णसमान कान्ति हो वह कन्या हजारों सेवकोंकी स्वामिनी (महारानी) होती है ऐसी बुधजनोंने कहा है ।। ४९ ।।

लोम्ना समाकीर्णतमाङ्गयष्टिर्धृष्टा कुदन्ता यदि पिङ्गलाक्षी ।
मध्ये च पुष्टा यदि राज्यकन्या कुलेऽपि योग्या न विवाहनीया । ५० ।

जिसके अंगोंपर रोम बहुत हों, जिसका स्वभाव ढीठ हो, दांत बडे और बिरले हों, यदि पिंगलवर्ण नेत्र हों तथा मध्यभाग (कटिप्रदेश) स्थूल हो तो ऐसे लक्षणवाली राजकन्या अच्छे कुलमें उत्पन्न होनेपर भी विवाह योग्य नहीं होती है ।। ५० ।।

नेत्रे यस्याः केकरे पिंगले वा स्याद्दुःशीला श्यावलोलेक्षणा च ।
कूपौ यस्या गण्डयोः सस्मिता या निस्सन्देहं बन्धकीं तां वदन्ति । ५१ ।

जिसके नेत्रमें फुल्ली हो अथवा जिसके नेत्र पिगल वर्ण हों अथवा जिसके शील दुःशील अथवा श्याम रक्तवर्ण मिश्रित और चंचल नेत्र हों, जिसके हंसनेपर दोनों कपोलोंमें गढे पडजाते हों, जिसके ये लक्षण हों वह कन्या निस्सन्देह वन्घ्या होती है ऐसा बुधजन कहते हैं ।। ५१ ।।

श्यामा सुकेशी तनुलोमराजी सुभ्रूः सुशीला सुगतिः सुदन्ता ।
वेदीविमध्या यदि पंकजाक्षी कुलेन हीनापि विवाहनीया ।। ५२ ।।

जो श्यामा (सुन्दरी शीतमें उष्ण और उष्ण कालमें शीत अंगवाली) हो, सुन्दर केशोंवाली, जिसके रोम सूक्ष्म हों, सुन्दर हों, सुशीला हो, गति जिसकी अच्छी हो, दांतोंकी पंक्ति बराबर हो, मध्यभाग वेदीके सदृश हो और यदि कमल समान नेत्रवाली हो तो ऐसे लक्षणों वाली कन्या हीनकुलमें उत्पन्न होनेपर भी विवाहके योग्य होती है ।। ५२ ।।

पुरुष सामुद्रिक भाषा

सुलक्षण और कुलक्षण स्त्री पुरुषोंका आकार देखनपरही जाने जा सकत हैं. परन्तु विशेषरीतिसे लिखदना भी उचित है. जिस पुरुषका वर्ण गौर, कृश शरीर, सूक्ष्म देह तथा कला और जांघपर बाल बहुत हों वह अत्यन्त कामी और बहुपुत्रवान् होता है. जिसका शरीर लंबा, गोधूमवर्ण, अत्यन्त चतुर और कृश देह हो वह पुत्रहीन अथवा अल्प सन्तानवाला होता है, जो छोटी ग्रीवा (गर्दन), सूक्ष्मदेह, चंचलस्वभाव हो वह कपटी और छली होता है. एवं काना, खंज, बिडालनेत्रका पुरुष पापात्मा और अविश्वास पात्र होता है. जिसका लिंग दक्षिणांग टेढा हो वह पुत्रसन्ततिवान् होता है और वामांग टेढा हो तो कन्याकी सन्तानवाला होता है; एवं जो लम्बदेह, स्थूलकाय, बहुभाषी, उच्चशब्दवाला हो वह मानी और अहंकारी होता है तथा जिसका मध्यभाग भारी, देह गौरवर्ण, शीघ्र बोलनवाला और बोलतेसमय जिसकी जीभ चटकती हो वा भेददंती हो वह अवश्य चतुर विद्वान् और बहुपुत्रवान् होता है तथा कृष्णवर्ण, छोटा शरीर, कुरूप, क्रूरस्वभाव पुरुष अवश्य झूंठा, छली व ठग होता है.

कामध्वज लक्षण

महद्भिरायुराख्यातं ह्यल्पलिंगो धनी नरः । अपत्यरहितो लोके स्थूललिंगो धनोज्झितः ।। ५३ ।।

पुरुषका कामध्वज ७ अंगुलसे १० अगुलतक होता है इससे यदि छोटा

(६ अंगुल) हो तो मनुष्य धनी होता है और स्थूल (मोटे) लिंगवाला पुरुष सन्तानहीन और निर्धनी होता है ।। ५३ ।।

वक्रे. वामनके चैव सुतान्नरहितो भवेत् । वक्रेऽन्यथा पुत्रवान्स्याद्दारिद्रं विन्दते त्वधः ।। ५४ ।।

जिस पुरुषका कामध्वज टेढा, छोटा और बाईं ओरको झुकाहुआ हो वह पुत्र और अन्न धनसे रहित होता है तथा जो दाहिनी ओरका झुकाहुआ प्रतीत हो तो वह पुरुष पुत्रवान् होता है और जो नीचेकी ओरको झुकाहुआ हो तो वह पुरुष दरिद्री होता है ।। ५४ ।।

अल्पे तु तनयो लिंगे शिरालेऽथ सुखी नरः । स्थूलग्रन्थियुते लिंगे भवेत्पुत्रादिसंयुतः ।। ५५ ।।

जिसका लिंग टेढा छोटा और ऊपरकी गांठ सुडौल लाल लाल ऊपरको उठी हुई हो तो वह मनुष्य संपूर्ण सुखको भोग करनेवाला होता है और जो लिंगके ऊपरकी गांठ मोटी हो अथवा बडा हो तो वह पुरुष पुत्र आदिसे युक्त होता है ।। ५५ ।।

दीर्घलिंगेन दारिद्रं स्थूललिंगेन निर्धनः । कृशलिंगेन सौभाग्यं ह्रस्वलिंगेन भूपतिः ।। ५६ ।।

मनुष्यका दीर्घ (बडा) लिंग होनेसे दरिद्री औरस्थूल (मोटे) लिंगसे धनहीन, कृश (पतले) लिंगसे भाग्यवान तथा ह्रस्व (छोटे) लिंगसे राजा होता है ।। ५६ ।।

कर्कशैः कठिनैर्लिङ्गैः परदाररतः सदा । रमते च सदा दास्या निर्धनो भवति ध्रुवम् ।। ५७ ।।

जिस मनुष्यका कामध्वज कर्कश (कठोर) और कडा हो वह मनुष्य पराई स्त्रीसे रमण करनेवाला होता है और सदा दासियोंसे रमण करनेवाला तथा निश्चय निर्धनी होता है ।। ५७ ।।

कृशलिंगेन रक्तेन लभते चोत्तमाङ्गनाः । राज्यं सुखं च दिव्यं च कन्यकायाः पतिर्भवेत् ।। ५८ ।।

कृश (पतला) और रक्तवर्ण लिग हो तो उस मनुष्यष्यको उत्तम स्त्री और दिव्य राज्यसुख प्राप्त होता है और वह कन्यका (थोडी अवस्थावाली स्त्री) का पति होता है ।। ५८ ।।

कृष्णलिंगेन सूक्ष्मेण रक्तलिंगेन भूपतिः । परस्त्रीं रमते नित्यं नारीणां वल्लभो भवेत् ।। ५९ ।।

जिस पुरुषका कामध्वज कृष्णवर्ण और पतला अथवा छोटा हो और लालरंग हो तो वह पृथ्वीका स्वामी होता है और सदा पराई स्त्रियोंसे रमण करनेवाला और स्त्रियोंका प्यारा होता है ।। ५९ ।।

सुलक्षण

जिस मनुष्यका मस्तक बडा हो, भरा हो, बराबर हो, चमकता हुआ हो, तथा मस्तकपर रेखा आदि न हों, शिरपर चंदुला हो, एवं आंखें बडी और रसीली मृगसमान हों, पुतली स्याह, नीलाहट लिये हों, तथा जिसके मुखपर प्रसन्नता रहती हो एवं जिसका चेहरा दमकता हुआ जान पडे, तथा जो अपनी इच्छापर चित्तको प्रसन्न रक्खे ऐसे लक्षणवाला पुरुष भाग्यवान् होता है. तथा जिसके वार्तालापसे सबका चित्त प्रसन्न होजाय, जिसका सम्भाषण हृदयग्राही हो, जिसका स्वभाव सरल हो, क्रोध शीघ्र न आता हो, अथवा जिसका क्रोध किसीपर प्रकाशित न होने पाता हो, अथवा क्रोधित होनेपर भी किसीके अनिष्टकी चिन्ता न करता हो ऐसा पुरुष भाग्यवान् होता है. एवं जिसके हाथ घुटनोंतक पहुंचे वह भाग्यवान् होता है.

कुलक्षण

जिसका शरीर दुबला और बेडौल हो, बात करते क्रोध आजाय, अथवा जिसको क्रोध शीघ्र आकर दूसरेपर प्रगट हो जाय, जिसका मस्तक ऊंचा नीचा और छोटा हो, जिसके मस्तकपर लकीरें हों, और जिसके नेत्र नीचेको झुके हों तथा जिसके नेत्र क्रोधसे युक्त रहते हों और जलदी २ पलक मारनेवाले हों, जिसकी वाणीसे जल्दी जल्दी बात निकलती हो, तथा जो कुवचन बोलनेवाला हो, जिसकी ग्रीवा छोटी हो, जिसके हंसनेपर गालोंमें गढे पड़ जायँ, जिसकी छाती पर रोम न हों, जिसके नेत्र कंज (बिलावके सदृश) हों, जिसके एक नेत्र हो, जो शीघ्र चलनेवाला हो, अथवा टेढी चालवाला हो, तथा जिसका बाया पांव पहले उठे, जिसके बोलनेके समय थूक बहुत आने लगे, बात करनेपर मुख कांपने लगे, मार्ग चलनेपर बडबडाताजाय इन लक्षणोंसे एक दो लक्षणवाला मनुष्य भी अवगुणी होता है. सुलक्षण और कुलक्षण इसी प्रकार स्त्रियोंमें भी जानना.

क्वचित्काणो भवेत्साधुः खल्वाटो निर्धनी क्वचित् । वक्रदन्तः क्वचिन्मूर्खः क्वचिद्गानवती सती ।। ६० ।।

एक नेत्रवाले मनुष्योंमें कोई एक साधु होता है, जिसके शिरपर चंदला होता है, वह कोई एक निर्धनी होता है, टेढे दांतवाला कोई एक मूर्ख होता है. एवं गानेवाली स्त्रियोंमें कोई एक पतिव्रता होती है ।। ६० ।।

स्त्री सामुद्रिक

जिस स्त्रीके चरणोंमें शंख, चक्र, कमल, रथ, ध्वज, मच्छ, विमान और चांदनीके आकार चिहन हों उसका पति ऐश्वर्यवाला होता है. जिस स्त्रीके चरणके तलुए कोमल हों, ऊंचे नीचे न हों और गुडहरके फूलके समान लाल हों तो वह स्त्री स्थूल देह कामबाधासे सन्तापित, राजाकी प्रियवल्लभा और धर्महीन होती है. जिसके चरणके तलुए खरखरे बुरे रंगके सूखे और रूखे हों वह स्त्री भाग्यहीन होती है, जिसके चरणका अंगूठा ऊंचा गोल और समान होता है वह स्त्री सुख भोगनेवाली होती है, तथा शूर्पाकार नखवाली स्त्री दुःख भोगनेवाली होती है. जिस स्त्रीके चलते समय मार्गमें धूल उडती जाय अथवा धूलको हाथसे उछालती चले वह माता पिता और पतिके कलंक लगानेवाली होती है. जिसके पांवकी अंगुली दूसरी अंगुलीपर चढी हो वह पतिको हननकर वेश्या हो जाती है. जिसके पांवकी छोटी अंगुली चलते समय पृथिवीको नहीं छुवे वह स्त्री निज पतिहंत्री और परपुरुषगामिनी होती है. जिसके चरणकी मध्यमा और अनामिका अंगुली भूमिको न छुवे वह स्त्री भी पतिहंत्री होती है. जिसके पांवके नख चिकने, ऊंचे, गोल और तांबेके समान हों, वह स्त्री बहुत सुख भोगनेवाली होती है. जिसके चरणके ऊपरकी पीठ स्वच्छ, कोमल कमलके समान लाल अथवा केशर व मूंगेके समान लाल हो वह गुणवती होती है. जिस स्त्रीके चरणकी अंगुलियोंके बीचमें निचाई हो वह दरिद्रिणी होती है. जिसके पांवके अंगुलियोंकी नसें अधिक हों वह मार्ग चलनेवाली होती है. तथा जिसकी अंगुलियोंपर रोम हों वह दासी होती है. जिसके गुल्फ मांसहीन हों अथवा मांसयुक्त पुष्ट शिरासहित गोल हों वह स्त्री सौभाग्यवती होती है. जिसके घुटने समान हों वह भाग्यवती और मोटे होनेसे भाग्यहीना, ऊंचे होनसे व्यभिचारिणी, लम्बे होनसे रोगिणी होती है, जिसके जंघा केलेके खंभके समान गोल, रोमहीन, स्थूल, चिकने और बराबर हों वह स्त्री ऐश्वर्यवाली होती है, इससे विपरीत हो तो भाग्यहीन होती है. जिसके कमर सूक्ष्म ऊंचे नितंबोंवाली चौवीस अंगुलकी चौडी हो वह दासियोंसे युक्त ऐश्वर्यवाली होती है. जिसकी कटि मांसहीन, नीची, लंबी, गहरी, चिपटा, गाडीके आकारवाली छोटी व रोमयुक्त हो वह विधवा होती है.

जिसके नितम्ब सुन्दर हों वह सुख भोगनेवाली और ऊंचे स्थूल बडे हों तो कामसुखको बढानेवाली होती है. जिसकी नाभि दक्षिणावर्त गहरी हो वह सुख भोगनेवाली और गांठके समान खुले मुखकी वामावर्त अच्छी नहीं होती. जिसका उदर बडा हो वह अनेक पुत्रोंवाली होती है, मेंढकके सदृश हो वह अनेक पुत्रोंवाली होती है, मेंढकके सदृश हो वह राजपुत्र जनती है, बहुत विस्तृत उदरवाली बली पुत्र जनती है. जिसका उदर ऊंचा हो वह वंध्या, कठोर हो वह नीच स्वभाववाली होती है. जिसका उदर घटाकार वा मृदंगाकार तथा यवाकार हो वह पुत्रहीन होती है और पेठेके आकार हो वह दुःखभागिनी होती है. जिसकी त्रिवली सूक्ष्म सरल हो वह रतिकेलिमें प्रेम बढानेवाली होती है और भूरे रंगकी कुटिल केशोंसे आच्छादित त्रिवलीवाली स्त्री दुष्ट वचन बोलनेवाली होती है, एवं विरल बडे आकारवाली त्रिवली अच्छी होती है. जिस स्त्रीका हृदय लोमरहित बराबर हो वह भोग भोगनेवाली और पिछली अवस्थामें प्रियतमसे वियोगवाली होती है. जिस स्त्रीके हृदयके ऊपर फटेसे रोम हों अथवा स्वयं उखडकर गिर जायँ तो वह स्त्री पतिहंत्री होती है. जिस स्त्रीका हृदय बहुत चौडा हो वह व्यभिचारिणी होती है. अठारह अंगुल चौडे हृदयवाली स्त्री सुख भोगनेवाली होती है. जिसका हृदय ऊंचा नीचा रोमयुक्त हो वह दरिद्रा होती है. जिस स्त्रीके दोनों कुच कठोर, समान, दृढ, घन, गोल और सुंदर हों वह पतिको हर्ष बढानेवाली होती है. जिसके स्तन मिलें न हों, नीचे नहीं हों और कठोर व स्थूल हों, दहिना स्तन कुछ बडा हो वह स्त्री पुत्रवती होती है. जो बायाँ स्तन बडा हो कन्या उत्पन्न करनेवाली होती है. जिसके स्तनोंके बीचके स्थान खाली हो और स्तन बडे हों तो अच्छे नहीं होते हैं. जिस स्त्रीके स्कन्ध पुष्ट हों वह कामान्ध रहती है और कन्धे नम्र हों तो पुत्रवती होती है, छोटे हों तो वह सुख भोगनेवाली होती है. जिसके स्कंध चौडे कठोर हों वह स्त्री धन्य होती है और ऊंचे मांसहीन पतले होनेसे वह स्त्री विधवा होती है जिस स्त्रीका अंगूठा और अंगुली कमलकी कलीके समान हों वह स्त्री अधिक सुख भोगनेवाली होती है. जिस स्त्रीकी भुजाओंसे हाथोंके तलुए यदि कोमल, स्वच्छ, कमल समान लाल ऊंचे हों तो वह स्त्री रतिकेलिसे अपने पतिको प्रसन्न करती है. जिस स्त्रीका हाथ बहुतसी रेखाओंसे युक्त हो अथवा रेखा नहीं हों तो वह विधवा होती है तथा जिसके हस्ततलपर स्वच्छ रेखा हो तो वह स्त्री सुखी रहती है. जिस स्त्रीका हाथ बहुतसी नसोंसे भरा हो तो दरिद्रा और हाथकी

पीठ ऊंची तथा विना नसोंवाली हो तो वह स्त्री सुख भोगनेवाली होती है. जिस स्त्रीकी हथेलीपर कमलका चिह्न हो वह रानी होती है और उसका पुत्र भी पराक्रमी और तेजस्वी होता है. जिस स्त्रीके हाथके अंगूठेकी जडसे छोटी अंगुलीकी जडतक रेखा गई हो तो वह पतिहंत्री होती है. जिसके हाथमें शुभ वस्तुओंका आकार हो वह सुखभागिनी और अशुभ वस्तुओंका आकार हो वह दुःखभागिनी होती है । जिस स्त्रीके हाथका अंगूठा सीधा, कोमल गोल और अंगुली क्रमसे छोटी लंबी और गोल हों ऊपर रोम जमे हों, मध्यभागमें रेखायें बहुतसी हों वह भाग्यवाली होती है. इससे विपरीत होनेसे दरिद्रा होती है जिसके नखोंमें सफेद रंगके बूंद हों वह बहुत कामवती होती है. जिसके नख शंख वा सीपके समान हों नीचेको झुके और कुरूप हों एवं कपिल व भूरे रंगके हों वह स्त्री कुलक्षणवाली होती है.जिस स्त्रीकी पीठकी हड्डी मांसमें मिली हुई हो वह पतिकी प्यारी और जिसकी पीठमें बहुत रोम हों वह विधवा होती है. जिस स्त्रीका कंठ गोल वर्तुलाकार, ऊंचा, दर्शनीय और चार अंगुल लम्बा हो वह स्त्री अपने पतिकी प्यारी होती है. जिसकी ग्रीवा मोटी हो वह स्त्री अपने पतिमें आसक्त रहती है और जिस स्त्रीके कंठका रंग लाल हो वह दासी होती है. जिस स्त्रीकी ग्रीवा चपटी और पतली हो वह पतिहीन और छोटी ग्रीवा होनेसे धनहीन होती है. स्त्रीकी ठोडी भारी रोमहीन और कोमल अच्छी होती है और जो रोमवाली मोटी तथा छोटी हो तो अच्छी नहीं होती है. स्त्रीके गाल मोटे भारी ऊंचे गोल अच्छे होते हैं और मांसहीन कुटिल और रोमवाले होनेसे अच्छे नहीं होते हैं, जिस स्त्रीके होंठ गोल, रेखा-युक्त, लाल, चिकने हों तो वह स्त्री राजाकी प्रिया होती है तथा जिसके होंठ लम्बे पुरुषके होंठके समान फटे हुए मांसहीन हों वह अभागिनी होती है और काले होंठवालीपतिहीन होती है. जिस स्त्रीके दांत नीचे ऊपरके बराबर हों और मिले हुए हों, दांतके ऊपर दांत न चढा हो, गिनतीमें पूरे बत्तीस हों और दूधके समान श्वेत हों तो वह स्त्री सौभाग्यवती होती है तथा जिस स्त्रीके नीचेके दांत ऊपरके दांतोंसे बडे हों अथवा अधिक हों तो वह स्त्री मातासे हीन और दुःख पानेवाली होती है. जो दांत विकट हों तो पतिहीना और बीचमें छिदे हों तो व्यभिचारिणी होती है. जिस स्त्रीकी जीभ नरम, बराबर, लाल, सफेद रंगकी हो तो वह स्त्री भाग्यवती होती है और जो बीचमें, विकृतवाली हो तो सुखहीन होती है, जिसकी जीभ काली हो वह कलहा और मोटी हो तो धनहीन तथा लंबी हो तो अभक्ष्य पदार्थ भक्षण करनेवाली

होती है. जिस स्त्रीका तालु लाल कमलके समान हो तो वह स्त्री सौभाग्यवती और पीला होनेसे तपस्विनी तथा सफेद होनेसे पतिविहीन होती है. जिस स्त्रीकी नासिका छोटे छिद्रके समान और गोल पुटकी हो वह भाग्यवती होती है और नासिकाका अग्रभाग स्थूल और बीचमें नीचा हो तो वह दरिद्रा होती है. तथा जिसकी नासिकाका अग्रभाग लाल और टेढा हो वह स्त्री पतिहीना होती है. एवं चपटी नाकवाली दासी और लम्बी नाकवाली कलहा होती है. जो स्त्री नेत्र बंद किये विना उत्तम दृष्टि करके बोले और बोलते समय गाल कमलके समान प्रफुल्लित मुखसे शोभित हो. दांत दिखाई न देवें ऐसे मुसक्यानवाली स्त्री भाग्यवती होती है. जिस स्त्रीके नेत्रोंके अंतिमभाग लाल हों और नेत्रोंके बीचका तारा काला, बाहरकी पुतली शंखके समान अथवा दूधके तुल्य सफेद, पलक कोमल और उनके बाल काले हों तो वह भाग्यवती होती है. जिस स्त्रीके नेत्र ऊंचे हों वह अल्पायु होती है. गोल नेत्रोंवाली व्यभिचारिणी तथा बकरी कॅकडा और भैंसके समान नेत्रोंवाली अभागिनी होती है तथा पिंगल व कबूतरके समान नेत्रोंवाली दुष्टा, एवं कोटरके समान नेत्रोंवाली महादुष्टा, लाल नेत्रोंवाली पतिहंत्री, बिल्ली व हाथीके समान नेत्रोंवाली कुलनाशिनी, दाहिने नेत्रसे काणी वन्ध्या और वामनेत्रसे काणी कुलटा होती है. एवं शहतके समान पीले नेत्रोंवाली धनवती, पतिव्रता और पुत्र पौत्र आदिसे युक्त होती है तथा जिस स्त्रीके पलक काले, कोमल, सघन और छोटे हों वह स्त्री भाग्यवती और पतिप्रिया होती है. जिसके पलक केशहीन और थोडे केश हों अथवा मोटे केश हों लंबे और कपिलवर्ण हों तो वह परपुरुषगामिनी होती है, जिस स्त्रीकी भौंहें नरम, गोल, काली, धनुषाकार हों, वह स्त्री कामकलामें प्रवीण होती है. तथा जिसकी भृकुटी कपिल वर्ण, मोटी, सीधी, मिली हुई अथवा लम्बे बालोंवाली झुकी दुई हों वा विना केशकी हों तो वह स्त्री निर्धनवती होती है, स्त्रीके कान लम्बे गोल हों तो अच्छे होते हैं और जो पतले हों उसपर नसें बहुत हों तो अच्छे नहीं होते हैं, जिस स्त्रीका मस्तक तीन अंगुल ऊंचा, कोमल, अर्द्धचंद्राकार हो वह स्त्री परम भाग्यवती होती है. जिस स्त्रीका मस्तक चूलीके समान ऊंचा हो, बहुत लम्बा हो तो वह वन्ध्या और कुलनाशिनी होती है. जिस स्त्रीके दांत बडे बडे, नासिका ऊंची, ज़ीभ काली, कठोर भाषणवाली, अधिक आहार करनेवाली और लज्जारहित हो वह कुलक्षण होती है. जिस स्त्रीके वाम कुक्षिपर लकीर पडी हो वह वन्ध्या और जिसकी रीढपर लकीर हो वह व्यभिचारिणी तथा नाभिपर लकीर हो

वह पतिव्रता और पीठपर लकीर हो वह पतिघातिनी होती है. जिस स्त्रीके कपोलोंमें हंसते समय गढे पडजाते हों वह बन्ध्या और अधर व भौंहें चपल वह चंचला और कुष्ठा होती है. जिस स्त्रीके ऊपरके होंठपर बाल हों और घरके द्वारपर बार बार जाये वह पतिके संग कलह करनेवाली और व्यभिचारिणी होती है. जिस स्त्रीका स्वभाव तामसी हो और जिसकी भौहें मिली हों उसका विश्वास कभी नहीं करना चाहिये. जिस स्त्रीके चरणकी तर्जनी अंगुली अंगूठेसे लंबी हो वह व्यभिचारिणी तथा पतिहीना होती है. जो स्त्री ह्रस्वकाय,श्यामनयना हो वह व्यभिचारिणी होती है जिसके हाथ, पांव भारी, अंगुली छोटी, किंचित् स्थूलकाय, मध्य देह, गौरवर्ण वह भी व्यभिचारिणी, निर्लज्जा और निर्भय होती है तथा जो स्त्री लंबी, कृशशरीर पिंडली और कलाईपर बाल, शीघ्र चलनेवाली हो और जिसका पांव चलते समय मध्यसे भूमिपर न लगे वह भी व्यभिचारिणी होती है. जिस स्त्रीके कुच, नितम्ब गमन करते समय हिले तथा शीघ्र और तिरछी चाल वा दृष्टिवाली हो वह भी व्यभिचारिणी होती है. जिस स्त्रीके लक्षण बहुत अच्छे हों वह यदि अल्पायुवाले पतिको भी प्राप्त हो तो उसके पतिकी दीर्घायु हो जाती है. एवं जो स्त्री कुलक्षणा भी हो और सुलक्षण पतिको प्राप्त हो तो उसको कुछ सुख प्राप्त होसकता है.

केशा यस्या भ्रमरपटलीपक्षवर्णाः सुवर्णाः वक्राकाराः कुवलयदृशां किंचिदाकुंचिताग्राः । भाग्यं सद्यो ददति विरलाः पिंगलाः स्थूलरूपा रूक्षाकाराः परमलघवो बन्धवैधव्यदुःखम् ।। ६१ ।।

जिस मृगनयनी स्त्रीके शिरके केश भौराओंके समूह सदृश काले रंगके चमकीले टेढे और कुछ घुंघुरवारे नोकदार होवें तो शीघ्र भाग्यकी वृद्धि करनेवाले होते हैं और जो विरले पिंगल वर्ण (पीले(रूखे अथवा बहुत छोटे हों तो बन्धन, वैधव्य और दुःख देनेवाले होते हैं ।। ६१ ।।

मशकोऽपि ललाटपट्टवर्ती यदि जार्गति स मध्यगो भ्रुवोर्वा । तनुते सुखमर्थराशिभोगं सततं पत्युरपत्यभृत्ययोश्च ।। ६२ ।।

यदि स्त्रीके ललाटपर अथवा भौंहोंके बीचमें छोटे व्रणके सदृश मस्सा हो तो वह स्त्री सुख, धन, अनेक प्रकारके भोग और निरन्तर पति, पुत्र व सेवकजनोंका जो सुख है उस सुखको प्राप्त होवे अर्थात् सदा सुखी रहे ।। ६२ ।।

मशकोऽपि कपोलमध्यगामी सुदृशो लोहित एवमिष्टदः स्यात् ।
हृदयं तिलकेन शोभितं वा लेशुनेनापि च राज्यकारणम् ।। ६३ ।।

जिस सुनयनी स्त्रीके बीच गालपर लाल लाल मस्सा हो तो इच्छानुसार उसका कार्य सिद्ध होता है और जो तिल वा लहसन हृदयपर हो तो राज्य प्राप्त होता है ।। ६३ ।।

लोहितेन तिलकेन मण्डितं सुभ्रुवो हि कुचमण्डलं यदा । जायते किल सुताचतुष्टयं बालक-त्रयमुदीरितं तदा ।। ६४ ।।

यदि सुन्दर भृकुटीवाली स्त्रीके स्तनमण्डलपर जो लाल तिल हो तो निश्चय उस स्त्रीके चार कन्यायें उत्पन्न होवें और तीन पुत्र उत्पन्न होवें ऐसा पूर्वाचार्योंने कहा है ।। ६४ ।।

भवति वामकुचेऽरुणलाञ्छनं शुभदृशस्तिलकं कमलप्रभम् । प्रथमत-स्तनयं परिसूय सा कृतिवरं विधवा तदनन्तरम् ।। ६५ ।।

जिस सुनयनी स्त्रीके बायें कुचपर लाल चिह्न हो अथवा कमलके रंग समान तिल हो तो उस स्त्रीके प्रथम एक सुपुत्र प्रगट हो अनंतर वह विधवा हो जावे ।। ६५ ।।

लसति बालमधुव्रतसन्निभं शुभ दृशस्तिलकं गुददक्षिणे । नरपतेरबला कमलालया नृपमपत्यमरं जनयेदलम् ।। ६६ ।।

जिस सुनयनी स्त्रीके छोटे भौंरोंके समूहके आकार (काला) तिल गुदाके दक्षिण भागमें हो तो वह राजाकी स्त्री होवे और उसके घरमें लक्ष्मीका वास हो तथा वह सुन्दर राजपुत्रको उत्पन्न करनेवाली होवे ।। ६६ ।।

मशकोऽपि च नासिकाग्रगामी सुदृशो विद्रुमकांतिरर्थदायी । अलि-पक्षनवाभ्ररूपधारी पतिहन्त्री किल पुंश्चली विशेषात् ।। ६७ ।।

जिस सुनयनी स्त्रीके नाकके आगे मूंगेकी कांतिके सदृश मस्सा हो तो द्रव्यको देनेवाला जानना और जो भौंरेके पंखसमान अथवा नवीन मेघके समान रूपवाला हो तो वह स्त्री निश्चय करके अपने पतिको हनन करनेवाली और विशेष करके व्यभिचारिणी होती है ।। ६७ ।।

यदि नाभेरधोभागे तिलकं लांछनं स्फुटम् ।
सौभाग्यसूचकं ज्ञेयं मशको वा नतभ्रुवाम् ।। ६८ ।।

यदि झुकी हुई भौंहवाली स्त्रीकी नाभिके नीचे तिल वा लहसन प्रगट दीखपडे तो ऐसे चिह्नवाली स्त्री सौभाग्यवती रहती है ॥ ६८ ॥

यदि करे च कपोलतलेऽथवा भवति कंठगतं तिलकं तदा । श्रुति-तलेऽपि च सा पतिवल्लभा वरदृशो मशकामललांछनैः ॥ ६९ ॥

यदि सुनयनी स्त्रीकी हथेली वा कपोलपर अथवा कण्ठ यद्वा कानके नीचे तिल हो तो वह स्त्री पतिकी प्यारी होवे. एवं मस्सा अथवा प्रगट आदि चिह्न हों तो भी वह स्त्री अपने पतिकी प्यारी होवे ॥ ६९ ॥

अश्वत्थदलरूपो वा भगो गूढमणिः शुभः ।
चुल्लिकोदररूपो यः कुरङ्गखुरसन्निभः ॥ ७० ॥
रोमाकुलोऽदृष्टयोनिर्विकृतास्यो महाधमः ।
कामिनां न विनोदार्होभगो भवति सर्वथा ॥ ७१ ।
कामिन्याः कंचुकावर्तो भगो दौर्भाग्यवर्द्धकः ।
स गर्भधारणाशक्तो वक्रकारोऽपि तादृशः॥७२॥

जिस स्त्रीका भग पीपलके आकार हो अथवा गुप्तमणिके सदृश हो तो शुभ होता है तथा जो चूल्हेके पेटके समान अथवा हरिणके खुरके सदृश हो तथा बहुत रोमोंसे युक्त हो कि जिससे जननेन्द्रिय दिखाई न देवे और जिसका मुख विकारवाला हो अर्थात् देखनेमें अच्छी नहीं होवे ऐसी जननेन्द्रिय अधम जानना. सो सर्वथा कामी पतिके आनंद हेतु नहीं होती है. जिस कामिनीकी योनि कंचुकावर्त हो अर्थात् दोनों ओर ऊंची बीचमें खाली हो तो ऐसी योनि दुर्भाग्यको बढानेवाली होती है और वह गर्भ धारणके योग्य नहीं होती है तथा जो टेढे आकारकी हो तो भी दुर्भाग्य बढानेवाली और गर्भधारणमें असमर्थ जानना ॥–७२ ॥

यदा गजस्कन्धसमानरूपो भगोऽ थ वा कच्छपपृष्ठवेषः । इलापते कामविनोददायी वामोन्नतः सोऽपि सुताजनेता ॥ ७३ ॥

जिस स्त्रीकी जननेंद्रिय हाथीके कन्धेके सदृश रूपवाली हो अथवा कछुएकी पीठके आकार हो वह राजाको काम-क्रीडा द्वारा आनंद देनेवाली (राजपत्नी) होती है तथा जिसकी योनि ऊपरको उठी हुई होवे ऐसी योनि-वाली स्त्री कन्याओंको उत्पन्न करनेवाली होती है ॥ ७३ ॥

मृदुला विपुला बस्तिः शोभना च समुन्नता ।
अशुभा रेखयाक्रान्ता शिराला लोमसंकुला ।। ७४ ।।
शंखावर्तो भगो यस्याः सा गर्भमिह नेच्छति ।
वामोन्नतश्च कन्यादः पुत्रदो दक्षिणोन्नतः ।। ७५ ।।
तदेव दक्षिणावर्तं मांसलं शुभसूचकम् ।
वामावर्तं खंडितं स्यात् कामिनी व्यभिचारिणी ।। ७६ ।।
निर्मांसं कुटिलाकारं रूक्ष वैधव्यसूचकम् ।
अतिस्थूलं महादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यकारकम् ।। ७७ ।।

जिस स्त्रीकी योनि कोमल, बडी और ऊंची हो तो शुभ जानना और बहुत रेखा व नसोंवाली तथा रोमवाली हो तो अशुभ जानना जिस स्त्रीकी योनि शंखावर्त अर्थात् शंखके समान घूमी हुई एक ओर मोटी और एक ओर पतली हो तो ऐसी योनि गर्भको धारण करनेवाली नहीं होती है. यदि स्त्रीकी योनि बायें ओरको ऊंची हो तो कन्याओंको प्रगट करनेवाली होती है और जो दाहिनी ओरको ऊंची हो तो पुत्र उत्पन्न करनेवाली होती है और जिस स्त्रीकी योनि दाहिनी ओरको घूमीहुई और मोटी हो तो शुभ होती है और जो बाईं ओरको घूमीहुई व किसी स्थानपर खंडित हो तो ऐसी योनिवाली कामिनी व्यभिचारिणी होती है तथा जिस स्त्रीका भग मांसरहित कुछ टेढासा, रूखा हो तो वैधव्यसूचक जानना अर्थात् विधवा करता है और जो भग बहुत मोटा और बहुत लंबा हो तो शीघ्र भाग्यहीन करनेवाला होता है । ७४–७७ ।।

मृदुतल मृदुरोमकुलाकुलं यदि तदा जघनं भगभाजनम् । उत्त समुन्नतमायतमादरात्पतिकलाकलितं गदितं बुधैः ।। ७८ ।।

जिस स्त्रीका भग बहुत कोमल और कोमलरोमोंसे युक्त हो तो वह ऐश्वर्य प्रदाता होता है. तथा जो ऊंचा, बडा, चमकदार हो तो वह आदरपूर्वक पतिकलासे शोभित अर्थात् जिसके देखने छूनेसे चित्तकी उमंग बढे, ऐसा भी ऐश्वर्यको बढानेवाला बुधजनोंने कहा है ।। ७८ ।।

यदि पादनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः । ताम्रवर्णा मृगाक्षीणं महाभोगप्रदायकाः ।। ७९ ।।

यदि स्त्रीके चरणोंके नख चिकने गोल उठे हुए तांबेके रंगके समान हों तो वे स्त्रियोंके उत्तम भोग ऐश्वर्य प्रदान करनेवाले होते हैं ॥ ७९ ॥

प्रलंबिनी ललाटे च देवरं हन्ति चाङ्गना ।
उदरे श्वशुरं हन्ति पतिं हन्ति स्फिचोर्द्वयोः ॥ ८० ॥

जिस अंगनाका ललाट लंबायमान हो वह अपने देवर (पतिके छोटे भाई) को विनाश करती है अर्थात् लम्बे शिरवाली स्त्रीका देवर मर जावे और जिस स्त्रीका उदर (पेट) बहुत लम्बा हो तो वह स्त्री अपने श्वशुरको हनती है अर्थात् लम्बे पेटवालीका श्वशुर मर जावे और जिस स्त्रीके दोनों नितंब ऊपरको चढे हुए हों वह स्त्री पतिहंत्री होवे अर्थात् उसका पति नहीं रहे ॥ ८० ॥

चौर्याय पुष्टकर्णौ च दीर्घौ भर्तुश्च मृत्यवे ।
क्रव्यादरूपैर्हस्तैश्च वृक-कंकादिसन्निभैः ॥८१ ॥

जिस स्त्रीके दोनों कान पुष्ट हों तो वह स्त्री चोरी करनेमें प्रवीण होवे और जिसके कान बडे बडे हों वह पतिहंत्री होवे अर्थात् उसका पति नहीं रहे तथा जिसके हाथ (वृक) भेडिया गीध आदिकोंके समान हों तथा क्रव्यादरूप. हों वह स्त्री भी विधवा होवे ॥ ८१ ॥

स्त्रीणां पुंसां तथा सम्यग्राज्याय च सुखाय च ।
पुत्रपौत्रादिसम्पन्ना चोर्ध्वरेखा सुखप्रदा ॥ ८२ ॥

जिन स्त्रियों तथा पुरुषोंके हाथमें वा चरणतलमें ऊर्ध्व रेखा प्रत्यक्ष दीख पडे तो राज्य व सुख पूर्ण प्रकारसे प्राप्त होवे और पुत्र पौत्र आदिकोंसे संपूर्ण सुख सदा प्राप्त होवे ॥ ८२ ॥

यह प्रसंगवश सामुद्रिकरीति स्त्रीपुरुषोंके लक्षण संक्षेपसे लिखकर प्रकाशित किये हैं, प्रायः लोग सामुद्रिक शकुन और ज्योतिषके फलितको असत्य समझते हैं उनका भ्रम है. क्योंकि प्राचीन आचार्योंने सामुद्रिक और शकुन आदिकी भलीभांति परीक्षा करके लेखनी उठाई है जिन्होंने शकुनादि ग्रन्थ भलीभांति नहीं देखे, पढे और नहीं समझे हैं उनको कैसे ज्ञात हो सकता है कि, ये सत्य नहीं है. जो पुरुष जिस विद्याको भलीभांति नहीं पढा और न परीक्षा की है वह पुरुष उसमें कैसे सुबोध होसकता है ? जो जिसको नहीं जानता वह उसकी निन्दा कर देता है. जैसे आज कुलके नवीन मतानुयायी असत्य और असंभव शब्दका प्रयोग अधिक करते हैं. एक लोमडीने एक ऊंचे

वृक्षपरके अंगूर जब न पाये तब उनको खट्टा बताकर अपना मन समझा लिया. इसी प्रकार अपनेको सर्वज्ञ समझकर धूर्त्तलोग प्रत्येक बातमें असभव और असत्यका पचडा लगादेते हैं. ज्योतिषके फलितके विषयमें युक्ति प्रमाण हमने "जन्मपत्रीप्रदीप" ग्रन्थमें लिखकर शंका समाधान कर दिया है. परंतु हठवादीका समाधान करनेके लिये कोई भी समर्थ नहीं है. फलित कहनेके लिये प्रथम उसके मननकी परम आवश्यकता है.

देशभेदं ग्रहगणितं जातककुलमवलोक्य निरवशेषमपि। यः कथयति शुभाशुभं तरस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ।। ८३ ।।

देशभेद, ग्रहगणित, जातक कुल आदि सब बातोंका ध्यान कर जो शुभ वा अशुभ कहता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती है ।। ८३ ।।

लावण्य (सुन्दरता)

संसारमें लावण्य (सुन्दरता) भी एक परमोत्तम पदार्थ है. उसका रूपसे सम्बन्ध तो अवश्य है परन्तु रूप दूसरा पदार्थ है, जिसका वर्णन हम आगे संक्षेप रीतिसे लिखेंगे. संसारभरके स्त्री पुरुष इससे रहित नहीं हैं. इस बातका अभिमान सब करते हैं कि, हममें सुन्दरता है. परन्तु यह सुन्दरता पृथक् पृथक् भावसे सबके हृदयमें निवास करती है. सुन्दरता गुणोंके आधीन है. अपने अपने गुणोंसे सब कोई सुन्दर है. जैसा आचार विचार मनुष्यका होता है, उसी अनुसार उसमें सुन्दरताका प्रकाश होता है अर्थात् जिसका आचार और विचार शुद्ध होता है उसकी सुन्दरता भी शुद्ध भावमें प्रकाश करती है और जिसका आचार विचार शुद्ध नहीं होता उसकी सुन्दरतामें भी विघ्न पड जाता है. जो मनुष्य खोटे काम करते हैं उनकी सुन्दरतासे भी मनुष्योंको भय उत्पन्न होता है उसको देखकर यही चित्तमें होता है कि, यह हमारे सामनेसे टल जाय और कभी हमारे सम्मुख न आवे जैसे डाकू चोर आदि. और जो मनुष्य अच्छे काम करते हैं वे सुन्दरतासे रहित होनेपर भी सुन्दरताके भावसे देखे जाते हैं उनको देखतेही चित्त प्रसन्न होता है और चित्तमें यही भाव उदय होता है कि यह मनुष्य सदैव हमारी दृष्टिके सामने रहे जैसे साधु, सन्त, धर्मात्मा और सज्जन पुरुष. इन बातोंको विचारकर प्रत्येक मनुष्य अपने उत्तम गुणोंसे सुन्दरताको प्राप्त होसकता है. ,गुणाः प्रधानतां यांति आकृतिर्न गरीयसी ।, अर्थात् गुण प्रधानताको प्राप्त होते हैं यहां आकृतिकी बडाई नहीं है. जो मनुष्य अपने शुभ गुणोंसे युक्त रहे तो मरणपर्यंत उसको

सुन्दरता नहीं छोड़ती अर्थात् उसकी सुन्दरतामें कुछ भी भेद नहीं पड़ता है. रूपकी सुन्दरता ऐसी है कि आज जो रूपवान् है वही कलको कुरूपवाला होकर घृणा करनेके योग्य हो जाता है. एक उसके रूपपर मोहित होकर उसपर मरने लगता है. दूसरा उसी रूपको देखकर घृणा करता है. और उसको देखतेही क्रोधमें भर जाता है. भावार्थ यह कि, जिसके आचरण अर्थात् जिसका चालचन अच्छा है वही सुन्दर है और यह सुन्दरता उसकी सर्वदा रहती है. और जिसके आचरण अर्थात् जिस का चालचलन अच्छा नहीं वही सुन्दरतासे हीन है. जो मनुष्य अच्छे मनुष्योंमें बैठते हैं, अच्छे अच्छे पुस्तक पढते हैं, अच्छा व्यापार करते हैं, आहार व्यवहार शुद्ध रीतिसे करते हैं, कभी अपने स्वभावको अदलबदल नहीं होने देते, अनिष्ट बातोंकी ओर ध्यान नहीं देते हैं, चित्तको सर्वदा प्रसन्न रखते हैं, वेही मनुष्य सबको सुन्दर दीख पडते हैं, और जो मनुष्य सर्वदा क्रोधयुक्त रहते हैं, कटु वचन मुखसे बोलते रहते हैं तथा सदा अप्रसन्नचित्त रहते हैं, निकृष्टमनुष्योंमें बैठते हैं, तामसी भोजन करते हैं, नशा आदि पीते हैं उनको देखकर सबको भय लगता है, उनकी सुन्दरता भी लोगोंको अच्छी नहीं लगती कि, हमारे साथ यह अनुचित वर्ताव न कर बैठे. यह लावण्य भाव दर्शाकर आगे रूपके विषयमें लिखते हैं.

रूप

रूपवान् होना भी संसारमें दुर्लभ है जिसको भगवान रूपदेता है, उसमें कुछ अवगुण भी साथही होता है कि, जिससे रूपपर लांछन आजाता है. ऐसा कोई भी रूपवान संसारमें नहीं हुआ जिसने शुभ गुणोंके साथ प्रतिष्ठा न पाई हो. देखो श्रीरामचंद्रजी महराज यद्यपि श्यामवर्ण थे परन्तु उनमें रूपकी छटा थी, अंगप्रत्यंग सब सुडौल थे, मनोहर रूप होनेके कारण उनको देखतेही दूसरे लोग मोहित हो जाते थे और प्रशंसा करते थे, परन्तु साथ ही उनमें शुभगुण भी वर्तमान थे, इसीसे माना जाता है कि, ईश्वरका पूर्ण अंश उनमें विद्यमान था. इसी प्रकार श्रीकृष्णचंद्रजी भी थे कि शत्रु भी उनका आदर करते थे. जिसके सब अंग प्रत्यंग सुन्दर और मनोहर हों वही रूपवान् होता है. जो जो पुरुष ऐसे रूपवान् हुए हैं उनका नाम अबतक जगत्में विख्यात है जैसे राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, श्रीकृष्ण, बलराम, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, शिव, अश्विनीकुमार आदि. रूपमें आजकल मुख प्रधान माना जाता है.

जिसका मुख देखनेमें अच्छा होता है वही रूपवान् समझा जाता है. मुख देखकरही उसकी सुन्दरताका परिचय मिलता है. परंतु रूपवान् तभीतक अपने रूपको ठीक धारण करता है, जबतक वह ब्रह्मचर्य रहकर वीर्यकी रक्षा करता है, जहां वीर्यकी रक्षासे रहित हुआ कि मानो उसने अपने रूपपर प्रहार किया. वीर्य नष्ट होतेही रूपमें अन्तर होने लगता है. चमक दमक (तेज) घटकर शरीर मुरझा जाता है. मुख झूरा होजाता है. क्योंकि शरीरमें वीर्यही रूप, बल, तेजका कारण है. वीर्यरक्षाकेही प्रभावसे लक्ष्मणजीने मेघनादका वध किया. वीर्यरक्षाकेही प्रभावसे हनुमानजीने संसारमें नाम पाया. वीर्यरक्षाकेही प्रभावसे भीष्मजी अजेय थे. जिनको जीतनेवाला कोई न था, जिनका नाम बालब्रह्मचारी विख्यात है. वीर्यरक्षाकेही प्रभावसे स्वामी शंकराचार्यजी परम विद्वान् होकर जगत्में प्रसिद्ध हुए. कहांतक कहा जाय, वीर्यरक्षा करनेवालेका नाम जगत्में अटल होजाता है. वीर्यरक्षा होनेसे रूप ज्योंका त्यों बना रहता है. रूपवान्को देखकर सबका चित्त प्रसन्न होजाता है. परन्तु शुभ गुणोंके साथ उस रूपवान्की प्रशंसा होती है और अवगुणोंके साथ उस रूपवान्की निन्दा होती है. यदि किसी रूपवान् मनुष्यको अपने रूपकी स्थिरताकी चाहना हो तो उसको चाहिये कि, अपनेमें कोई दोष न आने देवे और सदैव वीर्यकी रक्षा करे. नहीं तो उसके रूपवान् होनेसे उसको क्या लाभ हुआ ? प्रायः यह भी देखा जाता है कि, पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंमें रूप अधिक होता है सो ठीकही है. स्त्रियोंको रूपवती होनेकी अभिलाषा भी अधिकतासे होती है. जो स्त्री रूपवती नहीं होती वह दूसरी रूपवतीको देखकर लज्जित हो जाती और उसका चित्त उदास होजाता है. ऐसी स्त्रियोंको वस्त्र आभूषण आदि नहीं सुहाता है रूपवती स्त्री वस्त्र अलंकारोंकी विशेष इच्छा भी नहीं करतीं, क्योंकि वह विना वस्त्रालंकारकेही सुन्दरी होती है और जिन स्त्रियोंको परमेश्वरने रूप नहीं दिया वे वस्त्र और आभूषणोंकी सदा भूखी बनी रहती हैं और अपने पतिको आभूषणादिके लिये कष्ट दिया करती हैं, कभी कभी कुवाक्य भी कहने लगती हैं जिसको पेटभर रोटी भी कठिनतासे मिलती है वह अपनी स्त्रीकी अभिलाषा कैसे पूरी कर सकता है ? यहांतक कि, उसका प्रेम स्त्रीमें न्यून हो जाता है. जिससे उन दोनोंकी हानि पहुंचती है. यह नियम है कि, स्त्री रूपवती हो अथवा न हो परन्तु जो स्त्री अपने पतिको प्रसन्न रखती है और आप प्रसन्न रहती है वही उसको परम प्यारी होती है. उसीको वह परमरूपवती समझकर प्रसन्न रहता है वह प्रेम रूपपर नहीं जाता किंतु

शील स्वभावपर अपना अधिकार करता है. जिस स्त्रीका प्रेम अपने पतिसे नहीं वह चाहे जैसी रूपवती क्यों न हो कुछही कालमें उसका पति उसको देखकर घृणा करने लगता है और उस रूपको कुछ नहीं समझता. तात्पर्य यह कि, रूपकी शोभा शुभगुणोंसे है अशुभ गुणोंसे नहीं. शुभ गुणोंकी पदवी रूपकी पदवीसे अधिक मानी जाती है. रूप प्राप्त होना यद्यपि अपने अधीन नहीं है तथापि शुभ गुणोंकी प्राप्ति अपने आधीन है, रूपपर प्रायः मनुष्य मोहित होजाते हैं फिर किसी समय उसी रूपसे दूर दूर भागने लगते हैं इसका यही कारण हैं कि रूपकी स्थिरता नहीं है. इस विषयमें एक दोहा है कि-

दोहा-यौवन था जब रूप था, गाहक थे सब कोय ।
यौवन रूप गँवायके, बात न पूछै कोय ।। ३ ।।

प्रायः लोग रूपपर कुवासना करके मोहित होते हैं और रूपवालेके चित्तको डामाडोल करके विषयोंकी ओर झुकादेते हैं. इसीसे रूप बिगडजाता है. रूप बिगडजानेसे प्रेममें विघ्न पडजाता है और एक दूसरेसे पृथक् होजाते हैं यदि ऐसा न हो तो प्रेम सर्वदा बनारहे और रूपकी भी स्थिति रहे. कभी कभी ऐसाभी देखा जाता है कि, एक अंग भी यदि किसीका मनोहर हो तो उसी अंगके कारण लोग मोहित होजाते हैं. जैसे किसीके नेत्र रसीले हैं तो नेत्रोंके कारण ही दूसरा मोहित होजाता है, किसीके कपोल मनोहर होते हैं, किसीके नेत्र, किसीके दांत, किसीकी हंसनि, किसीकी मुसक्यान, किसीकी चाल, किसीकी कटि, किसीका उदर, किसीका वक्षःस्थल इत्यादि । स्त्रियोंके अंगोंकी मनोहरतापर एक श्लोक है कि-

वाचि श्रीमाथुरीणां जनकजनपदस्थायिनीनां कटाक्षे दंते गौडांगनानां सुललितजघनेषूत्कलप्रेयसीनाम् । तैलंगीनां नितम्बे सघनघनरुचौ केरलीकेशपाशे कट्यां कर्णाटजानां स्फुरति रतिपतिर्गुर्जरीणां कुचेषु ।। ८४ ।।

मथुरा प्रदेश (व्रजमण्डल) की स्त्रियोंकी वाणीमें, जनकपुरके प्रदेशकी स्त्रियोंकी कटाक्षमें, गौडदेशकी अंगनाओंके दांतोंमें और उत्कलप्रदेशकी स्त्रियोंकी जंघाओंमें, तथा तैलंगदेशकी स्त्रियोंके मनोहर नितम्बोंमें, एवं केरल (मलवार देश) की स्त्रियोंके केशपाश (चोटी) में, कर्णाटक देशकी स्त्रियोंके कटिभागमें, एवं गुर्जर देशकी स्त्रियोंके कुचोंमें रतिपतिका स्फुरण

होता है. भावार्थ यह कि ये अंग मनोहर होते हैं जैसे व्रजकी बोली सर्वत्र प्रसिद्ध है. यथा (छाजा बाजा केश यह बंगालादेश) इत्यादि ।। ८४ ।।

संसारमें रूप विचित्र पदार्थ है, जिससे दूसरेका मन रूपवान्की ओर खिचकर चला आता है और चित्तमें यही आता है कि इसके रूपको देखाकरे. ऐसा रूप भी परमेश्वरकी महती कृपासे प्राप्त होता है. एक एक अंग प्रायः सबहीका अच्छा होता है. अंगोंकी सुन्दरताका विस्तार बहुत है. यहां संक्षेपसे केवल दो चार अंगोंका वर्णन करते हैं, संपूर्ण मुखमंडल तो किसी किसीका ही अच्छा होता है जो सुन्दरताका एक बडा अंश है. मुखमण्डलके चार भागोंमेंसे पहला भाग शिर है, दूसरा भाग मस्तक, तीसरा भाग नासिका, दूसरे तीसरे भागके मध्यमें नेत्र और कान हैं, चौथा भाग मुख और ठोडी है. इन सब अवयवोंके सुन्दर होनसे मुखमंडलकी शोभा है. तहां शिरका छोटा होना वा टेढा और बहुत लंबा होना भी ठीक नहीं. गोल और बडा शिर अच्छा होता है. एक हिंदी कहावत है कि ,शिर बडा सरदारका और पांव बडा गंवारका., शिरमें केश भी शोभाका चिह्न है. केश कृष्ण वर्ण अच्छे होते हैं, स्त्रियोंके केशही स्वरूपवती होनेमें प्रधान हैं. केशोंको भलीभांति सुधारना और चोटी आदि बनाना. इसके लिखनेकी यहां आवश्यकता नहीं क्योंकि देश प्रथाके अनुसार केशोंका सुधार होता है. जिसका मस्तक विशाल होता है वह अच्छा होता है. परन्तु परिमाणसे अधिक ऊंचा नीचा अच्छा नहीं होता. आजकल प्रायः मनुष्य मस्तकपर केशोंका ढकना ढककर अपने मस्तकको अशोभित किये रहते हैं और अभिमान करते हैं कि हम बहुत अच्छे लगते हैं. परन्तु पीछेकी चोटी मस्तकपर लाकर रखना यह उनकी बडी भूल है. मानों मस्तकपर पर्दा डालकर अपने भाग्योदयरूप मस्तकको ढकेहुए हैं. दूसरी हानि यह है कि, तेल आदि डालनेसे वह केशोंमें खपजाता है. मस्तकके भीतर न पहुंचनेसे तरावट आनेमें बाधा पडती है. उचित है कि मस्तकके ऊपरवाले भागपर केश न रक्खे, जिससे दिमागपर किसी प्रकारका बोझा न रहे. देखो स्त्रियाँ अपने मस्तकपर मांग काढकर उस स्थानके केशोंको अधिक चिकना डालकर बांधती हैं और चोटी पीछेको बांधती हैं. मस्तकको विशाल बनानेका यह एक उत्तम प्रयत्न है. नासिका ऊंची होनेसे रूपमें मनोहरता आजाती है. जिसके मुखमंडलमें नाक नहीं उसमें मानो कुछ नहीं. छोटी वा चपटी नाक अच्छी नहीं होती. एवं कानभी बहुत बडे अच्छे नहीं होते. गहरे कान शोभाको बिगाड देते हैं. मुखमंडलकी शोभामें कान भी प्रधान हैं. यदि कान न हों तो

शोभा नहीं. प्रायः स्त्रियाँ कानोंमें अधिक आभूषण बाली आदि धारण कर कानोंकी शोभाको कम करदेती हैं. कान नीचेको लटक कर अशोभित होजाते हैं. और रूपमें कमी होजाती है. उचित है कि यदि सामर्थ्य हो तो सुवर्णकी एक दो बाली सच्चे मोतियोंसहित धारण करलें तो कुछ ऐसी हानि नहीं. परन्तु विना आभूषणोंकेही जो रूपवती हो उसको आभूषणोंकी क्या आवश्यकता है ? मुखमंडलमें नेत्र सबसे प्रधान अंग हैं, चमकीले श्यामवर्ण नेत्र जादूके समान प्रभाववाले होते हैं, एक दोहा है कि—

दोहा—अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार ।
जियत मरत झुकि झुकि परत, ज्यहिं चितवत इकबार ।।

इस प्रकार कपोलोंकी सुन्दरतासे भी मुखमंडलकी शोभा है. गोल और गुलाबी रंगके कपोल अच्छे होते हैं. कपोलोंपर झई पडजाय अथवा मसोडोंके निकलनेसे अथवा गुंदवानेसे कपोलोंकी शोभा कमहोजाती है. इसी प्रकार होंठ बिंबाफलके सदृश रंगवाले शोभित होते हैं. बहुत पतले और बहुत मोटे अच्छे नहीं होते हैं, मोटे होंठ औषधी द्वारा पतले हो सकते हैं और बहुत पतले होंठ चूसनेसे मोटे हो सकते हैं. मन्द मुसक्यानसे होठोंकी शोभा प्रतीत होती है. भावार्थ यह कि, मुखमंडलके सब अवयवोंकी शोभासे मुखमंडलकी शोभा है और मुखमंडलकी शोभासे शेष सब अंगोंकी शोभा है. इस कारण शेष अंगोंका विस्तार नहीं लिखा. सामुद्रिक लक्षण पूर्व लिख चुके हैं. जिसके लक्षण शुभ हों वही शुभ अंग है ।। इति.

षोडश (सोलह) शृङ्गार

आदौ मज्जनचीरचारुतिलकं नेत्राञ्जनं कुण्डलं नासामौक्तिकहारकेशकुसुमं सिन्दूरवस्त्रं परम् । देहे चन्दनलेपकुंचुकमणी क्षुद्रावली घंटिका तांबूलं करकंकणं चतुरता शृंगारकाः षोडश ।। ८५ ।।

१ प्रथम मज्जन (उबटन स्नान , २ चीरधारण, ३ सुन्दरतिलक धारण, ४ नेत्रोंमें अञ्जन लगाना, ५ कानोंमें कुण्डल धारण करना, ६ नासिकामें मोती पहिरना, ७ हार पहिरना, ८ केश सम्भारना, ९ फूलोंके आभूषण बनाकर पहिरना, १० सिन्दूर लगाना, ११ वस्त्र धारण करना, १२ देहमें चन्दन लगाना, १३ कंचुकी पहिरना, १४ मणि क्षुद्रावली, घंटिका धारण करना, १५ तांबूल चबाकर खाना, १६ हाथोंमें कंकण पहिरना, चतुरतापूर्वक ये सोलह शृंगार हैं ।। ८५ ।।

द्वादश (बारह) आभूषण

शीलं लज्जा च माधुर्यं दृढता ह्यार्जवस्तथा। पवित्रता च सन्तोषं, सुहृत्ता विनयः क्षमा ।। शुचिता गुरुशुश्रूषा भूषणा द्वादश स्मृताः ।। ८६ ।।

१ शील, २ लज्जा, ३ मधुर भाषण, ४ दृढता, ५ सरल स्वभाव, ६ पवित्रता, ७ सन्तोष, ८ सहृद्भाव, ९ विनय, १० क्षमा, ११ हृदयकी शुद्धता, १२ गुरुजनोंकी सेवा येही बारह आभूषण कहे हैं ।। ८६ ।।

परन्तु रसिकजन प्राय : १ नूपुर, २ किंकिणी, ३ हार, ४ चूडी, ५ मुन्दरी ६ कंकण, ७ कण्ठश्री, ८ बाजूबंद, ९ बेसर, १० बिरिया, ११ टीका, १२ शीशफूल, इनको बारह आभूषण कहते हैं ।। ८६ ।।

दम्पति प्रीति

स्त्री पुरुषमें परस्पर प्रीतिका होना परम आवश्यक है, क्योंकि विना परस्पर प्रीतिके पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होता. प्रीति चार प्रकारकी होती है—१ नैसर्गिक, २ विषयजा, ३ समा, ४ अभ्यासिकी । विवाह होते जो दृढ प्रीति पुरुषमें होजाती है और छुटानेसे भी नहीं छूटसकती उसको नैसर्गिकी प्रीति कहते हैं और माला, चन्दन, भोज्य पदार्थ देने लेनेसे जो प्रीति होती है उसको विषयजा प्रीति कहते हैं. तथा जो प्रीति योग्य गुणोंके मेलसे होती है उसको समा प्रीति कहते हैं. एवं जो देवपूजन, गाने बजाने और मैथुनक्रिया आदिसे होती है उसको अभ्यासिकी प्रीति कहते हैं. पद्मिनी स्त्रीको सुन्दर वस्त्र आभूषण, मधुर वचन, उत्तम धर्म और उपाख्यान ज्ञान तथा सुगंधित पदार्थ प्रदान कर प्रसन्न करे, पद्मिनी स्त्रीके सम्मुख पराई स्त्रीकी निन्दा नहीं करे. चित्रिणी स्त्रीको प्रेम भरे प्रीतिपूर्वक वचन, सुन्दर मनभावन इतिहास सुनावे और नवीन वस्त्र आभूषण देवे, सुगंधित पदार्थ प्रदान करे तो चित्रिणी स्त्री परम प्रसन्न रहती है. ये दोनों प्रकारकी स्त्रियाँ आदरपूर्वक रखनेसेही रहती हैं. शंखिनी स्त्रीको उत्तम उत्तम गहने और वस्त्र देके तथा नवीन नवीन वस्तु लाकर देनेसे वह प्रसन्न रहती है. हस्तिनी स्त्री भांति भांतिके भोजन और वस्त्र आभूषणोंसे प्रसन्न रहती है केवल बातों और विनय भावसे प्रसन्न नहीं होती. भावार्थ यह कि जिस जिस पुरुषको जैसी स्त्री भाग्यानुसार प्राप्त हो जाय उसको यथाशक्ति पूर्वोक्त रीतिसे प्रसन्न रखकर प्रीति बनाये रक्खे.

वीर्यप्रभाव

कहावत है कि ,तुख्म तासीर सोहबत असर, सो यह बात सर्वथा सत्य है. वीर्यके एक बूंदमें भी मनुष्यके स्वभाव आदि लक्षण विद्यमान रहते हैं जैसे वृक्षके बीजमें वृक्ष उत्पन्न करनेकी शक्ति पूर्णरीतिसे विद्यमान रहती है. जिस बीजको देखकर उसमें सिवाय बीजके कुछ दृष्टि नहीं आता और पृथ्वीमें उचित रीतिसे गाड देनेसे वही वृक्षरूप होकर फल देने लगता है ठीक इसी प्रकार पुरुषका वीर्य है. वैद्यलोग मनुष्यके पसीना आदिको देखकर रोगको भलीभांति जान लेते हैं तो वीर्य सब शरीरका अंश होता है. वीर्य जब बिगडा होता है तो उसका प्रभाव सन्तानपर अवश्य पडता है. जिस प्रकार क्रोधकी दशामें मुख लाल होजाता है, भय प्राप्त होनेपर मुख पीला पडकर शरीर कांपने लगता है, उसी प्रकार रोगके होनेसे अण्डकोशोंपर भी रोगका प्रभाव पडता है कि जहां वीर्य बनताहै. लिंग तो वीर्यको व्यय (खर्च) करनेवाला एक हेतु परन्तु वीर्यका मुख्य स्थान अण्डकोशही है. पुरुषके पन्द्रह वर्षकी आयुसे वीर्य बनने लगता है परंतु पूर्ण प्रकारसे उत्पत्तिशक्ति बीस वर्षकी आयुमें होती है. वीर्यके बनते ही जो पुरुष उत्पत्तिशक्तिसे काम लेते हैं उनकी इद्रियाँ क्षीण होजाती हैं वीर्यकी रुकावट जितनी हो उतनी ही अधिक शक्ति शरीरमें रहती है. नब्बे वर्षकी आयुपर्यंत मनुष्य सन्तान उत्पन्न कर सकता है. इस कारण उचित है कि ऐसे उत्तम पदार्थको अपरिमित व्यय (खर्च) कदापि न करे तो वीर्यका प्रभाव सदा एकसा रहकर शरीरको सुख प्राप्त होगा. जरा अवस्थामें दुःख न होगा रोग निकट नहीं आवेंगे.

शुद्ध वीर्य

पुरुषका वीर्य जो शुद्ध होता है उसमें प्रत्येक बूंद सैकडों कीडोंसे युक्त होता है अर्थात् वीर्यके एक बूंदमें सैकडों कीडे सूक्ष्मवीक्षणयंत्रद्वारा लंबी पूंछवाले देख पडते हैं. वायु लगनेसे वे कीडे दिनभर नहीं जीवित रहते, परन्तु स्त्रीके गर्भाशयमें पहुंचकर अनेक दिनपर्यंत जीवित रहते हैं, और यही कीडे सन्तानोंका कारण होते हैं. जितनाही शुद्ध वीर्य होता है उतने ही अधिक कीडे होते हैं. शुद्ध वीर्य यदि थोडाही हो और स्त्रीके गर्भाशयमें ठहर जावे तो गर्भस्थितिका कारण होता है और यदि वीर्य शुद्ध न हो तो चाहे जितना अधिक वीर्य हो व्यर्थ है. इस कारण मनुष्यको उचित है कि, वीर्यको शुद्ध रखनेको प्रयत्न करे. गर्भस्थितिके निमित्त पुरुषका शुद्ध वीर्य थोडा भी बहुत है. अधिकको आवश्यकता नहीं. जिसका वीर्य पतला और कुछ नीले रंगका

होता है वह वीर्य दूषित होता है और जिसका वीर्य श्वेतवर्ण और देखनेमें अच्छा लगता है वह वीर्य शुद्ध होता है। यदि वीर्य शुद्ध न हो तो उचित है कि खटाई, मिर्च आदि तामसी भोजन त्यागकर औषधि सेवन करे और वीर्यके उपयोगके समय स्त्री भी तामसी भोजन परित्याग करदेवे. शुद्धवीर्यसे मनुष्यका बल (पराक्रम) बढकर विचारशक्तिकी उन्नति होती है और फिर मनुष्य बडे बडे काम करसकता है. जिनके वर्णनकी यहां आवश्यकता नहीं, वीर्य बननेके मुख्य स्थान अंडकोश हैं. स्त्रीके गर्भाशयमें यदि दाहिने अंडकोशका वीर्य अधिक पहुंचता है तो पुत्र और बायें अण्डकोशका वीर्य अधिक पहुंचनेसे कन्याकी उत्पत्ति जानना. वीर्य अधिक पहुंचनेकी रीति करवट है.

शुद्ध रज

स्त्रीके गर्भाशयमें दाहिनी और बांई ओर एक इंचसे कुछ अधिक लंबी चौडी बादामके आकार दो थैलीसी (गांठें) झिल्लियोंमें लिपटी हुई होती हैं. इनके भीतर पीला जल भरा रहता है. उसमें छोटे २ बहुतसे कीडे दीख पड़ते हैं, जो युवावस्थाके उपरांत बढने लगते हैं. बहुतही बारीक होनेके कारण नेत्रोंसे नहीं देख पडते परंतु सूक्ष्मवीक्षणयंत्र (खुर्दबीन)से देखे जा सकते हैं. यही स्त्रीके अंडकोश हैं. जैसे पुरुषके अण्डकोश निकाल लेनेसे वह नपुंसक होजाता है उसी प्रकार स्त्रीके अण्डकोश निकाल लेनेसे वह वन्ध्या होजाती है. बाल्यावस्थामेंही स्त्रीकी योनिके द्वारपर एक झिल्लीका परदा पडारहता है उसमें एक छिद्र मूत्रके निमित्त और दूसरा मासिकधर्म निकलनेके समय होता है. प्रथम समागमके दिन यह परदा फटजाता है, कि जिससे उस समय स्त्रीको कुछ कष्ट होता है. परदा फटनेसे पहले अक्षतयोनि रहती है. जिस स्त्रीका विवाह अधिक अवस्थामें होता है उसके रजोधर्म होते होते परदा नष्टभी हो जाता है. महीने महीने ठीक समयपर निकलनेवाला रज शुद्ध समझाजाता है. गर्भके दिनोंमें रुधिर नहीं निकलता अर्थात् मासिक धर्म बन्द हो जाता है, उससे बालकके अंग प्रत्यंग बनते हैं, अनन्तर स्तनोंमें दूध होकर वही रुधिर बालकके पोषणनिमित्त होता है. स्त्रियोंके रससे उत्पन्न रुधिरको रज कहते हैं. बारह वर्षकी आयुसे पचास वर्षकी आयुतक रज रहता है। यथा–

द्वादशाद्वत्सरादूर्ध्वमापंचाशतसमाः स्त्रियाः ।
दिनत्रयं मासि मासिप्रकृत्यैवार्तवं स्रवेत् ॥

आर्तवस्रावदिवसादृतुः षोडश रात्रयः ।
गर्भग्रहणयोग्यस्तु स एव समयः स्मृतः ।। ८७ ।।

बारह वर्षकी आयुसे पचास वर्षतक स्त्रियोंके तीन दिन महीने महीने आपसे आप आर्तव बहा करता है जिसको रजोधर्म कहते हैं. रुधिर बहनेके पहले दिनसे सोलह दिन पर्यन्त स्त्रियोंका ऋतु काल कहाता है. यही गर्भ-धारणका योग्य समय है ।। ८७ ।।

इन सोलह दिनोंमें पुत्रकी इच्छा करनेवाला पुरुष चौथी, छठीं, आठवीं, दशवीं, बारहवीं रात्रिमें, रमण करे और कन्याकी इच्छावाला पुरुष पांचवीं, सातवीं, नववीं, ग्यारहवीं, तेरहवीं, पन्द्रहवीं रात्रिमें रमण करे. जबतक रजोधर्म नहीं होता तबतक गर्भधारणशक्ति नहीं होती. रजोधर्मके दिनसे सोलह दिन उपरान्त गर्भ नहीं रहता, तब प्रसंग करना वृथा है. वीर्यको व्यर्थ नष्ट करना है, रजोधर्मका रुधिर पहले तीन दिनतक बहता है. यदि इससे अधिक दिनतक अथवा एक छटांक भरसे अधिक रुधिर बहे तो रुधिरविकार जानना. कभी कभी गर्भधारण करनेपर भी ऐसा हो जाता है कि रुधिर बहा करता है और गर्भप्रसव होनेके उपरान्त कई महीनोंतक रुधिर बन्द रहता है. कभी कभी किसी रोगके कारण भी रुधिर बहना बन्द होजाता है, तथा एक महीनेपर्यन्त एकत्रित हुआ आर्तव धमनियोंद्वारा कुछ विवर्ण, कुछ काला, वायुकरके प्रेरित हुआ योनिके मार्गसे निकलता है. खरगोशके रुधिरके समान अथवा लाखके रसके समान रुधिर वस्त्रमें लग जानेसे धोनेपर साफ होजाय. अथवा कमलके समान तथा बीरबहूटीके समान लाल हो ऐसा स्त्रियोंका रज शुद्ध होता है.

रजोदर्शन फल

जिस स्त्रीके प्रथम रजोदर्शनके दिन रजोदर्शन समय एक बिन्दुमात्र रज योनिमार्गसे प्रवृत्त हो वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है. जो लाल रुधिर हो तो पुत्रवती होती है. काला हो तो मृतसन्तान उत्पन्न होती है. पिच्छिल हो तो वन्ध्या होती है. पाण्डुरवर्ण हो तो काकवन्ध्या होती है. पीला हो तो व्यभि-चारिणी होती है. घूंघुचीके समान रंग हो तो भाग्यवती होती है, सिन्दूरके समान रंग हो तो कन्याकी माता होती है.

रजस्वला नियम

जिस समय स्त्री रजस्वला हो उसी समयसे भूलकरके भी जीवहिंसा

न करे ब्रह्मचर्यसे रहे, कुशाकी शय्यारपर सोवे, पतिका मुख नहीं देखे. हाथमें, मिट्टीके पात्रमें अथवा पत्तोंमें रखकर मूंगकी दाल और भात तीन दिन खावे, रोवे नहीं, नखोंको न काटे, तेल आदि न लगावे. चन्दनादिक सुगन्धित पदार्थोंका लेप नहीं करे, नेत्रोंमें अंजन न लगावे. स्नान नहीं करे, दिनमें नहीं सोवे 'इधर उधर न कहीं जाय, बहुत ऊंचे शब्दको नहीं सुने, हंसी ठंठोल नहीं करे, बहुत बकवाद नहीं करे, परिश्रम नहीं करे, भूमिको नख आदिसे नहीं खोदे, जहां जहां पवनका झंकोरा बार बार आता हो वहां नहीं बैठे, रजस्वला स्त्री इन नियमोंका पालनअवश्य करे कि जिसको संतानकी अभिलाषा हो. जो स्त्री मूर्खतासे, आलस्यसे अथवा दैवयोगसे नियमके विरुद्ध आचरण करती है, वही दोष गर्भमें आजाते हैं. रजोदर्शनमें यदि स्त्री रोती है तो बालक विकृत नेत्रोंवाला होजाता है. नख काटनेसे बालक बुरे नखोंवाला होता है. तेल आदि पदार्थ लगाने और मर्दन करनेसे बालक कुष्ठरोगी होता है. चंदनादि लेप और स्नान आदि करनेसे बालक दुःखी होता है. सुरमा, काजल, अंजन लगानेसे प्राय : बालक नेत्रहीन उपजता है, दिनमें सोनेसे बालक आलसी और बहुत सोनेवाला उपजता है. दौडनेसे बालक चंचल प्रगट होता है. बहुत ऊंचे शब्दको सुननेसे बालक बहिरा होता है. बहुत हंसनेसे बालकके तालु होंठ दांत जीभ ये सब काले होजाते हैं. बहुत बकवाद करनेसे वाचाल बालक उपजता है. परिश्रम करनेसे बालक निर्बल और उन्मत्त प्रगट होता है, भूमि खोदनेसे बालक स्खलित अंगोंवाला होता है. अधिक वायु सेवन करनेसे उन्मत्त बालक उत्पन्न होता है.

संयोगविधि

चतुर्थेऽह्नि ततः स्नात्वा शुक्लमाल्याम्बरा शुचिः ।
इच्छन्ती भर्तृसदृशं पुत्रं पश्येत्पुरः पतिम् ।। ८८ ।।
पूर्वं पश्येदृतुस्नाता यादृशं नरमङ्गना ।
तादृशं जनयेत्पुत्रं भर्तारं दर्शयेत्ततः ।। ८९ ।।

रजोदर्शनसे तीन दिनके अनन्तर चौथे दिन रजस्वला स्त्री स्नान करके सफेद माला और स्वच्छ वस्त्र धारण कर पुत्रकी इच्छा करती हुई प्रथम पतिके समीप जाकर पतिकेही दर्शन करे. क्योंकि लिखा भी है ऋतुमती स्त्री प्रथम जिसके दर्शन करती है उसीके समान उसके पुत्र उत्पन्न होता है. इस कारण प्रथम पतिकेही दर्शन करना चाहिये ।। ८८ ।। ८९ ।।

स्त्रियोंके गर्भाधानकी सोलह रात्रि हैं. पहली तीन रात्रियोंमें तो स्त्री चाण्डालीके समान होती है. ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रि भी निन्दनीय हैं. कोई कोई चौथी रात्रि भी निन्दित बतलाता है. शेष दश रात्रियां उत्तम होती हैं. जो पुरुष ऋतुमती स्त्रीसे पहले दिन प्रसंग करता है तो उसके शरीरमें रोगोंके उत्पन्न होनेका भय रहता है. क्योंकि पहले दिन संभोग करना ऐसा है मानों प्रज्वलित अग्निमें प्रवेश करना है. दूसरे दिनके प्रसंगसे गर्भ रहजानेपर सन्तान नहीं हो जाती है. तीसरे दिन संभोग करनेसे गर्भ रहजानेपर सन्तान अल्पायु और विकृत अंगवाली होती है. इस कारण तीन दिन कदापि प्रसंग न करे. स्त्री पुरुषको उचित है कि जिस दिन गर्भकी इच्छा हो उस दिन निर्मल वस्त्र धारण कर सुगन्धलेपन कर सुगन्धित फूलोंकी माला धारण करे. उत्तम और शीघ्र पचनेवाला ऐसा भोजन करे कि भोजनकी कुछ इच्छा बनी रहे, अधिक भोजन न करे. अनन्तर तांबूल चबाकर मुखकी शोभा बढाय सब प्रकारसे अपने चित्तको प्रसन्न करें, जो पुरुष अधीर हो, क्षुधित हो, तृषासे युक्त हो पीडित हो मल मूत्र आदि वेगसे युक्त हो, रोगी हो, उसको उचित है कि, पुत्रकी इच्छासे संभोग न करे.

रति तथा पुरुष कामवास

गर्ग उवाच

पुराऽपृच्छन्मुनिर्गर्गो देवदेवं महेश्वरम् ।
अनुग्रहार्थं वद तां किंनाम रतिरुच्यते ।। ९० ।।

पूर्वसमय गर्गमुनि देवदेव महादेवजीसे पूछने लगे कि, हे शिव ! अनुग्रहपूर्वक यह कहिये कि रति किसको कहते हैं ।। ९० ।।

महादेव उवाच

आनन्दाज्जायते विश्वं स एव रतिरुच्यते ।
स्त्रीपुंसां शृणु विप्रेन्द्र मनसो मेलनं रतिः ।। ९१ ।।

महादेवजीने उत्तर दिया कि, यह विश्व (संसार) आनन्दसे उत्पन्न होता है उसी आनन्दको रति कहा है हे विप्रेन्द्र ! सुनो स्त्री पुरुषके मनके मेलनको रति कहते हैं ।। ९१ ।।

यत्र नास्ति रतिर्देव तत्र किं सुखमस्ति वै ।
पण्डितैः कथ्यते वत्स शवसंगम एव तत् ।। ९२ ।।

हे देव ! जहां मनका मिलन नहीं है वहां क्या सुख मिलता है ? हे वत्स ! पंडितोंने विना मन मिले संगमको शव (मृतक) संगम कहा है अर्थात् विना मन मिलनेके आनन्द नहीं और विना आनन्दके सहवास वृथा है. इसीसे शवसंगमके समान उस सहवासका होना है. सो मनका मिलन यही रति है. स्त्री पुरुषके जोडामें रति प्रधान है ॥ ९२ ॥

पूर्णिमायां वसेत्कामो हृदये पुंसि विद्धि वै ।
न स्पृशेद्धृदयं तस्मात्काकवन्ध्या भवेत्तु हि ॥ ९३ ॥

पूर्णिमा तिथिको काम पुरुषके हृदयमें वास करता है इस कारण उस स्थानको न स्पर्श करे, स्पर्श करनेसे स्त्री काकवन्ध्या होती है. स्त्रीको उचित है कि पूर्णिमा तिथिको पुरुषसे पृथक् रहे ॥ ९३ ॥

नाभेरूर्ध्वं वसेत्कामः पराह्ने शृणु मारिष ।
लालयेल्लना तस्माद्रतिकामा मनस्विनी ॥ ९४ ॥

हे मुनि ! पूर्णिमाके दूसरे दिन अर्थात् प्रतिपदातिथिको काम नाभिके ऊर्ध्व भागमें वास करता है, रतिकी इच्छावाली ललना स्त्री उस स्थानको लालन करनेसे आनंदको प्राप्त होती है ॥ ९४ ॥

त्रिवलीमूलदेशे तु वसेत्कामः परेऽहनि ।
नाभेरधो बहिर्भागे वसेत्कामः परेद्यवि ॥ ९५ ॥

द्वितीयातिथिको त्रिवलीके मूलदेशमें काम वास करता है. स्पर्शविधानसे उस स्थानका लालन करनेसे रमणी सुख पाती है और तृतीयातिथिको नाभिके नीचे भागमें काम वास करता है ॥ ९५ ॥

मूलदेशोर्ध्वभागे तु वसेत्कामश्चतुर्थके ।
उक्तक्रमेण ललना लालयेच्छृणु मानद ॥ ९६ ॥

चतुर्थतिथिको मूलदेशके ऊर्ध्वभागमें काम वास करता है । हे मानद ! सुनो उक्त क्रमसे उस स्थानको ललना लालन करे ॥ ९६ ॥

नाभिमूले वसेत्कामः पंचम्यां च तथैव हि ।
प्रसूतिकामनानारीतत्स्थानं परिलालयेत् ॥ ९७ ॥

पञ्चमीतिथिको पुरुषके नाभिमूलमें काम वास करता है जिस स्त्रीकी सन्तान उत्पन्न करनेकी इच्छा हो वह उस स्थानको लालन करे ॥ ९७ ॥

षठ्यां मध्ये वसेत्कामो निश्चयं विद्धि मानद ।
सुगंधवासिता नारी सुवेषा परिलालयेत् ॥ ९८ ॥

हे मानद ! छठीको मध्यभागमें निश्चय काम वास करता हैं सुगंधसे सुवासित नारी सुन्दर वेष धारण कर लालन करे ॥ ६८ ॥

सप्तम्यामग्रतः कामो वसेद्वत्स न संशयः ।
स्नाता च धौतवसना सालंकारा च संमुदा ॥ ९९ ॥

हे वत्स ! सप्तमीतिथिको काम अग्रभागमें वास करता है. उस दिन नारी स्नान करके धौत वस्त्र धारण कर आभूषणों सहित प्रसन्नतापूर्वक सजकर अपने स्वामीका संग करे ॥ ६६ ॥

अष्टम्यामूरुबन्धे च वसेत्कामो हि वत्सक ।
शुद्धवेषाद्धि तत्स्थानं लालयेच्छुभदा सदा ॥१००॥

हे वत्स ! अष्टमी तिथिमें काम ऊरुके मूलदेशमें वास करता है स्त्री शुद्धवेषसे उस स्थानको लालन करे ॥ १०० ॥

नवम्या निवसेत्कामः कट्यां वत्स निशामय ।
दशम्यां कटिपार्श्वे च वसेत्कामः पतिप्रियः ॥ १०१ ॥

हे वत्स ! सुनो नवमीको काम कटिमें वास करता है. और दशमीको प्रियपतिके कटिपार्श्वमें काम वास करता है ॥ १०१ ॥

एकादश्यां वसेत्कामो नितम्बे निश्चयं शृणु ।
द्वादश्यां शृणु विप्रेन्द्र लिंगपार्श्वे तथैव च ॥ १०२ ॥

निश्चयपूर्वक श्रवण करो कि एकादशीको नितम्बमें काम वास करता है. हे विप्रेंद्र ! सुनो इसी प्रकार द्वादशीमें लिंगपार्श्वमें काम वास करता है ॥ १०२ ॥

त्रयोदश्यामूरुकेन्द्रे निवसेद्रतिवल्लभः ।
चतुर्दश्यां सर्वदेहे वसेत्कामो हि मानद ॥ १०३ ॥

त्रयोदशीको ऊरुकेंद्रमें काम वास करता है. हे मानद ! चतुर्दशीको सब देहमें काम वास करता है ॥ १०३ ॥

अत्र यत्पंडितैः प्रोक्तं ह्युपायं विधिपूर्वकम् ।
पालयेत्सर्वथा विप्र स्त्री वाथ पुरुषस्तथा ॥ १०४ ॥

यहां पंडितोंने जो उपाय विधिपूर्वक कहा है।हे विप्र ! सो स्त्री अथवा पुरुष दोनों सर्वथा पालन करे ।। १०४ ।।

पालनादायुषो वृद्धिरारोग्यमतुलं तथा ।
सुसन्ततिसुखं नित्यं प्राप्नोति शृणु मानद ।। १०५ ।।

पालन करनेसे हे मानद ! श्रवण करो कि, आयुकी वृद्धि तथा अतुल आरोग्य उत्तमसंततिसुख सदैव प्राप्त होता है ।। १०५ ।।

पञ्चमी च शुभा षष्ठी सप्तमी नवमी पुनः ।
द्वितीया च तृतीया च चतुर्थी शुभदा तथा ।। १०६ ।।
दशमी द्वादशी चैव तथा विप्र त्रयोदशी ।
चतुर्दशी शुभा प्रोक्ता पण्डितैर्विश्वदर्शिभिः ।। १०७ ।।

पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, नवमी, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, दशमी, द्वादशी, तथा हे विप्र ! त्रयोदशी, चतुर्दशी विश्वदर्शी पंडितोंने ये शुभ कही हैं ।। १०६ ।। १०७ ।।

परन्तु यह उपरोक्त लेख रसिकजनप्रमोदार्थ गर्गशिवसंवादद्वारा किसीने लिख दिया हैं ऐसा अनुमान होता है इस कारण कदाचित् बुद्धिमान् जनोंके हृदयमें यह लेख स्थान न पावे. किन्तु यह मुख्य है कि शीतकालमें रात्रिसमय, उष्णकालमें मध्याह्नकाल, वसंतमें रातदिन, वर्षामें वर्षा समय, शरत्कालमें सरोवरसमीप स्त्रीपुरुषोंमें कामवास करता है.

कामवास

कोकशास्त्र तथा अन्य कामसम्बन्धी ग्रन्थोंमें कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष-भेदसे सब तिथियोंमें क्रमशः चन्द्रकलानुसार कामदेवका वास लिखा है. कृष्णपक्षमें ऊपरके अंगोंसे नीचेको उतरता है और शुक्लपक्षमें नीचेके अंगोंसे ऊपरको चढता है. यहां कामवासके विषयमें तिथि जाननेमें अनेक मत हैं. परन्तु जिस दिन स्त्री रजस्वला हो उस दिन कृष्णपक्षकी प्रतिपदा मानना बहुमत है. जिस तिथिमें जहां कामका वास हो उस अंगके स्पर्श, गहन, मर्दन, चुंबन आदिसे कामदेव चैतन्य होता है. कृष्णप्रतिपदा और शुक्लपूर्णिमाको कामका वास मस्तकमें जानना, कृष्णद्वितीया और शुक्लचतुर्दशीको दोनों नेत्रोंमें कामका वास जानना, कृष्णतृतीया और शुक्लत्रयोदशीको नीचेके होंठमें कामका वास जानना, कृष्णचतुर्थी और शुक्लद्वादशीको कपोलोंमें

कामका वास जानना, कृष्णपंचमी और शुक्लएकादशीको कंठमें कामका वास जानना, कृष्णपक्षकी षष्ठी और शुक्लदशमीको बगलमें कामका वास जानना, कृष्णसप्तमी और शुक्लनवमीको कुचोंमें कामका वास जानना, कृष्णाष्टमी और शुक्लाष्टमीको हृदयपर कामका वास जानना, कृष्णनवमी और शुक्लसप्तमीको नाभिमें कामका वास जानना, कृष्णदशमी और शुक्ल-षष्ठीको कटिमें कामका वास जानना, कृष्णएकादशी और शुक्लपंचमीको योनिमें कामका वास जानना, कृष्णद्वादशी और शुक्लचतुर्थीको दोनों जंघाओंमें कामका वास जानना, कृष्णत्रयोदशी और शुक्लतृतीयाको पिण्डु-लियोंमें कामका वास जानना, कृष्णचतुर्दशी और शुक्लद्वितीयाको पांवके तलुओंमें कामका वास जानना, कृष्ण-अमावास्या और शुक्लप्रतिपदाको बायें पांवकी अंगुलियोंके नीचे कामका वास जानना. यहां स्त्रीका वाम अंगप्रधान है इस कारण वाम अंगोंमें विशेष कामका वास जानना. यद्यपि यहां कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष कथनसे यह निश्चय होता है कि, जिस दिन स्त्री रजस्वला होती है उस दिन कृष्णप्रतिपदा मानना ठीक नहीं क्योंकि केवल सोलह दिन आर्तवका होना निश्चय है, उसमें भी दश दिन संभोग करना उचित माना गया है. फिर तीस दिन कामवास लिखनेकी क्या आवश्यकता थी, तथापि आजकलके समयानुसार अथवा परोपकार बुद्धिसे कामवास लिखना पूर्व रीत्यानुसार सब तिथियोंमें उचित समझागया. कामवासके अंगोंमेंसे मस्तक, नेत्र, ओष्ठ, कपोल, कंठ, कुच, ठोडी ये चुम्बन करनेके अंग हैं और कंठ, चिबुक, ठोठी, कुच, भाल ये अंग दांतसे काटने चूसने और सहलानेके हैं. एवं बगल, कंठ, जंघा, नितम्ब, पिंडुली, पांवका तलुआ ये अंग मलने दबाने और सहलानके हैं तथा ठोडी, कुच, कटि, नाभि, उदर, कंठ, अंगुलियोंके नीचे ये अंग स्पर्श करने और चुटकी लेनेके हैं, रजस्वला धर्मके दिन कृष्णपक्षकी प्रतिपदा मानकर परीक्षा करनेसे कामवास ठीक बताया गया है. परन्तु यह सब लेख कामीजनोंके मन बहलावका हेतु है. जो लोग ब्रह्मचर्य रहकर वीर्यरक्षाको मुख्य मानते हैं और मैथुन केवल अपनीही स्त्रीके साथ केवल सन्तानोत्पत्ति निमित्त मुख्य मानते हैं उनके प्रति कामवास वर्णन सामान्य बात है.

परस्त्रीगमननिषेध

आयुः क्षतिर्विकलताऽत्युपहास्यता च
निन्दार्थहानिलघुता: कुगतिः परत्र ।

स्यादेव यद्यपि रतेन पराङ्गनायाः
प्राहुस्तथाप्यनवमित्यपि कारणेन ।। १०८ ।।

परस्त्रीगमनसे आयु क्षीण होती है और विकलता, संसारमें हंसी, निन्दा, धनहानि, तुच्छता तथा पीछेसे दुर्गति होती है. इस कारण पराई स्त्रीके साथ रमण नहीं करना ।। १०८ ।।

दोहा—काम जात निज देहसे, दाम गांठसे जात ।
उत्तम कुलसे धर्म सब, सो तुरंत नशिजात ।। ३६ ।।
यासों पररमणी दुखद, भूलि करो नहिं संग ।
नारायण निज नारिसों, समुझि करो सतसंग ।। ३७ ।।

मैथुनकाल

मैथुन करना तो अपनीही स्त्रीमें केवल सन्तान उत्पत्ति निमित्त उचित है. वृथा सम्भोग करना कदापि उचित नहीं. स्त्रीसंभोग करनेसे मनुष्यका बल तुरंत घट जाता है, वीर्य अधिक होनसे पुत्र और रज अधिक होसे कन्या होती है, अतः वीर्यकी रक्षा अवश्य करे. प्राचीन ऋषि महात्माओंका मत है कि, वर्षभरमें पुत्रकी कामनासे अपनी स्त्रीमें केवल एक वार मैथुन करे. जालीनूसका मत है कि. वर्षभरमें दो वार, बूअलीसेनाका मत है कि, जब मैथुनकी पूर्ण इच्छा हो तब करे. परंतु मैथुनशक्ति रहनेपर तीसरे दिन मैथुन करनेसे शक्ति नहीं घटती. परन्तु जो लोग प्रतिदिन अथवा दिनभरमें कई बार मैथुन करते हैं, उनकी शक्ति घट जाती है. रोग प्रगट होजाते हैं इस कारण योग्य है कि निष्प्रयोजन मैथुन न करे. निष्प्रयोजन मैथुन करना अपने वीर्यको वृथा खोना है. देखो किसानलोग बीजको खेतमें तब बोते हैं कि, जब खेत बोनेके योग्य तैयार होजाता है. जो अपना वीर्य वृथा खोते हैं उनकी बुद्धिसे किसानोंकी बुद्धि अच्छी जानना । भोजन करने उपरान्त जब एक प्रहर बीत जाय तब रात्रिसमय मैथुन करे अर्थात् भोजन और मैथुनमें एक प्रहरका अंतर होना चाहिये. इस हेतु मैथुनका ठीक समय अर्द्धरात्रि है, अर्द्धरात्रिसे चार घडी रात्रि रहेतक मैथुनका समय निश्चय जानना परंतु ऐसे समय मैथुन नहीं करे कि जब शरीरमें आलस्य हो अथवा शरीरमें रुधिर-विकार हो, नेत्र व शिरमें पीडा हो. भावार्थ यह कि, प्रसन्नतापूर्वक मैथुन करना योग्य है.

मैथुन दोषवर्णन

रजस्वला स्त्रीके तीन दिनतक रुधिर प्रवाह होता है, तब जो पुरुष

अज्ञानतासे मैथुन कर बैठता है, उसके उपदंश (आशतक गरमी) रोग होजाता है, अथवा अन्य रोग उत्पन्न होजाना संभव है चालीस वर्षकी अवस्थावाली स्त्री प्रायः गर्भधारण नहीं करती, परन्तु जिसका विवाह सोलह वर्षकी अवस्थामें हुआ हो और अठारह वर्ष वा बीस वर्षकी अवस्थामें सन्तान हुई हो वह स्त्री पचास वर्षकी अवस्थातक सन्तान उत्पन्न कर सकती है, इससे अधिक अवस्थावाली स्त्रीसे मैथुन करना विष पीना है. तथा जो स्त्री बहुत कालसे पुरुषके पास न गई हो, और कुरूपा हो, कोपसे युक्त हो, रोगिणी हो, उसके साथ मैथुन न करे, एवं जो पुरुष अजीर्ण रोगसे युक्त हो, सरदी वा गरमी लग रही हो, शिर और हृदय निर्बल हो, देह किसी कारणसे कृश (दुर्बल) हो, जलन्धर आदि रोगसे युक्त हो, पेट भरा हो ऐसा पुरुष मैथुन नहीं करे. मैथुन कर्म करनेके उपरांत कामध्वजको शीतल जलसे नहीं धोवे, न शीतल जल पीवे, शीतल जलसे धोनेपर कामध्वजकी शक्तिमें बाधा उत्पन्न होजाती है. शीतल जल पीनेसे सरदी गरमीका रोग प्रकट होजाता है. आवश्यकता हो तो गरम जलसे कामध्वजको धोवे, मैथुनोपरान्त प्यास लगी हो तो गरम दूध पीवे. शीतल जल पीनेसे प्रायः अंगकंपन जलन्धर और झोलारोग प्रगट होजाना संभव है. पेट भरेपर मैथुन करनेसे वातविकार पीलपांव और अंडवृद्धि रोग हो जानेका भय रहता है. क्षुधित समय मैथुन करनेसे दृष्टि क्षीण हो जाती है. क्षीण शरीर होनेपर मैथुन करनेसे विषम रोग प्रगट हो जाता है. अधिक खटाई खाने और अधिक मैथुन करनेसे नेत्रोंकी ज्योति बलहीन हो जाती है और वातविकार प्रगट हो जानेका भय रहता है.

रतिप्रकार

सहवासमें रति प्रधान है, सो रति तीन प्रकारकी जानना १ उच्चरति २ नीचरति, ३ समरति उच्चरतिमें पुरुष बलवान्, स्त्री निर्बल रहती, परस्परमें प्रसन्नता रहती है ऐसी दशामें पुत्रकी उत्पत्ति जानना. नीचरतिमें पुरुष निर्बल और स्त्री सबल रहती है, परस्पर उदासीनभाव रहता है और कन्या उत्पन्न होती है. समरतिमें दोनों समानबल होते हैं, प्रीतिमें हानि रहती है और सन्तान नपुंसक होती है.

मैथुनविधान

यद्यपि मैथुनकर्ममें शिक्षा देनेकी आवश्यकता नहीं क्योंकि यह कर्म सबही जानते हैं. जैसे रोना और गाना सबहीको आता है. परन्तु जैसे नेत्रोंमें काजल सबही लगाते हैं. लेकिन चितवनमें भांति होती है. भाव यह कि जो

काम अच्छी विधिसे किया जाता है उसका परिणाम अच्छा होता है और जिसमें विधि नहीं उसमें विघ्न उत्पन्न होनेकी शंका रहती है, इसीसे विशेष और आवश्यक विधि हम संक्षेपरीतिसे लिखते हैं. अपनी स्त्रीमें पुत्रकी कामनासे मैथुनसमय स्त्रीके कामको चैतन्य करनेके निमित्त कामवासका अंग चुम्बनादि करे. प्यार करनेमें मुख्य क्रिया चुम्बन ही है. कुचमर्दनका नंबर दूसरा है. जब स्त्रीका काम विशेष उद्दीपन हो उसकी पहचान यही है कि, नेत्र लाल होजाते हैं, श्वास गरम जल्दी चलने लगती है. सिसकी आने लगती है, उस समय रतिदान देवे. प्रथम कामध्वजको शनैः शनैः संघर्षण करे फिर कुछबल करके प्रवेशकरे और शिरा धरनियें लगे. जब कामिनी प्रथम स्खलित हो जाय तब कामगत होकर वीर्यपात करे अथवा साथही स्खलित हो, पहले नहीं, रतिदानके समय एक कोमल तकिया शिरहाने और कटिके नीचे अवश्य होनी चाहिये. मैथुनके पूर्व वाम चरण उठाकर प्रथम स्त्री शय्यारूढ हो, अनन्तर पुरुष प्रथम दक्षिण पाद उठाकर शय्यापर वामाकी नाभिकी ओरसे आरूढ होजावे. वीर्यग्रहणके बाद स्त्री शय्यापर चित लेटी रहे, जिससे वीर्य रज मिलकर गर्भके योग्य हो जावे. यह मैथुनविधान स्वस्त्रीमें सन्तानोत्पत्तिके निमित्त लिखा है क्योंकि यदि मैथुन न किया जाय तो सन्तानकी उत्पत्ति किस प्रकार हो और जगत्की स्थिरता कैसे हो. सृष्टिक्रम यही है कि मनुष्य सन्तान उत्पन्न करे, इसीसे स्त्री पुरुषमें मैथुनकी इच्छा ईश्वरने प्रगट की है और इसीसेही मैथुनमें परम आनंद अनुभव होता है.

सहवास

एकही मन्दिरमें एक साथ स्त्री पुरुषका रहना यही सहवास है. सहवासमें मैथुनकी अभिलाषा अवश्य होती है, जिस मन्दिरमें समीपही अपने गुरुजन अर्थात् सास, ससुर, जेठ, जेठनी तथा माता, पिता, बडा भाई आदि हों वहां सहवास न करे. यदि किसी महाकामी मनुष्यको सहवास करनाही हो तो प्रबन्ध करके अतिलज्जाके साथ मौन रह कर एकांतमें सहवास करना चाहिये परन्तु नीचे लिखे हुए वचनानुसार अवश्य वर्ताव करना चाहिये.

त्रिभिस्त्रिभिरहोरात्रैः समेयात्प्रमदा नरः ।
सर्वेष्वृतुषु धर्मे तु पक्षात्पक्षाद्व्रजेद्बुधः ।। १०९ ।।

सब ऋतुओंमें मनुष्यको तीन २ दिनके अन्तरसे रतिकर्म करना उचित

है और गरमीकी ऋतुमें पंद्रह पंद्रह दिनके अन्तरसे बुद्धिमान जन सहवासमें गमन करे ।। १०६ ।।

सद्यो बलहरा नारी सद्यो बलकरं पयः ।
स्त्रियं गच्छेत्पयः पीत्वा तां च त्यक्त्वा पुनः पिबेत् ।। ११०।।

स्त्री शीघ्र पुरुषका बल हरलेती है और और दूध शीघ्र बल करता है इस कारण स्त्रीके समीप जाकर रमण करनेसे पहले दूध पीकर रमण करे और उसको त्यागकर अर्थात् रमण करचुकनेके उपरांत फिर दुग्धपान करे ।। ११० ।।

दूध गायका औटा हुआ हो उसमें मिश्री अथवा सफेद शक्कर पडी हो, अथवा भैंसका दूध उत्तम शक्कर अथवा कन्द मिलाहुआ हो, परन्तु गाय अथवा भैंस किसी प्रकारके रोगसे युक्त न हो. स्त्री प्रसंगसे पहले और पीछेसे दूध पीनेवाला पुरुष शक्तिहीन नहीं होता. बल पराक्रममें अधिक न्यूनता नहीं आती.

गर्भाधानविधि

सन्तानसुखकामानां मानवानां मुदे परम् ।
गर्भाधानविधिं वक्ष्ये धन्वन्तरिमतं यथा ।। १११ ।।

सन्तान सुखकी कामनावाले मनुष्योंके परम प्रसन्नार्थ गर्भाधानविधि वर्णन करूंगा. जैसा कि, धन्वंतरिजीका मत है अर्थात् धन्वंतरिकृत सुश्रुतमें कहे अनुसार गर्भाधान विधि लिखते हैं ।। १११ ।।

संसारमें जितने कार्य हैं सबकी विधि पृथक पृथक् है विना विधिसे कोई कार्य पूर्णरूपसे सिद्ध नहीं होता है. मनुष्यको परमात्माने बुद्धि इसी निमित्त दी है कि, विधिपूर्वक प्रत्येक कार्य करे. पूर्वज ऋषिमहात्माओंने हमारे कल्याणनिमित्त सच्छास्त्र बनाये हैं, जिनके अनुसार वर्ताव करनेसे हमारा कल्याण होता है. गर्भाधान भी एक संस्कार है जो षोडश संस्कारोंमें गणना किया जाता है. गर्भाधानविधिसे यदि सन्तान उत्पन्न की जाय तो वह संतान दीर्घायु, आरोग्य और सर्वगुणसम्पन्न होती है.

गर्भाधान की सामग्री

ध्रुवं चतुर्णां सांनिध्याद्गर्भः स्याद्विधिपूर्वकः ।
ऋतुक्षेत्राम्बुबीजानां सामग्र्यादङ्कुरो यथा ।। ११२ ।।

जिस प्रकार पृथ्वीमें ऋतु, क्षेत्र, अंबु, बीज अर्थात् समय, खेत, जल

और बीज इन चार सामग्रियोंसे अंकुर उत्पन्न होता है, ठीक उसीप्रकार १ ऋतु (गर्भका समय) अर्थात् युवती स्त्रीके रजस्वला होनेके दिनसे सोलह दिवस, २ क्षेत्र (शुद्ध गर्भाशय); ३ अंबु (शुद्ध रज) ४ बीज (शुद्ध वीर्य) इन चार वस्तुओंसे विधिपूर्वक गर्भ होता है ।। ११२ ।।

शुद्धवीर्य का लक्षण

स्फटिकाभ द्रवं स्निग्धं मधुरं मधुगन्धि च ।
शुक्रमिच्छन्ति केचित्तु तैलक्षौद्रनिभं तथा ।। ११३ ।।

जिस शुक्र (वीर्य) का रंग बिल्लौरपत्थरके सदृश श्वेत वर्ण हो, पतला और चिकना मधुर हो, तथा शहतकीसी गन्धवाला हो तो शुद्ध होता है. कोई आचार्य तैल और शहतके समान भी शुद्ध बतलाते हैं, परन्तु धन्वन्तरिजीके मतसे श्वेतही शुद्ध मानागया है ।। ११३ ।।

शुद्ध (आर्तव) रजका लक्षण

शशासृक्प्रतिभं यत्तु यद्वा लाक्षारसोपमम् ।
तदार्तवं प्रशंसन्ति यद्वासो न विरंजयेत् ।। ११४ ।।

खरगोशके रुधिरके सदृश रंग जिसका हो अथवा लाखके रंगके तुल्य हो अथवा जिसमें रंगा हुआ वस्त्र धुलनेपर लाल रंग न रहे ऐसा रज गर्भके योग्य होता है ।। ११४ ।।

मासेनोपचितं काले धमनीभ्यां तदार्तवम् ।
ईषत्कृष्णं विदग्धं च वायुर्योनिमुखं नयेत् ।। ११५ ।।

एक महीनेभरका संचित आर्तव कुछ काला और दुर्गन्धयुक्त होजाता है उस आर्तवको समय पाकर वायु धमनियोंके द्वारा योनिमुखपर ले जाता है, उसीको रजोदर्शन कहते हैं ।। ११५ ।।

तद्वर्षाद्द्वादशात्काले वर्तमानमसृक्पुनः ।
परिपक्वशरीराणां याति पंचाशतः क्षयम् ।। ११६ ।।

यह आर्तव स्त्रियोंके बारह वर्षके उपरान्त प्रवृत्त होता है और बुढापेसे शरीरके निर्बल हो जानेपर पचास वर्षकी अवस्थामें क्षय होजाता है ।। ११६ ।।

गर्भाशय का स्वरूप

शंखनाभ्याकृतियोनिस्त्र्यावर्ता सा प्रकीर्तिता ।
तस्यास्तृतीये त्वावर्ते गर्भशय्या प्रतिष्ठिता ।। ११७ ।।

शंखकी नाभिके आकार तीन लपेटवाली योनि होती है उसके तीसरे लपेटमें गर्भशय्या होती है ।। ११७ ।।

यथा रोहितमत्स्यस्य मुखं भवति रूपतः ।
तत्संस्थानां तथारूपां गर्भशय्यां विदुर्बुधाः ।। ११८ ।।

रोहूमछलीके मुखका जैसा आकार होता है वैसाही स्थान तथा रूप गर्भाशयका बुधजनोंने कहा है ।। ११८ ।।

आभुग्नोऽग्रमुखः शेते गर्भो गर्भाशये स्त्रियाः ।
स योनिं शिरसा याति स्वभावात्प्रसवं प्रति ।। ११९ ।।

स्त्रीके गर्भाशयमें सुकडाहुआ और सम्मुख बालक शयन करता है. फिर वह प्रसवकालमें स्वभावहीसे शिरके बल योनिके द्वारपर आजाता है ।। ११९ ।।

नियतं दिवसेऽतीते संकुचत्यम्बुजो यथा ।
ऋतौ व्यतीते नार्यास्तुयोनिः संव्रियते तथा ।। १२० ।।

जिस प्रकार दिनके व्यतीत होनेपर कमल बन्द हो जाता है उसी प्रकार सोलह दिन व्यतीत होनेपर स्त्रीके गर्भाशयका मुख बन्द होजाता है ।। १२० ।।

इस प्रकार गर्भाधान इन्हीं सोलह दिनोंमें करे. तहां प्रथम तीन दिन वर्जित करे, चौथे दिन विधिपूर्वक स्त्री स्नान करे, तहां शीतल जलसे स्नान शीत कालमें न करे. गरमीकी ऋतुमें शीतल जलसे स्नान करे और शीतकालमें गरम जलसे स्नान करे. वायुके स्पर्शसे अपना बचाव रक्खे, स्नानोपरांत अपना मुख आरसीमें देख लेवे अथवा अपने पतिका मुख देखे. अथवा जो कोई अपना प्यारा हो अथवा जिसके आकार सन्तानकी इच्छा हो उसका मुख देखलेवे, क्योंकि उस समय जिसके आकाका ध्यान स्त्रीके चित्तपर जमता है उसी आकृतिका बालक उत्पन्न होता है अनन्तर स्त्री पुरुष दोनों उत्तम और शीघ्र पचनेवाले पदार्थ भोजन करे. तद गर्भाधानकी इच्छासे सहवास करे. तहां–और

युग्मेषु तु पुमान् प्रोक्तो दिवसेष्वन्यथाऽबला ।
पुष्पकाले शुचिस्तस्मादपत्यार्थो स्त्रियं व्रजेत् ।। १२१ ।।

सम (४ । ६ । ८ । १० । १२ । १४ । १६ ।) दिनोंमें शुक्रकी प्रबलतासे पुत्र और (५ । ७ । ९ । ११ । १३ । १५) दिनोंमें रजकी प्रबलतासे कन्या

उत्पन्न होवे है. इस कारण सन्तानकी इच्छावाला पुरुष इन दिनोंमें स्त्रीके साथ समागम करे ।। १२१ ।।

इस प्रकार गर्भाधान करे परन्तु सोलह दिन ऋतुके होते हैं, जिनमें गर्भ रहसकता है, शेष १४ दिन जो महीनेमें रहते हैं उनमें गर्भ नहीं रहता है, सोलहों दिनमें पृथक् २ गर्भ रहनेका फल यह है कि, पहले दिन मैथुन करनेसे पुरुषके शरीरमें रोग उत्पन्न होजाता है, गर्भ नहीं रहता है. दूसरे दिन मैथुन करनेसे गर्भ रह सकता है परन्तु गर्भस्थ बालक मरजाता है. तीसरे दिन मैथुन करनेसे मरीहुई सन्तान होती है, चौथे दिन मैथुन करनेसे दरिद्र पुत्र उत्पन्न होता है, इसी कारण ऋतुकालसे चार दिन मैथुन नहीं करना चाहिये. पांचवें दिन सौभाग्यवती कन्या, छठे दिन अपने समान पुत्र, सातवें दिन सुशीला कन्या, आठवें दिन धनवान् पुत्र, नववें दिन भाग्यवती कन्या, दशवें दिन बुद्धिमान् पुत्र, ग्यारहवें दिन अधर्मिणी कन्या, बारहवें दिन पुरुषार्थी पुत्र, तेरहवें दिन महापापिनी कन्या, चौदहवें दिन सुशील और धर्मात्मा पुत्र, पन्द्रहवें दिन पतिव्रता और साध्वी कन्या सोलहवें दिन गम्भीर बुद्धिवाला पुत्र उत्पन्न होवे है, शेष १४ दिनमें कुछ नहीं, अतः शेष १४ दिन मैथुन करना वृथा है. स्त्री पुरुषके बिना समागमके भी सन्तान उत्पत्ति होती है सो इस प्रकार कि ऋतुकालमें पुरुषका वीर्य किसी प्रकारसे स्त्रीके गर्भाशयमें पहुंचाया-जाय और ठहरजाय तो रजवीर्यकी योगसे गर्भ रहसकता है. तथा ऋतुकालमें कामवती स्त्री हित पुरुषका ध्यान कर स्खलित होती है अथवा दो कामवती स्त्रियां ऋतुकालमें जब संसर्ग करती हैं तब भी गर्भ रहजाना सम्भव है परन्तु ऐसे गर्भकी स्थिति नहीं होती.

गर्भलक्षण

योषितोऽपि स्रवत्येव शुक्रं पुंसां समागमे ।
तन्न गर्भस्य किंचित्तु करोतीति न चिन्त्यते ।। १२२ ।।

पुरुषके मैथुन समय स्त्रियोंके भी शुक्र निकलता है परन्तु वह शुक्रसे मिलकर गर्भका कारण नहीं होता है ।। १२२ ।।

क्योंकि गर्भोत्पत्तिमें वीर्य सौम्य और आर्तव आग्नेय है, यद्यपि संसार पाञ्चभौतिक है तथापि अग्नि और सोम तो गर्भोत्पत्तिमें प्रधान मानेगये हैं और शेष अणुरूपसे सम्मिलित रहते हैं. स्त्री पुरुषके संयोगमें जो गरमाई उत्पन्न होती है वह प्रथम शरीरमें वायुको प्रबल करती है, फिर उस गरमाई और वायुके मिलनेपर पुरुषका वीर्य निकलकर स्त्रीकी योनिमें प्राप्त होता

है और आर्तवके साथ मिलजाता है. अग्नि और सोमके संयोग होनेके कारण उत्पन्न हुआ गर्भ गर्भाशयमें प्राप्त होता है. इसलिये आग्नेय आर्तवकीही गर्भोत्पत्तिमें आवश्यकता है.

घृतपिण्डो यथैवाग्निमाश्रितः प्रविलीयते ।
विसर्पत्यार्तवं नार्यास्तथा पुंसां समागमे ।। १२३ ।।

जिस प्रकार अग्निके आश्रित होनेपर जमाहुआ घृतपिंड पिघल जाता है उसी प्रकार पुरुषके समागम होनेपर स्त्रियोंका आर्तव भी चलायमान होजाता है ।। १२३ ।।

बीजेऽन्तर्वायुना भिन्ने द्वौ जीवौ कुक्षिमागतौ ।
यमावित्यभिधीयेते धर्मेतरपुरः सरौ ।। १२४ ।।

पुरुषका वीर्य जब भीतरकी वायुसे भिन्न होकर दो भागोंमें विभक्त होजाता है तब दो जीव कुक्षिमें आजाते हैं उनको जोरिहा कहते हैं वे नियम-विरुद्ध होते हैं ।। १२४ ।।

शुक्रशोणितके संयोग होजानेपर जिसको क्षेत्रज्ञ आदि (पर्यायवाची) नामोंसे पुकारते हैं वह आत्मा दैवयोगसे गर्भाशयमें प्रविष्ट होकर स्थित होता है. श्रम होना, जंघायें शिथिल होना, तृषा लगना, ग्लानि होना, मनका स्फुरण होना यह तत्काल गर्भधारणके लक्षण हैं और स्तनोंके अग्रभागोंका काला होना, रोमांच होना, नेत्रोंके पलक मिचना, पथ्यभोजन भी वमन होजाना, उत्तम सुगंधित पदार्थोंसे भी भय करना, मुखसे पानी गिरना, शरीर जकडना, गर्भ रहनेके पीछेके ये लक्षण हैं. जिस समय गर्भ रह जाता है उस समय चतुरा स्त्री स्वयं जानलेती है कि, वीर्य ठहरगया. यदि पुरुषका वीर्य ठहरकर स्त्रीकी रजमें मिलजाता है तब वही रज वीर्य बुद्‌बुदरूपसे मिलकर गर्भ हो जाता है. स्त्री पुरुषके एक साथ स्खलित होनेपर स्त्रीको योग्य है कि, कुछ समयतक चित्त लेटी रहे जिससे वीर्य ठहरजाय. तुरन्त उठ खडी होनेसे वीर्य गिरजाता है. जब गर्भ रहजाता है तब कुछ पीडा नाभिके नीचे अवश्य होती है और दिन दिन स्त्री बलहीन होने लगती है. स्त्रीका चित्त रतिसे फिर जाता है. धरनका मुख बंद हो जाता है. कभीकभी ऐसा भी होजाता है कि, उस समय पतिकी बहुत इच्छा प्रकट हो जाती है. मुखका रंग बदल जाता है. नाडीकी गति तीव्र होजाती है, शरीरमें आलस्य बहुत आ जाता है, कभी कभी शिरमें पीडा भी होनेलगती है. जी मिचलाता है, विना भोजन

दूसरे महीनेमें स्त्री रजस्वला नहीं होती तभी निश्चय होजाता है कि, गर्भ ठहरगया, गर्भ तबही स्थिर होता है कि, जब स्त्रीपुरुषके मैथुनमें पूर्वोक्त रीत्यनुसार वर्ताव रहे. इसीसे कोकाजीने अपने ग्रन्थमें आसन नहीं लिखे. आसनोंसे पशुवत् मैथुन समझा जाता और अनेक रोग प्रगट होजानेका भय सर्वदा बनारहता है. जैसे खाना पीना खडे होकर आरोग्यताको हानि पहुंचाता है इसी प्रकार रतिकर्म भी खडे होकर करनेसे टांगोंमें कंपवायु रोग होजाता है. बैठकर काम करनेसे धरनमें आघात पहुंचता है और वीर्य ठिकाने तक न पहुंचकर वृथा जाता है इत्यादि. इसी प्रकार समझकर आसनोंसे जो हानियाँ हैं उनको समझ लेना चाहिये.

गर्भपरीक्षा

गर्भ होनेमें यदि किसी प्रकारका सन्देह हो तो मधु पांच तोले वर्षाका जल दश तोले एकमें मिलाकर पिलानेसे सोनेके समय यदि पेटमें पीडा हो तो गर्भ अवश्य है ऐसा जानना. अथवा लहसनके रसमें वस्त्र तर करके क्षुधाके समय योनिमें धरे, यदि लहसनकी गन्ध और स्वाद मुखमें जान पडे तो गर्भ नहीं जानना तथा एक दिन निराहार रहकर सब शरीरको चादरसे ढकदेवे और सुगंध अथवा दुर्गन्धकी धूनी देवे, यदि धूनीकी गन्ध स्त्रीकी नाकमें आवे तो गर्भ जानना, नहीं आवे तो नहीं जानना कभी कभी स्त्रीका पेट गर्भ होनेके समान फूलारहता है और बालककी चाल भी जानपडती है, परन्तु न वह गर्भवती है, न बालक है, किंतु वह एक रोग है, इसमें अन्तर यह है कि रोगवालीका पेट कठोर होता है और बहुत देरतक हलचल रहती है, गर्भिणीका पेट कोमल रहता है और हलचल नहीं रहती, कामके वेगसे स्त्री और पुरुषके समागम होनेपर शुद्ध शुक्र और आर्तवके मिलनेपर स्त्रियोंके गर्भ रहता है. उससे जो उत्पन्न होता है उसको बालक कहते हैं. जब वीर्य और आर्तवका मेल होता है उस समय शुक्र और आर्तवके साथ जीव प्रवेश करता है, जिस प्रकार सूर्यकी किरण और सूर्यकान्तमणि अर्थात् आतशी शीशाके संयोगसे अग्नि प्रगट होता है उसी प्रकार शुक्र और आर्तवके संयोगसे जीव उत्पन्न होता है.

पहले महीनेमें गर्भ गुप्त रहता है शुक्र और रज मिलकर सात दिनमें कललाकृति होकर बुद्बुदाकृति हो जाता है. दूसरे महीनेमें मांसपिण्डकार होजाता है. तीसरे महीनेमें पिंडाकारसे मस्तक, दो बाहु, दो पांवोंके सूक्ष्म अंग और प्रत्यंगकी आकृति युक्त पिंड बनता है. गर्भवती स्त्री तीन महीनों·

तक कोमल और मधुर पदार्थोंका सेवन करे क्योंकि तीन मासतक थोडा भी कुपथ्य गर्भनाशका कारण हो जाता है. चौथे महीनेमें गर्भके सम्पूर्ण अप्रगट अंग प्रगट हो जाते हैं, इस महीनेमें गर्भस्थितिके कारण गर्भिणीको अपना सब अंग अतिशय जड मालूम होने लगता है. इसी मासमें गर्भस्थ बालकको इच्छा प्रगट होती है जिससे वह हिल्ने डुलने लगता है तथा इसी मासमें गर्भस्थका हृदय माताके हृदयसे सम्बन्ध रखने लगता है और माताके हृदयस्थानसे रक्तवाहक नाडीद्वार उसका पालन होता है, इस कारण इस समय गर्भिणी जिस वस्तुकी इच्छा करे वही देना चाहिये उसकी इच्छा भंग न होने दे. क्योंकि इस महीनेमें गर्भिणीके मुखसे पानी छूटना, अन्नसे अरुचि, खट्टे पदार्थकी रुचि, शरीर भारी जानपडता, नेत्रोंकी ढिलाई, स्तनोंमें दूध प्रगट होना, होंठ और स्तन काले पडजाना तथा पावोंपर सूजन आना ये चिह्न प्रायः चौथे महीनेमें प्रगट होते हैं. इस महीनेमें गर्भिणीको इच्छित पदार्थ देनेमें यह विचार रखना कि, जो वस्तु गर्भको हानि कारक हो सो नहीं देना. जैसे बहुत भारी, गरम, तीक्ष्ण पदार्थ आदि-पाचवें महीनेमें गर्भस्थ बालकके मनमें संकल्प विकल्प करनेकी शक्ति प्रगट होती है. इस महीनेमें गर्भस्थके शरीरमें मांस और रुधिरकी वृद्धि होती है, इसकारण गर्भिणीका शरीर अतिशय कृत हो जाता है. छठे महीनेमें पदार्थके निश्चय करनेकी बुद्धि गर्भस्थ बालकके उत्पन्न होती है, इसी कारण छठे महीनेमें गर्भिणीका शरीर बल और वर्णरहित होता है. सातवें महीनेमें नवीन अंग प्रत्यंग विभाग स्पष्ट होकर गर्भके सब अवयव पुष्ट होते हैं, इस कारण सातवें महीनेका उत्पन्न बालक जी जाता है. आठवें महीनेमें धातु स्थिर होता है तथा सर्वधातुओंका तेज जो ओज है वह क्रमसे वारंवार माता और पुत्रमें संचार करता है. इस कारण गर्भिणी स्त्री तेजके संचारसे मुरझाइसी रहती है जब बालकको तेज संचार करता है तब बालक मुरझायासा रहता है, अतएव आठवें मासमें उत्पन्न सन्तान नहीं जीती है. ओजके स्थिर न रहनेसे आठ महीनेका बालक नहीं जीता है. इसी कारण आठवें महीनेमें बालककी रक्षाके निमित्त नैर्ऋत्य-दिशामें बलिदान करे. नववें और दशवें महीनेमें स्त्री बालकको जनती है परन्तु कोई कोई स्त्री ग्यारहवें बारहवें महीनेमें भी बालक जनती हैं. इसके उपरांत बालक उत्पन्न न हो तो विकार समझना चाहिये.

इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति प्रकार.

माता पिताकी यही इच्छा सर्वदा रहती है कि, हमारी सन्तान सुन्दर

हो, बुद्धिमान् हो, गुणवान् हो परन्तु इस बातपर प्रायः लोग कहने लगेंगे कि, यह दैवगति है इसमें मनुष्यका क्या वश है. परन्तु यह बात नहीं, सचमुच मनुष्यके आधीन है. आधीन होनेमें अनेक प्रमाण हैं, इसमें यहां प्रथम एक दृष्टांत लिखते हैं. एक पर्वतीय पण्डित विष्णुदत्त अपनी सुन्दर स्त्री सहित हिमालयके समीप एक ग्राममें रहताथा और विष्णुदत्तकी स्त्रीका भाई गोविंददेव भी विष्णुदत्तके पास पढनेकी इच्छासे रहता था. अपनी बहिनके समान गोविंददेव भी रूपवान् था विष्णुदत्तकी स्त्री अपने भाईसे बहुत प्रेम करती थी, जब वह गर्भवती हुई तो एक दिन वह अपने चरणपर कमलका चिह्न बनाने लगी, इतनेमें विष्णुदत्तने देखकर पूंछा कि, यह क्या करती हो ? तब उसने उत्तर दिया कि मैं चाहती हूं कि, मेरे पुत्र उत्पन्न हो उसके चरणपर ऐसाही कमलका चिह्न हो. जब उसके पुत्र हुआ तोबालकके चरणतलपर कमलका चिह्न था और वह बालक ठीक गोविन्ददेवके अनुहार उत्पन्न हुआ, यह देखकर शंका करके विष्णुदत्तने गोविन्ददेवको अपने घरसे निकालदिया, परन्तु जब दूसरा पुत्र उत्पन्न हुआ तो वह भी गोविन्ददेवकेही अनुहार था. तब विष्णुदत्तने अपनी स्त्रीसे पूंछा कि यह क्या कारण है कि, गोविन्ददेवके अनुहार यह पुत्र भी हुआ क्या गोविन्ददेव आया था ? तब उसने उत्तर दिया कि स्वामिन् ! आप पंडित हैं, मैं आपकी स्त्री अबला हूं, आपसे क्या कहूं ? मेरा कुछ दोष नहीं. मैंने प्रथम पुत्रके लिये और इस पुत्रके लिये भी सर्वदा यही इच्छा की कि, जैसा मेरा भाई गोविंददेव रूपवान गुणवान् है ऐसाही मेरा पुत्र भी हो. क्या आप नहीं जानते प्राचीन पुस्तकोंमें लिखा है कि, रजोवती स्त्री स्नान करके जैसे पुरुषको देखती है वैसाही बालक उसकी इच्छाके अनुसार उत्पन्न होता है और गर्भवती स्त्री जैसे पुरुषका ध्यान करती है वैसीही सन्तान उत्पन्न होती है. पहले पुत्रके समय स्नान करके मैंने गोविन्द-देवको देखा था इससे उसीके अनुसार बालक उत्पन्न हुआ. दूसरे पुत्रके समय यद्यपि वह यहां नहीं था तथापि उसका ध्यान मुझको बना रहा और अब भी उसीका ध्यान बना रहता है. आपके सामने मैंने कभी गोविन्ददेवका नाम भी नहीं लिया इसका कारण यही है कि, प्राय : पुरुषोंका स्वभाव होता है कि, स्त्रीका विश्वास नहीं करते और स्त्रीके विषयमें शंकाओंपर शंका मनमें लाकर कुछका कुछ समझ बैठते हैं और त्रास दिखाकर स्त्रीसे अपनी इच्छाके अनुसार बात कहलाकर उसको दोषी मानलेते हैं. यह सुनकर विष्णुदत्तकी शंका दूर होगई, तब गोविन्ददेवको फिर अपने यहां बुलालिया. परीक्षा लेनेपर स्त्रीका वचन सत्य प्रतीत हुआ.

एवं रजस्वलादिनसे विषयमें दिनोंमें कन्या और सम दिनोंमें पुत्रका होना पूर्व लिख चुके हैं. यह तो अपने आधीनही है. रतिके समय स्त्री बायें करवट हो तो पुत्री और दाहिने करवट हो तो पुत्रकी उत्पत्ति होती है तथा जो गोरे रंग और पुष्ट तथा पराक्रमी व सुन्दर पुत्रकी कामना हो तो स्नानके दिनसे स्त्रीको जौका मन्थ शहत डालकर सात दिनतक सफेद गायके दूधके साथ सेवन करावै तथा सन्ध्यासमय बहुत सफेद बैल अथवा सफेद घोडेके दर्शन करावै. यदि धर्मात्मा पुत्र उत्पन्न करनेकी इच्छा हो तो हरिश्चन्द्र आदिके चरित्र सुनावे तो धर्मात्मा और आज्ञाकारी पुत्र उत्पन्न होगा. यदि वीरपुत्रकी इच्छा हो तो महाभारत आदिकी वीररसकथा सुनावे. यदि रसिक और सर्वकालसम्पन्न पुत्रकी इच्छा हो तो श्रीकृष्णचरित्र सुनावै. यदि गानविद्यामें चतुर पुत्रको इच्छा हो तो गाना सुनावै. तात्पर्य यह कि, जिस प्रकारकी सन्तान चाहै वैसीही वार्ता गर्भिणीको सुनाया करै, जिससे गर्भवती और बालकके चित्तपर उसका प्रभाव पूर्ण रीतिसे पडै. महाभारतमें इस बातका प्रमाण है कि, सुभद्राके गर्भमें अभिमन्युजीने चक्रव्यूह (चकावूह) की लडाई सुनी थी.

इन्द्रियार्थांस्तु यान् यान् सा भोक्तुमिच्छति गर्भिणी ।
गर्भबाधा भयात्तांस्तान् भिषगाहृत्य दापयेत् ।। १२५ ।।
सा प्राप्तदौहृदा पुत्रं जनयेत्तद्गुणान्वितम् ।
अलब्धदौहृदा गर्भे लभेतात्मनि वा भयम् ।। १२६ ।।
येषु येष्विन्द्रियार्थेषु दौहृदे वै विमानता ।
तेषु तेषु सुतस्यार्तिस्तस्मिस्त-स्मिस्तथेन्द्रिये ।। १२७ ।।

गर्भवती स्त्री जिन जिन इन्द्रियोंके भोगकी इच्छा करे उनके न मिलनेसे गर्भको बाधा होती है. इस कारण बाधाके भयसे भिषग्वर (वैद्य) उन उन भोगोंको दिलावे. गर्भवतीको जब दौहृद मिलजाता है तो गुणयुक्त सन्तान उत्पन्न होती है. दौहृदके न मिलनेसे गर्भ तथा गर्भवतीको व्याधि होजानेका भय है और जिन जिन इन्द्रियोंके भोगोंकी दौहृदमें प्राप्ति न हो तो उन्हीं उन्हीं इन्द्रियोंमें बालकको हानि पहुंचती है ।। १२५–१२७ ।।

वह दौहृद स्त्रीको चतुर्थ मासमें जानना क्योंकि, जीवात्मा इन्द्रियोंके विषयोंमें रुचि करने लगता है. बालकका हृदय और गर्भवतीका हृदय यह दो हृदय हैं इस कारण गर्भवतीको दौहृदिनी कहते हैं.

रजोवती होनेके दिनसे सम विषम दिनोंमें गर्भ रहनेसे पुत्र पुत्रीका होना निश्चय करे. यदि इस प्रकार निश्चय न हो तो स्त्री पुरुषकी निर्बलतासे पुत्री और सबलतासे पुत्रकी उत्पत्ति जानना अथवा पुरुष सबल होनेसे पुत्र और स्त्री सबल होनसे कन्याकी उत्पत्ति जानना. अथवा चौथे महीनेसे इस बातकी परीक्षा करनी चाहिये कि, यदि गर्भका बोझ दाहिनी ओर है तो पुत्र और बाईं ओर है तो कन्याकी उपत्ति जानना. अथवा दाहिनी आंख लाल रहनेसे बालक और बाईं आंख लाल हो तो कन्या और बाईं आंख कुछ बडी हो जानेसे बालिका और दाहिनी आंख कुछ बडी हो तो पुत्रकी उत्पत्ति जानना. अथवा स्त्रीको रतिकी इच्छा न रहे तो पुत्र और इच्छा बनीरहे तो पुत्रीकी उत्पत्ति जानना. अथवा गर्भवतीकी पांवकी रगें लाल और उभरीहुई हों तो पुत्र तथा नीली और फूलीहुई हों तो कन्याकी उत्पत्ति जानना. दाहिने हाथकी नाडी तेज चलती हो तो पुत्र और बायें हाथकी नाडी प्रबल चलती हो तो कन्याकी उत्पत्ति जानना. अथवा गर्भवतीका दूध सफेद कपडे पर डालनेसे लाल दाग पड जाय तो लडका, पीला हो तो लडकी. एवं चुकन्दरके पत्ते बारीक कर नाकमें फूंकनेसे छींक आवे तो बालक हो और छींक नहीं आवे तो कन्याकी उत्पत्ति जानना. अथवा जिस स्त्रीके गर्भमें पुत्र होता है उसका गर्भ दूसरे मासमें पिंडाकार गोल दिखाई देने लगता है. प्रथम दाहिने स्तनमें दूध प्रगट होता है. दाहिनी जांघ हृष्ट पुष्ट दीखने लगती है. मुख प्रसन्न रहता है और सम्पूर्ण पुरुषवाचकवस्तुओंका नाम प्रिय लगता है. तथा पुरुष-वाचक वस्तुओंकी इच्छा होती है. मिट्टी आदि सोंधी वस्तुपर इच्छा अधिक चलती है और पुरुषवाचकवस्तु जैसे आम्र आदि फल, कमल आदि फूल स्वप्नमें देख पडते हैं. मुखका रस मधुर रहता है. चलनेके समय पहले दाहिना पांव सुखसे उठता है. उठनेके समय दाहिना हाथ टेककर गर्भवती उठती है. स्तनका अग्रभाग लाल रंग दीख पडता है. स्त्रीका रंग बदल जाता है. उसका दूध दर्पण (आईना) पर डालनेसे मोतीसा होजाता है. दूधमें जुवां डालनेसे रेंगने लगता है. चार मासा जराबंद कूट पीसकर भगमें रखनेसे मुखका रस मधुर होजाय. सुखपूर्वक नींद और कमती नींद आवे. भयानक स्वप्न न देख पडे. उत्तम स्वप्न देखे, ये सब लक्षण पुत्रकी उत्पत्तिके जानने. इन लक्षणोंसे विपरीत लक्षण हों तो कन्याकी उत्पत्ति जानना. यदि गर्भमें बालिकासे बालक बदलनेकी इच्छा हो तो गर्भवतीको तीसरे महीनेसे नीचे लिखे अनुसार आहार देने है. चावल, छोटी जुन्हरीका आटा, अथवा गेहूंका आटा, उर्द, चना,

चुकन्दर, गोभी, शलगम, सेमकी फलियां; गाजर, गौका दूध उसमें शक्कर थोडीसी डालकर पिलाया करे और आलु, मीठे फल, शक्करकन्दी, ईख, शहत इत्यादि और विश्राम गर्भवती अधिक करे और अपने मनमें सदैव पुत्रकी कामना रक्खे तो अवश्य पुत्रीसे पुत्र होजाना संभव है, परंतु चार माससे अधिकका गर्भ होजानेपर यह उपाय वृथा है. यदि लक्षण पुत्रके हों और पुत्रीकी इच्छा हो तो नीचे लिखे अनुसार आहार हित है. जौका आटा, मकई, बाजरा, मूंगकी दाले; साबूदाना, मटर, आडू, कमरख, शहतूत, किशमिश, अधिक शक्कर, बकरीका दूध इत्यादि. सब काम बायें हाथसे करना, बायें नेत्रसे विशेष बल करके देखना, बाई हथेली टेककर उठना, बायां पांव उठाकर चलना, बायें कानसे शब्दकी ओर अधिक ध्यान देकर सुनना और पुत्री होनेकी इच्छा सदैव रखना, इस प्रकार वर्तावसे पुत्रीकी उत्पत्ति होती है, परंतु पुत्रसे पुत्रीकी कामना बहुत कम लोगोंको होगी, यह उपाय तीसरे महीनेसे पांच महीनेतक अर्थात् जब गर्भ सात महीनेका होजाय तबतक ठीक है.

गर्भिणी धर्म

गर्भिणी स्त्रीको दूसरे तीसरे महीनेमें मधुर और कोमल भोजन करना चाहिये, तीसरे महीनेमें दूधके साथ भात खाना, चौथे महीनेमें दहीके साथ भात खाना चाहिये, पांचवें महीनेमें दूधके साथ, छठे महीनेमें उत्तम घीके साथ, सातवें महीनेमें उत्तम शीघ्र पचनेवाले भोजन हितकारक जानने । गर्भिणीको सदा प्रसन्नमुख रहना चाहिये और पवित्र तथा अलंकृत रहना चाहिये । निर्मल वस्त्र और स्वच्छ बिछौना तथा सुगन्धित पदार्थ सूंघते रहना, इस नियमसे रहे कि, कोई रोग उत्पन्न न होजाय. अपच और ऋतु-विरुद्ध कोई भी पदार्थ न खाय तथा गर्भिणीको उचित है कि, अधिक परिश्रम न करे, दिनमें न सोवे, रात्रिमें न जागे, शोक न करे, बोझा न उठावे, ऊंचेपर न चढे, दौडकर न चले, नदी नाले न लांघे, क्रोध न करे, लंघन न करे, कडुए, तीखे, चरपरे, खट्टे और बहुत गरम पदार्थ न खाय, भय न करे, भयके स्थानमें न जाय, भयंकर वस्तु न देखे, इनमेंसे यदि एक बातभयवर्तावमें आ जाती है तो गर्भको हानि पहुंचती है. कई स्त्रियोंको बन्दर सांप और हाथीके आकार विकृतअंगवाले बालक जन्मते सुना और देखा है, इस कारण गर्भिणीको सावधान रहना चाहिये, गर्भिणीको यदि गोरे रंगके बालककी अभिलाषा हो तो

चावलकी खीर खावे, गेहुंए रंगका बालक चाहे तो दही चावल खाय, लाल रंगका बालक चाहे तो घी अधिक खाय. पंडित बालक चाहे तो मधु चांवल खाय, पंडिता कन्या चाहे तो तिल चावल खाय. वीरपुत्र चाहे तो वीररसकी कथा पढे और अपने बालकके वीर होनेकी बातें दूसरेसे करती रहे. बुद्धिमान् और सुशील बालक चाहे तो विद्याकी चर्चा करती रहै और बुद्धिमान् व सुशील पुरुषोंके इतिहास पढती और सुनती रहे, एवं गानेवाला बालक चाहे तो गाना सुनती रहे. कवि बालक चाहे तो छन्द प्रबन्ध सुनती रहे, गणितज्ञ बालककी अभिलाषा हो तो गणित करती रहे. एवं जिसको जैसा बालक चाहिये उसी अनुसार प्राप्त होसकता है. यह ईश्वरीय नियम है. इस विषयमें अनेक दृष्टान्त देश देशके हैं परन्तु विस्तार होनेसे यहां लिखनेकी आवश्यकता नहीं. गर्भिणी स्त्रीको पुरुषसंग कदापि नहीं करना चाहिये. क्योंकि प्रसंग करना तो सन्तानके निमित्त है. सो जब गर्भ होनोसे सन्तानके प्राप्त होनेकी आशा है तब प्रसंगकी क्या आवश्यकता है. प्रसंग करनेसे गर्भको हानि पहुंचती है, ये सामान्य धर्म गर्भिणी स्त्रीके हैं.

धात्री शिक्षा

बालक उत्पन्न होनोसे पहले नवम मासमें गर्भवती स्त्रीको सूतिका भवनमें रखना. जो भवन (घर) भली भांति सुथरा देश कालके अनुसार हो और सब सामग्रीसे युक्त हो. प्रसूत होनोसे आठ दश दिन पहले गर्भिणीको कुछ कुछ आनन्द जान पडता है, शरीर हलका होजाता है. श्वास सुखपूर्वक लेती है, क्योंकि बालक नीचे कटिप्रदेशमें उतरता है, जिस समय बालक उत्पन्न होना चाहता है, उस समय गर्भवतीका पेट ढीला होजाता है, जंघामें पीडा होनो लगती है. बारबार मलमूत्र उतरनेकी शंका होती है और जलनसी भी पडने लगती है. ऐसा होनेका कारण यह है कि, उस समय मूत्रस्थानपर बोझ अधिक पडता है. कभी कभी ऐसा भी होता है कि, गुदस्थानपर विशेष बोझ पडनेके कारण दस्त बन्द होजाता है. तो उस समय पेडूपर सुहाता २ सेंक देवे और गुदापर रेंडीके तेलकी पट्टी लगावे. प्रसवकाल समीप आतेही गर्भिणीकी कमर पीठकी पसुली (रीड) में पीडा होने लगती है तथा मूत्र करते समय प्रसवस्थानके मुखपर कफ आकर दर्द करता है. योनिम दुःख होनेका कारण यह है कि, बालकको गर्भाशयसे बाहर निकलनेके कारण योनि कभी संकोच कभी विकास पाती है, तब जानना कि शीघ्र बालक प्रगट होगा. उस समय

गर्भिणीको यदि सरदी लगे तो उसको चाय पिलाना चाहिये, गर्भस्थानमें दर्द होने लगे तब स्त्रीको चलना फिरना चाहिये जिससे प्रसव शीघ्र और सहजमें हो जाता है. प्रसव होना यह स्वाभाविक बात है इस कारण उसको स्वाभाविक रीतिसेही होनेदेना चाहिये. उसमें व्यर्थ बुद्धि लडानेकी आवश्यकता नहीं है. प्रसूताको जो पहले वेदना होती है, उसका उपाय करना नहीं चाहिये. कारण इस वेदनासेही गर्भस्थान और दूसरे कई भाग लंबे तथा चौडे होनोसे बालकके बाहर आनेमें सुगमता होती है. परन्तु दाई चतुर और ज्ञाता चाहिये, प्रसूतिके लक्षण दिखाई देतेही गर्भिणीको गरम जलसे स्नान कराना चाहिये. जननेसे पहले दूधकी कांजी उत्तम प्रकारसे बनाकर कंठपर्यन्त पिलाकर उत्तम कोमल बिछौनेपर पांवकी पोटली जंघाओंसे भिडाकर औंधी सुलाना योग्य है और धायको चाहिये कि, अपने हाथके नख कटा लेवे. यदि प्रसूतिके काममें निपुण हो तो प्रसूतिका काम करे. धायकी प्रसूत होनेवाली स्त्रीके गर्भस्थानके मुखप्रदेशको हाथसे मलना चाहिये. फिर जब गर्भके बन्द और उनके नाडीके बन्द ढोले होनेलगें और कमरके पिछले भागमें पीठ पसुली (रीढ) वस्तिप्रदेश (पेंड) और मस्तकमें पीडा होनेलगे तब धीरे धीरे मलना. गर्भ मार्गमें आनेलगे तब अधिक मलना और जब वह मुखपर आवे तब उससे भी अधिक मलना, यह क्रिया बाहर आनेतक करनी योग्य है. उचित समय होनेके पहले यदि ठीक ठीक उपाय न किया जाय तो बालक बहरा, गूंगा, मस्तकविकारी, कास, श्वास और शरद विकारसे युक्त तथा दुर्बल होजाता है. गर्भका मस्तक जननेन्द्रियके मुखमें आतेही प्रसूतिकाको युक्तिसे बायां करवट बदलाना, गर्भस्थ बालकका मस्तक बाहर निकलतेही उसको दाहिने हाथपर लेना, परन्तु बलपूर्वक दाबना नहीं चाहिये जैसे जैसे कन्धा, बाहु और शरीरके और अंग बाहर आने लगें तब पेटपरसे नीचेतक धीरे धीरे हाथसे दबाना. यदि बालकका मस्तकही. बाहर दिखाई दे तो उसके कांखसे शनैः शनैः युक्तिपूर्वक अंगुली डालकर बडी सावधानीसे उसको बाहर निकाल इस क्रियामें कुछभी असावधानी होनेसे बालकका गला बैठ जाता है, बालकको तुरन्त सामान्य शीतलजलसे स्नान कराना और उसके गलेका चिकना पदार्थ अंगुलीसे निकाल डालना. कभी कभी बालकके आसपास पतला पर्दा रहता है उसको देखतेही उसी समय नखोंसे फाडकर बालकको अलग करना. ऐसा करनेमें विलंब करनेसे बालक मरजाता है. बालक जन्मतेही उसके श्वासोच्छ्वासक्रिया प्रारंभ होती है. और वह रोने

लगता है, उसको श्वासोच्छास ठीक प्रकारसे होता हो तो उसका नाल नाभिसे चार अंगुलके अन्तरपर चार वा छः तह डोरेसे कसकर बांधना और वैसेही चार अंगुलके फासलेपर दूसरा बन्द लगाना फिर दोनों बन्दके बीचमें कैंचीसे काटना. इस प्रकार नाल काटनेसे रक्तस्राव नहीं होता, नाल काटनेपर खेरीसे संलग्न नालका टुकडा एक स्त्रीको बलपूर्वक पकडना चाहिये, ऐसा न करनेसे नालका भाग फिर भीतर चलाजाता है. बालक जन्मतेही यदि न रोवें तो उसको धीरेसे एक चिकोटी काटकर रुलाना, जो न रोवे तो जानना कि बालक अभी हांफता है. जबतक बालक हांफता रहे तबतक नाला नहीं काटना, हांफना बन्द करनेका उपाय यह है कि, बालकके मुखमेंसे लार निकाल डाले फिर बालकके मुखपर, शीतल जलके चार पांच छीटे देवे तो बालक रोने लगता है. तब भी न रोवे तो बालकको शीतल जलमें डुबोकर तुरन्त निकालना तो चौंककर बालक रोने लगता है. इससे भी न रोवे तो गरम शीतल जल अलग अलग रखकर शीतलमें डुबोय गरममें थोडी देर रक्खे. यदि इससे भी न रोवे तो उसके पांजरको हाथोंसे दबाय अपने मुखसे उसके मुखपर धीरे फूंक देनी चाहिये. फूंकते समय हाथ छोड दे और बालकको दाब दे तब भी न चेते तो उसके नाक और तालुको सुरसुरावे और धीरे धीरे थपकी देवे । फिर नाल काटे जो बालक होकर नीला पडगया हो, रोता न हो तो ठोडीकी ओरसे नालको तीन अंगुल छोडकर काट देना. अधिक लोहू न गिरनेदे, कोई बालकके रुलानेको थोडी रुई तेलमें डुबोय दीपकपर सेंककर उसका धुवां बालकको सुंघाते हैं, इससे पृथक् क्रिया रुलानेकी नहीं चाहिये. नाल काटनेपर ध्यान रहे कि, पेटमें दूसरा बालक तो नहीं है क्योंकि जोरिया बालकोंका नाल एकही होता है. जो नालमें दूसरी और गांठ न दीजाय तो लोहू बहकर दूसरा बालक मरजाता है. नालको नरम कपडेकी पट्टीमें लपेटकर उसके पेटपर पट्टी बांधना. कपडेका जो भाग नालमें लगे वहांपर मीठा तेल लगाना. ऐसा करनेसे एक दो दिनमें अपने आप गल जाता है. नाल गलकर गिरजानेपर नाभिसे खून आने लगे तो रुई जलाकर वही राख लगाना. जन्मनेपर दो तीन दिन बालकको बताशा पिलाना वा बकरीका दूध देना, प्रसूताका दूध चौथे दिन पीने योग्य होता है. प्रसूताके दूधसे बालकके मलशुद्धि होती है. मलशुद्धि ठीक न हो तो बालकको कुछ अंडीके तेलमें शहत डाल चटादेना. बालक जन्मतेही प्रसूताको औंधी सुलाय उसके पेटका भाग बलपूर्वक दवाना. खेरी बाहर गिरजानेपर पेट दवानेकी आवश्यकता नहीं है. जन्मनेपर १०।१५ मिनटमें

ओझरी गिरजाती है, न गिरे तो पेटपर हाथ फेरते रहना. गर्भाशयसे औझरीका छूटना जाननेको योनिकी नाल खींचना. वहीं छूटी होगी तो तुरंत बाहर आवेगा पर नाल खींचकर ओझरी निकालना बडे धोखेका काम है. ओझरी बाहर गिरने बाद इन्द्रियके आसपासका भाग गरम जलसे पोंछडालें. फिर गरम जलसे प्रसुताको पोंछदेवे. दुष्ट पवन व सरदीसे बचाना. अग्नि जलाना; प्रसूतीको शीतल जल भूलकरके भी न देना, पुष्टिकारक अन्न व विडंग डाल हुआ गरम जल देना, चार नि तक बिछौनेसे न उठने दे, विना प्रयोजन कोई औषधि नहीं ढेना. प्रसूतिके समय विस्तृत हुआ भाग नियमित कालमें स्वयं औषधि नहीं देना. प्रसूतिके समय विस्तृत हुआ भाग नियमित कालमें स्वयं संकुचित होजाता है. उसके औषधिकी आवश्यकता नहीं. प्रसूताको ज्वर खांसी आदिके निमित्त दशमूलका काढा हित है. स्त्रीके गर्भधारणके पश्चात् पतिको उस समयतक ब्रह्मचर्य रहना चाहिये, जबतक उसकी स्त्रीमें गर्भधारण करनेकी शक्ति पुनः न आजाय. ऐसा करनेसे आयुकी वृद्धि होती है और सुख होता है शेष उपयोगी विषय उत्तर भागमें लिखेंगे.

इति श्रीमत्पंडितनारायणप्रसादमिश्रकृते कोकसारे पूर्वभागः समाप्तः ।

अथ

उत्तर भाग.

पुरुषरोग

" शरीरं रोगमन्दिरम् "

शरीर रोगोंका मन्दिर है, अनेक प्रकारके रोग पुरुषके शरीरमें उत्पन्न होजाते हैं, परंतु यहां केवल उन्ही रोगोंका लेख संक्षेप रीतिसे हम लिखते हैं कि, जिन रोगोंके बढजानेसे पुरुषका पुरुषत्व नष्ट होजाता है. पुरुषत्वको नष्ट करनेवाले रोग ये हैं, जैसे–१ कामरोग, २ हस्तमैथुन, ३ गुदमैथुन, ४ शपवंश (आतशक), ५ मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) ६, क्षय, ७ प्रमेह, ८ नपुंसकता, ९ अंडवृद्धि, १० अर्श (बवासीर) आदि. इन रोगोंमेंसे प्रथम कामरोगका वर्णन करते हैं.

कामरोग

कामनामरोग रजोगुणकी अधिकतासे उत्पन्न होता है. इस रोगकी उत्पत्तिका पूर्ण लक्षण यही है कि, भोगोंसे कभी तृप्त न होना. सो यह काम (कामदेवसम्बन्धी) रोग दो प्रकारका होता है–१ अत्रक, २ परत्रक, अत्रककाम यह कि, जगत्में इन्द्रियोंके भोगोंसे कभी तृप्त न होना, इस रोगका उपाय यह है कि, मनुष्य अपने चित्तमें विचारे कि, इस अत्रककामसे मुझको अनेक रोग, निर्धनता, लोकमें निन्दा और अभाग्यता, नाना प्रकारकी चिन्ता होने से पुरुषत्वमें हानि होगी. इस अत्रककामसे आसक्तिनामवाला रोग प्रगट होता है जिसका अर्थ यह है कि, भोगोंके प्रेममें अत्यन्त बंधजाना है. आसक्तिरोग दो प्रकारका है–पहला यह कि, प्राय: लोग धनादिपदार्थोंमें ऐसे बंधे हैं कि, एक पैसा भी उसमेंसे कम नहीं कर सकते. इसका उपायही क्या ? यदि है तो यही है कि, मनमें इस बातका विचार करे कि, हमारे पीछे यह हमारा संचित धन धराही रहजावेगा. यदि कोई पावेगा तो वह व्यय व्यर्थ करेगा. इससे जो धर्म हम इस धनसे करजावेंगे वही हमारे साथ होगा इत्यादि. दूसरी आसक्ति यह कि, अनेक जन इस संसारमें ऐसे हैं कि, किसी स्त्री अथवा बालककी सुन्दरतामें मनको लगाकर अनेक प्रकारके क्लेश सहते हैं. यह एक दुर्व्यसन है कि, पहले कुछ समय तो अपने प्रियदर्शन आदिसे

कुछ सुख प्राप्त होता है फिर विना दुःखके और कुछ लाभ नहीं होता क्योंकि क्षण क्षण पर यही भ्रम रहता है कि, हमारा प्रिय किसी दूसरेके मोहमें न खिचा हो. अथवा हमारे प्रेमसे हटा कर कोई दूसरा पुरुष अपनी ओर न खींचले. कभी कभी उसके तन मन और बोलचालमें ऐसी वृथा शंकाएं उत्पन्न होजाती हैं कि, किसी दूसरेको स्वप्नमें भी ऐसी शंकाएँ उत्पन्न नहीं हो सकतीं. कभी कभी वह प्रेमी पुरुष अपने प्रियसे सन्तप्त होकर यह नियम भी करलेता है कि, अब मैं मृत्यु पर्यन्त इसका दर्शन नहीं करूंगा. परंतु फिर शीघ्रही अपने नियमको तोडकर प्रियके सम्मुख दीन होने लगता है. यदि उस प्रेमी अथवा सम्बद्ध पुरुषके अवगुण लिखे जायँ तो लिखनेमें बहुत विस्तार होजाय परन्तु यहाँ केवल सात अवगुण जो बहुत भारी हैं, वे आगे प्रगट करते हैं.

१—प्रेमी पुरुषको अपने प्रियके चिन्तनके विना अन्य किसी कार्यका अवकाश नहीं रहता है.

२—प्रेमी पुरुष सदा चिन्ता, भय, शोकमें क्लेशयुक्त रहता है.

३—उसकी आयु सामान्यघाटके जलके सदृश देखतेही वृथा नष्ट हो जाती है. अपने प्रियके संयोग वियोगमें यह सुध नहीं रहती कि, सूर्य निकला और कब अस्त हो गया और आज दिन हमने क्या काम बनाया.

४—सम्बद्धपुरुष जगत्में प्रायः सबहीको अपना शत्रु समझने लग जाता है कि, सब कोई हमारे प्रियको ताकता है.

५—सम्बद्धपुरुष व्यर्थ शंकाएँ उठाकर श्वासश्वास चिताग्निमें दग्ध होता है और उसकी निवृत्तिका कुछ उपाय नहीं कर सकता है.

६—सम्बद्धपुरुष अपने प्रियके विना किसी अन्य पुरुषकी समीपता नहीं चाहता. किन्तु सबको विषवत् जानता है.

७—सम्बद्धपुरुष आठों पहर उन्मत्तोंकी नाई चुपचाप और उदासीन रहता है. योग्य है कि, पुरुष इस दुःखसे सदैव बचता रहे.

यद्यपि इस रोगकी चिकित्सा तो बहुत कठिन है परंतु इस रोगीको अपने प्रिय तथा उसके संयोगजन्य सुखमें सदा दोष ढूंढते रहना चाहिये. अथवा हठ करके तुरन्त इस रोगीको उस देशमें लेजावे कि, जहां प्रियका सन्देशतक न पहुँच सके. यद्यपि अदर्शन आदिसे कुछ काल तो वह बहुत सन्तापयुक्त रहेगा, परन्तु अन्तमें अवश्य धैर्य और शान्ति होजावेगी. यह अत्रककामरोगका वर्णन किया.

आगे परत्रककाम रोग वर्णन करते हैं–दूसरा परत्रककाम यह है कि, श्रवण कियेहुए परलोकको कामना और पवित्रताके निमित्त सदैव अपनेको घ्रती और हठी विवाहरहित एकाकी तथा सर्वत्र सब प्रकारके आवश्यक आनन्दसे अत्यन्त वर्जित रखना. विरागी और तपस्वीलोग तो भोगोंके अत्यन्त त्यागको मोक्षका कारण कहते हैं. सो भोगोंकी अत्यन्त कामना तो हम भी श्रेष्ठ समझते हैं कि, जिनका नाम आसक्ति है. परंतु आवश्यक आनन्दका त्याग हम अच्छा नहीं समझते. जैसा कि, विवाहादिके अत्यन्त त्यागमें हम अनेक दोष देखते हैं, प्रथम तो यह बात अत्यन्त असंभव है कि, कोई मनुष्य मूत्रपुरीषके विसर्गकी नाई वीर्यके विसर्गको आवश्यक न समझे द्वितीय-यदि कोई रोकना भी चाहे तो येनकेन प्रकारसे यह तनमनको मथन करके अपने आपही बाहर हो जाता है. अथवा जबलों देहमें स्थिर रहे तबलों दु:संकल्प और कुभावना, दुश्चिन्तन तथा असद्वृत्ति आदिक नाना विकारों और रोगोंको उदय करता रहता है. हम यह अनुमान करते हैं कि, कोई खानी पानी जीव वीर्यके निरन्तर रोकनेमें समर्थ नहीं है. जो लोग आयुपर्यन्त यतित्वके अभिमानी हो रहते हैं, यदि वे नेत्र मूंदके हमारे इस लेखको सच्चे मनसे विचारेंगे अथवा अपने मानसिक कुकर्मोंको गिनेंगे तो अवश्य लज्जित हो जायँगे सो फिर जब इस देहमें कई एक अत्यन्त आवश्यक भोग विद्यमान हैं तो उनके अत्यन्त त्यागमें कौनसा अधिक पुण्य है. उपाय इस रोगका यह है कि, यदि परत्रक सुखकी कामना होवे तो ब्रह्मविद्याका उपदेश सुने और चिन्तन करे तथा भोगोंकी अधिक प्रवृत्तिका त्याग करे. और जिस पदार्थके विना शरीरयात्रा दुर्घट हो संयमपूर्वक उसके ग्रहण करनेमें दोष न समझे. जैसा कि, शीत उष्णके दलनको उचित वस्त्र और क्षुधाके समय अन्न, पिपासाके समय जलग्रहण करलेना आवश्यक है. बहुत ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने हठके प्रतापसे शरीरको सुखाया और खान पान आच्छादनके संयमसे मनुजशरीरको धूलिमें मिलाया और तुच्छ तुच्छ बातोंसे मनको रोकते किसी कामका न रहने दिया. हां ! यह तो योग्य है कि, बहुतसे सरस और स्निग्ध वस्तुओंके खाने पीनेसे जो मन पुष्ट होके अत्यन्त विषयावलंबी और उन्मार्गगामी बनने लगता है इस हेतुसे खानपानमें भी कुछ संयम करना चाहिये. परन्तु ऐसा नहीं कि, उसमें अत्यन्त संकोच होजावे. मनका स्वभाव है कि, जब इसको बहुतसे भोग और आनन्द मिलते हैं तो फिर उनसे हटके अन्य व्यवहारका अवकाश नहीं पाता. बहुत लोग ऐसे हैं जो प्रथम तो इस नियमसे भोगमें प्रवृत्त होते

हैं कि, किंचित् रस देखके शीघ्रही पीछे हट आवेंगे, परन्तु फिर उनका मन उधर ऐसा आसक्त होजाता है कि, पीछेकी कुछ भी सुध नहीं रहती. देखा गया है कि, भोग और कुसंगमें तो शीघ्र फल प्राप्त होजानेके कारण मनकी वृत्ति शीघ्रही उरझजाती है और संयम सन्तोष आदि वा सत्संगकी ओर शनैः शनैः आती है. इसी कारण उत्तम पुरुषोंने कुसंगका बहुत त्याग लिखा है. प्रगट है कि, जितना शीघ्र प्राणीको कुसंगका फल होता है उतना सत्संगका नहीं होता, कुसंगसे मन्द संकल्प मनमें भरजाते हैं और फिर मन संकल्पोंमें भरके देहको प्रविष्ट करदेता है. फिर प्रविष्ट देहका पीछे हटना अत्यन्त दुर्घट और कठिन होजाता है. पुरुषार्थी पुरुषको उचित है कि, उन दोनों प्रकारके कामको मनमें न आने देवे क्योंकि कामके प्रतापसे कभी कभी प्राणीके मनमें कुवृत्ति और उत्कर्ष नाम दो रोगकी उत्पत्ति होजाती है. अर्थात् अत्रककामसे कुवृत्ति और परत्रककामसे उत्कर्ष रोग उत्पन्न होजाता है. तहां पहले कुवृत्तिका वर्णन करते हैं. कुवृत्तिका लक्षण यह है कि, लज्जाहीन कर्मोंसे धन आदिका संचय करना. जैसा कि, भिक्षा आदि व्यवहार प्रसिद्ध है. यद्यपि बहुतसे विरक्तजनोंनें सुगमरूप होनेसे भिक्षावृत्तिको श्रेष्ठ तो लिखा है तथापि इसमें कई एक दोष प्रतीत होते हैं. प्रथम वह कि–सब अंग उपांगोंसे सम्पन्न होते जो कोई भीख मांगे वह संसारकी दृष्टिमें पतित और तुच्छ गिना जाता है. द्वितीय-भिक्षुकपुरुषके मिलापसे सबका मन डरता रहता है कि, कुछ मांगने लगेगा. तृतीय–जिसको भिक्षाका स्वभाव पड जाता है उससे कोई दूसरी आजीविका नहीं हो सकती, किंच अपने हस्त, पाद आदिकको मृतककी नाई व्यर्थ बनाके सदा अन्यपुरुषोंके हाथोंकी ओर देख देख जँभाई लेता रहता है. चतुर्थ–भिक्षाहारी पुरुषकी सन्तान भी भिक्षावृत्तिकोही अच्छा जानने लग जाती है. तात्पर्य यह है कि, अकिञ्चन साधुको विना कि जो केवल देहस्थितिको चाहता और उसके लिये केवल अन्न वस्त्रमात्रकी कामना रखके अन्य उद्यम नहीं करता. परन्तु उस अकिञ्चनसाधुको भी उचित है कि, अन्नवस्त्र उसीका ले कि, जिसको कुछ भली शिक्षा करे और जिसको अन्न वस्त्र देनेकी पूर्ण श्रद्धा हो, जहांलों होसके भीखही न मांगे. भीख मांगनेका सबको दोष है. इसी भांति जो लोग उपहास, ठट्‌ठा, स्वांग, भँडपन आदिकके आश्रय आजीविका करते हैं वे सर्वदा निन्द्य गिने जाते हैं. क्योंकि, उत्तम जनोंने नौ प्रकारसे पेट पालनको बहुत निन्द्य और कुवृत्तिरूप माना है, १ भीख मांगनेसे, २ नटविद्यासे, ३ नाचने आदिसे, ४ भांडपनसे, ५ कुट्टिनीपनसे, ६ वेश्यापनसे, ७

छलसे, ८ द्यूत (जुवा खेलने) से और ९ चोरीसे। चोरी दो प्रकारकी होती है, एक तनसे-दूसरी मनसे. तनसे चोरी यह है कि, दूसरेकी वस्तुको छिपाकर हरण करलेना और मनसे चोरी यह है कि, मिथ्यालापद्वारा धनीके मनको भय वा लोभ देके उसके हाथोंसे उसका पदार्थ समक्षही हरलेना. यहां जो कोई चोरी करनेवाला यह कहे कि, जहां राजभय प्रजाभय और निन्दादिका भय हो वहां चोरी न करे और जब किसीका भय न हो और जहां कोई देखता सुनता न हो वहां चोरी करनेमें क्या दोष है ? इसका ठीक उत्तर यह है कि, धनका रहना तो किसी कार्यके निमित्त होता है. सो ज्ञानवान् पुरुषके तो ऐसा कोई कार्यही नहीं रहता, कि, जिसके पूरा करनेको चोरी व झूठ छल अथवा हिंसा करनी पडे. क्योंकि वह ऐसे काम करता है जो निरुपद्रव पूरे हो सके और जो अज्ञानी जीव बहुत कामना और कार्योंके घेरेहुए होते हैं कि, जिनको चोरी आदिक करनी पडे उनके शिरपर परमेश्वरका भय खडा है कि, गुप्तमें चोरी नहीं करने देता. ज्ञानवान् पुरुषको यह भी निश्चय है कि, गुप्त स्थानमें चोरी करना अथवा मिथ्यालाप और छलद्वारा समक्षही किसीके पदार्थको हरलेना उस पुरुषको तो दुःखी करो वा न करो परन्तु अनेक प्रकारके अनर्थ और दुःख वह इस छल करनेवालेके शिरपरही खडे कर देता है. जैसा कि, सुनो-चोरी वा छल आदिसे प्राप्त किये हुए धनसे प्रथम तो सदाकाल मनमें भय और कम्प बना रहता है कि, मेरा यह अपकर्म कभी प्रगट न हो जावे. दूसरे-ऐसे निर्यत्न धनलाभसे अनेक खोटे संकल्प और भोग मनमें भरजाते हैं कि, जिनसे सारा आयु दुःखसहित व्यतीत हो. तीसरे-जब एकबार चोरी वा छलद्वारा मुख मीठा होगया तब सदा उसी कामको अच्छा समझेगा और फिर कभी अवश्य पकडा भी जावेगा इत्यादि. अब दूसरा-उत्कर्ष नाम रोग कहाथा, अर्थ उसका यह है कि, चाहे यथार्थ शुचि प्राप्त भी हो जावे तो भी उसको बढानेके निमित्त देहको मल-मलकर दुःखी होते रहना, इस रोगके होनेपर यही विचार लेना उचित है कि, किसी कार्यकी भी अत्यन्त अधिकता ठीक नहीं. जहांलों हो सके सर्वव्यवहारोंको समभावपर रखना चाहिये. इस उत्कर्षनाम रोगके बढ जानेसे संशय, भ्रम, संकोच ये तीन रोग उत्पन्न होजाते हैं. इनमें संकोचरोगके बढ जानेसे विद्रोह, नैर्घृण्य, पक्षपात ये तीन रोग उत्पन्न होजाते हैं. इन सबका वर्णन विस्तारपूर्वक लिखा जाय तो एक पुस्तक बन जाय और प्रसंग छुटजाय इस कारण इस विषयकी एक पुस्तक आत्मसंशोधन, नामक लिखकर प्रकाशित करेंगे. आत्मसम्बन्धी कामरोग

संक्षेपरीतिसे लिखकर अब हम देहसम्बन्धी कामरोग संक्षेपरीतिसे लिखते हैं. शरीरसे इस प्रकार कामरोगकी उत्पत्ति होती है कि, अधिक स्निग्धपदार्थ खाना, घृतसहित दुग्ध आदि पदार्थ सेवन करना, रसकथा सुनना, बेकाम अकेले बैठना. जिसमें अंग रगडें ऐसे काम करना, जैसे-मशीन चलाना, पांव उठाकर लटकते हुए ऊंचेपर बैठना, गीले कपडे पहिनना, एकान्तमें स्त्रीके समीप होना, स्त्रीके साथ शयन करना, रसीली पुस्तकें देखना, नंगे चित्र देखना, जागकर शय्यापर व्यर्थ पड़ेरहना, मलमूत्रको रोकना, अधिक बैठनेका काम करना, सवारीपर चढना, अजीर्ण होना, अधिक रात्रि व्यतीत हुए भोजन करना, कामध्वजके अग्रभागपर श्वेत मल जमजाना, मांस, मदिरा, लवण, खटाई, मिर्च, मसाला, हुक्का और चाय, सिरका इनका अधिक सेवन करना; ये सब कामको जगानेवाले हैं. कामको जगानेवाले कामोंसे बचना चाहिये और दंड, कसरत करना, पढने लिखनेमें सर्वदा मनको लगाये रखना, रस-कथाओं और कामीजनोंके संगसे पृथक रहना, सामान्य और शीघ्र पचने योग्य भोजन करना, बारबार लघुशंका करना, स्त्रीको न देखना, कामध्वजको शीतल जलसे भली भांति साफ रखना, यथाशक्ति परिश्रम करते रहना ये सब कामको रोकनेवाले हैं.

हस्तमैथुन

यह रोग प्रायः छोटी अवस्थासे ही कुसंगतिके कारण उत्पन्न हो जाता है और इस प्रकार वृद्धिको प्राप्त होजाता है कि इसका छूटना बहुत कठिनही नहीं बल्कि असम्भवसा होजाता है, इस रोगमें बडी अद्भुत बात यह है कि, इसके दोषोंको जानकर और इससे हानि समझकर भी इसका रोगी इस दुर्व्य-सनसे पृथक् नहीं होता, एक पढा लिखा नवयुवक बडे प्रेमके साथ एकान्त इस कामको कर रहा था कि, इतनेमें हम अकस्मात् उधर पहुँचे और उसको यह कर्म करते देखलिया, जब उस नवयुवकसे हमने पूछा कि, भाई ! यह अनुचित काम क्यों कर रहे थे ? इसमें तो बडी भारी अज्ञानता है, वृथा वीर्य खोना शरीरको निर्बल करना है, यह सुनकर उसने कहा कि—

एकान्ते वा नदीतीरे ह्यथवा शून्यमन्दिरे ।
हस्तक्रिया प्रकर्तव्या भार्यया किं प्रयोजनम् ।।

नवयुवकका यह कथन सुनकर हमने कहा—वाह भाई ! आपने श्लोक तो खूब सुनाया. परन्तु यह तो बताइये यह श्लोक किस धर्मग्रन्थका है ? अपना

प्रयोजन साधन निमित्त तुम्हारे साथी लोग अपने मनको ऐसे ही समझा लेते हैं. इस बुद्धिसे तो खेती करनेवाले मूर्खकी बुद्धि अच्छी है कि, जो अपने अपने बीजको अपनेही खेतमें समयानुसार डालता है फिर उससे अनेकगुणा बीज बढाकर अपने शरीरका पालन करता है और दूसरोंको भी लाभ पहुँचाता है. अपने बीजको कभी नष्ट नहीं होनेदेता है. इतनी बात सुनतेही वह नवयुवक निरुत्तर होकर चलागया. इसी प्रकार आजकलके प्रायः नवयुवक इस रोगमें ग्रसित होकर अपने शरीरको नष्ट भ्रष्ट कर डालते हैं. इस रोगका रोगी तुरन्त पहिचान लिया जाता है क्योंकि इस रोगीके मुखकी कान्ति जाती रहती है. नेत्र गढेमें पैठेसे मालूम होते हैं. गाल पिचक जाते हैं, हृदय धडकता रहता है. पसुरी दिखानेलगती हैं. हृदयके ऊपर हड्डीपरका मांस सूखजाता है. इस कर्मके निमित्त एकान्त ढूंढ़ता रहता है ये-ऊपरी लक्षण प्रत्यक्ष देखनेमें आते हैं. इस रोगकेभीतरी दोष ये हैं कि, इस रोगके अधिक बढजानेसे शरीरसे बल निकल जाता है, वीर्य पतला होजाता है कि, जिससे विना निकाले भी रात्रि-समय स्वप्नमें निकल जाता है, क्योंकि जो वीर्य शरीरसे निकलाही करता है उसको रोकनेके लिये यत्न करनेपर भी यह एक नहीं सकता. इस बातको तो सबही जानते हैं कि, शरीरका बल पराक्रम वीर्यही है और बल पराक्रमसे ही यह शरीर चलरहा है. तथा इसके रोगीका हृदय निर्बल होजाता है, शक्ति क्षीण हा जाती है, मस्तिष्कशक्ति, स्मरणशक्ति घटती रहती है. वीर्यके कृमि (कीडे) नष्ट होजाते हैं कि, जिससे सन्तान होनेमें बाधा पहुँचती है. प्रथम इन्द्री शिथिल होजाने और जड पतली होजाने तथा धरनतक न पहुँचनेके कारण इस रोगीके सन्तानही नहीं होती, यदि होती भी है तो अति निर्बल और इस रोगीको स्त्रीरमण करनेकी शक्ति न रहनेसे उसको लज्जित होना पडता है और स्त्रीका चित्त भी दुःखी रहता है, ऐसी दशामें स्त्रीका बिगडजाना भी संभव है, क्योंकि हस्तमैथुनवाला पुरुष धीरे २ पूरा नपुंसक होजाता है, उसका सम्पूर्ण पुरुषत्व नष्ट होजाता है, जबतक पुरुषत्व नष्ट न होनेपावे तबतक चिकित्सा द्वारा इस रोगको दूर करना चाहिये. सबसे पहली चिकित्सा तो इस रोगकी यह है कि, जबसे अपनेको इसके दोष प्रगट होजावें और हानि होती देखे तो इस कर्मको छोडनेका प्रयत्न करे, क्योंकि सहसा इसका छोड देना कठिन है. यदि सहसा छोडदेवे तो बहुतही अच्छी बात है, छोडदेनेपर भी यदि निर्बलता जानपडे तो नीचे लिखा तिला कामध्वजपर लगाया करे परन्तु जबतक

औषधी प्रयोग करे तबतक बहुतही शीतल जलसे कामध्वजको बचाये रहे, ढाई पाव धतूरेके अर्कमें १६ अंगुल बारीक सफेद निर्मल कपडा लेके २० दिनतक भिगोये रखे इक्कीसवें दिन उसको निकालकर आधा छटाँक तिलोंके तेलमें मन्द आंचसे पकावे अनन्तर उसको लोहेकी सीकमें लटकाय काँसेकी थाली नीचे रख एक ओरसे अग्नि लगादेवे, वस्त्र जलकर जो तेल थालीमें टपककर गिरे उसको एक शीशीमें रखकर प्रतिदिन उस तेलको कामध्वजपर मले, परन्तु कामध्वजका शिर छोडकर तेल मलना चाहिये. इसी प्रकार आकके दूधमें वस्त्र भिगोय एक रात दिन उसीमें रक्खे, अनन्तर उसको सुखाय घीमें तर करके बत्ती बनाय जलावे, नीचे कांसेकी थाली रख टपकेहुए घीको शीशीमें बन्द करदेवे. फिर प्रतिदिन दो वार थोडासा शिर छोडकर कामध्वजपर मलकर ऊपर एरंडके पत्ते अथवा बँगलापान बाँधदेवे. खानेके निमित्त औषधी यह है कि तालमखाना, असगन्ध, गोखरू, शतावरी, खिरेंटीके बीज सफेद मूशली एक एक तोला लेवे, मिश्री एक छटाँक इन सबको बारीक पीसकर फंकी बनालेवे. एक तोला औषधि गाय अथवा भैंसके दूधके साथ खावे गायका दूध तो उचितही है, न मिलनेपर भैंसका दूध बलानुमान फँकी फांककर पीवे, दूसरी औषधी यह है कि, काली मूशली आधपाव लेके उसको पावभर दूधमें औटावे, जब दूध मिल जावे तब उसको छायामें सुखाकर कूट लेवे और बारीक छानकर उसमें जावित्री डेढ तोला और जायफल डेढ तोला तथा असली कस्तूरी दो मासे भलीभांति मिलादेवे फिर उत्तम शहदमें चासनी करके उडदके बराबर गोली बनालेवे, बलानुमान गाय अथवा भैंसके दूधके साथ एक सप्ताह प्रातःसमय एक एक गोली खाय, फिर दोनों समय एक एक गोली खाय. अन्य भी अनेक औषधी इस रोगपर हैं परन्तु यहां संक्षेपसे लिख दिया है. गुप्त रोग चिकित्सा ग्रन्थमें विस्तार पूर्वक लिखेंगे.

गुदमैथुन

इस रोगका नाम लौंडेबाजी भी है. यह प्रायः न्यूनाधिक सब देशोंमें है. यद्यपि अंगरेज सरकारने दोनोंके लिये अधिक समय पर्यन्त दंड नियत किया है तथापि यह कर्म सर्वत्र फैला हुआ है, लौंडेबाज लोग लौंडेपर अपनी जान तक न्यौछावर करदेनेको सर्वदा तैयार रहते हैं और जैसे बने तैसे लौंडेको अपने वशमें करलेते हैं. आप खाना नहीं खाते, वस्त्र नहीं पहिनते, परन्तु उसको सजाये रहते हैं. औरु मेले, तमाशे, बाजार-हाटमें संग लिये फिरते हैं. उनके वशमें वह लौंडाभी ऐसा बेशरम होजाता है जिसको अपनी बवना-

मीका कुछ भी ध्यान नहीं रहता, बाप दादेका नाम डुबाता है और निर्लज्ज होकर लज्जाको नदीमें बहाता है, दुर्व्यसनमें पडकर किसी अच्छी बातका ख्याल दिलमें नहीं लाता है. यह रोग भी बडा प्रबल है. इसमें दोनों अपना जन्म बरबाद करते हैं, हस्तमैथुनवालेकी जो गति होती है वही गति इस रोगीकी भी होती है. कामध्वजकी और अंडकोशकी नसें ढीली पडजाती हैं, वीर्य बननेमें बाधा होजाती है. जब वीर्यही नहीं बनता और जो कुछ थोडासा बनता भी है वह दुर्व्यसनममें व्यय होजाता है तो फिर सन्तान कहाँ और कैसे होसकती है ? मैथुनशक्ति कमसे कम चार मिनट पर्यन्त चाहिये सो यदि चार मिनटसे भी कमती हो तो उसको रोगी जानना. हस्तमैथुन और गुदमैथुनवाले पुरुष स्त्रीसे रमण करते हुए दो मिनटभी भली भांति नहीं ठहरसके सो उनको रोगी समझकर चिकित्साके योग्य जानना चाहिये. गुदमैथुनवाले पुरुष यदि पश्चात्तापपूर्वक अपने कुकर्मोंसे हाथ समेटलेवे और चिकित्सा करनेकी इच्छा करे तो उनके निमित्त हस्तमैथुनमें लिखे तेल और औषधिको सेवन करना उचित है.

उपदंशक (आतशक) रोग

पुरुषके शरीरमें लिंग एक स्थूल नाडी है जिसके भीतर तीन छिद्र हैं, एकसे मूत्र आता है, दूसरेसे वीर्य अंडकोशसे लिंगमें आता है. तीसरेसे प्राणवायु जठराग्नि और रुधिर लिंगमें आते हैं तब लिंगकी नसें फूलती हैं और वह बढता है तथा कडा होता है. उसकी ठीक लंबाई आठ अंगुल है. सबसे अधिक लम्बाई बारह अंगुलसे कमती होनेपर धरनतक नहीं पहुँचता, उसके बढानेके निमित्त उपाय करना चाहिये, लिंगमें उपदंश (आतशक) और मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) ये दो बडे भारी रोग होते हैं, इन रोगोंके होनेसे और बढजानेसे शक्तिका विनाश होजाता है अर्थात् वह पुरुष स्त्रीके योग्य नहीं रहता है. यह उपदंश रोग बडा भयंकर होता है इसकी समता नरकाग्निसे देनाचाहिये. दूषित योनिवाली स्त्रीसे संभोग करने और नख आदिकी चोटसे लिंगपर फुंसियाँ निकल आती हैं. फिर वे फुंसियां बढकर घावके रूपमें हो जाती हैं और उनका विष रुधिरमें मिलजाता है. तब शरीरपर चकत्ते पडजाते हैं. बाल गिरने लगते हैं, तालू फूटने लगता है, हाथ पांवोंमें जलन रहता है, दुर्गन्धित पीव निकलता रहता है, जब यह रोग बहुतही बढ जाता है तब सारा शरीर फूटजाता है, बडी बेचैनी होती है, नाक सड कर गिर पडती है और इन्द्रीकी तो ऐसी दुर्गति होजाती है कि, जिसका वर्णन नहीं किया

जाता. इस रोगकी चिकित्सा बडी सावधानीसे करना चाहिये. उचित है कि, पहलेही जब इस रोगकी उत्पत्ति जानपडे और फुंसि निकले उसी समय औषधी करे. फुंसियोंके निवारणार्थ छोटी इलायचीके दाने, मुर्दाशंख, शुद्ध रसकपूर, बंगलापानका रस ये छः छः मासे, कालीमिर्च तीन तोले, गायका घी पावभर लेवे, इस सबको लेके नीमके सोंटेसे फूलके कटोरेमें औषधियोंका चूर्ण कर घी मिलाय बीस प्रहर घोटे और बडे मुंहकी शीशीमें धरे. सायं प्रातः बंगलापानकी बीडीके साथ दो दो रत्ती मात्रा खाय और घावपर भी लगावे तो पन्द्रह दिनमें रोग समूल नष्ट हो जाता है.

त्रिफला अथवा नींबके पत्ते जलमें पकाय उसी जलसे घावको प्रतिदिन धोवे और त्रिफला अथवा सुपारी जलाकर उसकी राख घावपर छोडे.

हर्र और रसौतको घिसकर घावपर लगावे, ऊपरसे मुर्दाशंख बारीक पीसकर बुरकावे.

भेडीका नेनू आधी छटाँक नींबके पत्तोंसे पकायेहुए जलमें सौ बार धोवै और उसमें सफेद कत्था, सेलखडी, शीतलचीनी, सफेद इलायचीके दाने तीन तीन माशे पीसकर नेनूमें मिलाय घोटकर मल्हम बनालेवे, इस मल्हमको घावपर दिनमें तीन चार बार लगानेसे घाव सूखजाता है.

सेंदुरुफ, रसौत छः छः माशे, गायका घी दो तोले सौबार धोय उसमें मिलाय मल्हम बना लेवे इस मल्हमको दिनमें तीन चार वार लगावें. सेंदुरुफ, छोटी इलायचीके दाने, कपूर, रसकपुर, तवाखीर, चौकिया सुहागा, गीले अरमनी, मुर्दाशंख ये तीन माशे लेके पीस छान चूर्ण करे, सौ बार धोयेहुए गायके घीमें मिलाकर मल्हम बना लेवे. इस मल्हमके लगानेसे घाव अच्छा होजाता है.

छोटी इलायचीके दाने एक तोला, टोपीवाले लौंग एक तोला, रसकपूर छः माशे इनको तुलसीके रसमें चार दिन खरल करै और मटरके बराबर गोली बनावे. एक गोली प्रातः समय गायके दूधकी मलाईसे लपेट कर निगल जाय तो तीन सप्ताहमें रोग समूल नष्ट हो जाता है.

मुर्दाशंख छः मासे, सिंगजराउ एक तोला, रोहिणी तीन माशे, शीतलचीनी तीन माशे, सफेद इलायचीके दाने एक सौ ग्यारह, सफेद कत्था एक तोला, रसकपूर छः माशे, माजूफल एक इन सबको पीस छान झरबेरीके बेरके बराबर गोली बनावे. एक गोली प्रातःसमय जलके साथ निगल जावे परंतु तीसरे २ दिन गोली खावे.

जुलाब लेनेकी आवश्यकता हो तो त्रिफला आधी छटाँक, चूक आधी छटाँक, सनाय एक छटाँक लेके पीस लेवे और झरबेरीके बेरकी बराबर गोली बनावे. पहले तीन दिन घीके साथ मूंगकी पतली खिचडी खावे तब जुलाब लेवे बलानुसार एक वा दो गोली प्रतिदिन सबेरे खाय, दो दिन अथवा तीन दिनमें दूषित मल निकलकर शरीर शुद्ध होजायगा. रुधिरको शुद्ध करनेके निमित्त चिरायता एक छटाँक, शहतरा, शरफोंका, जंगी हर्र, धनियाँ दो दो तोले लेके दो सेर जलमें औटाय आधा रह जानेपर उतारकर छान लेवे. एक छटाँक इस अर्कमें छः माशे शहत मिलाय प्रतिदिन प्रातःसमय पीनेसे रुधिरदोष शान्त हो जाता है.

उपदंशरोगमें पथ्य

वमन, विरेचन (कै कराना, दस्त कराना), लिंगकी मध्यगामिनी नाडीका वेधन, जोंक लगवाना, सेचन, प्रलेप, जौ, चावल, मूंगका रस, घी, करेला, सहिंजनेकी फली, परवल, नवीन मूली, कडुए कषैले रस, शहत, कुएँका जल, तिलोंका तेल ये सब उपदंश (आतशक) रोगमें हितकारी हैं, परंतु यहां प्रथम चार प्रयोग वमन विरेचन आदि तब करे कि, जब रोग अधिक बढगया हो, जबतक मल्हम और औषधि खानेसे काम निकल जाय तबतक कै, दस्त, नाडीका वेधन और जोंक लगाना ये काम न करे.

उपदंशरोगमें अपथ्य

दिनमें शयन, मूत्रवेगका रोकना, भारी अन्न, अधिक गरम पदार्थ, मैथुन, खटाई, छाँछ ये उपदंश रोगमें अपथ्य (अहितकारी) हैं.

मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) रोग

मूत्रकृच्छ्र रोग भी अति भयंकर रोग है. यह रोग मूत्रवेग रोकनेसे, स्वप्नदोषसे, दूषित योनिवाली स्त्रीके संग रमण करनेसे अथवा कभी कभी अधिक गरम वस्तु खाने और कडी धूपमें चलनेसे तथा गर्भवतीसे विषय करनेसे, अधिक हस्तक्रियासे, श्वेत प्रदररोगवाली स्त्रीका मवाद लगनेसे, पेडूको अधिक शीत लगजानेसे, अधिक समयतक मैथुनके अभ्याससे, अधिक मदिरा पीनेके स्वभावसे, गिल्टियोंके रोग बढजानेसे, लाल मिर्च अधिक खानेसे, विषयकी इच्छा बढजानेपर इच्छा पूरी न होनेसे, वीर्य भीतरही रुकजानेसे पृथक् २ प्रकारसे यह रोग उत्पन्न होजाता है. इनसे पृथक अन्य भी कारण इस रोगकी उत्पत्तिके हैं और इस रोगको जाननेके लिये भी अनेक

उपाय हैं उनको यहां विस्तार भयसे नहीं लिखेंगे, यहां तो संक्षेपरीतिसे लिखा हैं. गरम वस्तुओंके अधिक खाने दौडने और अधिक परिश्रम करनेसे और इन्द्रीमें वीर्य रुकजानेसे जब यह रोग प्रगट होजावे तो बिनौले दो तोले रात्रि-समय भिगोकर सबेरे आधा सेर जलमें एक तोला कच्ची शक्कर मिलाय पीवे और खटाई, लालमिर्च, तेल न खाय.

मूत्रकृच्छ्ररोगका दूसरा कारण यह है कि, इसी रोगवाली स्त्रीसे विना जाने प्रसंग करनेसे ऐसा जान पडता है कि, इन्द्री भुलभुलमें गडगई. ऐसा कुकर्म होजानेसे यह होता है कि, दो तीन दिन उपरान्त मूत्र कठिनतासे उतरता है. अन्तमें पीव निकलने लगता है. यदि पीव श्वेत वा पीतवर्ण हो तो सिरसके बीज, कपासके बीज, बकायनकी गूदी एक एक तोला पीसकर बर्गदके दूधमें झरबेरीके बेरकी बराबर गोली बनावे. एक गोली खाकर ऊपरसे पावभर गोदुग्ध पीवे. बादीवस्तु और खटाई आदि न खाय.

तीसरा कारण इस रोगके उत्पन्न होनेका यह है कि, बहुतेरे जन कईबार प्रसंग करते और सोरहते हैं और जाग जागकर स्त्रीको लिपटाकरते हैं. जो धातु रगके भीतर रहजाता है वह तेजबके समान प्रकृतिवाला होकर प्रातः समय तक घाव करदेता है. एवं जो मूर्खजन पशुवत् मैथुन करते हैं उनकी दशाका क्या ठिकाना है. जब मूत्र नहीं उतरता है तब पिचकारी लगवानेसे लिंगका छिद्र बढजाता है और पिचकारीका पानी नीचे उतर जानेसे अंडकोश बढजाते हैं. उसकी औषधि यह है कि, कतीराके बीज, तालमखाना एक एक तोला पीसकर पावभर गायके दूधके साथ शक्कर मिलाय सेवन करे. सर्वदा पिचकारीसे इन्द्री-जुलाब उत्तम है. कबाबचीनी, रेवतचीनी, दारचीनी, छोटी इलायची, सफेद जीरा एक एक तोला, शोरा कलमी दो तोले, सफेद मिश्री चार तोले पीस छानकर रक्खे और एक सेर गायके दूधमें चार सेर जल मिलाकर आठ आठ मासे दवाके साथ थोडा थोडा जल मिलाय दूध बराबर पीवे. जिससे भली भाँति इन्द्रीजुलाब होजावे मूंगकी धोई दाल और भात खावे अथवा दूध भात खावे, दूसरे दिन काहूके बीज, खीरेके बीज, ककरीके बीज, छःछः मासे रातको भिगोकर सबेरे मलकर छानके पीवे और दही भात खावे.

यदि स्त्री रजस्वला हो और वह पुरुषसे अधिक बलवती हो तो उस समय प्रसंग होनेपर भी यह रोग शीघ्र प्रगट होजाता है. उसकी शान्तिके अर्थ

विहीदाना चार माशे रातको भिगोकर सबेरे मलकर छानलेवे और सिंगजराउ दो माशे, ईसबगोलकी भूसी छः माशे फाँककर विहीदानाके लुआवमें सवासेर गोदुग्ध मिलाय ऊपरसे पीवे. मूंगकी दाल रोटी खावे.

बालक उत्पन्न होने उपरांत जबतक स्त्री रजस्वला न हो तबतक पुरुषको भूलकरकेभी स्त्रीप्रसंग नहीं करना चाहिये. बालक उत्पन्न होनेपर स्त्री गरम गरम वस्तुएँ खाती हैं उनकी गरमी स्त्रीके शरीरमें होती है. एवं जो पुरुष गरम वस्तुएँ अधिक खाता हो तो उसके शरीरमें भी गरमी बहुत होती है. ऐसी दशामें कभी पुरुषको, कभी स्त्रीको यह रोग प्रसंगसे उत्पन्न होजाता है. उसकी औषधि यह है कि—बालंगाबीज, विहीदाना, खीरेके बीज, कासंबीके बीज, कासनीके बीज, सौंफ, मिश्री छः छः माशे लेके चार चार माशे दोनों समय खाकर ऊपरसे गायका दूध पीवे.

इस रोग और प्रमेहकी यह औषधि भी है कि, गुडलके फूल एक एक बढ़ाकर आठ दिन खाय और आठ दिन एक एक करके घटाकर खावे.

यदि इस रोगमें पीडा होने लगी हो तो कलमी शोरा पांच माशे, शीतल-चीनी तीन माशे जलमें पीस एक सेर जलमें आध सेर गायका दूध मिलाकर सबको घोलकर छाने और कई बारमें पीवे तो पीडा दूर हो और मूत्र साफ उतरे. तथा गन्धपिरोजाका तेल डमरूयंत्रद्वारा निकाले उसमें चन्दनका तेल मिलाय शक्करके साथ पीनेसे सुजाकरोग अवश्य शान्त हो जाता है.

मखाना, नीमकी अन्तरछाल, बबूरके गोंद ये आध आध पाव लेके पहले बबूरके गोंदको गायके घीमें फुलायले अनन्तर सबको पीस छानकर छः छः माशेकी पुडिया बनाय एक पुडिया प्रातः एक सन्ध्यासमय गायके दूध और जलके साथ खाय. एक मासपर्यन्त यह औषध सेवन करनेसे रोग समूल नष्ट होजाता है.

रेवतचीनी, छोटी इलायचीके दाने, फटकरी एक एक तोला, कलमीशोरा डेढ तोला, शीतलचीनी दो तोले सबको पीस छानकर तीन तीन माशेकी पुडिया बनाय लेवे. रात-दिनमें चार पुडिया जल मिले गायके दूधके साथ खाय तो मूत्रकृच्छ्र रोग शान्त हो जाता है.

सफेद कत्था, फिटकरी, कपूर, रसौत चार चार माशे, सफेद सुरमा एक तोला, सबको एक सेर जलमें घोंटकर मिलावे और बारीक कपडेसे छानलेवे

अनन्तर सायं प्रातः कांचकी पिचकारीसे पिचकारी लेनेसे यह सुजाकरोग शान्त होता है.

मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) रोगमें पथ्य

वातविकारसे उत्पन्न सुजाकमें तैलादिमर्दन, बस्तिकर्म, स्नेहनकर्म, निरूहण, स्नान, उत्तरबस्ति, सेचनकर्म करे और पित्तजनित सुजाकरोगमें जलमें पैठकर स्नान तथा बस्ति और विरेचन विधि करे. परन्तु यह विधि ग्रीष्मऋतुमें करना चाहिये. कफजन्य सुजाक रोगमें विरेचन, वमन, स्वेदन, क्षार, यवके पदार्थ, तीक्ष्ण और गरम द्रव्य देवे तथा त्रिदोष (वात पित्त कफ) जनित मूत्रकृच्छ्रमें पहले मालिश करे फिर जो पूर्व तीनों दोषोंपर कर्म करने लिखे हैं करे. मूत्राघातसे उत्पन्न सुजाकमें वातजन्य क्रिया करे. वीर्यके रुकनेसे उत्पन्न सुजाकमें शिलाजीत और शहत मिलाय अवलेह हित है. मलसे उत्पन्न सुजाकमें स्वेदनकर्म चूर्णक्रिया उबटना और बस्ति (सलाई) कर्म तथा पुराने लाल चावल, छाँछ, गायका दूध, दही, मूंगका रस, शक्कर, पुराना पेठा, ग्वारपाठा, परवल, अदरख, गोखरू, खजूर, सुपारी, नारियलकी गिरी, हर्र, ताडके वृक्षकी घोंपल, ताडफलकी गुठलीका गूदा, खीरा, छोटी इलायची,. पीनेके शीतल पदार्थ, शीतल भोजन, नदीका तट ये सब सुजाकमें पथ्य हैं

मूत्रकृच्छ्ररोगमें अपथ्य

स्त्रीप्रसंग, मदिरापान, परिश्रम, हाथी घोडेपर चढना, सब प्रकारके विरुद्ध भोजन, विषम भोजन, पान, मछली, तेलकी भुनी वस्तु, तिलरूखे, तिल, सरसों, हींग, मलमूत्रादि वेगको रोकना, उडद, टेंटी, सब प्रकारसे रूखे अतितीक्ष्ण व खट्टे भोजन ये सब सुजाकमें अहितकारी हैं

क्षयरोग

मनुष्यके शरीरमें वीर्य एक प्रधान वस्तु है, प्राणोंका पराक्रम इसीको कहत हैं, इन्द्रियोंमें बल पराक्रम इसीसे प्राप्त होता है, बुद्धिको साहस बढानेवाला पदार्थ वीर्यही है. यह जब शरीरसे निकलकर स्त्रीके गर्भाशयमें ठीक प्रकारसे पहुँचता है तो दूसरा शरीर तैयार करदेता है. इस वीर्यसे में एक प्रकारके कीडे चपटे स्वच्छ होते हैं, जिनकी पूँछ नीचेकी ओर होती है. जो सूक्ष्मवीक्षणयन्त्रसे देखे जा सकते हैं. इन्हीं कीडोंपर सन्तानोत्पत्ति निर्भर है. यह कीडे इन्द्रीसे बाहर निकलकर कई घण्टे जीवित रहते हैं. वीर्यमें और भी ऐसे गुण पायेजाते हैं जिन जीवोंके वीर्यमें कीडे कम होते हैं उनको अधिक समयतक मैथुन करना पडता है. मनुष्यके युवावस्थामें वीर्यकी उत्पत्ति होती

है. युवावस्थासे पहले एक पतला रस होता है जिसमें कीडे नहीं होते, क्योंकि कीडे तो युवावस्थाके साथही वीर्यमें उत्पन्न होते हैं. जिनके वीर्यमें कीडे नष्ट होजाते हैं उनको सन्तानोत्पन्न करनेकी सामर्थ्य नहीं होती. क्योंकि, वीर्यके कीडेही सन्तानोत्पत्तिके कारण हैं और जिसके शरीरमें वीर्यही बननेका क्रम नहीं रहता यही क्षयरोग है. वीर्यके क्षय होजानेको क्षयीरोग कहते हैं. क्षयी रोगकी औषधियोंमें एक औषधि सितोपलादि है. जिसको प्रायः सबही जानते हैं और प्रत्येक वैद्यके पास यह औषधि प्राप्त होजाती है.

सोंठ चार तोले, कालीमिर्च दो तोले, असगन्ध आठ तोले, बडी इलायची, नागकेशर, दालचीनी, भारंगी, तेजपात, कचूर, सफेद जीरा, तालीसपत्र, अजवायन, कायफल, जतामांसी, नागरमोथा, शीतलचीनी, रासनि, कूट, कुटकी, सफेद हर्ड ये पांच पांच माशे, मिश्री पावभर सब औषधियोंको कूट पीस कपडछान कर चूर्ण बनालेवे. यह चूर्ण बलानुसार तीन माशेसे छः माशेतक वातजन्य क्षयरोगमें गरम जलके साथ, पित्तजन्य क्षयरोगमें गायके वा बकरीके दूधके साथ कफजनित क्षयरोगमें शहतके साथ, प्रमेहमें माखनके साथ, पित्तदोषमें गोखरूके चूर्णके साथ खानेसे रोग शान्त हो जाता है.

धाईके फूल, अमिली, पीपरि, अजमोद, अनारदाना ये एक एक तोला और चीता, सोंठ, नागकेशर, छोटी इलायची, तेजपात, अजवायन, कलमी, दालचीनी, पीपलामूल, सफेद जीरा, सुगन्धवाला, कालीमिर्च, धनियाँ ये चार चार माशे, मिश्री दो तोला पकीहुई कौंचकी सूखी गिरी तीन तोल सबको कूटपीस छानकर चूर्ण बनावे. इस चूर्णके सवनेसे क्षय, वायगोला, अतीसार और संग्रहणी रोग शान्त हो जाता है.

बकरीके दूधमें बराबर जल मिलाय तीन पीपरि डालकर आंचपर चढावे जल जलजानेपर पीपरि खाय ऊपरसे दूध पी लेवे. एक एक पीपरि बढाय और एक एक पीपरि घटाय बीस दिन तक खानेस क्षयरोग शान्त हो जाता है.

क्षयरोगमें पथ्य

सांठी चावल, मूंग, गेहूं, शालिधान, जौ ये धान्य पथ्य हैं. जो क्षयरोग अधिक दोषवाला हो तो हलके जुलाबसे शुद्ध करलेवे और लाल चावल, चना, शीतल पदाथ, गरम मसाला, वालुसाई आदि, चन्द्रमाकी चांदनी, मीठे रस, कलकी पक्की फली, पका कटहर, पका आम, आंवला, छुहारा, कमलकंन्द, फालसा, नारियल, सहिंजना, दाख, तेंदू, तालके नवीन फल, सौंफ, सेंधानमक.

अडूसेके पत्ते, गाय भैंसका घी, बकरियोंमें रहना अथवा बकरीकी लेंडी व मूत्रका लेप, मिश्री, शिखरन, रसाला (जो कच्चा दूध मिश्री और जल काली मिर्च मिलाकर बनता है), कपूर, कस्तूरी, सफेद चन्दन, सुगंधित वस्तुओंका लेप, उवटन, स्नान, उत्तम वस्त्र, आभूषणधारण, जलमें क्रीडा करना, मनोहर स्थानमें निवास, फूलमाला धारण कामोद्दीपन करनेवाली वार्ताओंका सुनना, मन्द सुगंधित पवन, गीत, नृत्य, चन्द्रमाकी शीतल किरणोंमें विहार, वीणा आदिकी ध्वनि, सुवर्णके वर्क, मोती और मणि आदिका धारण, दान, हवन, पूजन, प्रसन्न करनेवाले अन्न, पान ये सब क्षयले रोगमें हितकारी हैं.

क्षयरोगमें अपथ्य

मलमूत्रादिवेगोंका धारण, जुलाब, परिश्रम, स्त्रीप्रसंग, पसीना निकालना, सामर्थ्यसे अधिक काम करने लगना, रूखे अन्नका भोजन, विषम भोजन, पान, तरबूज, कुलथी, उडद, हींग, लहसन, खट्टे पदार्थ, बांसकी कोंपल कषैले, कडुए पदार्थ, चरपरे पत्तोंके शाक, क्षार, स्वभावसे विरुद्ध भोजन, कुन्दरू, सेम, करैला और सब प्रकारके दाहकारी पदार्थ ये सब क्षयरोगमें अहितकारी हैं ।

प्रमेह रोग

प्रमेहरोग प्रायः मनुष्यके होता है. इस रोगका धोखा बहुत मनुष्योंको रहता है. प्रमेह रोगके धोखेसे प्रायः जन औषधि करते करते असली प्रमेहरोगसे ग्रस्त होकर सचमुच रोगी बन जाते हैं. इस रोगका धोखा इस प्रकार होता है कि, मूत्र होनेसे पहले इन्द्रीकी भीतरी त्वचाको द्रव और स्निग्ध करनेके निमित्त रस निकला करता है कि, इन्द्रीको मूत्रके खारापनसे हानि न पहुँचे. उस रसके निकलनेसे प्रमेहरोगका धोखा होता है. दूसरे जो वीर्य रात्रिसमय पात होजाता है उससे भी प्रायः जन प्रमेह रोग समझ मान लेते हैं और वीर्य शीघ्र स्खलित होजानेकोभी प्रायः जन प्रमेह समझ लेते हैं. परन्तु यह प्रमेह रोग नहीं होता. प्रमेह रोगके लक्षण वैद्यक ग्रन्थोंमें लिखे हैं वहाँ बीस प्रकारका प्रमेह कहा है. उसको यहां विस्तारभयसे न लिख कर केवल एक दो लक्षण इस रोगके पहचानके लिखते हैं. प्रमेह रोगीका वीर्य वस्त्रके ऊपर रखनेसे वस्त्रको गीला कर दूसरी ओर निकल जाता है और शुद्ध वीर्य वस्त्रपर लगकर जम जाता है क्योंकि गाढा होता है. प्रेमहका रोगी मूत्रवेगको रोक नहीं सकता. तथा प्रेमहके रोगीको मैथुनमें पूर्ण आनन्द नहीं आता. वह रोग प्रबल हो जानेपर औषधि वृथा है. यदि इन्द्री ठीक चैतन्य

होती हो तो औषधी सेवन करे; हलदी एक तोला, आँवला एक तोला लेके रातको थोडे जलमें भिगोकर सबेरे घोट छान शहद मिलाय पीवे अथवा हलदी, आंवला, गुर्चके रसमें भिगोकर सबेरे घोट छान शहत मिलाय पीवे तो सब प्रकारका प्रमेह जाता रहता है.

हंसपदी एक तोला लेके आधपाव जलम सन्ध्यासमय भिगोवे और प्रातः समय औटाय आधा रहनेपर छानकर शहत मिलाय पीवे तो प्रमेह रोग जाता रहता है. एवं पीपलकी छालका काढाभी प्रमेहको दूर करता है. तथा त्रिफलाका काढाभी मूत्रके सब विकारको दूर करता है.

एक रत्तीप्रमाण बंगरस बडके दूधमें मिलाकर खानेसे प्रमेह रोग शान्त हो जाता है.

हलदी एक तोला पीसकर शहत मिलाय प्रतिदिन खानेसे प्रमेह रोग शान्त हो जाता है, अथवा मौलशिरीके चूर्णमें बराबर मिश्री मिलाय खाय ऊपरसे दूध पीवे तो वीर्य पुष्ट होता है.

बताशेमें दो बूंद बडका दूध सूर्योदयसे पहले खाय एक बूंद प्रतिदिन बढाकर बीस बूंदतक सेवन करनेसे प्रमेहरोग शान्त होजाता है.

शहतमें शिलाजीत मिलाय दूधमें डालकर पीनेसे प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र रोग शांत हो जाता है. परन्तु शिलाजीत शुद्ध होना चाहिये.

प्रमेहरोगमें पथ्य

लंघन, वमन, विरेचन, पुराने तृणधान्य, कांगनी, जौ, वांसी चावल, कोदौं, सामा, ज्वार, नागरमोथा, पुराने गेहूँ. शालीचावल, कुलथी, मूंग, चना, अरहर, तिल खील शहत, छाँछ, भैंसका मूत्र, सहिजना, परवल, करेला, कटेरी, गूलर, लहसन, केलाकी नवीनफली, गोखरू, गिलोय, त्रिफला, कैथ, जामुन, कसेरू, कमल, कमलगट्टा, भसीडा, खजूर, कलियारी, सोठ, मिर्च, पीपरि, तेंदु, खदिर, तरबूज, सब प्रकारके तीखे और कषैले पदार्थ, हाथी घोडेकी सवारी, अतिभ्रमण, सूर्यकी धूप, दंड, कसरत, पचने योग्य थोडा भोजन, शतावरीपाक, गोखरूपाक, सुपारीपाक, मूशलीपाक, असगन्धपाक, आम्रपाक, रूपारस, मूंगारस, मोतीरस, सोने चांदीके वर्क, कस्तूरी, सफेद इलायची, सफेद चन्दन, पिस्ता, बादाम, छुहारा, वंशलोचन, अखरोट. किशमिश, चिलगोजा, पोस्त, तालमखाना, मिश्री, मक्खन, नारियल ये सब प्रमेहरोगको हितकारी हैं.

प्रमेहरोगमें पथ्य

मूत्रवेगका रोकना, स्नेहकर्म, धूम्रपान, रुधिर निकालना, अधिक बैठना, नवीन अन्न, दिनमें शयन, दही, पिट्ठीके पदार्थ, स्त्रीप्रसंग, कांजी, मदिरा, मांस, सिरका, तेल, घी, गुड, दूध, तोंबी, तालफलकी गुठलीकी मींगी, कुम्हडा, ईख, विरुद्ध भोजन, दुष्ट जल, खट्टा, मीठा और नमकीन रस ये सब प्रमेहरोगमें अहितकारी हैं.

नपुंसकरोग

नपुंसकरोगके लक्षण और चिकित्सा सुश्रुत और चरकमें भली भांति वर्णन है उसी अनुसार ,,नपुंसक संजीवनी पुस्तक,, हमने लिखी है जो हमारे पुस्तकालय बंबईमें प्राप्त होती है. यहां उससे पृथक् लक्षण समयानुसार लिखते हैं. नपुंसक चौदहप्रकारके होते हैं–१ आयुके कारण, २ मस्तकमें चोट पहुँचनेसे, ३ देहकी कृशतासे, ४ भ्रमसे, ५ स्थूलशरीर होजानेसे, ६ अमैथुनसे, ७ वीर्यकी न्यूनतासे, ८ प्रमेहरोगके बढजानेसे, ९ वीर्य दूषित हो जानेसे, १० शीघ्र वीर्य पात होजानेसे, ११ स्वप्नदोषसे, १२ मादक वस्तुके अधिक सेवनेसे, १३ प्रसंगमें वीर्यपात न होजानेसे, नपुंसक होजाता है. इनके पृथक् पृथक् लक्षण ये हैं.

बाल्यावस्था अथवा कुमारावस्थाके प्रारंभमें जब संतान उत्पन्न करनेकी शक्ति नहीं होती उस समय जो बालक मैथुन करते हैं उनका नपुंसक होजाना संभव है, क्योंकि जहां वीर्यकी उत्पत्ति होती है वह स्थान ढीला पडजाता है. वीर्य बननेका प्रभाव न्यून हो जाता है और समयप्रर वीर्य बनता भी है तो ठहरता नहीं है. जो बालक सुखपूर्वक रहते हैं, उनमें बारह वर्षकी आयुमेंही संभोगशक्ति उत्पन्न हो जाती है और पन्द्रह वर्षकी आयुमें संतानोत्पत्ति शक्ति होती है. परंतु पन्द्रह वर्षसे पहले जो मैथुन कर्म करते हैं उनका नपुंसक होजाना संभव है; अतः पन्द्रह वर्षकी अवस्थासे पहले कदापि मैथुन कर्म न करै. पीछे कंठकी ओरसे चोट लगने अथवा चूतडोंके बल गिर पडनेसे शिरमें आघात पहुँचता है कि, जिससे अंडकोश और लिंगभी बलहीन हो जानेसे नपुंसक हो जाना सम्भव है. दुष्ट जल अथवा दुष्ट पवनसे अधिक दुःख प्राप्त होता है. भली भांति आहार नहीं मिलता अथवा जो मनुष्य अधिक मैथुन करता है तो उसका शरीर दुर्बल हो जानेसे नपुंसक होजाना सम्भव है. एवं जिन मनुष्योंको अपने शरीरमें रोग होनेका भ्रम है वे सदा

भ्रममें रहते रहते सच्चे नपुंसक हो जाते हैं. तथा जिन मनुष्योंका शरीर स्थूल हो जाता है वे आलसी होनेसे उनको अजीर्ण रोग प्रकट हो जाता है और मज्जा अधिक प्रगट होजाती है जिससे नपुंसक हो जाना संभव है, तथा वीर्यकी आधिक्यतासेही कामोद्दीपन होता है और रुधिर परिपक्व होनेसे वीर्य बनता है. मनुष्यका ध्यान जब लिंगकी ओर होता है तब रुधिर लिंगमें आकर उसको बढा देता है और जो मनुष्य लँगोटीबन्द होकर अपना ध्यान उस ओरसे खींचकर विरक्त हो जाता है तो रुधिर नहीं दौडता और अंड-कोशोंमें वीर्यका बनना बन्द हो जाता है ऐसी दशामें नपुंसक हो जाना संभव है. मैथुनोपरान्त वीर्यपात हो जानेसे जबतक पुनः वीर्य न बने तबतक मैथुन शक्ति नहीं होती. जब किसी कारणसे वीर्य न्यून हो और वह मैथुन वार वार करना न छोडे तो ऐसी दशामें नपुंसक होजाना सम्भव है. एवं प्रमेहरोग होनेपर औषधी सेवन न की जाय और प्रमेहरोग बढता रहे तो नपुंसक रोग हो जाना संभव है. तथा जिस मनुष्यका वीर्य बाल्यावस्थासे ही बिगड जाता है अथवा रजस्वलाके होतेही तीन दिनके भीतर संभोग करे अथवा प्रसूतास्त्रीसे तथा मूत्रकृच्छ्र उपदंश आदिरोगवाली स्त्रीसे प्रसंग करनेपर वीर्य दूषित होजाय तो ऐसी दशामें नपुंसक होजाना सम्भव है. तथा अधिक मैथुन करनेसे, हस्तमैथुनसे अथवा स्त्रीकी इच्छा न होते मैथुन करनेसे, वीर्यका शीघ्र पात होता है. जो भोगेच्छा करतेही वा स्त्रीके समीप जातेही अथवा मैथुनकर्म प्रारंभ करतेही शीघ्र वीर्य स्खलित होजाता है इसकी औषधी न खाकर जो लोग इसका शीघ्र यत्न नहीं करते हैं तो नपुंसक होजाना सम्भव है. तथा स्वप्नमें जिन मनुष्योंका वीर्य पात हो जाता है उनके औषधी न करनेपर, नपुंसक होजाना संभव है. एवं जो लोग अधिकतर भांग, अफीम, गांजा, चरस तम्बाकू आदि मादक पदार्थ सेवन करते हैं; कपूर धनियां, श्वेतचन्दन, काहू आदि पदार्थ अधिक सेवन करते हैं, गीली धोती अधिक समयतक धारण किये रहते हैं, गुलाबके फूल बिछाकर उनपर शयन करते हैं उनका नपुंसक होजाना सम्भव है तथा जो पुरुष संभोग समय स्खलित नहीं होता, स्थूल शरीर होनेके कारण बाल्यावस्थामें मैथुनाभ्यास होजानेपर वीर्य न बननेके कारण प्रसंग समय स्खलित न होना, लकवा आदि रोगके कारण स्खलित न होना ऐसी दशामें भी नपुंसक होजाना सम्भव है. तथा बहु मैथुन करने अथवा हस्तमैथुन गुद-मैथुनसे कामध्वजकी नसें ढीली पडजानेसे उद्दीपनशक्ति क्षीण होजाता है कामध्वजकी क्रियामें न्यूनता आजानेसे नपुंसक होजाना सम्भव है. प्रायः लोग नपुंसक रोगसे ग्रस्त होकर पीछेसे पछेताते हैं, जो पहलेहीसे

अपनी दशा सुधार रहें तो रोगीही क्यों होवैं, नपुंसक रोगकी मुख्य औषधी वाजीकरण पदार्थ हैं. वाजीकरण पदार्थोंमें सबसे बढकर दूध है. यदि दूधमें घी छौंककर अधौटा हो जानेपर मिश्री मिलाय पान किया जाय तो शरीरको अत्यन्त बलवान् करता है जिससे नपुंसकरोग दूर होने लगता है. परन्तु दूधको पचानेकी सामर्थ्य सब किसीको नहीं होती. बिनौलाकी गिरी दो तोले लेके आधसेर भैंसके दूधके साथ पन्द्रह दिन तक खानेसे नपुंसकरोग न्यून होने लगता है. तथा सूखे गोखरू पीसकर पानीमें भिगोवै और सोंठ दो तोले, अकरकरा दस माशे, सोंठके मुरब्बेके शीरेमें इनकी माजूम बनाय एक तोलाभर प्रतिदिन दूधके साथ बीस दिन तक खानेसे नपुंसकता दूर होने लगती है तथा बलानुमान कच्चे चना भैंसके दूधमें सन्ध्यासमय भिगोकर प्रातःकाल शक्कर मिलाय चालीस दिन पर्यन्त खानेसे नपुंसकरोग शान्त हो जाता है. तथा दशगुणे दूधमें शतावरीको पकाकर उसमें असगन्ध, मूशली, पीपरि, गोखरू, गायका घी और मिशरी मिलाकर एक एक तोलेके लड्डू बांधै, एक लड्डू प्रतिदिन खावै.

सच्चे मोती डेढ माशा लेके जल पीनेके घडेमें डालकर उस घडेका जल पीना अच्छा है. तथा कौंचकी जड दूधमें औटाकर उस दूधको पीवे तो वीर्य बढता रहता है. तथा बादामकी मींगी घी शक्करके साथ खानेसे वीर्य गाढा हो जाता है और शरीरमें बल पराक्रमकी वृद्धि होती है तथा कौंच, शतावरी, असगंध, गोखरू, जावित्री, जायफल, लौंग, अकरकरा, सालममिशरी, मूशली, मस्तंगी, मोचरस, वंशलोचन, मुलहठी, विदारीकंद, वाराहीकंद, तालमखाना, आंवला, सोंठ, पीपरि, पोस्त, खुरासानी अजवायन, गन्ना, तिल, मुनक्का इत्यादि औषधि वाजीकरण हैं. यदि वाजीकरण औषधियोंका सेवन किया जाय और नियमानुसार आहार विहार किया जाय तो सुखपूर्वक सौ वर्षसे भी अधिक आयु हो सकती है और यदि योगशास्त्रानुसार वर्ताव कियाजाय तो मनुष्य तीन सौ वर्षतक जी सकता है. जिसके प्रमाणमें श्रुतिहै-,त्र्यायुषं जमदग्नेः शश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्, इति.

अंडवृद्धि रोग

व्यर्थ पिचकारी लगानेसे अथवा अधिक समयतक वातविकारसे अथवा पानी उतर आनेसे अंडवृद्धि रोग होजाता है, इसकी औषधीभी शीघ्र उचित

है. गायका दूध पावभर. अंडीका तेल एक तोला मिलाकर गुनगुना पीवै तो महीनेभरमें वातरोगजनित अंडवृद्धि रोग समूल नष्ट हो जाता है अर्थात् वातविकार से फिर कभी यह रोग नहीं होता है, तथा गूगल और अंडीका तेल गोमूत्रके साथ पीनेसे पित्तजनित अंडवृद्धिरोग दूर होजाता है. तथा सोंठ, मिर्च, पीपरि, आंवला, हर्र, बहेडा एक एक तोला पावभर जलमें तोले भर औषधीका काढा बनाय सेंधालवण और जवाखार मिलाय पीनेसे कफजनित अंडवृद्धिरोग शान्त होजाताहै. तथा कचूरको बकरीके दूधमें पीसकर गरम कर लेप करे तो अंडवृद्धिकी भी पीडा दूर होजाती है तथा पीनेकी तमाखू गरम कर बांधदेनेसे अंडवृद्धि रोग रहता है. यदि पानी उतर आया हो तो शस्त्रसे निकलवादेवै तो सूजन दूर होजाती है.

अर्श (बवासीर) रोग

वात, पित्त, कफ ये दोष दूषित होके पीडायुक्त मस्से गुदास्थानमें प्रगट होकर रुधिरस्राव करते हैं. इसीको बवासीर रोग कहते हैं. इसके अनेक भेद हैं परन्तु खूनी और बादी नामसे दो भेद प्रसिद्ध हैं. बवासीरके निवारणार्थ परवरका पत्ता, जवासा, चिरायता, नागरमोठा, लालचन्दन दालचीनी, खस, दारुहल्दी, नींबकी अन्तर छाल इन सबका काढा शहत मिलाय पीनेसे खूनी बबासीर रोग शान्त होजाता है. तथा कुकरौंधेकी फुनगी, काली मिर्च पीसकर जलमें घोट पीवे तो बवासीरका रुधिर बंद हो जाता है अथवा छोटी इलायचीके दाने एक तोला, तज दो तोले, तेजपाल तीन, तोले, नागकेशर चार तोले, काली मिर्च पांच तोले, पीपरि छः तोले, सोंठ ७ तोले, मिशरी डेढपाव सबको पीस छान चूर्ण बनाया छः छः माशेकी मात्रा प्रातःकाल सायं-काल खानेसे दोनों प्रकारका बवासीर रोग शान्त होजाता है .

मस्सोंकी औषधी

कुकरौंधेको मलकर जलमें मिलाय उसीसे शौच लेवे, अथवा फटकरीके जलसे शौच लेवै अथवा सेहुँडके दूधमें हलदी घिसकर मस्सेपर अथवा निबौ-लीकी मींगी, चीनियां कपूर, रसौत, जलमें बारीक पीस मस्सेपर मींगी, चीनियां कपूर, रसौत, जलमें बारीक पीस मस्सेपर लेपै तथा गेंदा, कुकरौंधा, बनगोभी इनकी पत्ती, प्याजके बीज, गंदनाके बीज मिलाय टिकियां बनाकर मस्सेपर' बांधनेसे पीडा दूर हो जाती है. अथवा नींबका बफरा लेनेसे, भांग और लोबानकी धूनी लेनेसे पीडा शांत होती है. अथवा गेंदा, बबूरकी पत्ती अलग अलग जलसे पीसकर जलमें घोल हांडीमें रखकर लेवे तो आँच पर रखकर पांच सात बार बफारा लेवे तो मस्सोंसे उत्पन्न पीडा शान्त हो जाती है.

अर्शरोगमें अपथ्य

रुधिर निकलवाना, जुलाब लेना, लेपन करना, तेजाबसे जलाना, दागाना, चीरना, पुराने लाल चावल और साँठी–चावल, कुलथी, जौ धतूर, परवल, लहसन, चीता, जिमीकन्द, बथुवा, चूका, मूलीकी फली, मूलीका शाक, सोंठ, हर्र, माखन, मट्ठा, आंवले, घी, दूध, भिलावा, गोमूत्र, सरसोंका तेल, कांजीपान, भ्रमण, हलके भोजन, वातनाशक पदार्थ, शीघ्र पचनेवाली वस्तु, मूलीकी तरकारी, जिमीकन्दकी तरकारी अधिक खाय, हर्र सेवन करे. ये सब इस अर्शरोगमें हितकारी हैं.

आर्शरोगमें पथ्य

तिलकी खल, मांस, मछली, दही, मैदा व पीठीके पदार्थ, उडद, मटर, माषकी फली, बेलगिरी, पोईका साग, भसीडे, पका आम्र, भारी पदार्थ नदीका जल, धूपमें चलना, वमन, वस्तिकर्म अर्थात् गुदामें पिचकारी लेना, पूर्वदिशाकी वायु, वेगोंका रोकना, स्त्रीसंग, घोडा आदिपर चढना, उकड बैठना, दोषकारक अन्न, वारंवार, दिनमें सोना, बहुत भोजन करना, लडाई लडना, खूनी बवासीर होनेसे रुधिर निकलवाना, तेजाब आदि लगाना ये सब अर्शरोगमें अहितकारी हैं.

कामध्वज दोष निवारण

यदि कामध्वज छोटा हो अथवा किसी रोगके कारण टेढा और पतला होगया हो तो तीस वर्षके भीतर इसका विशेष प्रयत्न करना उचित है. तीस वर्षसे अधिक आयु हो जानेके उपरान्त कोई उपाय काम नहीं देता, प्रथम तो जिस दोषसे रोग उत्पन्न होगया हो उस दोषको दूर करने और पौष्टिक पदार्थ सेवन करने तथा तिला लगानेसे कामध्वजदोष दूर हो जाता है. यदि तिलासे काम न चले तब दूसरा उपाय करना चाहिये. तिला–शुद्ध जमालगोटा दो तोले, पिस्ताकी मींगी तीन तोले इन दोनोंको कुचलकर पोटली बांधकर तवेपर धरे नीचे मन्द आंच करे तो पोटलीके दबानेसे तेल निकलता है उस तेलको लगावे. तथा हींग, कसेरू समान भाग लेकर गायके घीमें खरल करे, जब भली भांति मिल जावे तब उसको लगाकर ऊपरसे पान बाँधदेवे दो सप्ताह पर्यन्त यह औषधि लगानेसे कामध्वजका टेढापन जाता रहेगा औरकुछ स्थूल व दीर्घ होजावेगा. परन्तु औषधि जबतक लगावे तबतक विषय कदापि न करे. तथा बैंगनके रसमें बडी पीतल सप्ताह पर्यंत खरल कर पातालयन्त्रद्वारा तेल निकाललेवे उस तेलके एक बून्दमात्रको चमेलीके तेलमें मिलाकर कामध्वजपर लगावे

तो लाभ हो. अथवा तुरन्त भरकर लाये हुए जलमें ढाकके बीज भिगो कर एक प्रहर उपरान्त छीलकर पातालयन्त्रद्वारा तेल निकाल लेवे उस तेलको तिलके तेलमें मिलाकर लगावे अथवा केंजुएकी मिट्टी स्वच्छ करके तिलके तलमें पकावे और कुछ गरम जलसे कामध्वजको धोकर रगडकर स्वच्छ करले अनन्तर उसको लगावे तो दीर्घ और स्थूल होता है. केंचुवा, सूखी जोंक, बीरबहूटीके मलनेसे दीर्घ व स्थूल होता है. तथा भेडके दूधमें अकरकरा पीसकर लगानेसे कामध्वजका टेढापन दूर होता है. अथवा लोंगको जैतूनके तेलमें पीसकर लगाना भी अच्छा है. तथा रससिंदूर और अफीम धतूरेके तेलमें तीन दिन खरल कर उसके बराबर मिशरी और भांग मिलाय मटरके बराबर गोली बनावे. एक गोली प्रतिदिन खाकर दूध पीवे. स्मरण रहे कि, तिलाको कामध्वजकी सीवन और अग्र भाग छोडकर लगावे, तिला लगाकर ऊपरसे पान बांध दे और सबेरे खोलडाले, शीतल जल काम-ध्वजपर न पडने पावे और कामध्वजको प्रतिदिन उस्तरेसे साफ रखनेवाले और ग्रीष्मऋतुमें शीतल जलसे, वर्षाकालमें तुरन्तके भरे जलसे, शीतकालमें कुछ गरम जलसे धोकर प्रतिदिन साफ रखनेवाले पुरुषके कामध्वजको प्रायः रोग नहीं होता ।

स्तम्भन

सुहागा, कपूर, पारा ये बराबर लेके अगस्तके रस और शहतमें मर्दन कर कामध्वजपर लेप करे और एक प्रहर उपरान्त धोकर रतिकर्म करे तो वीर्यस्तम्भन होवे. तथा कमलगट्टेकी मींगी शहतके साथ पीसकर नाभिपर लेप करे, जबतक लेप रहता है तबतक वीर्य स्खलित नहीं होता है. तथा एक पल खसको सोंठके काढेमें सोलहवां भाग गुड मिलाय रातको पीकर रति करे तो जबतक खटाई न खाय तबतक वीर्य स्खलित नहीं होता है. तथा धतूरेके फ़ल, मूल, पत्ता, इनके रसमें सुपारीके चूर्णको पीसकर बारबार कामध्वजपर लेप करे तो वीर्य स्तम्भन होवे. यह वीर्य-स्तम्भन प्रकार उन लोगोंके निमित्त कहा गया है कि, जो लोग अपनी स्त्रीके समीप जाकर क्षणमात्रभी कामकेलि नहीं कर सकते और तुरन्त स्खलित होकर नपुंसकके समान होजाते हैं.

स्त्रीद्रावण

कसीस, माजूफल, फटकरी इन तीनोंको शहतमें पीसकर कामध्वजपर लेप करे और प्रसंग करे तो स्त्री द्रवीभूत होवे. तथा जलपीपरिके फल और

पत्तीको पीसकर उसमें शहत मिलाय कामध्वजपर लेप कर प्रसंग करे तो स्त्री द्रवे तथा सुअरकी वसा शहत मिलाय कामध्वजपर लेप कर रति करनेसे स्त्री द्रवीभूत होती है.

वीर्यवर्धक मोदक

केशर छः माशे, जावित्री छः माशे, जायफल तीन माशे, गरीका गोला एक लेकर छेद कर उसमें तीनों औषधी भरकर छेद बन्द करदेवे, अनन्तर चिरौंजी आधपाव, छुहारा गुठली समेत आधपाव, अखरोट एक छटांक, बादामकी गिरी एक छटाँक इन सबको गायके एक सेर दूधमें डालकर मन्द मन्द पचावे, जब छुहारा आदि कोमल होजायँ तब निकालकर दूधका खोवा बनालेवे और शिलपर सब औषधियोंको पीसकर खोवामें मिलादेवे, अनन्तर कडाहीमें घी चढाव खोवाको भून लेवे, बबूलका गोंद आधपाव घीमें भूनकर पीसलेवे और गेहूँका आटा, उडदका आटा पाव पावभर घीमें भून लेवे, अनन्तर तीन पाव स्वच्छ देशी शक्कर मिलाय आधी आधी छटाँकके लड्डू बांधलेवे. प्रातःकाल सायंकाल एक एक लड्डू खानेसे वीर्यकी वृद्धि होती है तथा गेहूँ और जौका सत एक एक पाव, उडदकी धोईका चूर्ण एक पाव, सांठी चावलका चूर्ण आधापाव, गायके दूधमें शोधी छोटी पीपरि एक छटांक, घी तीन पाव, शक्कर डेढ सेर, बादाम, किशमिश, चिरौंजी, पिस्ता आध आध पाव, पहले सब चूर्ण घीमें भूने अनन्तर शक्कर और मेवा मिलाय मले और एक एक छटांकके लड्डु बांधलेवे. प्रातःकाल और सायंकाल एक एक लड्डू खाये तो थोडेही दिनोंमें वीर्य बढकर गाढा होजाता है. तथा कौंचके बीजकी गिरीका चूर्ण, गेहूँका आटा दो दो तोले लेकर आधासेर दूधमें पकाय गाढा होजानेपर उतार लेवे और घी दो तोले, मिसरी दो तोले मिलाकर खानेसे वीर्यक्षीणता रोग शांत हो जाता है, वीर्य बढता है.

वीर्यवर्धक चूर्ण

कौंचके बीजकी गिरी, तालमखाना, बडा गोखरू, गुर्चका सत, असगन्ध सेमरका मुसरा, वरियाराकी जड, बीजबन्द, शताबरी सब दो दो तोले लेके सबका चूर्ण कपडछानकर उसमें मिशरी आध पाव पीसकर मिलावे. छः माशे चूर्ण प्रातःकाल और छः माशे चूर्ण सायंकाल गायके दूधके साथ सेवन करनेसे वीर्यकी पुष्टि होती है और क्षीणता नष्ट होती है.

वशीकरण

दोहा—वशीकरण यह मंत्र है, तजिदे वचन कठोर ।
मन लगाव सब कालमें, रहे इष्टकी ओर ।।

इस दोहेके अनुसार पूर्णरीतिसे वर्ताव करनाही वशीकरण है. इसका भावार्थ यह है, कि जिसको अपने वशमें करना चाहे उससे कठोर वचन भूलकरके भी न बोले और निरन्तर उसका ध्यान करे अर्थात् अपने मनका लगाव सब कालमें इष्टमित्रकी ओर रहे तो थोडे ही समयमें वशमें होजाता है. एवं जो स्त्री पुरुषको और पुरुष स्त्रीको वशमें लाना चाहे तो निरन्तर ध्यान रहनेसे वशीभूत हो जानेमें कुछ भी सन्देह नहीं जानना. और जो कोक पंडितने कोकशास्त्रमें वशीकरण निमित्त किसी जीवका पित्ता निकालकर, किसीका रुधिर आदि निकालकर एवं अन्य अभक्ष्य वस्तुओंका खिलाना लिखा है उनको हमने इस अपनी पवित्र पुस्तकमें लिखना उचित नहीं समझा.

कार्यसिद्धि

पूर्वोक्त दोहेका अभिप्राय लेकर मनुष्य अपना प्रत्येक कार्य पूर्ण कर कसता है. सो इस प्रकार कि, जो कार्य अपनी योग्यताके अनुसार हो उसको प्रयत्नपूर्वक निरन्तर ध्यान करे तो कुछ कालमें अवश्यमेव वह कार्य सिद्ध हो जाता है. इसमें कुछभी सन्देह नहीं जानना.

आवश्यक शिक्षा

पुरुषोंको उचित है कि, नीचे लिखी हुई शिक्षापर अवश्य ध्यान धरकर उचित बातको ग्रहण करें और अनुचित बातको परित्याग करें. परस्त्रीसे, गर्भवती स्त्रीसे, विधवा स्त्रीसे संभोग कदापि नहीं करें. परस्त्रीसे रमण करनेमें वीर्य वृथा जाता है, लोकमें निन्दा होती है, घबराहटसे मस्तकको हानि पहुँचती है और अनेक प्रकारके उपद्रवोंका भय रहता है और राजदंडभय सबसे बढकर है. इस कारण परस्त्रीकी ओर कुदृष्टिसे कदापि न देखे, गर्भवतीसे रमण करनेपर गर्भपात होनेका भय है और वीर्य गर्भस्थ बालकका भोजन होता है और गर्भाशय टेढा होकर हानिका पहुँचना सम्भव है. विधवास्त्रीसे रमण करनेपर प्रायः सुजाकरोग होजाता है और परस्त्रीरमणमें जो जो दोष हैं वेही दोष इसके रमणमेंभी जानना. वृद्धासे रमण करनेपर शरीरमें वृद्धता आ जाती है. रजोवतीस्त्रीसे रमण करनेपर उपदंशरोग उत्पन्न हो जाता है. नेत्रोंकी ज्योति मन्द होजाती है और रुधिरविकारवाली सन्तान

प्रगट होती है. बलात्कारपूर्वक मैथुन करनेसे पुरुष रोगी हो जाता है और सन्तान अधम प्रगट होती है. रोगिणीस्त्रीसे रमण करनेपर वही रोग होजानेका भय और निर्बलता उत्पन्न होवे है. कन्याके साथ रमण करनेसे दोनोंकी इन्द्रीको आघात पहुँचता है, दिनमें मैथुन करनेसे वीर्य और रुधिर पतला हो जाता है, जिससे शरीर निर्बल हो जाता है, अपनी स्त्रीके साथ आवश्यक समय रतिकेलि करनेसे पहले उसको भलीभांति प्रसन्न करे: क्योंकि परस्पर प्रसन्नतासे आरोग्य संतान प्रगट होवे है. परन्तु स्त्रीके साथ एक शय्यापर शयन नहीं करे और एक साथ भोजन न करे क्योंकि स्त्रीके साथ सोने और खानेसे शरीर आलसी और ढीला हो जाता है. कामोद्दीपन शक्ति न्यून होजाती है, इन आवश्यक बातोंपर पुरुषोंको अवश्य ध्यान रखना चाहिये.

केश धोनेकी रीत

केशोंको भली भांति धोकर तब कोई औषधी लगावे और तेल आदि डाले. उसकी रीति यह है कि, कच्चा सुहागा दो तोले, कपूर एक तोला इन दोनोंको बारीक पीस ढाई पाव जलमें गरम करे जब जल खैलने लगे तब उतारकर शीतल करलेवे अनन्तर उससे बाल धोवे तो साफ हो जाते हैं.

मूँछ बढानेका तेल

जेवेरेंडीके पत्ते दो माशे, गिलेशरायन डेढ तोला, एलकोहाल एक तोला, सिनकोना एक तोला, रम एक तोला, गुलाबजल पांच तोले, पहले सिनकोना-वर्क और जेवेरेंडीके पत्तोंको भलीभांति पीस लेवे. अनंतर और वस्तुएँ मिलाय बोतलमें भरकर मुंह बांध देवे और एक सप्ताहपर्यन्त रख कर छान लेवे. इसके लगानेसे थोडेही दिनोंमें बाल बढ जाते हैं.

केशवर्द्धक लेप

तिलके फूल और गोखरू पीसकर लेप करनेसे केश बढते तथा हाथीदांत जलाकर उसकी राख और रसोंत बकरीके दूधमें पीसकर लेप करनेसे केश जमकर बढते हैं.

गंजरोगकी औषधि

शिरपरसे केश गिरजानेको गंजरोग कहते हैं. हाथीदांतका चूर्ण और रसौंत बकरीके दूधमें घिसकर लगानेसे गंजरोग अच्छा होजाता है. परंतु बीस दिनतक लगावे. जो गंजरोग बहुत घृणावाला होगया हो तो जूतेका तरा जलाय राख कर उसमें अंडीका तेल मिलाय लेप करे तो बाल जम आते हैं और गंजरोग अच्छा होजाता है.

इन्द्रलुप्त रोगकी औषधि

अकस्मात् केश गिरकर न जमें उसको इन्द्रलुप्तरोग कहते हैं. इसके निवारणार्थ भटकटैयाको पीसकर शहत मिलाय लेप करे. अथवा घुंघुचीको जलमें मिलाय पीसकर सहतके साथ लेप करे तो केश नहीं गिरें, यदि केश न जमें तो केशवर्द्धन लेप बनाकर लगावे.

बाल उडानेवाला साबुन

चूर्ण नशास्ता एक तोला, बेरियम सल्फाइट तीन माशे, पवित्र सफेद साबुन छः माशे, कपूर चार रत्ती, इन सबको बारीक पीस थोडी गरमी देके टिकिया बना लेवे इसके लेपसे बाल उड जाते हैं. तथा हरताल छः माशे, मैनशिल छः माशे, बेरियम सल्फाइट छः माशे, आरारोट एक तोला पीसकर मिलालेवे और इसके लेपसे भी बाल उडजाते हैं.

केशकल्प (खिजाब)

कच्ची फटकरी तीन मासे, संगरासिख एक तोला, नौसादर छः माशे, माजूफल दो तोले, माजूफल भूनलेवे और तीनों वस्तुओंको बारीक पीस लोहेके पात्रमें लोहेके मूसलसे घोंटे और आँबलेके जलसे बालोंपर लगावे. १ प्रहर बाद आंवलेके जलसेही धोडाले तो बाल स्याह होजाते हैं. तथा लोहका मैल १ छटांक, हर्र १ छटांक, मदारकी जड १ छटांक इन सबको बारीक पीसकर पावभर जलमें औटावे, जब जलमें स्याही आजाय तब नीचे उतार कपडेसे छान कसीसका चूर्ण आधी छटांक मिलाय तीन दिनतक लोहेकी कडाहीमें रहने देवे. इसको तेलके साथ बालोंपर लगानेसे बाल काले होजाते हैं. आमकी गुठली पांच तोले, लोहचूर्ण दो तोले, कसीस एक तोला, नौसादर दो माशे, केलेका रस एक छटाँक पहले औषधियोंको पीसलेवे अनन्तर केलेके रसमें मिलाय एक बोतलमें भरकर घोडेकी लीदमें चालीस दिन तक गाडदेवे, अनन्तर निकालकर छान लेवे, यह रस आठ दिनतक प्रतिदिन लगावे, फिर तीसरे दिन लगाया करे तो बाल स्याह होंगे तथा माजूफलका तेल पाताल-यंत्रद्वारा निकालकर इस पांच तोले तेलमें नीचे लिखा तेजाब मिलाकर लगावे, नौसादर बारह तोले, लवण चार तोले, फिटकरी पांच तोले कूटकर एक बोतलमें भरकर उसके पेदेमें आंच देकर यंत्रद्वारा तेजाब खींचकर उपरोक्त तेलमें मिलाकर लगावे. तथा मकनातीसपत्थर एक तोला, असली कस्तूरी एक तोला, कछुएके शिरकी हड्डी एक तोला, भंगरा स्याह पांच तोले,

हलीला स्याह एक तोला इन सब औषधियोंको स्याह भँगरेके रसमें सात दिनतक भिगोवे फिर सबके बराबर शहत डालकर औटावे और माजूम बनाकर प्रतिदिन चार माशे खावे दो मासपर्यन्त खानेसे बाल स्याह निकलते हैं और शरीरमें बलकी वृद्धिभी होती है. तथा नींबका तेल पलभर महीनापर्यन्त पीनेसे केश श्याम उत्पन्न होते हैं.

लोमशातन

ढाककी भस्म, हरताल केलेके रसमें मिलाय लेप करनेसे नरम केश उडजाते हैं तथा केलेके जलमें शंखकी भस्म सात दिन भिगोवे अनन्तर हरताल मिलाय लगानेसे नरम केश उडजाते हैं.

केशश्वेतीकरण

दूधमें तिल भिगोवे दूसरे दिन सुखाकर तेल निकलवाकर लगावे अथवा हरसिंगारके फूल आंवलेके रसमें भिगोवे अनन्तर निकालकर मलं तो केश श्वेत होजावें. कोई २ सफेद तिलोंको सात दिनतक दूधमें भिगोय तेल निकालकर लगानेसे केश श्वेत होना कहते हैं. परन्तु केशोंको श्वेत करनेवाले पुरुष जगत्में न्यून होंगे.

केशोद्भवरंजन

गव्येन पयसा पिष्टं तिलपुष्पं सगोक्षुरम् ।
सप्ताहं लेपनात्कुर्यात्केशान्दीर्घान्बहूनपि ।।१।।

गायके दूधमें तिलफूल और गोखरू पीसकर सात दिन लेप करनेसे केश वढते हैं और बहुत निकलते हैं ।। १ ।।

शरीर सुधार

पुरुषका शरीर यदि स्थूल हो और उसको दुर्बल करना चाहे तो दंड कसरत करे, दौड लगावे, घोडेपर अधिक चढे, घी अधिक खाय, भोजन कमती करे, बहुत कम शयन करे, अतिस्वादु पदार्थ खीर, हलुआ, दूध, आलू आदि नहीं खाय. प्रातः शीतल जल पीवे, पसीना अधिक निकाले, इन वर्तावोंसे शरीर दुर्बल होजायगा. यदि शरीर दुर्बल हो और स्थूल करना चाहे तो आहार विहार अपना ठीक रक्खे, चिन्ता, शोक, क्रोध न करे, स्वादिष्ठ भोजन करे. आँवलेका मुरब्बा खाय, अपने मनको प्रसन्न रक्खे तो दुबला शरीर स्थूल होजायगा. जो पुरुष छोटे डीलका हो और लंबा होना चाहे तो पचीस वर्षकी आयुतक पुरुष लंबा होसकताहै. उसका उपाय यह है कि, पाँव फैलाकर

सोवे, सूर्यकी धूपमें लेटा करे, जौकी दरिया अधिक खाया करे, जहाँ खुला हुआ अधिक हो, पवन अधिकतासे आवे वहां बडे स्थानमें रहा करे और त्रिफलाको शहतमें मिलाकर खाया करे, गाजराका हलुवा खाया करे, एवं दूधमें घी छौंककर दूध पिया करे तो शरीर लम्बा होजाना सम्भव है, परन्तु तमाखू पीना, मांस खाना और छोटे पलँगपर रहना उचित नहीं है. इससे शरीर लंबा होनेमें बाधा पहुँचती है. यदि किसी अंगको मोटा करना चाहे तो उस अंगको मलमलकर धोवे जब लाल लाल होजाय तब उसपर रूपरस मल देवे और उस अंगसे काम अधिक लेवे तो वह अंग स्थूल होजाता है, परन्तु चालीस वर्षकी आयुके उपरांत स्थूल न होगा. यदि मुखकी शोभा बढाना हो तो कुमारावस्थासेही अच्छा वर्ताव करे, पाचन शक्ति बिगडने न पावे, यौवनसे पहले विषयकी ओर ध्यान भी न करे, चिन्ता न करे, शोक और भय न करे, उत्तम और स्वादिष्ठ भोजन करे, एक वस्तु अधिक दिनोंतक न खाय, मादक (नशादार) वस्तु न खाय, तमाखु सेवन न करे. हलका अन्न भोजन करे जिससे अजीर्ण न होने पावे, मांस, मछली आदि न खावे, लहसन, प्याज, अधिक खटाई और लामिर्च न खावे, अधिक तेज रोशनीमें न बैठे, महात्माओं और धर्मात्मा एवं ईश्वर भक्तजनोंके चरित्र प्रेमपूर्वक पढे, चित्तको प्रसन्न रक्खे, क्रोधको कभी समीप न आने देवे, घी अधिकखाय, खुले मैदानमें जहां वायुका संचार हो प्रातःसायं भ्रमण करे, खुले स्थान हवादारमें निवास करे, दुर्गन्धित वस्तुओंसे पृथक् रहे. दाहिनी करवट अधिक सोवे, दूधमें गोखरू अथवा शतावरीर औटाकर मिशरी डालकर पियाकरे, परन्तु बलानुमान पीवे, ईर्षा द्वेष किसीसे न करे, मुखको प्रफुल्लित रक्खे, किसीसे घृणा कर मुख टेढा न करे इत्यादि वर्तावसे मुखकी कान्ति और आयु दोनोंकी वृद्धि होती है, यदि अपने शरीरके रंगको गोरा करना चाहे तो शरीरको सुखी रखनेका प्रबन्ध करे. बहुत सरदीगरमीसे बचा रहे, सूर्यकी धूपमें कम रहे, चाय न पीवे, सिरका, मसाला, खटाई मिठाई अधिक न खाय, दंड कसरत न करे, रात्रिको न जागे, अजीर्ण न होनेपावे, केलेकी फली, अंगूर, सेव, नारंगी, पिस्ता, बादाम, छुहारा, गोलेकी गिरी मिश्रीके साथ सेवन करे और इन्द्रायनके फलमें हलदी भरकर रखछोडे, बीस दिन उपरान्त निकाल बासी पानीमें पीसकर शरीरपर मलनेसे रंग गोरा होजाता है. अथवा हलदी, दारुहलदी, सरसों, तिल, कूठ इनको पानीमें पीसकर नले, तथा लालचन्दन, दोनों हलदी भैंसके दूधमें पीसकर मलनेसे भी रंग गोरा होजाता है. यदि उदर दीर्घ हो

और छोटा करना चाहे तो असगन्धके फूल, जूहीकी जड, शक्कर, गायका घी इनको मिलाकर खाय. यदि किसी अंगमें मांस भरना चाहे तो उस अंगको शीतल जलसे भलीभांति धोवे और तौलियासे इस प्रकार रगडे कि, वह अंग लाल होजावे अनन्तर तुरन्त उस अंगपर बदामकी मींगी छिलका उतारकर दो तोले, छोटी इलायचीके दाने एक तोला, अकरकरा छः माशे, दालचीनी छः माशे, केशर छः माशे, लौंग छः माशे इन औषधियोंको बारीक पीसकर गायके मक्खनमें मल्हम बनाकर लगावे. यदि मुख अथवा बगलमें दुर्गन्ध हो तो उसको दूर करनेके अर्थ औषधी यह है कि, लाल फूल एक तोला, छोटी इलायचीके दाने एक तोला, बडी इलायचीके दाने छः माशे, सौंफ एक तोला, स्याह लवण तीन माशे, जवाखार तीन माशे, सेंधालवण तीन माशे. सूखा धनियां छः माशे, देशी अजवायन तीन माशे, नौसादर शुद्ध किया हुआ दो तोले इन सबको कूट पीसकर चूर्ण बनाय तीन माशे चूर्ण प्रतिदिन खाय तो भीतरी दुर्गन्ध दूर होजाती है और जो ऊपरी दुर्गध हो तो जलसे शुद्ध करे, जैसे दांतोंमें मल हो तो मञ्जन मले, शरीर मैला होनेसे दुर्गंध हो तो स्नान करे, बगलमें दुर्गन्धि आती हो तो बेलकी जड और हर्रको जलमें पीसकर मलनेसे बगलकी दुर्गन्धि और फुंसियां दूर होजाती हैं. कपूर, मुर्दाशंखको गुलाबमें पीसकर लगानेसे भी बगलकी दुर्गन्ध जाती रहती है. नीमकी दाँतौन करनेसे मुंहकी दुर्गन्ध दूर हो जाती है. तथा छोटी इलायची, कत्था, रूमीमस्तंगी जलमें औटाय कुल्ला करनेसे मुखकी दुर्गन्धि दूर हो जाती है. अथवा छोटी इलायची पोदीनाके रसमें पीसकर पानमें रखकर खानेसे मुखकी दुर्गन्धि दूर हो जाती है, यदि सब शरीरमें दुर्गन्धि आती हो तो छायामें आमका बौर सुखाकर शक्कर मिलाय खावे. अथवा इलायची, पत्रज, नरकचूर, मोथा पीसकर शरीरपर मर्दन करे तो दुर्गंध जाय. यदि चेचकके दाग दूर करना हो तो बादामकी मींगी, चिरौंजी, कद्दू के बीचकी मींगी, गायका मक्खन ये समान भाग लेके मुखपर मले. अथवा जहाँके दाग दूर करना हो वहाँपर मले, परन्तु जितने गहरे दाग होंगे उतनेही अधिक दिन लगेंगे. पहले गेहूंकी भूसी रातको भिगोय सबेरे मुंहपर भली भांति मलकर धोवे अनन्तर उपरोक्त औषधि मले. यदि दाग स्याह हों तो जौका मैदा उससे तिहाई हुलास लेके गुलाबमें उवटन बनाय लगावे सूखजानेपर धोडाले तो स्याह दाग एक सप्ताहमें दूर होजाते हैं. यदि चाहे कि, कण्ठ कोकिलसा हो जावे तो गायके दूधके साथ आँवला सेवन करे. अथवा कुलंजन, काली मिर्च बराबर पीसकर दो

चार वार माशेभर खाया करे. यदि बाल घुंघुरवाले करना हो तो नागरमोथा एक तोला, दालचीनी तीन माशे, बालछड एक तोला, लौंग दो माशे, इलायचीका छिलका एक तोला इन सबको पीसकर चूर्ण बनावे. अनन्तर रीठोंको भिगोकर उसके लुआबमें यह चूर्ण मिलाय शिरपर मले सूख जानेपर स्नान करे, परन्तु कंघी न करे अनन्तर कुछ भीगे केशोंमें तेल लगादेवे दूसरे दिन कंघी करे. तीसरे दिन शिर मलकर इसी प्रकार वर्ताव करनेसे बाल घुंघुरवाले होजाते हैं, अथवा कांजीमें सहिजनेकी मींगी पीसकर धूपमें रखनेसे जो तेल निकले उस तेलको लगावे तो भी केश घुंघुरवाले होजाते हैं, तुरन्त कंघी न करे यह ध्यान रहे. यदि चाहें कि, ठुड्डी देरसे निकले तो अफीममें ईसबगोलके लुआव मिलाकर लगावे तो ठुड्डीके केश देरमें निकलते हैं. यदि इच्छा हो कि, केश श्वेत न होवे तो मदिरा न पीवे, हुक्का न पीवे; अजीर्ण न होनेपावे, हलका और स्वादिष्ट भोजन करे, भारी और कडी टोपी न देवे, मस्तकपर बोझा न सहे, विषय बहुत कम करे जिससे वीर्यकी अधिकता हो, गरमीमें न बैठे, तेज रोशनीमें काम न करे, जल और दूध बहुत कमती पीवै, छायामें अधिक रहे, शिरमें तेल कम डाले, कुछ गरम जलसे केशोंको धोकर सुखाया करे. सूर्य न निकलनेसे पहले मुंडी वृक्षको मूलसहित उखाडकर सुखाय लेवे फिर उसका चूर्ण बनाय प्रतिदिन प्रातः तीन माशेसे दश मासेतक सेवन करे, ये पुरुषोंके हित औषधि लिखीं. आगे स्त्रियोंके निमित्त औषधि लिखते हैं.

स्त्रीरोग वर्णन

यहां हम स्त्रियोंके उन्हीं रोगोंका वर्णन संक्षेपरीतिसे लिखते हैं कि, जिन लोगोंको स्त्रियां वैद्योंके सम्मुख प्रकाश करनेमें लज्जित होती हैं. अथवा जिन रोगोंके लक्षण पूछनेके समय बतलानेमें संकोच करती हैं, प्रत्येक स्त्री बारह वर्षकी अवस्थासे पचास वर्षकी अवस्थातक महीने महीने ऋतुमती होती हैं. वह ऋतु यदि किसी कारणसे बन्द हो जाता है तब उस स्त्रीको रोगिणी जानना चाहिये. जिसको जन्महीसे कोई रोग होता है तो वह ऋतुमती नहीं होती है. अधिक शीत लगनेसे वर्षाकालमें अधिक भीगनेसे ऋतु बन्द होजाना सम्भव है. यदि स्त्री बहुत स्थूल होजाती है तो भी ऋतु बंद होजाता है. जिस कारणसे ऋतु बन्द हो उसीका उपाय करना चाहिये. गर्भिणी होनेसे पहले स्त्रीका ऋतुमती होना ऐसा है जैसे वृक्षमें फूलका आना. वृक्षमें फल आनेसे पहले फूल आता है विना फूलके फल नहीं आ सकता. जो अधिक दिन ऋतुमती रहती है उसको प्रदररोगिणी जानना चाहिये, यह प्रदररोग

ऋतुमती होनेसे पहले दूसरे तीसरे दिन पुरुष संयोग होनेसे और बहुत मैथुनसे उत्पन्न होजाता है. इसके निवारणार्थ असगन्धको कूट पीसकर बराबर मिश्री मिलाय एक एक तोलाभर दिनमें तीन बार खाय. अथवा बहुत भूने चने बराबर बराबर पीसकर सबके बराबर मिश्री मिलाय एक एक तोलाभर दिनमें तीन बार खाय, अथवा स्याह मिर्च सात और हरसिंगारकी कोंपल सात लेके जलमें पीसे और छानकर दिनमें तीन बार पीवे शीतल जलसे योनिको दिनभरमें चार बार धोवे. जलमें वस्त्र भिगोकर पेडूपर रक्खे. बकरीकी लेंडी सुखाकर पोटली बनाय गर्भाशयके मुखपर रखदेवे. प्रदर-रोगवाली स्त्रीको उचित है कि, बहुत उठे बैठे नहीं, सुखपूर्वक शय्यापर विश्राम करती रहे और साथ परहेजके रहे.

धात्रीं च पथ्यां च रसांजनं च कृत्वा विचूर्णं
सजलं निपीतम् । अत्यन्तरक्तोत्थितमुग्रवेगं
निवारयेत् सेतुरिवाम्बुपूरम् ।। २ ।।

आमलकी, हरीतकी, रसौंत इनका चूर्ण बनाकर जलके साथ पीवे तो अत्यन्त रुधिरसे उत्पन्न वेगको निवारण करता है जैसे सेतु (पुल) जलके प्रवाहको रोक देता है ।। २ ।।

अशोकस्य त्वचा सिद्धं क्षीरं रक्तहरं भवेत् ।
कुरंटकस्य मूलानि मधुकं श्वेतचन्दनम् ।। ३ ।।
पिष्ट्वा तत्कर्षमात्रं तु पाययेत्तन्दुलाम्बुना ।
सकृत्पीत्वा माषयूषं प्रदरात्परिमुच्यते ।।
घृतभृष्टमाषयूषैः पथ्यं दद्यात् विचक्षणः ।। ४ ।।

अशोकवृक्षकी छाल दूधमें सिद्ध कर देनेसे अधिक रुधिरस्रावरोग विनष्ट होजाता है अथवा कुरंटककी जड, यष्टीमधु, श्वेतचन्दन इन तीनोंको पीसकर एक कर्ष मात्र लेके चांवलोंके जलसे पीवे. एक बार उदका यूष पीकर प्रदररोगसे मुक्त होता है; घीसे बघारे हुए उडदका यूष पथ्यमें देवे ।। ३ ।। ४ ।।

अपामार्गस्य मूलं तु दृढपूगेन भक्षयेत् ।
रक्तस्रावं निहन्त्याशु सुखीभवति सुन्दरी ।। ५ ।।

अपामार्ग (चिर्चिरा) की जड दृढसुपारी सहित पीसकर खावे तो रुधिरस्रावरोग दूर होजाता है और स्त्री सुखी होजाती है ।। ५ ।।

मूलं तु शरपुंखायाः पेषयेत्तंदुलोदकैः ।
पाययेत्कर्षमात्रं तदतिरक्तप्रशान्तये ॥ ६ ॥

शरपुंखाकी जड चावलके जलमें पीसकर कर्षमात्र पीनेसे अति रुधिर-स्रावरोग शान्त होजाता है ॥ ६ ॥

चन्दनं क्षीरसंयुक्तं सघृतं पाययेद्भिषक् ।
शर्करामधुसंयुक्तमसृक्स्रावविनाशनम् ॥ ७ ॥

लालचन्दन, दूध, घी, शक्कर शहत मिलाय पीनेसे अत्यन्त रुधिरस्रावरोग विनाश हो जाता है ॥ ७ ॥

कुशस्य मूलं कदलीफलं वा बलाशिफा वा बदरी-
फलं वा । गुडूचिका तंदुलवारिपीता स्त्रीणामनेकं
रुधिरं जयेच्च ॥ ८ ॥

कुशकी जड वा केलेकी फली वा वरियारेकी जड वा बेरीके फल अथवा गिलोय चावलोंके जलमें मिलाकर पीनेसे स्त्रियोंका अत्यन्त रुधिरस्रावरोग निवारण हो जाता है ॥ ८ ॥

दार्वीरसांजनवृषाब्दकिरातबिल्वभल्लातकैरथ-
कृतो मधुना कषायः । पीतो जयत्यतिबलं प्रदरं
सशूलं पीतं सितारुणविलोहितनीलरूपम् ॥ ९ ॥

दारुहलदी, रसौंत, वासक, चिरायता, बिल्व, भिलावा इन सब औष-धियोंका काढा करके शहत मिलाय पीवे तो शूलसहित प्रदररोग, पीतवर्ण प्रदर, श्वेतप्रदर, रक्तवर्णप्रदर, लोहितवर्ण, नीलवर्णप्रदर विनष्ट हो जाता है ॥ ९ ॥

शतावरीघृत

शतावर्यास्तु मूलस्य रसानेव समाहरेत् ।
चत्वारिंशत्पला न्येव वस्त्रपूतं समाचरेत् ॥ १० ॥

शतावरीकी जडका रस चालीस पल प्रमाण निकालकर वस्त्रसे छान-लेवे ॥ १० ॥

द्रवतुल्यं गवां क्षीरं क्षीरस्य द्विगुणं घृतम् ।
जीवन्ती शैलुमज्जाच धातकी क्षीरिकापि च ॥ ११ ॥

रसके बराबर गायका दूध, दूधसे दूना घी और जीवन्ती, अखरोट, धाईके फूल, दुद्धी ॥ ११ ॥

मुद्गपर्णी माषपर्णी महामेदा शतावरी ।
द्राक्षा परूषको यष्टी जीरकं प्रतिकार्षिकम् ।। १२ ।।

मुद्गपर्णी, माषपर्णी, महामेदा, शतावरी, दाख, फालसे, मुलहठी, जीरा ये औषधी एक कर्ष (दो तोले) प्रति औषधी लेवे ।। १२ ।।

पलार्द्धं मधुकं पुष्पं सर्वमेकत्र कारयेत् ।
घृतशेषं समुत्तार्य शीतीभूते च निक्षिपेत् ।। १३ ।।

आधा पल (दो तोले) महुआ लेकर सब औषधियोंको एकत्र करे और पाक बनावे जब घीमात्र रह जाय तब आंचसे उतार शीतल करके आगे लिखी वस्तु डाले ।। १३ ।।

पलाष्टकं शुंठिचूर्णं क्षौद्रस्यापि पलाष्टकम्
सितादशपलंयोज्यं शतावरिघृतं त्विदम् ।। १४ ।।
लेह्यं कर्षं हरेदाशु दुःसाध्यमतिरक्तजम् ।
कामलां वातरोगांश्चह्यश्मरीं च शिरोग्रहम् ।। १५ ।।

सोंठका चूर्ण आठ पल, शहत आठ पल, शक्कर दश पल यह शतावरी घृत है, यह घी प्रतिदिन एक कर्ष (दो तोले) प्रमाण सेवन करनेसे दुःसाध्य रक्तस्रावरोग, कामला और वातरोग, पथरी, शिरःशूल इन रोगोंको शीघ्र हरे है ।। १४ ।। १५ ।।

कपित्थं वेणुपत्रं च समांशं मधुना सह ।
लीढं सप्ताहमाधिक्यं पुष्पस्योपशमं नयेत् ।। १६ ।।

कैथ, बांसके पत्ते इनको समान भाग शहतके साथ सात दिन पर्यन्त चाटे तो अधिक पुष्प (रुधिरस्राव) निवारण होजाता है ।। १६ ।।

नष्टपुष्पमसृद्भव

तिलमूलकषायं तु ब्रह्मदण्डीयमूलकम् ।
यष्टित्रिकटुकोन्मिश्रं क्वाथयुक्तं च पाययेत् ।। १७ ।।
क्वाथं गुडत्र्यूषणजं तिलभार्ङ्गीत्वचंपिबेत् ।
स्त्रीणां रक्तभवे गुल्मे नष्टपुष्पे च योजयेत् ।। १८ ।।

तिलके वृक्षकी जडका काढा बनाय उनमें ब्रह्मदंडीकी जड, मुलहठी, सोंठ, मिर्च, पीपरि इनका काढा मिलाय पीवे, अथवा गुड और सोंठ, मिर्च, पीपरि, तिल, भारंगीकी त्वचा इनका काढा बनाय पीवे तो स्त्रियोंके रक्त-

गुल्म, रजके विनष्ट होजानेमें यह हितकारी है अर्थात् रक्तगुल्मरोग नष्ट हो जाता है और फूल (रज) नष्ट होगया हो तो फिर उत्पन्न हो जावें है ।। १७ ।। १८ ।।

दुर्वादलं तंदुलतुल्यभागं निष्पिष्य पिष्टं परिपाचितं च ।
तद्भक्षयित्वा वनिता प्रनष्टं पुष्पं लभेत्स्वीयबलानुमानम् ।।१९।।

दूब (दूर्वा) चावल समान भाग लेकर पीस लेवे अनन्तर पकाकर इसको खानेसे स्त्रीका नष्टहुआ पुष्प फिर प्राप्त होता है अर्थात् स्त्री रजस्वला होती है और अपने बलके अनुमान रजकी उत्पत्ति होती है ।। १९ ।।

ज्योतिष्मतीकोमलपत्रमग्नौ भृष्टं जवायाः कुसुमं च पिष्टम् ।
गृहाम्बुना पीतमिदं युवत्याः करोति पुष्पं हरभाषितोऽयम् ।। २० ।।

मालकांगनीके अतिकोमल पत्ते अग्निमें जलाय गुडहरके फल मिलाय पीस लेवे अनन्तर घरके जलके साथ पीवे तो स्त्रीका मासिक धर्म बन्द हो जानेपर फिर वह स्त्री मासिक धर्मवाली अर्थात् रजस्वला होती है यह शिवजीने कहा है ।। २० ।।

ऋतु बन्द होनेका कारण भली भाँति जबतक न जान लेवे तबतक कोई औषधी सेवन न करे. कारण जान लेने पर ऋतुको लानेवाली औषधी सेवन करे. एक महीनतक औषध सेवनका प्रमाण है. वैद्य प्रथम यह चिकित्सा करे कि, प्रातः समय प्रतिदिन गरम जलसे भर हुए एक कुंडमें आधे घंटतक स्त्रीको बिठावे और कईबार गरम दूध पिलावे परंतु यह ध्यान रहे कि स्त्रीका नीचेका अंग डूबारहे. इस उपायके उपरान्त उन औषधियोंको खिलावे जो औषधियां पूर्व कह चुके हैं .

वन्ध्या (बांझ) स्त्री

जिस स्त्रीके गर्भ नहीं ठहरता जो स्त्री भोगके योग्य नहीं होती उसको वन्ध्या कहते हैं. वन्ध्या स्त्री अनेक प्रकारकी होती हैं अनेक कारणोंसे भी स्त्री वन्ध्या होजाती हैं. परंतु जिस स्त्रीके अंगोंमें विभेद हो, अंडकोश जो गर्भाशयके समीप बादामके समान छिपे होते हैं वे पुरुषके समान प्रगट हों, कुच न हों, योनिका छिद्र बहुत छोटा हो, रजस्वला न होती हो ऐसी स्त्रीके निमित्त कोई उपाय करना वृथा है. कोई स्त्री ऐसी भी हैं कि एक पुरुषसे वन्ध्या रहती हैं वही दूसरे पुरुषसे गर्भवती होजाती हैं. इसमें पुरुषका भी दोष समझा जा

सकता है. क्योंकि नपुंसकलक्षणवाले पुरुषसे गर्भ नहीं ठहर सकता. परंतु पुरुष ठीक होनेपर भी कोई स्त्री गर्भ नहीं धारती. इस बातकी परीक्षा तो वहीं होसकती है जहां (जिस जातिमें) दूसरे पुरुष करनेका प्रचार हो. गर्भधारणकी अवस्था आजकल कमसे कम दश और अधिकसे अधिक चौसठ वर्ष पर्यन्त जानना. परंतु रज रहनेका प्रमाण पचास वर्षतक है अर्थात् जो निरन्तर सुखकी दशामें स्त्री होगी और चौदह वर्षकी अवस्थाके रजस्वला होगी और नियमपूर्वक शास्त्रानुसार वर्ताव करेगी वह चौसठ आयुतक रजस्वला होसकती है. यही क्रम सब स्त्रियोंमें जानना, परंतु आजकलका समय बड़ा दुर्घट है, नियमानुसार वर्ताव करनेमें स्त्री पुरुषोंको बडा संकट जान पडता है. इसी कारण अनेक दुःख भी उपस्थित होजाते हैं, बालविधवा और वन्ध्या स्त्रियोंकी संख्या बढजानेका यही कारण है, शास्त्रानुसार वर्ताव नहीं होता है. कोई स्त्री बहुत मोटी होजाती है अथवा दुबली होजाती है अथवा किसी विशेष रोगके कारणसे वन्ध्या हो जाती है. रजोवती स्त्रीका रज बन्द होजाना ही वन्ध्यापन है. ऐसी दशामें अंगकम्पन, कटि, कूले और जंघाओंमें पीडा होने लगती है. आलस्य आजाता है. अंगोंमें हडफूटन होती है. नाभिके नीचे भारीपन होता है. नाडी तेज चलने लगती है. मुख लाल होजाता है ज्वर होनेलगता है. प्यास अधिक होती है, शिरमें दर्द होने लगता है. कभी कभी वमन होने लगता है, वायगोलाके लक्षण भी प्रगट होते हैं. बेचैनी होती है. कभी रजस्वला होनेपर सरदी लगती है. दर्द होता है, सफेदरंगका रज होजाता है. कभी रज सहसा कम होजाता है. रजके दोषसे स्त्री प्रायः वन्ध्या होजाती है, स्त्रीके वन्ध्या होनेमें बाईस दोष हैं अर्थात् बाईस प्रकारसे स्त्री वन्ध्या कहाती है. १ वन्ध्या, २ अंकुरा, ३ उदावर्ता, ४ पातिता, ५ परिप्लुता ६ विप्लुता, ७ रोहिता, ८ वातला, ९ वाहमनी, १० प्रसंगनी, ११ मृतवत्सा, १२ अत्यानन्दा, १३ पतला, १४ अचरणा, १५ कुन्ती, १६ श्लेष्मला, १७ अतिचरणा, १८ महायोनी, १९ त्रिदोषनी, २० सूचीवक्त्रा, २१ अंडनी, २२ खंडी.

१—वन्ध्या उसको कहा है कि, जिसके गर्भाशयमें कांटा ळुभानेके समान कुछ पीडा हो और ऋतुमती ठीक ठीक न हो. २—अंकुराका लक्षण यह है कि शरीर सदा भारी जान पडे. नाभिके नीचे बहुत क्लेश जानपडे. हाथ पाँवमें दाह हो. देह प्रतिदिन दुर्बल हो, दो तीन मास ऋतु बन्द रहकर फिर अधिकतासे रज निकलने लगे. ३—उदावर्तका लक्षण यह है कि, जिस स्त्रीका महाक्लेश-

पूर्वक कठिनतासे कुछ रुधिर बहताही रहे. ४-पातिताका लक्षण यह है कि कुचोंमें भारीपन. हो. कुछ रुधिर बहुत दिनोंतक बहता रहे. गर्भ ठहरकर गिर जाय. ५-परिप्लुताका लक्षण यह है. कि, भोगके समयमें पीडा होती है और गर्भ नहीं ठहरता. ६-विप्लुताका लक्षण यह है कि स्त्री ऋतुमती नहीं होती और गर्भाशयमें कुछ पीडा होती रहती है. ७-लोहिताका लक्षण यह है कि, ऋतुमती होनेपर स्त्रीका रज दाह होकर निकलता है अर्थात् जलन पडती है. ८-वातलाका लक्षण यह है कि, बारीक कांटे छुभनेके समान पीडा हो और योनि कठोर हो जाय. ९-वाहमनीका लक्षण यह है कि, ऋतुसंबंधी रुधिर स्निग्ध श्वेतवर्णमिश्रित गाढा निकलता है. १०-प्रसंगनीका लक्षण यह है कि, गर्भ होनेपर पीडाके साथ गिर जाता है और गर्भाशयका स्थान चलायमान होजाता है अथवा हिलकर ढीला होजाता है. ११-मृतवत्साका लक्षण यह है कि, गर्भ ठहरा और रुधिर प्रवाह होकर गर्भपात होगया अथवा पुत्र होकर मर जानेसे उसको मृतवत्सा कहते हैं. १२-अत्यानन्दाका लक्षण यह है कि स्त्री कभी सम्भोगसे तृप्तही न होवे और गर्भ न ठहरे. १३-पतलाका लक्षण यह है कि, स्त्रीके कुछ ज्वर भी रहता हो और योनिमें बहुत जलन पडी रहती हो. १४-आचरणाका लक्षण यह है कि, स्त्री संभोग-समय बहुत जल्दी द्रवीभूत होजाती है. १५-कुन्तीका लक्षण यह है कि, स्त्रीकी योनिमें छोटी छोटी फुंसियां होती हैं और खुजली पडती है. १६-श्लेष्मलाका लक्षण यह है कि, स्त्रीकी योनि फुंसी और खुजलीसे युक्त होनेपर स्निग्ध और शीतल होती है. १७-अतिचरणाका लक्षण यह है कि, स्त्रीको भोगमें आनन्द प्राप्त नहीं होता. स्खलितभी नहीं होती और गर्भ भी नहीं ठहरता. ये उपरोक्त वन्ध्यायें साध्य हैं इनकी चिकित्सा होनेसे गर्भधारण हो सकता है और जो असाध्य हैं वे नीचे लिखते हैं. १८-महायोनि नामवाली असाध्य वन्ध्याका लक्षण यह है कि, स्त्रीकी योनि बहुत बिस्तारवाली होनेसे गर्भ नहीं ठहरता है. १९-त्रिदोषनीका लक्षण यह हैं कि, योनिमें फुंसियां, खुजली जलन होती है और ऐसी पीडा होती है जैसे कोई सुई चुभा रहा है. २०-सूचीवक्राका लक्षण यह हैं कि, योनि बहुत छोटे मुंहकी होती है. २१-अण्डनीका लक्षण यह है कि, जो छोटी अवस्थासे युवकोंसे भोग करानेसे लम्बी हो जानेके कारण योनि दूषित हो जाती है. २२-षण्डीका लक्षण यह है कि, स्त्रीकी योनि खरखरी और सूखी होती है, ऋतुमती नहीं होती और स्तन बहुत कम उठते जो रोग साध्य होता है. और रोगी अच्छा होजानेके योग्य होता है परन्तु

उसकी चिकित्सा नहीं की जाती तो वही रोग असाध्य होजाता है, इस कारण उचित है कि, रोगको शान्त करदेनेका उपाय शीघ्र करे.

वन्ध्या चिकित्सा

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत् ।
एकवर्णगवां क्षीरे कन्याहस्तेन पेषयेत् ॥ २१ ॥
ऋतुकाले पिबेद्वन्ध्या पलार्धं तद्दिनेदिने ।
क्षीरशाल्यन्नमुद्गं च लघ्वाहारं प्रदापयेत् ॥ २२ ॥
उद्वेगं भयशोकं च दिवानिद्रां विवर्जयेत् ।
अतिक्रोधं च हर्षं च वर्जयेच्छीतमातपम् ॥ २३ ॥
न तथा परमां सेवां व्यायामं च विवर्जयेत् ।
एवं सप्तदिनं कुर्याद्वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ २४ ॥

शालिच शाककी जड और पत्तोंसहित रविवारके दिन उखाड लावे और एकरंगकी गायके दूधके साथ कुमारीकन्याके हाथसे पेषण करावे और ऋतुकालमें वन्ध्या स्त्री प्रतिदिन आधा पल (चार तोले) प्रमाण सेवन करे. दूध, भात, मूंगकी दाल आदि लघु आहार (हलका भोजन) करे और उद्वेग (सोच), भय, शोक, दिनमें शयन नहीं करे और बहुत क्रोध, हर्ष तथा शीत धूपसे बचाव रक्खे तथा बहुत सेवा टहल और अधिक अंग-संचालनका कर्म न करे, इस प्रकार सात दिन तक औषध सेवन करे तो वन्ध्या पुत्रवती होती है ॥ २१–२४ ॥

एकमेव तु रुद्राक्षं रक्ताक्षीकर्शमात्रकम् ।
पूर्ववच्च गवां क्षीरैर्ऋतुकाले प्रदापयेत् ॥ २५ ॥

एक रुद्राक्ष और रक्ताक्षी एक कर्ष (दो तोले) मात्र लेकर एकरंगवाली गायके दूधके साथ कन्याके हाथसे पिसवाकर ऋतुकालमें पीनेसे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है ॥ २५ ॥

पत्रमेकं पलाशस्य सुरभीपयसान्वितम् ।
पीत्वा तु लभते पुत्रं रूपवन्तं न संशयः ॥ २६ ॥

ढाकका एक पत्ता सफेद गायके दूधके साथ पीनेसे रूपवान् पुत्र होता है ॥ २६ ॥

देवदालीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।
निष्कत्रयं पिबेत्क्षीरैः पूर्ववत्क्रमयोगतः ।। २७ ।।
शीततोयेन संपिष्टं शरपुंखीयमूलकम् ।
कर्षं पीत्वा लभेद्गर्भं पूर्ववत्क्रमयोगतः ।। २८ ।।
मुस्तपियंगु सौवीरं लाक्षां क्षौद्रं समं पिबेत् ।
कर्षं तंदुलतोयेन वन्ध्या भवति पुत्रिणी ।। २९ ।।

देवदालीकी जड पुष्यनक्षत्र रविवारमें उखाड लावे और तीन निष्क (बारह तोले) प्रमाण एकरंगवाली गायके दूधके साथ कन्याके हाथसे वन्ध्या स्त्री ऋतुकालमें सात दिन पीवे तो पुत्रवती होवे. अथवा शरपुंखाकी जड शीतल जलमें पीसकर एक कर्ष (दो तोले) प्रमाण एकरंगवाली गायके दूधके साथ कन्याके हाथसे वन्ध्या स्त्री पीवे तो पुत्रवती होवे. अथवा मोथा, मालकांगनी, कांजी, लाख और शहत इन औषधियोंको समान भाग लेकर एक कर्ष प्रमाण चावलोंके जलके साथ पान करनेसे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है ।। २७–२९ ।।

समूलां सहदेवीं च संग्राह्य पुष्यभास्करे ।
छायाशुष्कं च तच्चूर्णमेकवर्णगवां पयः ।।
पूर्ववत् पिबते नारी वन्ध्या भवति पुत्रिणी ।। ३० ।।

सहदेवीवृक्ष जडसहित पुष्यनक्षत्र रविवारके दिन उखाड लावे उसको छायामें सुखाय चूर्ण बनावे उस चूर्णको एक-रंगवाली गायके दूधके साथ कन्याके हाथसे वन्ध्या स्त्री ऋतुकालमें पीवे तो पुत्रवती होती है ।। ३० ।।

कृष्णापराजितामूलमजाक्षीरेण संपिबेत् ।
ऋतुस्नाता त्रिधा या तु वन्ध्या गर्भधरा भवेत् ।। ३१ ।।
नागकेशरचूर्णं च नूतनं पयसा सह ।
पिबेत्सप्तदिनं दुग्धं घृतैर्भोजनमाचरेत् ।। ३२ ।।
तदृतौ लभते गर्भं सा नारी पतिसंगता ।
पुत्रीजीवस्य पत्रैकं पिबेत्क्षीरे ऋतौ तु या ।। ३३
पतिसंगाच्च सा नारी वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ।
तस्य मूलं चैकवर्णाक्षीरैः पीत्वा च पुत्रिणी ।। ३४ ।।

कृष्ण अपराजिता (काली शालिपर्णी) कीजड बकरीके दूधमें ऋतुस्नाता वन्ध्या तीन दिन पीवे तो गर्भ धारण करती है. तथा नागकेशरका चूर्ण

एकवर्णवाली नवीन गायके दूधके साथ सात दिन पीवे और घीके साथ भोजन करे तो ऋतुकालमें पतिके संगमसे वह स्त्री गर्भवती होवे. तथा पुत्रजीवक (पतिजिया) का एक पत्र दूधके साथ पीसकर जो स्त्री ऋतुकालमें पीवे तो पतिके संगमसे वह वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है. तथा पतिजिया वृक्षकी जड एक वर्णवाली गायके दूधके साथ पीसकर पीनेसे वन्ध्या नारी पुत्रवती होती है ।। ३१-३४ ।।

कदम्बपत्रं श्वेतं च बृहतीमूलमेव च ।
एतानि समभागानि ह्यजा-क्षीरेण पेषयेत् ।। ३५ ।।
त्रिरात्रं पंचरात्रं वा पिबेदेतन्महौषधम् ।
अस्मिन्निपीयमाने तु गर्भो भवति निश्चितम् ।। ३६ ।।

श्वेतकदम्बपत्र अर्थात् कदम्बके वृक्षके सफेद पत्ते कटाईकी जड समान भाग लेकर बकरीके दूधमें पेषण कर तीन रात्रि वा पांच रात्रिपर्यन्त यह औषधि पीवे, इसके पीनेसे वन्ध्या स्त्री अवश्य गर्भवती होती है ।। ३५ ।। ३६ ।।

अश्विन्यां बोधिवृक्षस्य वन्दाकं ग्राहयेद्बुधः ।
गोक्षीरैः पानमात्रेण वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ।। ३७ ।।
काकोल्यौ लक्ष्मणामूलं तथा षष्टिकतंदुलम् ।
नार्येकवर्णपयसा पीत्वा गर्भवती ऋतौ ।। ३८ ।।

अश्विनीनक्षत्रमें पीपलवृक्षका बाँदा लाकर गायके दूधके साथ पीस कर पीवे तो वन्ध्या पुत्रवती होवे. काकोली, क्षीरकाकोली तथा लक्ष्मणाको जड और साँठीके चावल समान भाग लेकर एकवर्णवाली गायके दूधके साथ पीनेसे वन्ध्या नारी ऋतुकालमें गर्भवती होवे ।। ३७ ।। ३८ ।।

गोक्षुरस्य च बीजं तु पिबेन्निर्गुण्डिकारसैः ।
त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा वन्ध्या गर्भवती भवेत् ।। ३९ ।।
भगाख्ये चैव नक्षत्रे वटवृक्षस्य मूलकम् ।
हस्ते बध्वा लभेत्पुत्रं गोक्षीरेण पिबेत्तथा ।। ४० ।।

गोखरूके बीज संभालूके रसमें मिलाकर तीन दिन वा पांच दिन वन्ध्या स्त्री पीवे तो गर्भवती होवे. पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें वडवृक्षकी जड लाकर हाथमें बांधे तथा गायके दूधके साथ पीवे तो पुत्र प्राप्त होवे ।। ३९ ।। ४० ।।

कंकोलबीजचूर्णं तु एकवर्णगवां पयः ।
ऋतौ निपीयमाने तु वन्ध्या भवतिपुत्रिणी ।। ४१ ।।
एकवर्णसवत्साया गोक्षीरेण सुपेषितम् ।
भावितं वटवन्दाकं पीत्वा वन्ध्या सुतं लभेत् ।। ४२ ।।

काकोली बीजका चूर्ण एकवर्णवाली गायके दूधके साथ ऋतुकालमें पीनेसे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होवे. वटवृक्षका बांदा एकवर्णवाली बछरासमेत गायके दूधके साथ पीनेसे वन्ध्या पुत्रवती होती है ।। ४१ ।।४२ ।।

तिलरसकुडवैकं गोकरीषाग्नियोगात् तरुणवृषभमूत्रं प्रस्थ-
युक्तं विपक्वम् । ऋतुसुदिवसमध्ये सप्तवारैश्च पीतं
जनयति सुतमेतन्निश्चितं पुष्पतैव ।। ४३ ।।

तिलका तेल एक कुडव (सेरभर), सूखे गोंबरकी अग्निसे पकाय उसमें तरुण वृषभका मूत्र प्रस्थभर (चार सेर) मिलाय पचावे और तेल रहजानेपर उतार लेवे उस तेलको ऋतुके दिनोंमें सात वार अर्थात् सात दिन सेवन करनेसे वन्ध्या स्त्री अवश्य पुत्र उत्पन्न करे ।। ४३ ।।

सपिप्पलीकेशरशृङ्गवेरं क्षुद्रोषणं गव्यघृतेन पीतम् । वन्ध्यापि
पुत्रं लभते हठेन योगोत्तमोऽयं मुनिभिः प्रदिष्टः ।। ४४ ।।

पीपरि, नागकेशर, अदरख, छोटी कटैया, काली मिर्च इन सबका चूर्ण गायके घीके साथ पीवे तो वन्ध्या भी पुत्रवती होवे. यह उत्तम योग मुनियोंने कथन किया है ।। ४४ ।।

मूलं शिफां वा किल लक्ष्मणाया ऋतौ निपीय त्रिदिनं पयोभिः ।
पथ्यानुचर्यं नियमेन भुंक्ते पुत्रं प्रसूते वनिताऽचिरेण ।। ४५ ।।

लक्ष्मणाकी जड अथवा छड लेकर दूधके साथ पीसे और ऋतुकालमें तीन दिन नियमानुसार पथ्यसहित वन्ध्या स्त्री पीवे तो शीघ्र गर्भ धारण कर पुत्र उत्पन्न करे ।। ४५ ।।

तुरंगगंधाघृतवारिसिद्धं साज्यं पयः स्नानदिने च पीत्वा । घृतं
तु पेयं शयनस्य काले वन्ध्यापि पुत्रं पुरुषप्रसंगात् ।। ४६ ।।

असगन्ध, घी जलमें सिद्ध कर दूधके साथ ऋतुमती स्त्री स्नानके दिन पीवे और शयनकालमें घी पीवे तो वन्ध्या भी पुरुषप्रसंगसे पुत्रको प्राप्त होती है ।। ४६ ।।

पुष्योद्धृतं लक्ष्मणमेव चूर्णं पुंसा निपिष्टं सघृतं निपीय । क्षीरौदनं प्राश्य पतिप्रसंगाद्गर्भं विदध्यात्तरुणी न चित्रम् ।। ४७ ।।

पुष्यनक्षत्रमें लक्ष्मणाकी जड लाकर चूर्ण करे परंतु पुरुषके हाथसे चूर्ण बनवाय घीसहित औषधी पान करे और खीर खाय तो पतिप्रसंगसे युवती निःसन्देह गर्भवती होवे ।। ४७ ।।

काकवन्ध्याचिकित्सा

पूर्वं पुत्रवती भूत्वा पश्चान्नो सूयते यदि ।
काकवन्ध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा च प्रकथ्यते ।। ४८ ।।

पहले एक पुत्रवाली होकर फिर यदि पुत्र उत्पन्न नहीं होवे उसको काकवन्ध्या जानिये. उसकी चिकित्सा कही जाती है ।। ४८ ।।

विष्णुक्रान्तां समूलां च पिष्ट्वा दुग्धैस्तु माहिषैः ।
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले च भक्षयेत् ।। ४९ ।
एवं सप्तदिनं कुर्यात्पथ्यमुक्तं च पूर्ववत् ।
अश्वगन्धीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।। ५० ।।
योजयेन्महिषीक्षीरैः पलार्धं भक्षयेत्सदा ।
सप्ताहाल्लभते गर्भं काकवन्ध्या न संशयः ।। ५१ ।।

अपराजितालताको जडसहित उखाड लावे और पीसकर भैंसके दूधके साथ भैंसका नैनू मिलाय ऋतुकालमें भक्षण करे एवं सात दिन करे, पूर्व कथनानुसार पथ्यसे बर्ताव करे. अथवा असगन्धकी जड पुष्यनक्षत्र रविवारके दिन लावे और भैंसके दूधके साथ आधे पल (चार तोले) प्रमाण प्रतिदिन सेवन करे. सात दिन सेवन करनेसे काकवन्ध्या निःसन्देह गर्भ धारण करे ।। ४९--५१ ।।

मृतवत्साचिकित्सा

गर्भः संजातमात्रेण पक्षान्मासाच्च वत्सरात् ।
म्रियते द्वित्रिवर्षाद्वा यस्याः सा मृतवत्सका ।। ५२ ।।

जिस स्त्रीका गर्भ उत्पन्न होतेही अथवा एक पक्षभरमें वा एक महीनेभरमें, एक वर्ष अथवा दो तीन वर्षका होकर मरजाता है उसको मृतवत्सा कहते हैं ।। ५२ ।।

प्राङ्मुखी कृत्तिकाभे तु वन्ध्या कर्कोटकीं हरेत् । तत्कन्दं पेषयेत्तोयैः कर्षमात्रं सदा पिबेत् ।। ५३ ।।

मृतवत्सा वन्ध्या स्त्री कृत्तिका नक्षत्रमें पूर्वमुखी हो पीतपुष्पाकी जड लाकर उसको पीसकर कर्ष मात्र (दो तोले) नित्य पान करे।।५३.।।

या बीजपूरद्रुममूलमेकं क्षीरेण सिद्धं हविषाविमिश्रम् । ऋतौ निपीय स्वपतिं प्रयाति दीर्घायुषं सा तनयं प्रसूते ।। ५४ ।।

बिजौरानींबूकी जड दूधमें सिद्ध कर घी मिलाय जो स्त्री ऋतुकालमें पीकर अपने पतिके समीप जाती है वह दीर्घ आयुवाला पुत्र उत्पन्न करती है ।। ५४ ।।

द्रुममूलघृत

मंजिष्ठा मधुकं द्राक्षा त्रिफला शर्करा बला ।
मेदावयस्याकाकोलीमूलं चैवाश्वगंधजम् ।। ५५ ।।
अजमोदा हरिद्रे द्वे सुहिंगु कटुरोहिणी ।
उत्पलं कुमुदं कुष्ठं काकोल्यौ चन्दनद्वयम् ।। ५६ ।।
एतेषां कार्षिकैर्भागैर्घृतं प्रस्थं विपाचयेत् ।
शतावरीरसं क्षीरं घृताद्देयं चतुर्गुणम् ।। ५७ ।।
जीववत्सैकवर्णाया घृतमत्र तु दीयते ।
आरण्यगोमयेनैर्वह्निज्वाला प्रदीयते ।। ५८ ।।
अनुक्तं लक्ष्मणामूलं क्षिपन्त्यत्र चिकित्सकाः ।
सर्पिरेतन्नरः पीत्वा नित्यं स्त्रीषु वृषायते ।। ५९ ।।
पुत्रान् जनयते नारी मेधाढ्यान् प्रियदर्शनान्
सा चैव स्थिरगर्भा स्वाद्या नारी जनयेन्मृतम् ।। ६० ।।
स्वल्पायुषं वा जनयेद्या च कन्या प्रसूयते ।
योनिदोषे रजोदोषे गर्भस्रावे च शस्यते ।। ६१ ।।
प्रजावर्द्धनमायुष्यं सर्वग्रहनिवारणम् ।
नाम्ना द्रुमघृतं ह्येतदाश्विभ्यां परिकीर्तितम् ।। ६२ ।।

मंजीठ, यष्टीमधु, दाख, त्रिफला (हर्ड, आंवला, बहेडा), शक्कर, वरियारा, मेदा, भूमिकूष्मांड, काकोलीकी जड, असगन्ध, अजमोद, हलदी,

दारुहल्दी, शुद्ध हींग, कुटकी, नीलोत्पल, कुमुद, कूठ, काकोली, क्षीरकाकोली, लालचन्दन, श्वेतचन्दन ये सब औषध दो दो तोले प्रमाण लेवे । चार सेर घीमें मिलाकर पचावे और शतावरीका रस सोलह सेर, गायका दूध सोलह सेर मिलावे यहां एक-रंगवाली गाय कि जिसका बछरा जीता हो उसका घी इस औषधिमें देना और जंगली सूखे गोबरकी अग्निसे पचाना ठीक है. उपरोक्त औषधियोंमें नहीं कही हुई लक्ष्मणाकी जड भी डालते हैं. यह घृत यथाविधि पकाकर मनुष्य सेवन करे तो अधिक बलवान् होता है. नित्य स्त्रीमें बल प्रकाश करता है. स्त्री इस औषधिको सेवन करनेसे बुद्धिमान् और सुन्दर पुत्र उत्पन्न करती है. इससे गर्भ स्थिर होता है. जिस स्त्रीके बालक उत्पन्न होकर मर जाते हैं अथवा जिस स्त्रीके बालक थोडे कालतक जीते हैं, जो स्त्री कन्या उत्पन्न करती है तथा योनिदोष और गर्भस्राव ये सब दोष इस घृत सेवनसे शान्त होजाते हैं. सन्तानकी आयुको बढानेवाला सब दोषोंको शान्त करनेवाला यह द्रुमघृतनामक औषध अश्विनीकुमार (देवताओंके दोनों वैद्यों) ने कथन किया है ॥ ५५–६२ ॥

मिथ्या गर्भ

प्राय: ऐसा भी होजाता है कि, उदरमें गर्भ न होनेपर भी गर्भकेसे लक्षण देख पडते हैं. आलस्यके कारण अपने घरका काम न करने और अधिकतर वादी वस्तुओंके सेवनसे गर्भाशय फूल जाता है, उसके भीतर मांसका लोथडसा होजाता है तो गर्भ होनेका भ्रम रहता है और प्रतिदिन बढ़तासा जान पडता है. रज बन्द होजाता है, जिससे निश्चय हो जाता है कि, स्त्री गर्भवती है. परन्तु यदि पांचवें महीनेमें गर्भ न फडके और स्त्रीकी भूंख घटजाय, चित्तकी प्रसन्नता जाती रहे तथा नाडी दूनी फडकने लगे तो मिथ्या गर्भ जानकर रजका रोग जानना. एवं प्रातःकाल कुँएसे तुरन्त जल लाकर उसमें दो तोले शहत मिलाकर स्त्रीको पिलानेसे यदि नाभिके नीचे पीडा होने लगे तो गर्भ जानना और पीडा न होवे तो रजरोग जानना इसके निवारणार्थ चार छः दस्त करादेना और वातविकारनाशक तथा रजदोष-निवारक औषधी वैद्यकी सम्मतिसे देना उचित है. अवधि बीत जानेपर मिथ्या गर्भका गोला मांसपिंड पतन होजाता है. यही मिथ्यागर्भ है.

गर्भपात निवारण यत्न

गर्भवतीके उदरमें यदि गर्भस्थ बालक पांचवें महीनेमें न हिले डुले तो बालक पेटमें मरगया है. ऐसी दशामें गर्भपात होजाना अच्छा है, और गर्भस्थ

बालक फडकता हो और गर्भपातका लक्षण जान पडे अर्थात् गर्भवतीकी पीठमें पीडा होने लगे, मनमें आलस्य भरजाय, चित्त व्याकुल होने लगे, शरीर निर्बल होजाय, वमन आनेका भ्रम हो तो गर्भवतीको उत्तम बिछौनेपर करवटके बल लिटादेवे और बहुत शीतल जलमें वस्त्र भिगोकर पेडूसे नीचे तक रक्खे और शीतल जल आध सेर लेके उसमें फटकरी तीन तोले पीसकर मिलाय बारीक कपडा भिगोय योनिमें ऊपरतक रक्खे और गर्भवतीको उठने बैठने न दे, अतिलघु आहार देवे, शीतल जल पीनेको देवे, गरम वस्तु कोई भी न देवे तो गर्भपात नहीं होगा.

गर्भवती रोग

गर्भवतीको बहुतही सावधानसे रहना चाहिये. असावधानी होनोसे गर्भवती रोगिणी होजाती हैं. रोगिणी होजानेपर गर्भवतीकी चिकित्सा करना भी कठिन काम है. बहुतही समझकर गर्भवतीको औषधी देना चाहिये, यदि गर्भवतीको ज्वर आने लगे तो मृदु चिकित्सा करे,क्योंकि तीक्ष्ण औषधियोंके द्वारा चिकित्सा करनेसे गर्भ पतित हो जाता है, थोडीसी गुर्च बांटकर दूधमें मिलाय उसमें आधी छटांक मिश्री डालकर पिलावे. अथवा गौरीसर, लाल चन्दन, किशमिश, महुआ, मुलहठी, नेत्रवाला, खस, धनियां, मिश्री इन सबको बराबर ले काढा बनाय सात दिन पिलानेसे गर्भवतीका ज्वर शान्त हो जाता है. अथवा लाल चन्दन, खस, अनन्तमूल, पुष्करमूल, मूलहठी ये दो दो तोले लेके छः मात्रा बनावे, एक मात्रा पावभर जलमें पकाय छटांक भर रहनेसे मलकर छानले और शहत अथवा शक्कर मिलाकर पिलानेसे गर्भवतीका ज्वर शान्त हो जाता है अथवा कासनीकी जड दश माशे घोंट छानकर देवे. यदि ज्वर शीत लगकर आता हो तो चाय बनाकर उसमें दो तोले गुलकन्द डालकर पिलावे. अथवा अंडीका निर्मल तेल गरम दूधमें एक तोला डालकर पिलावे. अथवा बादामका तेल एक तोला भर गरम दूध पाव भरमें डालकर पिलावे तो गर्भवतीका ज्वर शान्त हो जाता है. यदि गर्भवतीको दस्त आने लगें तो जामुन और आमकी छालका काढा और चावलके सत्तू देवे. अथवा दही, चावल, साबूदाना अथवा आंवलेका मुरब्बा खिलावे. यदि गर्भवतीके हृदयमें शूल हो तो कास, डाभ, गोखरू, अरंड इन सबकी जडको दूधमें औटाकर छानके पिलावे तो हृदयशूल शान्त हो जाता है. यदि गर्भवतीका मूत्र रुक गया हो तो डाभ, कास, दूबकी जडको दूधमें

औटाय छानकर पिलावे. अथवा कासनीका अर्क मकोयके अर्कमें मिलाकर पिला देवे. यदि गर्भवतीको वमन होने लगे तो वटवृक्षकी जटाको जलाय उसकी भस्मको शहतमें मिलय चटावे. अथवा कपूर और कचरियाको पीसकर मूंगके बराबर गोली बनावे. वमन होनोसे पहले और पीछे एक एक गोली खिलावे तो वमन होना बन्द होजावे. यदि गर्भवतीके लेस बहता हो तो गुलनार, फटकरी, धायके फूल इनको बराबर पीसकर एक तोला प्रमाण लेके एक सेर बासी जलमें मिलाय पिचकारी लेवे. यदि गर्भवतीका कोष्ठ बद्ध होजाय तो दो तोले गुलकन्द खाकर ऊपरसे दूध पीवे. अथवा रोगन बादाम दूधके साथ लेवे. यदि गर्भवतीके हृदयमें धडकन हो तो सेवका मुरब्बा तीन तोले, अर्क षेदमुश्क सात तोले मिला कर खाय अथवा आंवलेका मुरब्बा दो तोले सोनेके वर्क लपेटकर खाय तो धडकन बन्द हो जावे. यदि गर्भवतीको खांसी आती हो तोप्यास लगनेपर अर्क गावजुवाँ देवै कच्चा जल न पिलावे. यदि गर्भवतीको मूर्च्छा हो तो मुखपर केवडा गुलाबका छींटा देवे और नौसादर चूना बराबर जलके साथ शीशीमें भरकर मिलाय सुंघावे और वस्त्र ढीले कर देवे तो मूर्च्छा शांत होवे. यदि गर्भवतीके शिरमें पीडा हो तो कपूर दो माशे, श्वेतचन्दन दो माशे, काहू दो तोले गुलाबमें घिसकर मस्तकपर लेप करे. यदि आधाशीशी हो तो दूध जलेबी खाय और हलका भोजन करे अर्थात् भूख बनी रहे. यदि गर्भवतीको बहुत थूक आती हो तो गरम वस्तु (मसाला मांस आदि) न खाय और कीकरकी छालको उबालकर उसमें थोडी टकरी पीसकर मिलावे. उसका कुल्ला करे तो बहुत थूक आना बन्द हो जायगा. यदि गर्भवतीके दांतोंमें पीडा होने लगे तो अदरखको छीलकर उसपर लवण लगाय गरम करके खावे, यदि गर्भवतीके कुच दुखने लगे तो चमेलीका तेल गरम जलमें मिलाकर कुचोंपर मलना चाहिये, यदि गर्भवतीको नींद न आती हो तो रातको शयन करते समय भैंसके दूधमें भांगके बीज पीसकर पांवके तलुओंपर लेप करे, बादामका तेल शिरपर मले, कुलफा और कहूकी भाजी खाय.

गर्भविक्रान्तचिकित्सा

दुष्ट पवनसे गर्भ टेढा होकर अनेक प्रकारसे योनिके मुख पर आकर अड जाता है, तहां कोई योनिके मुखको मस्तकसे, कोई उदरसे योनिद्वारको रोक लेता है, कोई एक हाथसे, कोई दोनों हाथोंसे कोई तिरछा होके, कोई नीचा मुख होके, कोई पसलियोंको टेढा करके योनिद्वारको रोकता है, ऐसे

आठ प्रकारसे विकृत गर्भकी गति होती है, इस विकारको दूर करनेके अर्थ नागदौनकी जड और लाल चीतेकी जडको जलमें पीसकर पिलानेसे तत्काल थोडे दिनोंका वा बहुत दिनोंका मराहुआ विकारी गर्भ पतित होजाता है.

गर्भस्राव

चार महीनेतक यदि कुछ गडबड हो जाय तो उसको गर्भस्राव कहते हैं. यदि पांचवें छठे मासमें गर्भ स्थिर हो जानेपर गडबड होजाय तो उसको गर्भपात कहते हैं. जैसे वृक्षसे कच्चा फल चोट लगनेसे विना समय गिर जाता है, उसी प्रकार चोट लगने दबने अथवा विषय भोजन करनेसे पीडित हो विना समय गर्भ गिर जाता है. अतीस, नागरमोथा, मोचरस, इन्द्रजव, सुगंध एक एक तोला लेके कुचलकर दो मात्रा बनावे. एक मात्रा पावभर जलमें औटावे, जल छटांक भर रहजाय तब उतार छानकर शीतल कर लेवे. इस काढेके पीनेसे चलित गर्भ, प्रदर और पीडाका नाश होता है.

प्रथममासमें-गर्भरक्षा

जो गर्भवतीके प्रथम मासमें गर्भशूल हो तो लालचन्दन, मुलहठी, लोध, नागकेशर, नीलकमल, सिंघाडे, कसेरू इनको बराबर लेके चूर्ण बनाय प्रातः-काल दूधके साथ पीवे परंतु पांच पांच माशेसे कम कोई औषधी न हो और गायका दूध पावभरसे कम न हो. अथवा बेलाके फूल, श्वेतचन्दन, सौंफ पांच २ माशेभर लेके चावलके धोवनके साथ शिलपर पीस उसी जलमें मिलाय छानकर दो तोले मिश्री मिलाय पावभर गायके दूधके साथ पीनेसे गर्भपीडा शान्त हो जाती है.

द्वितीयमासमें-गर्भरक्षा

जो दूसरे मासमें गर्भशूल प्रगट हो तो केशर, तगर, कपूर, बेलगिरी इनको दूधमें पीस दूधके साथ पीनेसे गर्भपीडा शान्त होती है. अथवा कसेरू, जीरा, खजूर, सिंघाडा, बेलपत्र इनको शीतल जलमें दूधके साथ पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है.

तृतीयमासमें-गर्भरक्षा

श्वेत चन्दन, तगर, पद्माख, खस ये पांच २ माशेभर लेके शीतल जलसे पीसकर बकरीके दूधके साथ तीसरे महीने पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है.

चतुर्थमासमें-गर्भरक्षा

यदि चौथे महीनेमें गर्भवतीके गर्भपीडा हो तो बडा गोखरू, सुगन्धवाला, नीला कमल, वनमूंग इनको मिश्री दूधके साथ पीनेसे गर्भपीडा शान्त होती

है. अथवा केलेके पत्ते, अनारदाना, सिंघाडा, दाख, केलेकी जड इनको शीतल जलमें पीस बकरीके दूधमें छानकर पीनेसे गर्भपीडा शान्त हो जाती है.

पञ्चममासमें-गर्भरक्षा

जो पांचवें महीनेमें गर्भशूल हो तो नीलोत्पलका कन्द, कमलगट्टा, कमलकी नाल, शक्कर इन सबको बराबर लेके दूधमें मिलाय पीवे. अथवा नागकेशर, कमलगट्टेकी गिरी, कुमुदपुष्प, कमलकी नाल इनको गाय वा बकरीके दूधमें पीसकर पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है.

षष्ठमासमें-गर्भरक्षा

यदि छठे महीनेमें गर्भशूल हो तो मुनक्का, दाख, वच, इलायची, कमल, गट्टा, नागकेशर इनको शीतलजलमें पीस छानकर पीवे. अथवा श्वेत चन्दन-कुमुदके बीज, बिजौरानींबूके बीज दूधमें पीसकर पीवे. अथवा बालछडा छोटी इलायची, नागकेशर, किशमिश, मुनक्का, कमलगट्टेकी गिरी इनको शीतलजलमें पीसकर पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है.

सप्तममासमें-गर्भरक्षा

यदि सातवें महीनेमें गर्भपीडा हो तो इन्द्रजौ, कैथका फल, शालममिश्री, धानकी खील इनको बकरीके दूधमें पीस बकरीके दूधके संग पीवे. अथवा शतावरी और कमलकी नालको दूधमें पीस बकरीके दूधके साथ पीनेसे गर्भपीडा शान्त हो जाती है

अष्टमाससे-गर्भरक्षा

जो आठवें महीनेमें गर्भपीडा हो तो गजपीपल, पद्माख, कमलगट्टेकी गिरी, कमलफूल, धनियां इनको शीतलजलमें पीस दूधमें मिलाय पीवे तो गर्भपीडा शान्त होवे.

नवममासमें-गर्भरक्षा

यदि नवम मासमे गर्भवेदना हो तो ढाकके पत्तोंको चावलके धोवनमे पीसकर पीवे. अथवा छोटी इलायची, वायविडंग, गजपीपर, सफेद जीरा बकरीके दूधमें पीस बकरीके दूधके साथ पीवे. अथवा क्षीरकाकोली दूधमें पीकर पीवे तो गर्भपीडा शान्त होती है. परंतु नवम मासमें प्रायः स्त्रियां गर्भ जनती हैं.

दशममासमें—गर्भरक्षा

जो दशवें महीनेमें गर्भवेदना हो तो कमलका फल, मिश्री, मुलहठी, कमलगट्टा, पद्माख इनको शीतलजलमें पीस दूधके साथ पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है.

एकादशमासमें—गर्भरक्षा

यदि ग्यारहवें मासमें गर्भपीडा हो तो त्रिकुटा, त्रिफला, सांठीकी जड' नागरमोथा, भांगरा इनको बकरीके दूधके साथ पीसकर पीवे. अथवा चन्दन, खस, मजीठ, सिंघाडा, कसेरू, गिलोय इनको पीसकर इसकी फंकी बकरीके दूधके साथ सेवन करनेसे गर्भजनित पीडा शांत होती है.

द्वादशमासमें—गर्भरक्षा

यदि बारहवें मासमें गर्भवेदना हो तो सिंघाडा, कमलगट्टा, नीलकमलका फूल, कमलकी दण्डी इनको जलमें पीसदूधके साथ पीनेसे गर्भ सुरक्षित रहता है. एक वर्षपर्यन्त गर्भधारणका प्रमाण नवम मासके अन्तमें और दशम मासके आदिमें तो सबही स्त्रियां गर्भ जनती हैं.

गर्भविलास तैल

विदारीकन्द, आंवला, नारके पत्ते, हर्र, बहेडा, हलदी, सिंधाडेके पत्ते, शतावरी, नीलकमल, श्वेतकमल, चमेलीके फूल ये सब दो दो तोले कूट पीस लुगदी बनाय बकरीका दूध चार सेर, काले तिलका तेल एक सेरभर इन सबको कडाहीमें डाल आंचपर रखकर पचावे, तेल सिद्ध होजानेपर छानकर बोतलमें रख छोडे. इस तेलके मर्दनसे गर्भसम्बन्धी सब विकार शान्त होजाते हैं.

गर्भस्थिति यत्न

कशेरुश्रृंगाटकजीरकानि पयोघनैरण्डशतावरी च ।
सिद्धं पयः शर्करया विमिश्रं संस्थापयेद्गर्भमुदीर्य शूलम् ।।६३।।

कसेरू, सिंघाडा, जीरा, मोथा, एरंड, शतावरी इन सबको गायके दूधमें पकाकर मिलाय सेवन करनेसे गर्भ स्थिर रहता है ।। ६३ ।।

कन्दं कौमुदकस्य माक्षिकयुतं क्षीराज्ययुक्तं पिबेत् सप्ताहं सितया सुपक्वमबला शीतीकृतं वायुना । गर्भस्रावमशोषकं सपवनं शोषं त्रिदोषं वमिं शूलं सर्वविधं निहन्ति नियमादेवं च सत्संमतम् ।। ६४ ।।

कुमदकी जड, शहत, गायका दूध, घी, बरियारा और शक्कर इन सबको भली भांति पकाकर वायुद्वारा शीतल करके सात दिन सेवन करे तो गर्भस्रावदोष, वायुदोष, सूजन, त्रिदोष, वमन, सब प्रकारकी वेदनाका नाश होता है. यह उत्तम मत है ।।६४ ।।

ह्रीबेरातिविषामुस्तैर्मोचशक्रैः श्रृतं पयः ।
दद्यांद्‌गर्भयुते चैव प्रदरे कुक्षिसंरुजि ।। ६५ ।।
पद्मोत्पलस्य मूलानि मधुशर्करया तिलाः ।
क्षरप्रमुखगर्भेषु गर्भस्थापनमुत्तमम्।। ६६ ।।

सुगन्धवाला, अतीस, मोथा, इन्द्रजव, मोचरस इनका काढा बनाय उसमें दूध मिश्री मिलाय गर्भवती स्त्री प्रदररोग और कुक्षिरोगमें सेवन करे तो सब दोष दूर होजाते हैं, पद्मोत्पलकी जड और शहत, शक्कर, काले तिल इनके सेवनसे गिरताहुआ गर्भ स्थिर होजाता है ।। ६५ ।। ६६ ।।

गोक्षीरं शर्करायुक्तं शुष्कगर्भप्रशान्तये ।
पिबेद्वा मधुकं चूर्णं गम्भारीफलचूर्णकम् ।।
समांशं गव्यदुग्धेन गर्भिणी तत्प्रशान्तये ।। ६७ ।।

गायका दूध, शक्कर मिलाय शुष्क गर्भ अर्थात् गर्भ सूख जानेपर उसको शान्त और स्थिर करनेके निमित्त पीवे अथवा मुलहठीका चूर्ण और गम्भारीके फलका चूर्ण समान भाग लेकर गायके दूधके साथ पीनेसे गर्भिणीके गर्भ-शुष्कदोषकी शांति होती है ।। ६७ ।।

सुख प्रसव

श्वेतं पुनर्नवामूलं गर्भद्वारे प्रवेशयेत् ।
क्षणात्प्रसूयते नारी गर्भे नातिप्रपीडयते ।। ६८ ।।

जिस गर्भवतीको गर्भस्थबालक उत्पन्न होते समय अधिक पीडा हो तो सुखपूर्वक बालक उत्पन्न होनेके अर्थ श्वेतपुनर्नवा (सफेद गदहपुरेना) की जड गर्भद्वारामें प्रवेश करे अर्थात् चूर्ण कर पोटली बनाय जननेन्द्रियके भीतर रक्खै तो स्त्री सुखपूर्वक प्रसव करे, गर्भमें अति पीडा नहीं होवे ।। ६८ ।।

अपामार्गस्य मूलं तु ग्राहयेच्चतुरंगुलम् ।
नार्याः प्रवेशयेद्योनौ तत्क्षणात्सा प्रसूयते ।। ६९ ।।

तोयेन लांगलीमूलं पिष्टा योनौ प्रवेशयेत् ।
नाभिं प्रलेपयेत्तेन क्षणात्संसूयते सुखम् ।। ७० ।।

चिरचिरेकी जड चार अंगुल प्रमाण लाकर नारीकी योनिमें प्रवेश करनेसे उसी समय वह बालक जनती है. तथा करिहरीकी जड जलमें पीसकर योनिमें प्रवेश करे और उसीका लेप नाभिपर करे तो शीघ्रही सुखसहित प्रसव होवे ।। ६९ ।। ७० ।।

दशमूलीभृतं तोयं घृतसैन्धवसंयुतम् ।
शूलातुरा पिबेदाशु सुखं नारी प्रसूयते ।। ७१ ।।
गुंजाफलार्कपुष्पं च तोये पूगं तथार्धकम् ।
पिबेद्वा तोयपिष्टं च सा सुखेन प्रसूयते ।। ७२ ।।

दशमूलका काढा घी सैंधा मिलाय पीनेसे स्त्रीकी पीडा दूर होती है और शीघ्र सुखसे प्रसव करती है. घूंघुची, मदारका फूल और आधी सुपारी जलके साथ पीसकर पीवे अथवा इनका चूर्ण जलके साथ पीवे तो स्त्री सुखपूर्वक बालक उत्पन्न करती है ।। ७१ ।। ७२ ।।

उत्तराभिमुखं ग्राह्यं श्वेतगुञ्जीयमूलकम् ।
कटयां बद्ध्वा विमुक्तं च गर्भं पुत्रं च तत्क्षणात् ।। ७३ ।।
वासकस्य च मूलं तु चोत्तरस्यं समुद्धरेत् ।
कटयां बद्ध्वा सप्तसूत्रैः सुखं नारी प्रसूयते ।।
सहदेव्यास्तु मूलं च कटिस्थं प्रसवेत्सुखम् ।। ७४ ।।

सफेद घूंघुचीकी जड उत्तर मुख होकर उखाड लावे और स्त्रीके कटिमें बांधे तो उसी समय पुत्र उत्पन्न करे. वासाकी जड उत्तरमुख होकर लावे और सात तागा सूत्रसे गर्भिणीके कटिमें बांधे तो स्त्री सुखसे प्रसव करे. अथवा सहदेईकी जड कटिमें बांधनेसे स्त्री सुखसे बालक उत्पन्न करती है ।। ७३ ।। ७४ ।।

अगारधूमं गृहवारिणा वा पीत्वाऽबला शीघ्रतरं प्रसूते ।
अलम्बुषामूलमथो निबद्धं योगद्वयं भूपतिरित्यवादीत् ।। ७५ ।।

जिस घरमें गर्भवती हो उस घरमें सौ रेठीका धुवां करे उस धूवांके पीनेसे शीघ्र प्रसव करती है और लाजवन्तीकी जड कटिमें बांधनेसे

भी शीघ्र प्रसव करती है. यह दोनों योग भूपति (राजा शम्भूसिंहजी) ने वर्णन किये हैं ।। ७५ ।।

गुंजातरोर्मूलमुदङ्मुखेन उत्पाटय पुष्ये च रवौ निबद्धम् ।
कटीतटे मूर्द्धनि नीलसूत्रैः शीघ्रं प्रसूतिं कुरुतेऽङ्गनायाः ।।७६।।

घुंघुचीकी जड उत्तरमुख होकर पुष्यनक्षत्र रविवारके दिन उखाडकर रख लेवे, समयपर गर्भवतीकी कटि और मस्तकपर नीलसूत्रसे बांधे तो स्त्री शीघ्र प्रसव करती है ।। ७६ ।।

समातुलुङ्गं मधुकस्य चूर्णं मध्वाज्यमिश्रं प्रमदा निपीय ।
व्यथाविहीनं प्रसवं हठेन प्राप्नोति नैवात्र विकल्पबुद्धिः ।।७७।।

मातुलुंगसहित मुलहठीका चूर्ण शहत घी मिलाय स्त्री पीवे तो पीडा न हो और निःसन्देह शीघ्र बालक जने ।। ७७ ।।

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहिनि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा ।।
अनेन मन्त्रेण जलं सुतप्तं पातुंप्रदेयं शुचिना नरेण ।
तोयाभिपानात्खलु गर्भवत्या प्रसूयते शीघ्रतरं सुखेन ।। ७८ ।।

(ॐ मन्मथ मन्मथ वाहिनि लम्बोदर मुंचमुंच स्वाहा) इस मन्त्रसे मनुष्य पवित्रतापूर्वक जल लाकर गरम करे और गर्भवतीको पिलावे, जल पीनेसे गर्भवती शीघ्र सुखसे बालक उत्पन्न करती है. यहां एक हाथसे भराहुआ जल इस मन्त्रसे अभिमंत्रित कर पिलाया जाता है और कोई कोई-

"अस्ति गोदावरीतीरे जम्भला नाम राक्षसी ।
तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत्"

इस मन्त्रसे भी जलको अभिमंत्रित करते हैं, तथा गायत्री मन्त्रसे भी अभिमंत्रित करके जल देते हैं ।। ७८ ।।

प्रसूता रोग

यदि प्रसूता स्त्रीको ज्वर आने लगे तो त्रिफलाके काढेको भली भाँति छानकर इसकी पिचकारी लगाकर गर्भाशयको शुद्ध कर देवे, क्योंकि प्रायः गर्भाशयमें मल रह जानेसे ज्वर लगता है, और खानेकी औषधि यह है कि, सोंठ १ भाग, कालीमिर्च २ भाग, पीपरि ३ भाग और हरा नीलाथोथा २ भाग लेके चूर्ण कर संभालूके पत्तोंके रसमें खरल कर चनेके समान गोली

बनावे. एक गोली प्रातः समय गायके दूधके साथ खाय तो प्रसूता ज्वर शांत हो जाता है. यदि दूध न उतरनेके कारण ज्वर हो तो किसी उपायसे दूध निकाल देना चाहिये. अथवा दूसरे बालकोंको पिला देवे और रोगनगुलमें बाबुना खरल कर स्तनोंपर लेप कर देवे अथवा बादामका तेल जलमें मिलाकर पिलावे जिससे दो तीन दस्त आकर पेट शुद्ध हो जानेसे स्तनोंका तनाव ढीला होकर ज्वर उतर जाता है. यदि प्रसूता स्त्रीके दूध कमती हो तो प्रसूताको सोंठ न खिलावे, मक्खन और दूध अधिक खिलावे, जैतूनका तेल कुचोंपर मले. अथवा पेठेके बीज, मूलीके बीज, गाजरके बीज, शलगमके बीज, तालम-खाना, पोस्त, मुंडी इनको समान भाग लेके चूर्ण करे. नौ माशे चूर्ण प्रातः समय दूधके साथ पीवे. जो प्रसूताका दूध अच्छा न हो तो दूधको शुद्ध करे. निकृष्ट दूधकी पहचान यह है कि, यदि दूधका स्वाद कषैला हो और जलमें डालनेसे ऊपर तैरे तो वातदोषवाला जानना. यदि खट्टा, कडवा वा निमकीन हो जलमें डालनेसे पीली धारियां देख पडें तो पित्तदोषवाला दूध जानना. यदि लसेदार गाढा हो और जलमें डालनेसे डूब जाय तो कफदोषवाला दूध जानना. दोषयुक्त दूध बालकको कदापि नहीं पिलावे. शुद्ध दूध पिलाना चाहिये. यदि दूध मीठा स्वाद पीलाई लिये हो और जलमें डालनेसे मिल जाय तो शुद्ध जानना. प्रसूता स्त्री पथ्यसे रहे तो दूध कभी नहीं बिगडता है. दूधको शुद्ध करनेके निमित्त बबूलका गोंद घीमें भून और घीमें भुनी मेवोंके साथ शक्करकी चासनीमें कतरी बनाकर खाना चाहिये, पथ्यसे रहे. गेहूंकी रोटी, मूंगकी दाल, पुराने चावलोंका भात, खाय. यदि दूध बहुत हो तो जीरा, मसूर, काहूके बीज, सिरकेमें पीसकर छातियोंपर लेप करनेसे दूध कम हो जाता है. यदि प्रसूताको कफयुक्त खांसी हो तो पीपरी एक तोला कपडेमें लपेट भूभलमें घंटाभर भूनकर हाथोंसे मलकर दाने निकाल ले और भुना सुहागा एक तोला, कुलिंजन एक तोला, अकरकरा छः माशे, काली मिर्च एक तोला सबको पीसकर घीग्वारके गूदेमें आठ प्रहर खरल कर मटरके बराबर गोली बनावे और सुखाकर रख छोडे. एक एक गोली एक एक प्रहर उपरान्त मुखमें रखकर चूसे. यदि खांसी सूखी होवे तो विहीदाना, खूबकलां, छिली मुलहठी, उनाव, जूफा तीन तीन माशे, बनफशा छः माशे लेके आधसेर जलमें औटावे. जब एक छटांक. जल रहजाय तब छानकर उत्तम शहत दो तोले मिलाकर पिवे. यदि प्रसूताको जुखाम हो तो विहीदाना मुलहठी तीन तीन माशे, गावजुवां, बनफशा छः छः माशे पावभर जलमें औटाय एक छटांक

रह जानेपर एक तोला मिश्री मिलाय पिलावे. यदि पेटमें पीडा हो तो पिपरमेंट रस तीन बूंद दो तोले जलमें मिलाकर पिलावे. अथवा गुलाब फूल, सौंफ, बनफशा छः छः माशेभर लेकर जलमें औटाय छानकर मिश्री मिलाय पिलावे. यदि प्रसूताके बवासीर होगई हो तो जिमीकन्द पाक बनाकर खिलावे और ऊपरसे गायका दूध पिलावे और सन्ध्यासमय भोजनोपरान्त मुनक्का बादाम खिलाकर दूध पिलावे, मस्सोंपर अफीम, कत्था, रसौंत बारीक पीसकर मले.

स्तनदृढीकरण

यदि प्रसूताके स्तन बहुत ढीले होगये हों और उनको उभारना और कठोर करना चाहे तो नागबला, खिरैंटी, वच, कूठ इन औषधियोंको समान भाग लेके जलमें पीसकर लेप करे अथवा असगन्धकी जड और लाजवन्तीको जलमें पीसकर कुचोंपर लगानेसे कठोर और उभरे हुए हो जाते हैं.

योनिसंकोचन

ढाकके फूल, गूलरका फल इनका चूर्ण तिलके तेलमें मिलाय शहद डाल योनिमें लेप करे अथवा छाँछ, आँवलेका काढा इनसे धावे तो योनि दृढ हो जाती है.

दोहा—करेलाकी मूल घिसी, त्रि प्रलेप दिन लाय ।
भग संकोचन होत है, अतिवृद्ध योनि उपाय ।।

वन्ध्याकरण विचार

सामान्य विचार वन्ध्याकरण विषयमें यह है कि, जिस कुल वा ज्ञातिमें द्वितीय पति होनेका निषेध है उस कुल व जातिमें विधवाको उचित है कि, विषयवासनासे अपने चित्तको नितान्त हटाकर किसी विशेष उद्यममें लगावे, और यदि पढी हो तो पढने लिखनेमें अपने मनको मग्न रखती हुई परमेश्वरके गुणानुवाद गाया करे. आज कलक समय दुर्घट है इसमें नाना प्रकारके धर्म-संकट आकर उपस्थित हो जाते हैं. उन संकटोंसे बचनेके लिये उपाय अवश्य करना चाहिये. सो उपाय यह है कि, पुराना गुड तीन एक टके भर लेके प्रतिदिन जलमें औटाय ऋतु कालमें पंद्रह दिन पी लेवे. परन्तु यह श्रेष्ठ मत नहीं है इससे यह श्रेष्ठ है कि, कामोत्तेजना न्यून करनेकी औषधि खाया

स्त्रियोंकी कामोत्तेजना न्यूनकरण

लाजवन्तीकी जड, फटकरी, खील डेढ डेढ माशा लेकर बकरीके दूधके साथ सेवन करनेसे सात दिनमें कामोत्तेजना न्यून होजाती है. अथवा काहूक.

साग खानेसे कामोत्तेजना न्यून होजाती है, अथवा गरमीके समयमें गुलाबके फूल बिछौनेपर बिछाकर शयन करनेसे कामोत्तेजना न्यून होजाती है, अथवा निर्मली, नागकेशर दोनों समान भाग लेके बारीककर औटाय छानकर कुछ नमक मिलाय पीनेसे दश दिनमें स्त्रीकी कामोत्तेजना न्यून होजाती है. शीतल पदार्थ सेवन करनेसे कामोत्तेजना नहीं होती है अथवा भुनी फटकरी एक माशेभर मिश्रीके साथ प्रदिदिन प्रातः समय सेवन करनेसे दो सप्ताहमें कामशक्ति न्यूज होजाती है. मैथुनकर्म पुत्रोत्पत्ति निमित्त है. वृथा मैथुन करना शास्त्रविरुद्ध, नियम विरुद्ध और सृष्टिक्रमके विरुद्ध है. इस कारण यद्यपि गर्भ न ठहरनेवाले उपाय वृथा हैं, तथापि धर्म संकट उपस्थित होनेपर उपाय यह है कि, यदि स्त्री चाहे कि, गर्भ न ठहरे तो मैथुनोपरान्त खडी होजाय जिससे वीर्य न ठहरे. और पुरुषको भी उचित है स्खलितसमय कामध्वजको बाहरको ओर खिचारक्खे. और एक साथ स्खलित न होवे. अथवा हर्र, आंवला, रसौंत इनको पीस छः माशे भर लेके ऋतुस्नानके अनन्तर शीतल जलके साथ फांकलेनेसे स्त्री गर्भवती नहीं होती है. अथवा चमेलीकी एक कली निगल लेवे. अथवा मैथुनके अनन्तर योनिमें काली मिर्च रख लेवे. तथा यदि पुरुष अपने कामध्वजको मीठे तेलसे चिकना करके प्रसंग करता है, तो गर्भ नहीं ठहरता है. ये सब उपाय लाचारीके समयके हैं. जिस स्त्रीकी कामोत्तेजना अधिक हो और गर्भ धारण आदिसे मन ग्लानियुक्त हो अथवा सामर्थ्य न हो उसके निमित्त उपरोक्त उपाय हैं.

स्त्री पुरुष दोष ज्ञान

यदि स्त्री पूर्ण रीतिसे रजस्वला होती हो और मासिक समय न टले और रजमें किसी प्रकारका विकार न हो तो जानना, कि स्त्रीमें कोई दोष नहीं है और शुद्ध रजके लक्षण पूर्व लिख चुके हैं उसमें देखकर परीक्षा कर लेवे. यदि पुरुषका वीर्य शुद्ध हो और अंडकोश और कामध्वज ये छोटे न हों तो पुरुषमें भी कोई दोष नहीं. शुद्ध वीर्य और वीर्यस्थित कीडोंकी परीक्षा पूर्व लिख चुके हैं, यदि भली-भांति स्त्री पुरुषकी परीक्षा नकर मिले और सन्तानोत्पत्ति न होती हो तो इस रीतिसे परीक्षा करना कि, कद्दूकी जडमें स्त्री पुरुष पृथक् पृथक् मूत्र करे जिसके मूत्रसे बेल सूख जाय उसीमें दोष जानना और एक प्याला जलसे भरकर उसमें पुरुष वीर्य डाले यदि वीर्य जलमें नीचे बैठजाय तो पुरुषमें दोष नहीं जानना. तथा दो कुंडा मिट्टीके लेके उनमें शुद्ध मिट्ठी डालकर उनमें गेहूँ अथवा जौके दश दश दाने बोवे और

एकमें स्त्री एकमें पुरुष आठ दिनतक मूत्र करे जिसके कुंडामें दाने ऊग आवे उसमें दोष नहीं जानना.

बाल रोग

बालकोंके रोगका जानना अति कठिन है, क्योंकि जो रोगी बोल नहीं सकता और संकेतसे भी अपने रोगको प्रकाशित नहीं कर सकता उसके रोगको कौन जान सकता है ? परंतु बुद्धिमान् जनोंने युक्तियोंको अनुमान करके लिखा है सो उनका अनुमान भी ठीक है. सो कुछ अनुमान नीचे लिखते हैं—जिस बालकके मलमें दुर्गन्ध हो, मल पतला हो, पीले रंगका न हो तो बालकके उदरमें विकार जानना. यदि बालक मल करते समय बहुत बल करता हो और मल थोडा और सूखासा निकले तो दूध पचनेमें बाधा जानना. यदि बालक सहसा उबकाने लगे तो जानना कि, उदरमें कुछ विकार है. यदि बालकका मूत्र लाल हो तो शारीरिक विकार जानना. यदि बालक अपने मूत्रस्थानको खींचता हो, स्पर्श करता हो, शयन करते समय दांत किटकिटाता हो, अपनी नासिका और गुदाको बारबार स्पर्श करता हो तो पेटमें चुनचुने जानना. इसमें कभी कभी ऊपरका होंठ भी सूज जाता है. अनारकी जडकी लाल जलमें औटाय छानकर प्रायः सायं दोनों काल थोडा थोडा पिलानेसे चुनचुने निकल जाते हैं. अथवा अंडीका निर्मल तेल तीन मासे भर लेकर गरम दूधमें मिलाकर पिलावे. यदि बालकके पेटमें विकार जान पडे तो सौंफका अर्क अथवा पोदीनाका अर्क दो दो बूंद दो दो घंटे उपरान्त पिलावे. यदि पेटमें पीडा हो तो पेटपर मन्द सेंक देवे. सेंक देनेसे लाभ न हो तो जल औटाय कुछ गरम रहनेपर बोतलमें भरे और छः माशे चूना डालकर चार प्रहर बन्द रक्खे. जब चूना नीचे बैठ जाय तब दूसरी बोतलमें उस जलको भली भांति निकाल ले वह पानी दूधमें मिलाकर पिलावे यदि बालक दूध ढालता हो तो उपरोक्त चूनाका पानी पिलावे. दूध न पचता हो तो सौंफका अर्क पिलावे. अथवा शर्बत बनफशा चटावे तो दूध पचने लगेगा. यदि बालकको दस्त आते हों तो सफेद खडिया मिट्टी एक तोला, मिश्री दो तोले, छोटी इलायचीके दाने एक माशा, लौंग एक माशा, केशर तीन माशे, जायफल तीन माशे, दालचीनी चार माशे इन सबको कूट पीस छानकर चूर्ण बनावे और एक शीशीमें बन्द कर रख छोडे एक रत्ती अथवा दो रत्तीभर चूर्ण जलमें घालकर दस्त आनेके उपरान्त बालकको पिलावे. यदि बालकको खांसी आती हो तो कतीरा एक माशा, मुलहठीका सत एक माशा, खशखश एक माशा, कीकरका गोंद एक

माशा, इनको महीन पीसकर एक तोले शरबत जूफामें मिलाय थोडा थोडा बालकको चटावे. अथवा कालाजीरी पीसकर चूर्ण बनावे और अच्छे शहतमें मिलाय थोडा थोडा बालकको चटावे. यदि बालककी आंखें दुखती हों तो खौलते जलमें फटकरी डालकर उतारले, उतारतेही फटकरी निकाल ड़ाले और उस जलसे सहते सहते आँखोंको धोवे और फटकरी, अफीम, रसौंत, पठानी लोध, मिश्री ये सब एक एक तोला परंतु अफीम आधा ही तोला लेना, इनको पानीमें पीस अग्निपर चढाय पकाकर रख छोडे दिनमें तीन वार पलकोंपर लगावे यदि इस दवाका कुछ अंश नेत्रमें भी जायगा तो कुछ हानि नहीं करेगा. कोथियां हो जानेपर सिंघाडे लोध, कटैया, वनभंटा, पुनर्नवा इनका लेप गुन गुना नेत्रोंपर लगावे. यदि बालकको मुंहा रोग हो गया हो तो सफाईका ध्यान रहे, साफ हलका भोजन दे, स्थान और वस्त्र निर्मल रहे, ऊपरी दूध न पिलावे, माताका अथवा गायका दूध पिलावे. बालकको घूटी पिलावे जिससे पेट साफ रहे तब यह दवा देना चाहिये. भुनी हुई सौंफ १ तोला, ईसबगोला एक तोला, बडी इलायची ६ माशे, सोहागेका फूला ६ माशे, पोस्तका डोरा ३ माशे इन सबको कूट पीस बारीक छानले और एक महीनेके बालकको एक रत्ती, दो महीनेके बालकको दो रत्ती इस प्रकार प्रतिमास एक रत्ती इस हिसाबसे तीन वार औषधी देना चाहिये. और दो तोले सोडा एक पाव जलमें मिलाय दिनमें आधा आधा घंटेपर फरहरी बनाय बालकके मुंहको धोवे, इस प्रकार चार छः दिनमें आराम हो जाती है. मुंहको सोडाके जलसे साफ रखना दूध पीनेसे पहले या पीछे मुंह साफ करना और बालकके भोजनका ठीक प्रबंधन करना. ये सफेद मुंहाकी मुख्य दवा है. लाल मुंहा तो दांत निकलनेके समय होता है. उसमें भुना सुहागा शहतमें मिलाय दिनमें कईवार लगावे और सौंफ ईसबगोला वाली दवा लगावे. पांच महीनेतक बालक आरोग्य रहनेपर आधी छटांक प्रतिदिन बढाता जावे रोगमुक्त होनेसे न्यूनायुधिक वृद्धि होती है. बालकके शिरकी हड्डियां बहुत नर्म होती हैं. बालकके चाँदके ऊपरका भाग शिरकी खालसे ढका रहता है, वहां हड्डी नहीं होती. तीन महीनेके उपरान्त हड्डी बनना आरंभ होता है. दो वर्षमें वह भाग हड्डीसे आच्छादित हो जाता है. यदि इस समयतक आच्छादित न हो तो कोई रोग जानकर औषधी प्रदान करना चाहिये. माताको पौष्टिक पदार्थ खिलाना चाहिये, क्योंकि ऐसी दशामें सूखा आदिका रोग हो जाना संभव है. बालकके पांचवें महीनेमें आँसू आने लगते हैं, लार थूक पैदा होती है, येही लक्षण दांत

निकलनेके होते हैं. बालकोंको दांत निकलनेके समय बडी कठिनता होती है. उस समय बालकको ज्वर, दस्त, खांसी, बमन, शिर:पीडा आदि रोग होजाते हैं, मुंहा भी आ जाता है, छोटी छोटी फुंसियां भी निकल आती हैं प्राय: स्त्रियां ऐसे समय इलाज नहीं करने देतीं कि, दांतोंके उठनेसे रोग हो गया है, इलाज न करो. इलाज न करनेका परिणाम यह होता है कि, रोग बढकर बालकका प्राणघातक हो जाता है. सैंकडों बालक इस अज्ञानतासे कालवश हो जाते हैं. इस कारण जब बालकके दांत और दाढें भलीभांति निकल चुके तब जानना कि, हमारे घर बालकका जन्म हुआ है क्योंकि जान बूझकर भी स्त्रियां असावधानी करती हैं. यदि माता कुछ मन भी करती है कि इलाज करे तो बाहरकी मूर्ख स्त्रियां आकर बाते बनाय चित्तको इलाजकी ओरसे उचाट कर देती हैं और ऐसी ऐसी मिसालेंदेती हैं किसी प्रकारकी शंकानहीं रहती, उन मूर्खाओंके सामने भोली स्त्रीका ज्ञान हर जाता है इसी अज्ञानताके कारण सैंकड़ों बालक इस भारतवर्षमें मर जाते हैं. उचित है कि,दांत निकलते समय माता पिताको पूर्णरीतिसे सावधान होजाना चाहिये. सब बातोंमें बालककी देख भाल करनी चाहिये. बालकके शरीरकी रक्षा हर प्रकारसे करनी चाहिये. दांत निकलते समय बालकको ज्वर आजाय तो हलका जुलाब देवे. कास्टैल ६ माशेतक पिलावे. और बारीक सेंधालवण पीस छान शहतमें मिलाय मसूडोंपर मले, गुलरोगनसे शिर तर रक्खे अथवा पीपरि और धवके फलका चूर्ण वा बादामका तेल अथवा आंवलेका रस वा अच्छा शहत मसूडोंपर धीरे धीरे रगडे. देतौनाकी जड, मुलहठी, धायके फूल, पीपरि इनको आंवलेके रसमें मिलाकर चटावे, अथवा मसूडोंपर मले तो दांत सुगमतासे निकल आते हैं. दांतें निकलने उपरांत रो स्वत: शांत होग जाते हैं. इस जगतमें परमात्माने सब योनियोंका प्रबन्ध उचित रीतिसे कर रक्खा है. पशुपक्षियोंकी ओर ध्यान दे तो कि शीत उष्ण देशके अनुसार उनके शरीरमें त्वचा, केश व पंख दिये हैं. उनके पालनार्थ अनेक प्रकार कन्द मूल फल फूल घास पत्ते दिये हैं, बच्चोंकी पालना करनेको उनमें मोह उत्पन्न किया है. मनुष्यको बुद्धि अधिक दी है कि, जिसके द्वारा मनुष्य अपना जीवन सुखसे पूर्ण कर सकता है. ऐसी श्रेष्ठ बुद्धि मनुष्य पाकर जो अपने जीवनको सुखमय नहीं कर सकते उनकी बुद्धि और उनके आलसपनेको धिक्कार है जो अपनी बुद्धिसे उचित अनुचित विचारकर ठीक प्रबन्ध नहीं करते और ईश्वरको व्यर्थ दोष देते हैं उनकी बुद्धिको दूरसेही नमस्कार करना चाहिये. बुद्धिके द्वारा प्रबन्ध करना

यही है कि, रोग उत्पन्न होतेही रोगके नाशका उपाय करे, स्त्रियों और बालकोंके रोगकी चिकित्सा करनेमें प्रायः स्त्रियाँ चतुर होती हैं, जो प्रसिद्ध होजाती है उस प्रसिद्ध दाईको बुलाकर चिकित्सा करावे, अथवा इस विषयमें प्रसिद्ध वैद्यको बुलाकर चिकित्सा करावे और बालककी माता जो पढी लिखी हो उनको चाहिये कि, बालपोषणके नियमोंको सीखले और (चतुर दाईसे दवायें भी सीखले) दवायें सीखनेके लिये दाईस पूछनेकी आवश्यकता नहीं, जो स्त्री चतुरा होती हैं वह देख सुनकर सब कुछ सीख सकती हैं, फिर पढी लिखी स्त्री तो उसी समय देखी सुनी बातको तुरंत सीख सकती है. फिर कभी भूल नहीं सकती है. आज कल तो स्त्रीशिक्षा, स्त्री रोगचिकित्सा, बालचिकित्सा, बालतंत्र, कुमारतंत्र आदि पुस्तकें भी प्राप्त होती हैं. हमने भी विचार किया है कि, बालरोगचिकित्सा, बालपोषण ये दो पुस्तकें अवश्य लिखे परंतु परमात्माकी कृपा चाहिये. इस देशमें बालकोंको अफीम खिलाने और गहने पहिरानेकी रीति बहुतही अनुचित है. अफीम खिलानेसे बालककी बुद्धि मन्द हो जाती है. गहने पहिरानसे अंग शिथिल हो जाते हैं. नसें दब जाती हैं. उत्तेजनशक्ति मन्द हो जाती है. "नराणां भूषणं विद्या" मनुष्योंका आभूषण विद्या है, "नारीणां भूषणं शीलम्" स्त्रियोंका आभूषण शील है. अतः बालकोंको विद्या और कन्याओंको शीलकी शिक्षा देनी चाहिये. नीति-शास्त्रके ये वचन कैसे उत्तम और उपयोगी हैं. बालकके हृदय और शिरपर चोट न लगने पावे. प्रायः जन बालकके शिरपर चपत लगादेते हैं यह महा अनुचित वर्ताव है. क्योंकि, हृदयमें जीव और शिरमें बुद्धिका निवास होता है. हृदयमें चोट लगनेसे जीव विकल होता है और शिरमें चोट लगनेसे बुद्धि मन्द हो जाती है.

महीने महीने वर्जित पदार्थ

चौ०–सावन दूध भाद्रपद मही । क्वार करेला कातिक दही ।।
अगहन धनियाँ पूसै जीर । माहै मिसरी फागुन हीर÷ ।।
चैतै गुड वैशाखे तेल । जेठै पंथ अषाढै बेल ।।
इन वस्तुनको जो परिहरै । ताको विपति कबहुँ नहिं परै ।।

शिरि ऋतुके अन्तमें जब कि नींबके पत्ते झर जाते हैं उस समय नींबकी जड लेनी चाहिये और जिस समय हरे हरे नवीन पत्ते उत्पन्न होते हैं तब पत्ते

÷ यहां हीर चना को कहते हैं.

और छालको ग्रहण करे, जब फूल लगे तब फूल लेवे, एवं पक जाय तब फल लेवे और मींगी निकाल लेवे. यह पंचांग वर्षभर काममें लाया जा सकता है. इस पंचांगमें अनेक गुण हैं, विशेष कर यह फोडा फुंसी घाव व रुधिरविकारको दूर करता है. ज्वरमें यदि इसके अर्कको पीना चाहे तो आठ गुणे, बारह गुणे, सोलह गुणे जलके साथ डेगमें भरकर इसका अर्क खींच लेवे और छानकर रख छोडे. आधी छटांक वा एक छटांक भर प्रतिदिन पीवे तो ज्वर छूट जाता है. यदि आरोग्य पुरुष भी सोलह गुणे जलके साथ औटाकर निकाला हुआ यह अर्क आधी छटांक प्रति दिन पीवे तो किसी प्रकारका रोग उसके समीप नहीं आवे, परंतु आहार विहारका नियम सर्वदा रक्खे. आहार विहार जिसका ठीक नहीं उसको कोई भी औषधी गुण नहीं करती है.

अवस्था प्रतिकार

चौ०– 'भेद अवस्था सुनिये सोय । प्रकृति वयसमें उपजै जोय ।।
प्रकृति समय पर परिहर आय । अब सब विधि हौं देऊँ बताय ।
वर्ष दशक लौं क्रीडा करै । वर्ष बीस लौं बलको धरै ।।
शीत उष्णतें श्रम नहिं मानै । अहित प्रकार कछू नहिं जानै ।

दोहा–वीस वर्षके ऊपरै, तीस वर्ष लग सोय ।
समभोजन ताको कह्यो, वैद्य ग्रन्थ बहु जोय ।। १ ।।

करै दाह रुन्धन उर करै । दिन दिन मन्दागिनि ह्वै जरै ।।
ऊपर तीस चालिसो होइ । देही रुक्ष उष्णता सोइ ।।
भोजन स्निग्ध कह्यो परवान । हरै रुक्षता कर बलवान ।।
चालिस ऊपर लग पंचासा । रूखी देह शीत परकासा ।

दोहा–वर्ष गये पञ्चास जब, अर्द्ध वृद्धता होय ।
जरा आप घेरत भई, गई तरुणता रोय ।। २ ।।

भोजन स्निग्ध कहुँ होइ । शीत तासुको व्यापति सोइ ।।
जो याते ऊपर चढि चलै । ताका आय वायु तन डालै ।।
ताको भोजन उष्ण बखान । कीन्हीं वैद्यजनन परमान ।।
श्लेष्मा प्राणरन्ध्र प्रगटाय । कफ प्रगटै मुख मारग आय ।।

दोहा–सत्तरहूके बीचमें, साठि वर्ष उपरान्त ।
होय सभी इंद्रिय शिथिल, नारीसों एकांत ।। ३ ।।

या उपरांत सौतेहू ऊन । गई बीति आयु भइ न्यून ।।
गयो तेज सबही यह देह । उपजै शीत वायु कर गेह ।।
उगलै भोजन जो कछु खाय । मैथुन इच्छा वृथा कराय ।।
ताकी औषध दई बताय । लै माला हरिके गुणगाय ।।

दोहा–ह्वै स्वतंत्र सन्तति सहित, भोजन करै विचार ।
गुण अ गुणको होत है, अब आगे विस्तार ।। ४ ।।

रहै यत्नसों अमल न खाय । अधिक न खाय भुखो न रहाय ।।
मिताहारसों सब सुख होय । अधिक अशन उपजै दुख सोय
कवियन ऐसी बुद्धि विचारी । अधिक अशनतें अधिक खुआरी
एक समय भोजन सज्ञान । दूजे समय खाय अज्ञान ।।

दोहा–पथ्य कि रीतिहि पकरिये, करिये भोजन नेम ।
अति भोजन अति दुख करै, समभोजनते क्षेम ।। ५ ।।

निज बल देखि रमहि नरनारी । घटै न तेज कहौं निरधारी ।।
होय प्रबल तिय संगति करै । सोय क्षीणबलको नहिं धरै ।।
शीतसमयमें उष्णहि खाय । उष्ण काल शीतल सुखदाय ।।
ताते भोजन करै विचार । नारायण कीन्हों निरधार ।।

दोहा–मैदाकी रोटी अहित, हितकर आटा जान ।
मन्द मन्द जल दै मलै, रोटी करै प्रमान ।। ६ ।।

यह रोटी रुचि भोजन करै । तौ नारायण बल बहु धरै ।।
वर्ष पचास आयु उपरान्त । नारी सोवत रहै इकान्त ।।
संग शयन कबहूँ नहिं कीजै । अप्रमाण बीरज नहिं दीजै ।।
करत संग जल पान न करिये । उपजै रोग बचैनहिं मरिये ।।

दोहा–ताते ऐसी विधि सदा, रहै सम्हारे लोय ।
उपजै रोग न देहमें, सुखी होय नर सोय ।। ७ ।।

सो०–वैद्यन कह्यो विचार, धावनते जो होत है ।
कीन्हो यह निरधार, बल प्रमाण मारग चलै ।। ८ ।।

जो मग चलै होय असवार । चलै पदाति चरण आधार ।।
अध्व चलै देही श्रम होय । उपजै श्रम वह करै न कोय ।।
सम भोजन ताको हित जान । अजर न जरै यहै परमान ।।
पीर है और नसन पर आइ । ताते पित्त प्रगट हुई जाइ ।।

दोहा–अतिहि वृद्ध जो होत हैं, जात अध्वते हार ।
कछुक गेहमें देखिये, अपर लोकके हार ।। ९ ।।
जो श्रम बैठे होत है, सो अब करौं बखान ।
प्रगट श्लेषम होत है, अति बैठकले जान ।। १० ।।

अप्रमाण जो बैठक करै । ता तनु अश्लेषम अनुसरै ।
जो चाहै मज्जाकी वृद्धि । ताको बैठक आवै सिद्धि ।।
स्थूल होय दुर्बल ते जान । यह बैठकका है परमान ।।
गुण अवगुण सब दियो बताय । नारायण मत यों समुझाय ।।

अतिनिद्रा करि है जो कोय । कमलवाय ताके तनु होय ।।
कछु सोवे जागरन बहु करै । ताको रोग भाय विस्तरै ।।
ताते करै बराबर दोय । ताको दुख कबहूँ नहिं होय ।।
ताको अशन तुरत पचिजाय । सुख उपजै यह कह्यो उपाय ।।
जागै रैनि सोय दिन रहै । गुण अवगुण ताके कवि कहै ।।
जागै रैनि प्रात नित सोवै । बुद्धि विक्षिप्त तासुकी होवै ।।
भक्ति हेतु जागै निशि सारी । धरै ध्यान लगावै तारी ।।
ताके रोग निकट नहिं आय । रक्षक ताके हरिहर राय ।।

परस्पर विरुद्ध द्रव्य

नमक और मीठेका विरोध है, एवं कडुए औ मीठेका विरोध है, मीठे और तीतका भी विरोध है, कसैला रस साधारण है, इसको किसीसे विरोध नहीं. कांसेके पात्रमें दश दिनतक घी रखनसे विष समान हो जाता है. घी शहत बराबर मिला हुआ विषवत् हो जाता है. शहतमें मेघजल मिल जानेसे विषवत् हो जाता है. उडदके साथ मीठा अवगुण करता है. घीके साथ उडदका पदार्थ मीठेमें बना हो तो अधिक दिनतक नहीं रखना चाहिये. शीतकालमें और भोजनोपरान्त फस्त खुलवाना विष समान होता है. हेमन्तऋतुमें रूखा (खुश्क) पदार्थ और वसन्तऋतुमें गरम वस्तुओंका सेवन अयोग्य है. शीतल प्रकृतिवालेको शहत सेवन करना चाहिये. शीतल पदार्थ अधिकतासे नहीं सेवन करना चाहिये. मांस खानेसे स्वभाव निर्दय हो जाता है. क्रोध शीघ्र प्रगट होता है. मांसके साथ हींगका खाना विषवत् जानना. मसूर और कुँदरू फलकी तरकारी खानेसे बुद्धि मन्द हो जाती है और शरीर क्षीण होने लगता है. वर्षा समय जुलाब न लेवे. अधिक खटाई खानेसे पुट्ठे शिथिल होजानेसे बैठने उठनेमें दुःख होता है. नारंगी और नारंगीका रस सेवन करनेसे हृदय निर्बल हो जाता है. अतिनिस्सन्देह रहनेसे उन्मत्तता रोग हो जाता है. अति-चिन्ता करनेसे शरीर निर्बल हो जाता है. रात्रिको जागते समय आकाशकी ओर अधिक देखनेसे अकालजरा अर्थात् नजला और खांसी तथा ग्रन्थिपीडाका आक्रमण होता है. दिनमें सोने और रात्रिमें जागनेसे नेत्रोंकी ज्योति मन्द हो जाती है. मुख मलीन हो जाता है. अतिमद्य पान करनेसे बुद्धि भ्रष्ट होजाती है. शरीर निर्बल होजाता है. शरीर दुबला हो जानेसे स्मरणशक्ति न्यून हो-जाती है, परस्त्री रमण करनेसे बुद्धि हर जाती है, लाज छूट जाती है. वीर्य क्षीण हो जाता है, गांजा भांग चरस पीने और अफीम खानेसे बुद्धि मन्द हो जाती है, अधिक सेवनसे कपालमें गरमी भर जाती है जिससे अनेक रोग

प्रगट हो जानेका भय रहता है. बवासीर, गरमी, सुजाक, दाद, खाज, कोढ, शीतला इन रोगोंसे युक्त प्राणीके अधिक संसर्गसे वही प्रगट होजानेका भय रहता है. यहाँ परोपकार दृष्टिसे वैद्यकमतानुसार कुछ सदुपदेश लिख दिया है सो स्मरण रखने योग्य है.

देह पुष्टिप्रकार

शरीरकी पुष्टि और अपुष्टिपर मनुष्यकी आरोग्यता है. शरीर पुष्ट होनेसे कोई रोग निकट नहीं आता, देह दुर्बल होनेसे निर्बलताके कारण अनेक रोग प्रकट हो जाते हैं. विशेष करके भोजनादिके संयमसे ऋतु ऋतुमें यथोचित भोजन करनेसे और युक्ताहार विहारादिकोंके करनेसे शरीरकी आरोग्यता होती है और आरोग्यता होसेने सुख प्राप्त होता है. भोजनादि बनाने व नियमपूर्वक खाने जानेका विस्तार देखना हो तो हमारे लिखे हुए ,देहारोग्यविधान, नामक पुस्तकमें देखना.

सौभाग्यपुष्टिबलशुक्रविवर्धनानि
किं सन्ति नो भुवि बहूनि रसायनानिं ।
कन्दर्पवर्धिनि परन्तु सिताज्ययुक्ताद्
दुग्धादृते न मम कोऽपि मतः प्रयोगः ।। ७९ ।।

यहां लोलिम्बराजजी अपनी प्रियासे कहते हैं कि, हे कामको बढानेवाली प्रिये ! सुन्दरता, पुष्टि, बल और वीर्य इनके बढानेवाले रसायन (जराव्याधि-नाशक(औषध पृथ्वीमें बहुत हैं परन्तु मिश्री और घी मिला हो जिसमें ऐसे दूधसे बढाकर कोई प्रयोग मेरे मतसे नहीं है ।। ७९ ।।

दोहा–मौरेठी चूरण शहद, घीव दूधसों खाय ।
तो स्त्री संगम अति करै. वीर्य पुष्ट हो जाय ।। ११ ।।
गुर्च आंवले गोखरू, सम शर्करा मिलाउ ।
घृतमें चूरण लेहकै, ऊपर दूध पियाउ ।। १२ ।।
अजर अमर अति वीर्यकै, कामदेव सम होय ।
महापुष्टि तिय मद दमन, जो यह सेवै कोय ।। १३ ।।
सकल वैद्यमत अब सुनौ, पुरुष विलासी जोय ।
आनि शतावरि मूलको, चूरण कीजै सोय ।। १४ ।।
पयके सँग सेवन करै, रमै एक शत तीय ।
हौं अबहीं यह पानकै, रतिमें देखौ प्रीय ।। १५ ।।

खोदि बिदारीकन्दको, चूरण करी सुजान ।
घीव दूध सों खाइये, कर्षं जु चारि प्रमान ॥ १६ ॥

वृद्ध पुरुषको तरुणकैं, काम चौगुनो जान ।
पुष्ट क्षीणता हरणको, औषध अमी समान ॥ १७ ॥

आरोग्यप्रकार

दोहा—मौंब बतूनी जो करैं, उठते हरैं खाय ।
अँवलासों शिरको मलैं, दिनमें सोवें नाय ॥ १८ ॥

नियमसहित भोजन करे, निशिमें जागे नाँहि ।
शक्ति सदृश कारज करैं, सुखी रहे जगमाँहि ॥ १९ ॥

आयु होय शतवर्षकी, रहे सतत बलवान ।
नियमसहित संसारमें, बरते समुझि सुजान ॥ २० ॥

सदा नियमसों जो रहैं, सो नर रहैं अरोग ।
शुद्धाहार विहार रत, ह्वै भोगैं सुख भोग ॥ २१ ॥

ऊषःकालमें जलपान

पिबति पर्युषितं जलमन्वहं तिमिरिणश्चरमे प्रहरे यदा ॥
तथा—अम्भसः प्रसृतीरष्टौ रवावनुदिते पिबेत् ।
वातपित्तकफाञ्जित्वा जीवेद्वर्षशतं सुखी ॥ ८० ॥

प्रतिदिन रात्रिके चौथे प्रहरमें जो तिमिररोगवाला मनुष्य पर्युषित जल पीता है वह रोगरहित होजाता है तथा आठ चुल्लु जल सूर्य उदयसे पहले पीनेसे वात पित्त कफको जातकर मनुष्य सुखपूर्वक सौ वर्ष जीता है ॥ ८० ॥

विगतघननिशीथे प्रातरुत्थाय नित्यं
पिबति खलु नरो यो नासिकारन्ध्रवारि ।
स भवति मतिपूर्णश्चक्षुषा तार्क्ष्यतुल्यो
वलिपलितविहीनः सर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ ८१ ॥

आकाशका अन्धकार दूर होकर प्रातःकाल होनेपर उठकर प्रतिदिन जो मनुष्य नासिका द्वारा जलपान करता है वह बुद्धिमान् पुरुष गरुडके तुल्य दूरतक देखनेवाला और जरारोग रहित हो जाता है और सब रोगोंसे छूट जाता है, कोई रोग उसके समीप नहीं आता ॥ ८१ ॥

परन्तु जिस मनुष्यने तेल पिया हो, जिसके शरीरमें घाव हो, अफरा रोग हो, पेटमें विकार हो, हिचकी आती हो, कफ वातका रोग हो तो प्रातःसमय नासिका द्वारा जल पान न करे.

संक्षिप्त ऋतुचर्या

माघ फाल्गुन मासमें शिशिर ऋतु, चैत्र वैशाखमें वसन्त ऋतु, ज्येष्ठ आषाढमें ग्रीष्म ऋतु और श्रावण भाद्रपदमें वर्षा ऋतु तथा आश्विन कार्तिकमें शरदऋतु एवं मार्गशिर पौषमें हेमंत ऋतु होती हैं. यह ऋतुव्यवहार विशेष करके श्रीभागीरथी (गंगा) जीके उत्तर देशोंमें ही है, अन्यत्र ऋतुव्यवहारकी न्यूनता है. कहीं सरदी अधिक समयतक रहती है. कहीं सदा सरदी रहती है, कहीं गरमीका अधिक प्रकोप रहता है, कहीं आठ महीनेतक वर्षा होती है.

आयुर्वेदशास्त्रके मतसे ऋतुवर्णन इस प्रकार किया है कि, भाद्रपद आश्विन मासमें वर्षा ऋतु और कार्तिक मार्गशिर मासमें शरद ऋतु, पौष माघमें हेमन्त ऋतु, तथा फाल्गुन चैत्रमें वसन्त ऋतु, वैशाख ज्येष्ठमें ग्रीष्म ऋतु एवं आषाढ श्रावणमें प्रावृट् काल (बरसात वर्षाका आरम्भकाल) शरद, वसन्त ग्रीष्म इन तीनों ऋतुओंके संधिकालमें कफका कोप होता है, ग्रीष्ममें वायुका संचय शरीरमें होता है और गरमीकी अधिकता होती है, प्रावृट् और वर्षाकी संधिमें वायुका कोप होता है और पित्तका संचय होता है. वर्षा और शरद ऋतुकी संधिमें पित्तका कोप होता है, हेमन्त और शरद ऋतुमें पाचक जठराग्नि बलवती होती है और कफका संचय होता है. गरमीकी ऋतुमें बादी और गरम पदार्थोंसे बचना चाहिये. बहुत परिश्रम दिनमें शयन और अधिक मैथुन नहीं करे. बरसातमें भी बादी और गरम पदार्थोंसे बचता रहे. मैले स्थान, मैली वस्तु, नदीका पानी, गरिष्ठ भोजन इनसे बचना चाहिये. ऊँचेपर रहना और तुरन्तका भरा हुआ कूपका जल पीना चाहिये. सरदीकी ऋतुमें पुष्ट व चिकना भोजन, तैलकी मालिश और दंड-कसरत करना चाहिये तथा दूध, घी, खांड, तुरन्तका कूपजल ये वस्तुयें हितकारी हैं. कोदौं अन्न, कुसमय भोजन, प्रातःकालमें शयन नहीं करना चाहिये.

वातप्रकृतिवाला मनुष्य

जो मनुष्य दुबला व रूखा हो, जिसके केश कडे हों, जो बहुत बोलता हो उसकी वात (वादी) प्रकृति जानना. वात प्रकृतिवालेको रूखा, शीतल और वादी भोजन हानिकारक और गरमतर पदार्थ गुणकारक जानना.

पित्तप्रकृतिवाला मनुष्य

जो मनुष्य दुबला हो, पर रूखा न हो, क्रोधी हो, पाचन शक्ति अधिक हो, केश थोडी ही अवस्थासे पकने लगें उसकी पित्त प्रकृति जानना. पित्त प्रकृतिवालेको पतला, शीतल और तर भोजन गुणकारी और कडा, चरपरा हानिकारक है.

कफप्रकृतिवाला मनुष्य

जो मनुष्य मोटा हो, गंभीर हो जिसके केश नरम हों, बात कम करता हो, बुद्धि स्थिर हो, सोता बहुत हो उस मनुष्यकी कफ प्रकृति जानना. कफ प्रकृतिवालेको पतली, चिकनी और बहुत ठंढी तथा गरिष्ठ वस्तु हानिकारक और परिश्रम, रूखा गरम और शोषण पदार्थ गुणकारक जानना, बाल्यावस्थामें पित्तकी अधिकता होती है इसीसे बालकोंकी जठराग्नि प्रबल होती है, अनेक बार किया हुआ भोजन पच जाता है और ज्यों ज्यों अवस्था बढती है त्यों त्यों कफ और वातकी वृद्धि होती जाती है युवावस्थामें कफकी अधिकता होती है इसीसे बल पराक्रम अधिक होता है, परिश्रम करनेकी शक्ति अधिक होती है, जठराग्नि स्थिर होजाती है, जिससे दो बारका कियाहुआ भोजन पच जाता है, वृद्धावस्थामें वातकी अधिकता होती है, इसीसे धातु उपधातु सब शोषित होने लगते हैं. वातदोषसे जठराग्नि विषम होवे है, जिससे दो बारका किया हुआ भोजन कभी पच जाता है, कभी नहीं पचता, भोजनके रसको वायु शोष लेता है, इस कारण शरीर क्षीण होता जाता है, शक्ति घटती जाती है.

वसन्तऋतु वर्णन

कवित्त–आई है बनबेलिन नबेलिनमें, बहुधा चमेलिनमें भौंर भीर छाई है । छपाकर मरीचिका दरीचिनमें तिनहूँ, लखतकै अतन ताप ताई है छाई है ।। ताई है सफल सुधि बुधि बलवंत मेरी, जबते पियारे प्राणप्यारे बिसराई है । राई है न नेक कहूँ नवमें कलेवरमें, कहियो हो कन्तसों वसन्त ऋतु आई है ।। २२ ।।

दोहा०–अलि गुंजत कूजत विहँग, प्रफुलित कुसुम अनन्त ।
शीतल मन्द सुगन्ध बह, पौन बखानि वसन्त ।। २३ ।।

वसन्त ऋतुमें कफके जीतनेका प्रयत्न अवश्य करे क्योंकि शिशिर ऋतुमें जो कफ संचित होता है वह सूर्यकी किरणोंसे सतप्त होकर जलके समान पतला होनेसे जठराग्निको मन्द कर देता है इस कारण अनेक रोगोंके उत्पन्न होनेका

भय रहता है, कफको जीतनेके लिये तीक्ष्ण वमन, नस्य, विरेचनादि करके कफको लघु और रूक्ष करके तथा व्यायाम उद्वर्तन और कुश्ती लडने आदि करके कफको जीते. तथा सोंठका औटा हुआ जल वा खैरसार चन्दन आदि सारको मिलाय औटाया हुआ जल वा शहत मिला जल अथवा नागरमोथा मिलाय औटाये हुए जलको पीवे. वसन्त ऋतुमें विहार करे, इस ऋतुमें अदरख, सोंठ, मूली, पोईका शाक, पेठा, हींग, मेथी, तूंबा, पका खीरा, बथुआ, कचनारकी कली, चौलाई, परवल, जिमीकन्द, मरसेका साग, करेला घिया-तुरई आदि पदार्थ हितकारी हैं. खान पानमें शीघ्र पचने योग्य सब पदार्थ सब ऋतुओंमें हितकारी हैं, गरिष्ठ और बहुत वादी पदार्थ सर्वदा विचारकर खाना चाहिये. सरदीकी ऋतुमें गरम पदार्थ और गरमीकी ऋतुमें शीतल पदार्थ सेवन करे. बलावल और प्रकृतिके अनुसार खान पान सदा हितकारक जानना. वसन्तऋतुमें नारीका साग, पोईका साग, गलका-तुरई, उडद, दही, सिंघाडे, ईख, खिचडी, दिवाशयन, समा, पसईके चावल, होला, ये सब अपथ्य हैं.

ग्रीष्मऋतु वर्णन

कवित्त; तपत प्रचंड मार्तंड महिमंडलमें ग्रीषमकी तीक्षण तपन और पार है। कहै नारायण फाँच कीचसो बहन लाग्यो भयो नदनदी नीर अदहनकी धार है ।। झपट चहूँहनते लपट लपेटी लूह शेषकेसी फूँक पौन झकनकी झार है । तवासी अटारी तपी आवाँसी अवनि महा दावासे महल औ पजाबासे पहार है ।। २४ ।।

दोहा–धूप चटक करि चेटकनि, फांसो पवन चलाय ।
मारत दुपहर बीचमें, तकि ग्रीषम ठग आय ।। २५ ।।
नाहि न यह पावक प्रबल, लुवें चलें चहुं पास ।
मानहु विरह वसन्तकी, ग्रीषम लेत उसास ।। २६ ।।

ग्रीष्मऋतुमे सूर्य तीक्ष्ण किरणोंवाला होकर संसारकी चिकनाईको हर लेता है इस कारण प्रतिदिन कफ क्षीण होता है और वातकी वृद्धि होती है. इसीसे ग्रीष्मऋतुमें नमकीन, चरपरा और खट्टारस, दंडकसरत और सूर्यकी धूप वर्जित है. इस ऋतुमें मधुर, हलके, चिकने, शीतल और पतले पदार्थ सेवन करे और सरोवर, बावली, नदी, वन इनमें विहार करे. फूलमाला धारण करे. चन्दन लेपन, शीतल घर, मंथ, गुड मिला हर्रका चूर्ण सेवन करे तथा शालीचावल, साँठी चावल, जौ, ज्वार, मूंग, नीवार, गेहूं, मटर, अरहर,

कोदों, चौरा, मटरकी दाल, मसूर, कच्चा तरबूज, कच्ची ककडी, कच्चा खीरा, पेठा, करेला, बथुआ, चौलाई, चूका, घीया, परवल, शक्करमिला गाढा दही, मिश्री मिला मठा, गलका तुरई मरसेका साग, पोईका साग, सिंघाडे, कसेरू ये पदार्थ हितकारी हैं और बहुत नमकीन, खट्टा, गरम, कडुआ पदार्थ न खाय. मैथुन, रातमें जागना, आग तापना, धूपमें चलना, बैंगन, पका तरबूज, सहँजना, लहसन, उडद, चौरा, कांगनी, खिचडी, सरसों, राई, उपवास, मार्ग चलना, परिश्रम, दही ये सब ग्रीष्मऋतुमें अहित हैं. गरमीकी ऋतु आरोग्यताके लिये सामान्य हैं. प्यास बहुत लगती है. इस ऋतुमें दो बार स्नान करना, बारीक वस्त्र धारण करना, शीतल पदार्थ सेवन करना, धूपसे बचाव रखना उचित है, इसमें शीतल जलकी अधिक आवश्यकता है, जो लोग बर्फ डालकर जलको शीतल करते हैं उनकी प्यास उस समय तो बुझ जाती है परन्तु शीतल जलमें जो गुण हैं वे गुण उस बर्फवाले जलमें नहीं हो सकते इस कारण शीतल जलके उपाय लिखते हैं. कोरे सुराहा झज्झर वा घडेको दिनमें धूपमे रक्खे यासमय उसमें जल भरकर ऊंचे हवादार स्थानमें रख देवे. प्रातःकाल किसी छायावाले शीतल स्थानमें रक्खे तो जल शीतल रहेगा. अथवा कोरे घडेमें जल भरकर दिनमें धूपमें रक्खे रातको ऊंचे हवादार स्थानमें रक्खे तो जल ठंढा रहता है. अथवा जलको औटाय मिट्टीके कोरे पात्रमें जहां वायुका झकोरा आता हो वहां ऊंचेपररखनसे जलशीतल और पाचक हो जाता है. अथवा पृथ्वीमें एक गड्ढा खोदकर उसमें मिट्टीका कोरा मटका गाड देवे और उसके चारों ओर मिट्टी बनाय जो बोवे और जल सींचता रहे तो उस मटकेका पानी ठंढा रहता है. बीस दिन बाद मटकेको बदले, जौभी फिर बोवे, मिट्टी भी नवीन लावे. अथवा बर्फके बीच जलकी सुराहीको शीतल कर उसका जल पीवे. अथवा नौसादर ५ भाग, शोरा ५ भाग, जल १६ भाग सुराही वा मिट्टीकी नांदमें भरे उपरसे मोटा कपडा वा टाट लपेट देवे तो जल बहुत शीतल हो जाता है.

वर्षाऋतु वर्णन

कवित्त–वाटिका विहंगनपै वारिजात रंगनपै वायुवेग गगनपै वसुधा बगार है । बांकी वेणुताननपै बंगले बिताननपै वेष औध पाननपै बीथिन बजार है ।। वृन्दावन बेलिनपै वनिता नवेलिनपै व्रजचन्द केलिनपै वंशीबट मार है । बारिके कनाकनपै बद्दलन बांकनपै विज्जुली बलाकनपै वर्षा बहार है ।। २७ ।।

सासु तो न्यारी ननन्द सासुरे सिधारी यह रैन अँधियारी कारी सूझत न कर है । प्रीतमको गौन नारायण न सुहाय आली पवन बहायो अरु लायो मेघ झर है । संग ना सहेली गृह माझ हौं अकेली अरु बैस है नवेली तन लाग्यो मैन शर है । आई अधरात मेरो जियरा डेरात जागु जागु रे बटोही यहां चोरनको डर है ।। २८ ।।

दोहा-चमचमात चपला चहूं, तापर घन घहरान ।
झंझा झूकन पवनते, सूखन लागत प्रान ।। २९ ।।

वर्षाऋतुमें सुन्दर सजे स्थानमें रहना, छानकर निर्मल जल पीना, तिलका तेल, चिकना, खट्टा पदार्थ सेवन करना और सेंधा मिला हर्रका चूर्ण, सुगंधित स्थानमें शयन, हलदी व केशरकी मालिश करनी चाहिये तथा गेहूं, सांठी चावल, लाल चावल, कुलथी, उडद, राई, सरसों, अलसी, पका पेठा, खीरा, तरबूज, गलकातुरई, बैंगन, बथुआ, मरसेका साग, चूका, परवल, सेंधामिला मट्ठा, शक्कर, सहिंजना ये पदार्थ हितकारी हैं, एवं दही, ईख, खिचडी, घी पडी हुई खीर मालपुआ आदि पदार्थ भी हितकारी हैं. तथा वर्षाऋतुमें कच्ची काकडी, पालक, कसेरू, सिंघाडे, भैंसका, दूध, आलू, राजमाष, चना, मटर, मूंग, अरहर, मसूर ये सब अधिक सेवन न करे, और बार बार भोजन, ओसमें शयन, अधिक परिश्रम, जलमें क्रीडा, वेगका रोकना, कडुए, कसैले, रूखे, सूखे साग इन सबको त्याग देवे.

शरद्ऋतु वर्णन

कवित्त-चन्द्रमा प्रकाशनमें चन्द्रमुखी हासनमें अवनि अकाशनमें कासनमें छाई है । सीताराम तालनमें इन्दी बनमालनमें चंचरीक जालनमें अधिक अमाई है । मैत्रकाकी डारिनमें मालती कियारिनमें फूली फुलवारिनमें सौगुनी सुहाई है । कामकेलि खेतीनपें वालुका समेतिनमें सुरसुता रेतिनमें शरद समाई है ।। ३० ।।

दोहा-चन्द्रवदन दरशाइ अरु, खञ्जन चखनि चलाइ ।
सकल धराको छलत मन, शरद अप्सरा आइ ।। ३१ ।।

शरद्ऋतुमें पित्त करके गाढा रुधिर सूर्यकी किरणों द्वारा बढता है, तब रुधिर निकलवाना चाहिये. इस ऋतुमें सरोवरका जल, लालचावल, मूंग गायका घी, ईखविकार (गुड आदि), मिर्च मिले चटपटे पदार्थ, मिश्री मिला हर्रका चूर्ण, रातमें चन्द्रमाकी चांदनी, वृक्षोंकी छाया, चन्दनलेपन, मिश्री मिला औटा दूध, शक्कर मिला आंवलेका चूर्ण, धनियां, गोभी, कमलगट्टा,

अखीडे, मुनक्का, घी, नारियल, बरीका दूध, बथुआ, नारीका साग, फ़ेलेकी गहर, अनार, कसेरू, चूकेकी साग ये सब हितकारी हैं, इस ऋतुमें जुलाब लेना हितकारी है, शरदऋतुकी गरमी पित्तको प्रगट करनेवाली होती है, जिससे बल घट जाता है, इस कारण पित्तकारक सब पदार्थ त्याग:देवे. पीपरि, मिर्च, भांग, सौंफ, लहसन, हींग, मठा, खिचडी, दही, सरसोंका तेल, कढी, खट्टा, चरपरा, कडुवा, धूपमें घूमना, व्यायाम, दिनमें शयन, उडदके पदार्थ, रात्रिमें जागरण ये सब त्याग देवे.

हेमन्तऋतु वर्णन

कवित्त–आयो है हिमन्त जोर जोडके प्रसंगनसों रेशमके अंगनमें अंगन दुराये देत । कहत नारायण त्यों हमामहू न काम सर धाम धाम आला पौन पालाको उसाये देत ।। तू लपेट पीठिन अँगीठिनमें दीठी लगी तरुणी बिहीन तन कंप सरसाये देत । दो गुनो कहो तो चित चौगुनो चुरात हेरि नौ गुनौ न सौ गुनो समीर शीत नाये देत ।। ३२ ।।

दोहा–दिन निशि रवि शशि लहत है, हेम शीतके योग ।
भरम चकोरन भोग है, कोकन भरम वियोग ।। ३३ ।।

हेमन्तऋतुमें शीत और वायुकरके बाहर आनेवाली गरमी रुककर देहमेंके छिद्रोंमें जाकर अपने स्थानमें पीडित हो प्रचण्ड होती है. इस कारण ऋतुमें वाताग्निहारक विधि कही है, जिससे वादी दूर होकर प्रचंड अग्नि शांत होवे. तथा हेमन्त ऋतुमें शीतके प्रभावसे संरोधको प्राप्त होकर जठराग्नि प्रबल होती है. यदि उस समय भोजनरूपी ईंधन न मिले तो वह वायु प्रेरित रस रक्त आदिको पचावे है. अतः स्वादु, खट्टे, लवणसे बनेहुए पदार्थ सेवन कर, रात्रि बडी होनेके कारण प्रातःकाल क्षुधा लगती है तब मलमूत्रोत्सर्गादिसे निवृत्त हो प्रथम भोजन करना चाहिये. भोजन न करनेसे जठराग्नी मन्द होजाती है, जैसे विना ईन्धनके अग्नि बुझ जाती है. तथा इस ऋतुमें आँवला, हर्र, गुड मिली हर्र, बहेडेकी मींगी. सोंठ, कैथ, कमलगट्ठा, सेंधालवण, दही, मठा, जिमीकन्द, रेशमी कपडोंका बिछौना, सुगंधित पदार्थ, बथुआ, मूंग, तेल, शक्कर मिला बकरीका दूध, अग्निसे तापना, मूली, व्यायाम, लाल चावलोंका भात, सूर्यकी धूप, परिश्रम, तैलमर्दन ये सब हितकारी हैं. और इस हेमन्तऋतुमें केलेकी फली, कसेरू, सिंघाडे, आलू, भैंसका दूध, उडद, सोंठ, दिवाशयन, लंघन, शीतल जलसे स्नान, हवा खाना, एक बार भोजन, सत्तू, कडुए, चरपरे, रूखे पदार्थ अहितकारी हैं ।

शिशिरऋतु वर्णन

कवित्त–असनमें आसनमें अमल अवासनमें सांसनमें कछुक हुताशनमें आइगो। फूलनमें तूलनमें मंजु मखतूलनमें दोहरे दुकूलनमें कूलन अघाइगो ।। सेजनमें तीखे सुरतेजन उताजनमें मदद मजेजन करेजन कँपाइगो। नीरनमें त्योंही जगमोहन समीरनमें जहां जहां देखो तहां शिशिर समाइगो ।। ३४ ।।

इस शिशिर ऋतुमें हितकारी और अहितकारी पदार्थ हेमन्त ऋतुमें कहे अनुसार जानना. विशेषता यह कि, इस ऋतुमें पीपरि मिला हर्रका चूर्ण, कुछ कुछ गरम भोजन, अदरख पानीका अचार, सैंधव घी मिला पदार्थ और खिचडी इनका सेवन हितकारी है, नये चावलोंकी खिचडीसे दूना जल और पुराने चावलोंकी खिचडी हो तो ढाई गुना जल मिलाकर चढावे. खिचडीमें हींग, अदरख, मसाला और नवीन घी डाले, कच्ची मूली भी इसके साथ खाई जाती है. " इस खिचडीके चारी यार। घी पापड और दही अचार ।। भोरहि भली मूरि सजीवन, दुपहर मूली मूरी। सांझ खाय कच्ची मूली त्यहि भोरहि आवे जूरी ।।" इस कारण दिनमें कच्ची मूली खाय संध्या समय और रातको न खाय. जो खिचडी चनेकी दाल, चावल, घी, मिश्री, मेवा, दूध मिलाकर बनती है सोभी स्वादिष्ठ होती है. वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा आदि ऋतुओंके आदि अन्तके सात सात दिन ऋतुसन्धिके जानना. इस ऋतुसन्धिमें पहले ऋतुकी विधिका त्याग करे और आगेकी ऋतुमें जो विधि कही है उस विधिका सेवन क्रमशः करे, क्योंकि सहसा विधि छोडनेसे असात्म्यज रोग उत्पन्न हो जाते हैं वसन्तऋतुमें कफको, शरदऋतुमें पित्तको और वर्षाऋतुमें वादीको वमन विरेचनादि द्वारा शमन करना चाहिये.

वृक्ष विज्ञान

यह भी एक विद्या है कि, जिससे वृक्षसम्बन्धी अनेक बातें जानी जा सकती हैं, अपनी अपनी विद्यामें सबही निपुण होते हैं. जिसको जो विद्या आती है वह दूसरेको बतलाना नहीं चाहता. परन्तु सज्जन पुरुष जिस विद्याको जान लेते हैं वह अपने उपकारी स्वभावसे दूसरोंके निमित्त प्रगट कर देते हैं. हमारा यह भारतवर्ष सब विद्याओंका भंडार था, परंतु यवनराज्यमें अनेक पक्षपाती बादशाहोंने हमारी अनेक पवित्र पुस्तकोंको जलवा दिया, लाखों पुस्तकें जलाकर हम्माम गरम कराये गये, इसीसे अनेक पुस्तकोंका खोज करनेपर भी पता नहीं चलता, सैकडों पुस्तके खंडित होगई, अब वर्तमान सुराज्यम अनेक गुप्त पुस्तकें शनैः शनैः प्रकाशित हो रही हैं. और सैकडों नवीन पुस्तकें

बनगई हैं और बनती जाती हैं, जिनसे बडा उपकार होरहा है. और होगा. आगे हम वृक्षसम्बन्धी दो चार बातें. लिखते हैं. वृक्षोंके उत्पन्न होने और फूलने फलनेमें उत्तम बीज, उत्तम देश, उत्तम पृथ्वी और अनुकूल ऋतु और जल तथा पवनकी आवश्यकता होती है. बहुतेरे वृक्ष ऐसे हैं, जो सर्वत्र नहीं उगते. पांच प्रकारकी भूमियोंमसे कौन भूमि किस वृक्षके लिये उत्तम है यह जानना कठिन है. जो भूमि कंकरीली अनेक बिलोंवाली हो जिसका स्वाद कडुआ हो ऐसी भूमिपर वृक्ष नहीं उगते, यदि उगते भी हैं तो वे विकारी होते हैं. भलीभांति बढते और फूलते फलते नहीं हैं. काली, पीली, लाल और सफेद भूमिके गुण पृथक् पृथक् हैं और स्वाद भी पृथक् पृथक् हैं. सफेद भूमि जलके किनारे अच्छी होती है, ऐसी भूमिमें आम, जामन, जंभीरी, कटहल, ताड, बडहर, कदम, महुआ, खजूर, वट, केला, केतकी, सुपारी, नारियल, बांस आदि वृक्ष भलीभांति उत्पन्न होकर फूलते फलते हैं, जहां समीप जल नहीं है ऐसी नीरस भूमिमें बेर, बेल, फारलसा, कद्दू, नीम, छौंकर, अशोकये वृक्ष भली भांति उत्पन्न होकर फूलते फलते हैं. तथा साधारण भूमिमें अनार, नींब, चंपा आदि वृक्ष भली भांति उत्पन्न होकर फूलते फलते हैं. ऊषर भूमिमें बीज नहीं उगते परंतु यदि वहां भूमिको अच्छे प्रकारसे नरम कर बहुतसा गोबर आदि पवित्र खाद डालकर गायके गोबर और दूधमें बीजको भिगोकर बोवे तो उस बीजसे शीघ्र अंकुर उत्पन्न होता है. वृक्षविज्ञान ग्रन्थमें कलम लगाना, दव्वा लगाना, छल्ला लगाना, पत्ता लगाना, पैबंद लगाना, चश्मा बांधना आदि अनेक उपायोंसे वृक्ष तैयार करना लिखा है. फिर उन वृक्षोंके भली भांति फूलने फलनेके निमित्त सींचनेके मसाले लिखे हैं सो अतिसंक्षेप रीतिसे हम यहां लिखते. हैं.

कलम लगाना

भूमिमें वृक्षकी एक डालीको काटकर गाड देवे. वह जड पकडने लग जाय इसीको कलम लगाना कहते हैं, अनेक वृक्षोंकी कलम सब ऋतुओंमें लग जाती है और अनेकोंकी केवल बरसातमेंही लगती है. कोई वृक्ष ऐसे हैं कि, जिनकी कलम पक्की अच्छी होती हैं और कोई वृक्ष ऐसे हैं जिनकी कच्ची कलम अच्छी होती है. वृक्षके जडकी कलम अधिक स्थान घेरती है, उसमें कुछ विलंबसे फूल अधिक लगते हैं और वृक्षके सिरेकी कलम जलदी फूलती है परंतु उसका फूल छोटा होता है.

दब्बा लगाना

लीची और जुही आदि वृक्षोंका दब्बा फरवरी और जूनमें लगाया जाता है. सो इस प्रकार कि, वृक्षकी डालीको झुका कर और उसको बीचसे कुछ चीरकर उसके मुखमें लकडी लगाकर भूमिमें गाड देवे, एक भाग उसका बाहरकी ओर रहने दे और जड वृक्षमें लगी रहे. चार महीनेमें जब जड पकडले तब उसको जडपरसे काट देवे तो ठीक दब्बा लग जाता है.

छल्ला लगाना

वृक्षकी अच्छी डालीको चारों ओरसे छीलकर दो डबल बराबर छालका छल्ला उतार ले और वहांपर अच्छी चिकना मिट्टी बहुतसी लपेट कर उसपर पत्ते लगाय सनसे बांध देवे फिर दूसरे वृक्षपर एक जलभरी हांडी लटकाकर उसकी पेंदीमें छेद कर उसमें रस्सी लगाय दूसरा सिरा वहां बांध देवे जिससे उसपर धीरे धीरे जल पहुंचता रहे, चार महीने उपरांत छल्लेके स्थानपर जड फूटने लगेगी तब उसे नीचेसे काटकर वृक्षसे अलग करले और जहां इच्छा हो वहां लगादे यह क्रिया बरसातमें करे ।

पत्ता लगाना

वृक्षकी डालीमेंसे डंडी सहित पत्तेको इस प्रकार कतरले कि, डालीको हानि न पहुंचे और कुछ छाल भी आजावे उसको गाड देवे. जब वह सवा महीनेमें मिट्टी पकडले तो जानलेना कि, पत्ता लग गया ।

पैमद लगाना

आम, नारंगी, दाख आदिका पैमद माघ मासमें और अनार, गुलाब, लुकाट, आडू, बेर आदिका पैमद चैत्रमें लगाना चाहिये, एक छोटे वृक्षके पौदेको बडे वृक्षके नीचे लेजाकर उसकी डाली झुकाय उसको छील उस पौदेको बीचमें कुछ खराशकर दोनोंको मिलाके सनसे बांधदे, पाँच मास उपरान्त जब दोनों मिल जावे तब पौदेका शिर काटदे और डालीको काटकर वृक्षसे अलग करले. परन्तु एकही जातिके वृक्षोंसे पैमद लगता है. अन्य-जातिवाले वृक्षसे भी पैमद लग जाना संभव है परन्तु फूलने फलनेमें सन्देह है. पैमद लगाकर उसके भोरसेही जल सींचना चाहिये, जिससे नर्मबना रहे, धूपसे भी बचाना उचित है.

नकली पैमद

दो पौदा उनका सिरा मिलाय बीचमें पैमद बांध देवे. जब ठीक होजाय

तब एकको जडकी ओरसे दूसरेको सिरेकी ओरसे काट देवे तो असली पैमद जान पडेगा. आम और नारंगीका जिगर एक है. नारंगीका पैमद आमपर चढावे तौ एकही वृक्षपर जुदे जुदे फल लगते हैं. तीन प्रकारके बेर होते हैं. उनका पैमद चढावे, वृक्षपर पैमद चढानेसे साधारण फलता है. पैमद पर पैमद अधिक फलता है आडचीन, सपतालक, बादाम, आडू ये चार वृक्ष एक जाति हैं और शहतूत, ऊमरु, अंजीर, वट एक जातिके हैं, पैमद चढाकर चार प्रकारके फल हो सकते हैं.

चश्मा बांधना

जाडे वा वर्षा ऋतुमें गुलाब, नारंगी, नींबू आदि वृक्षोंके चश्मा बांधनेकी रीति यह है कि, वृक्षकी शाखामेंसे आंखे आंखे निकालले, आंखके साथ इंच प्रमाण छालभी नीचेकी ओर आवे इस छालको भी पौदेकी छालके भीतर चीरकर सिलादे. मिलानेकी रीति यह है कि आंखको पौदेकी शाखमें उसका छिलका चीरकर मिलावे और ऊपरसे बांध देवे, पांचवें महीनेमें पत्ते फूटते हैं.

वृक्षों के मसाले

जलमें उडकी पीठीको घोलकर सींचनेसे आंवला बढता है. सुअरके मांससे सींचनेपर बडहर और नारंगीका वृक्ष बहुत बढता है. सरसोंकी खली जलमें घोलकर सींचनेसे खजूर और कटहर बहुत फलता है, दूध और जल सींचनेसे नारियल अधिक बढता है और बहुत मीठा होजाता है. आमको पहिले दश दिन घीसे सींचे फिर पंच पल्लवको दूधमें औटाय शीतल कर उससे सींचे तो आमवृक्षमें फल अधिक और सुगन्धित व मधुर उत्पन्न होते हैं. मछलीके मांस और मुरगेकी बीठको जलमें घोलकर सींचनेसे दाख बहुत फलता है. घी और जलसे सींचनेपर अनार बहुत फूलता फलता है और दाना रसीला होता है. मुलहठी, शहत, कस्तूरी और तिलोंको जलमें मिलाकर सींचनेसे बेर बहुत फलता है और सुगन्धित व मधुर फल होते हैं, सुअरका मांस बकरीके मूत्रमें मिलाकर सींचनेसे बिजौरानींबू बहुत फलता है. फल भी बडा होजाता है. कदम्ब, नागकेशर और प्रियंगु वृक्ष तेल दही और कांजीमें मेथी मिलाय खारी जलसे सींचनेपर उनमें बहुत सुगन्धित फूल प्रगट होते हैं. खस, मोथा, तगरका चूर्ण कर सब वृक्षाकी जडमें डाले और एक महीनाभर सींचे तो वृक्ष बहुत फूलते फलते हैं.

एक वृक्षपर अनेक प्रकारके फूल

मोगरा, मोतिया, पथरिया, धूलिया, रायबेल, इकहरी, मदनबान ये वृक्ष एक जातिके हैं, इनमें से एकही वृक्षपर सबका पैमद लगानेसे जब वृक्ष फूलते हैं तब सबके फूल पृथक् पृथक् शोभायमान लगते हैं जिस वृक्षके फूलका रंग बदलना हो तो उसीरंगके पानीसे सींचे और गन्धक धुआं देवे.

फूलोंका ताजा करना

उबलते हुए जलमें कुम्हलाये हुए फूलकी डंडीको डुबोदे. एक भाग जलमें रहे, दूसरा भाग बाहर रहे. जल शीतल होनेपर निकालले, अथवा गिलासमें कुछ कोयला रख उसमें जल डालकर फूलोंको रक्खे.

एकही वृक्षपर अनेक फल

संतरा, महतावी, चकोतरा, सदाफल, नारंगी, कागजी नींबू, तुरंज, कवला, कमलवेत, नींबू बिजौरा ये वृक्ष एक जातिके हैं. इनमेंसे एक वृक्षपर सबका पैमद चढाया जा सकता है. सबके फल पृथक् पृथक् लगकर शोभायमान होसकते हैं.

कपास वृक्षमें हरी लाल नीली कपास

त्रिफला, नील, हलदी, सेमरकी छाल इनको कूट मदिरामें मिलाय औटाकर सींचे तो हरी कपास उपजेगी. जौ, तिल, हल्दी, ढाकको जलमें पीसकर सींचनेसे कपासका रंग लाल होवे, तथा जौ, तिल, मैनशिल, दारु-हल्दी, मजीठ, बिछौनिया, मदारकी जड, जयंतीके पत्ते गायके दूधमें पीसकर सींचे तो कपासका रंग नीला होवे.

वृक्षदुर्गन्ध निवारण

गोमूत्र, सरसों, विडंग, घी, तिल इनको पीसकर चंदन मिलालेवे फिर औटाकर लेप करे, घीकी धूनी देवे तो वृक्षकी दुर्गन्धि दूर होवे.

असमय फूलना फलना

गौका गोवर, तिल, खल, वायविडंग, सरसों इनको गांडेके रसमें पीसकर सींचनेसे असमय फल फूल आसकते हैं. वा बिलाई कन्दको गांडेके रसमें पीसकर सीचनेसे असमय फल फूल लगते हैं.

वृक्ष शीघ्र उगे और फले

जौकी सींक, अंकोलका तेल, बाल लेवे जौकी सींक पहले पीस कर

तेल बाल मिलावे फिर बीजोंको इसमें डुबोकर धोवे और निर्मल जलसे सींचे तो वृक्ष जलदी उगकर बढने लगेगा.

राल लपेटकर सूखे बीजोंको बोवे, तो शीघ्र फल आने लगते हैं.

अधिक फल आना

अंकोलके तेलमें बीजको बोरकर बोवे, मैनफलके पानीसे सींचे तो आम आदि वृक्षोंमें फल अधिक लगे.

फल मीठा करना

शहतमे बीजको भिगोकर बोवे और राव व गुडके शर्बतसे सींचे अथवा गुड, जौ, शहत, विडंगको पीस दूधमें मिलाय सींचनेसे वृक्षका खट्टा फल भी मीठा हो जाता है.

सूखा वृक्ष हरा करना

केलाका पत्ता, सरसों, मछली, सुअरकी बीठ इनका चूरन धूपमें सुखाले और सूखे वृक्षपर लगावे तो हरा हो जाना सम्भव है और जिस वृक्षकी बिजली मार गई हो उसके चारों ओर भूमि खोद डाले फिर सरसों छोडे, दही रक्खे, एक सप्ताह पर्य्रन्त जडमें भात और दही धरे तो वृक्ष हरा हो जाना संभव है.

सदा फल लगे

भूलको अकोलकर काढा करले उसमें घी, सरसों पीसकर डाले और सुअर व हिरनकी चर्बी मिलाकर सींचे तो सदैव फल लगे.

फलको अनेक स्वादवाला करना

वृक्षको अच्छे प्रकार गाडे और गाडकर घी शक्कर महुएका फल बहेडेका फल पीस शहतमें मिलाय लेप करे तो फल अनेक स्वादवाले होवें.

वृक्षके आरोग्यका उपाय

शहत, कूठ, मिश्री, महुएको कूट पीस गोला बनाय भूमिमें रख उसपर मिट्टी डाल वृक्ष लगावे तो वह आरोग्य रहे. वृक्ष जडजीव है, मनुष्योंके समान वृक्षोंको भी वात पित्त कफ दोष होते हैं, जो वृक्ष ख़ुश्क, रूखा और बडा व पतला हो, फल कमती हों उसको बातदोष जानना और जो वृक्ष पीला हो, धूप न सहसके, पत्ते और डाली गिर पडनेसे पित्तदोष जानना और जो वृक्ष चिकना हो, फूल चिकना और गोल होकर लिपट जाय तो कफदोष जानना.

खारी कडुवी द्रव्यके काढेसे सींचनेपर वातरोग दूर होजाता है. चिकनी दालको बनाकर मीठा जल मिलाय सींचनेसे पित्त-दोष दूर होजाता है. इमली घी नमकसे अथवा खारी कषैली रूखी वस्तुके काढेसे सींचनेपर कफदोष शांत होवे. एवं अनेक उपाय हैं परन्तु गुरुकी सर्वत्र आवश्यकता है. क्योंकि ठीक क्रियाके विना यथार्थ फल प्राप्त न होना कुछ आश्चर्य नहीं है. एक हिन्दी कहावत है कि ,विनगुड पुआ कभी न हुआ.,

शारीरक

आयुर्वेद ग्रन्थोंमें पंचतत्त्व (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) इस प्रकार वर्णन है कि, आकाशसे वायु वायुसे अग्नि, अग्मिनसे जल, जलसे पृथ्वी, पृथ्वीके पांच गुण (गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द , जलके चार गुण (रस, रूप, स्पर्श, शब्द) तेजके तीन गुण (रूप, स्पर्श, शब्द) वायुके दो गुण (स्पर्श शब्द) आकाशका एक गुण (शब्द) तहां गंधके नव प्रकार, रसके छः प्रकार, रूपके सोलह प्रकार, स्पर्शके ग्यारह प्रकार, शब्दके सात प्रकार हैं. सो यहां विस्तारके कारण नहीं लिखे. पृथ्वी भारी है, जल चिकना है, अग्नि तेज है, वायु रूखा है, आकाश हलका है. इन्हीं गुणोंसे सब औषधियोंके प्रकृतिकी परीक्षा होती है. शरीरमें सात कला (झोरी) हैं. सात स्थान हैं, सात धातु हैं, सात धातुमल हैं, सात उपधातु हैं, सात त्वचा हैं, तीन दोष अथवा मल हैं, नौसो नसें हैं, दो सौ दश जोड हैं, तीन सौ हाड हैं, एक सौ सात मलस्थान हैं, सात सौ मध्यम नसें हैं, चौबीस स्थूल नाडी हैं, पांच सौ मांसग्रन्थि हैं, दश छिद्र हैं, स्त्रीके शरीरमें बीस ग्रंथि अधिक हैं, सोलह पुष्ट नसें अधिक हैं, जो फैलती सिमटती हैं और तीन छिद्र अधिक हैं. इनका विस्तार सुश्रुत ग्रंथमें है यहां नाममात्र लिख दिया है.

स्थावर जंगम विप

स्थावर जंगम नामक दो प्रकारके विष हैं. इनमें स्थावर दश स्थानोंमें रहता है १ वृक्षकी मूलमें, २ पत्रमें, ३ फूलमें, ५ वृक्षके दूधमें, ६ वृक्षके रसमें, ७ छालमें ८ गोंदमें, ९. हरताल आदि धातुमात्रमें. १० सिंगीमोहरा आदि कन्दमें. जंगमविष तेरह स्थानोंमें रहता है, १ मनुष्य आदिकी दृष्टिमें, २ सर्प आदिकी श्वासमें ३ कुत्ता सियार आदिकी दाढमें, ४ व्याघ्र आदिकोंके नखोंमें, ५ विषखपरा आदिके नखोंमें, ६ छिपकली आदिकोंके मूत्रमें, ७ बन्दर आदिकके वीर्यमें, ८ बावले कुत्ता श्रृगाल आदिककी गुदामें, ९ सांप आदिकोंके

हाड अथवा दाढमें, १९ न्यौला मच्छर आदिकके पित्तमें, ११ भौंरा आदिके कांटेमें, १२ मूषकके दांतमें १३ सिंह आदिकोंके रोममें.

स्थावर विष लक्षण और चिकित्सा

गला रूंध जाय, दांत खट्टे होजायँ, हिचकी और ज्वर हो, मूर्च्छा छर्दि अरुचि हो. मुखसे फेन आवे ये लक्षण स्थावर विष खाजाने हैं. स्थावरविष खाजानेवालेको वमन करावे. विष सब गरम हैं, अतः शीतल उपाय उचित है. स्थावरविषवाला सांठी चावल सेंधालवण खावे, लालमिर्च खटाई न खावे.

दोहा–तालमखाना पीसके, दूध माँहि मिलवाय ।
मदमातेको प्याइये, नशा तुरत नशि जाय ।। ३४ ।।
मूली अरु ले फटकरी, पानीमें पिसवाय ।
मदमातेको प्याइये, नशा तुरत घटि जाय ।। ३५ ।।
सोंठि चूरण गोदधि विष, सेवै तुरत बनाय ।
नारायणहरिकृपाते, भांग गरल हटि जाय ।। ३६ ।।

धतूरेका विष दूध मिश्री पीने और बैंगनके बीजोंके रसको पीनेसे शांत होजाता है. भिलावेकी सूजन जहां हो वहां चौलाईका रस और मक्खन मिलाकर लगावे. कनेरका विष मिश्री मिला भैंसका दूध पीनेसे जाता रहता है. घुंघुचीका विष मिश्री मिला चौलाईका रस पीनेसे दूर हो जाता है, ऊपरसे दूध पीलेवे. ठंढे जलमें मिश्री मिलाय पीनेसे थूहरका विष शांत हो जाता है, दही मिश्री धनियाँ मिलाय पीनेसे जयपाल विष शांत हो जाता है. बडी कटै-याके रसमें दूध मिलाय पीनेसे संखियाका विष शांत हो जाता है । विषोंकी शांतिके लिये वमन और जुलाब हितकारी है. कोईभी रस अधिक खायाजाय तो घी दूध मिश्री पीने खानेसे गरमी शांत हो जाती है, यह स्थावर विषके विषयमें संक्षेपसे कहा.

जंगमविष लक्षण और चिकित्सा

नींद आने लगे. देह घूमने लगे, नेत्रोंके आगे अँधेरा आने लगे. काटे स्थानमें सूजन आजाय, दस्त आने लगे. ज्ञान जाता रहे तो जानना कि, किसी विषैले जीवने काट खाया है.

बीछूविषनिवारण

सिरसके फूल, कंजाके बीज, केशर, कूठ, मैनशिल इनको जलमें पीसकर वा घिसकर लेप बनावे, काटे हुए स्थानपर लेप करै अथवा नमक मूली खावे. * अपामार्गकी जड छः माशे, संखिया छः माशे इनको घोटकर चने

* अपामार्गकी जड अकेली ही घिसकर लगानेसे भी पीडा शांत होती है.

बराबर गोली बनाय सुखा लेवे, आवश्यक समय जलमें घिसकर डंकके स्थानपर लगावे. अथवा ईखको रसका कच्चा सिरका मले. अथवा मदारके दूधमें पलासपापडेको घिसकर लगानेसे बिच्छूका विष दूर हो जाता है, बिच्छूके काटनेसे जलन पडती है और बडी पीडा होती है.

पागल कुत्ता विष निवारण

पागल कुत्तेके काटनेसे विष चार दिनमें सब शरीरमें फैल जाता है, रोगीको क्रोध, अज्ञानता, चिन्ता, पागलपन ये घेरलेते हैं. कभी कभी कोई लक्षण प्रगट नहीं होते और रोगी मर जाता है, इस रोगमें मुख सूखने लगता है, चेहरा लाल हो जाता है, चिल्लाता है, जलको देखकर डरने लगता है, क्योंकि जलमें कुत्ते देख पडते हैं. आवाज बैठ जाती है, दुःस्वप्न देखता है, दूसरोंको काटने दौडता है, इस कारण पागल कुत्तेकी चिकित्सा करानेको कसौली जाना चाहिये, कसौली जानेसे पहले काटे स्थानसे कुछ ऊपर कसकर एक पट्टी बांधदे और घावको नस्तरसे बढावे. फिर लाल दवा जो कुओंमें डाली जाती है उसको महीन पीसकर घावमें भरे, तब कसौली जाय. जानेके लिये गरीबको सरकारसे खर्चा मिल जाता है. एक अर्जी जिलाके हाकिमको देकर खरचा मांग ले जानेमें देर न करे, कालका होकर कसौली जाना होता है. ई. आई. रेल्वेके अन्तमें वहांसे नौ मील कसौलीका शफाखाना पहाडपर जिला अम्बालेमें है. रेलसे उतरतेही स्टेशनपर सवारी मिल जाती है. दूसरा रास्ता कसौलीका यह है कि, कालकासे रेल शिमलेको जाती है, धर्मपुर स्टेशनतक जाकर वहांसे तांगा सवारी मिल जाती है. कसौलीमें इलाज बीस दिन होता है. कुछ दवा पिचकारीसे अन्दर पहुँचाई जाती है. कुछ क्लेश भी होताहै. साधारण कुत्ता काटेपर कुछ भय नहीं. कुत्ता काटनेपर खून निकालदे और काष्टिक लगादे वा घावमें चूना लाल मिर्च भर देवे ।

बर्र विष निवारण

शहदकी मक्खी और बर्रके काटनेपर सोंठ, तगर, केशरको जलमें बारीक पीस लेप करनेसे मक्खीका विष शान्त हो जाता है. मिट्टीका तेल डंकके स्थानपर मलनेसे सूजन और दर्द कमती होता है. फौलादके लगानेसे भी सूजन नहीं आती. बर्रके काटतेही जल पीलेवे, आलू जलमें पीसकर लगावे, सोख्ता कागज लगादे, दिया सलाईका मसाला रगडे, गोबर मल देवे, चूसकर वा दाबकर विष निकालदे, सरसोंका तेल मल देवे.

भौंरा विष निवारण

भौंरा काटतेही बहुत पीडा होती है, जांघें भर जाती हैं, चलनेपर रानोंमें दर्द होता है. इसके काटनेसे कभी कभी मनुष्य मर भी जाता है. इसके काटतेही धनियाँ खा लेवे और काटे स्थानको गरम पानीमें घंटेभर रक्खे. सिरका और तालावकी काई पानीमें मिलाकर रक्खे, पथ्यसे रहे.

मूषक विष निवारण

मूषक तो १८ प्रकारके हैं जो सुश्रुतसंहितामें लिखे हैं. महामारी रोग मूषकोंसेही प्रगट होता है जिसको प्लेग ताऊन कहते हैं, जिसका वर्णन उपाय सहित हम रसराज-महोदधिके पंचम भागमें लिख चुके हैं, जो बंबई वेंकटेश्वरमें छपा है. साधारण मूषकके काटनेसे सेंधा, मजीठ, धमासा इनको जलमें पीस लेप करे तो विष शान्त हो जाता है.

जोंक विष निवारण

विषैली जोंक लगनेसे रोग बढ जाता है, वह स्थान सूजजाता है. खुजली और मूर्च्छा उत्पन्न हो जाती है. इसमें इन्द्रायनकी जड, जराबन्द मदहर्ज, कडुवा शकफूल, जराबन्दतबील, अफसान्तिनकी बुकनी ये सब एक तोला, शहत तीन तोले, शिलारस तीन तोले मिलाय बालकको बलानुसार, मनुष्यको दो माशे भर देवे तो विष दूर हो. ।

कनखजूरा विष निवारण

यह हाथ भरतक लंबा होता है, चवालीस पांव इसके होते हैं, यह आगे पीछे दोनों ओर चलता है, इसीको कातरा कहते हैं. यह अच्छी तरह चिपट जाता है तो इसका छूटना कठिन हो जाता है. इसके चिपट जानेपर तेल छोड गरम लोहेसे दागे वा मिश्री घोलकर टपकावे. इसीके बहुत छोटे बच्चे कानसलाई कहाते हैं, जो कानमें घुस जाते हैं. इसके काटे स्थानपर नमक सिरका अथवा दीपकमें मीठा तेल जलाय उस तेलको लगानेसे दर्द अच्छा हो जाता है.

मेंढकविष निवारण

दरियाई मेंढक दूसरे जीवोंको देखकर उछलता है और काट खाता है. इसके काटनेसे मनुष्य मर जाता है, काटा स्थान सूज जाता है, प्यास बढती है, पीडा होती है, वमन होने लगता है, इसके काटते ही विषको निचोडदे, रोगीको सोने न दे और जोंकविष निवारण जो औषधी लिखी है वह देवे

और हब्बुलगार, जरावन्दतवील इन दोनोंको बराबर लेके कूट पीस छानले और अच्छे शहतमें मिलाकर रख छोडे, गरम जलके संग साढे चार माशे खाय तो सब विषधर जीवोंका विष दूर हो जाता है ।

छिपकलीविष निवारण

छिपकलीके दांत काटे हुए स्थानपरही टूटकर रह जाते हैं. जिससे खुजली उत्पन्न होजाती है, दर्द होने लगता है, इस कारण रेशमका डोरा बटकर उस स्थानके लंबाई चौडाई दोनों ओरसे फिरावे तो दांत निकल आते हैं, फिर सिंगी लगवाकर वहांसे कुछ रुधिर निकाल दे और काटे स्थानको गरम जलसे भिगोवे और जोंक विषनिवारणमें कहीहुई औषधी खावे.

वम्हनीविष निवारण

यह चार हाथ पांववाला छोटी पूँछका जीव अग्निमें छोडनेसे नहीं जलता है. जहां यह काटता है वहां पीडा होने लगती है, जलन पडती है, शरीर सुन्न होकर कांपने लगता है, काटनेका स्थान स्याह होजाता है और सडकर गिर जाता है, बोलनेकी शक्ति नहीं रहती. इसके काटनेपर कुकुरौंघेका काढा पीवे, रातीनज शहतमें मिलाकर खाय.

मकरीविष निवारण

मकरी आदि छोटे अनेक जीव ऐसे हैं जिनके काटनेसे क्लेश होता है. कोई तो ऐसे हैं जो देख नहीं पडते और सहसा काट खाते हैं, किसीके काटनेसे पेट फूल जाता है किसीके काटनेसे वमन होने लगता है. किसीके काटनेसे पेटमें दर्द होने लगता है. किसीके काटनेसे मल मूत्र करते समय दर्द होता है. किसीके काटनेसे शरीर शीतल होजाता है, पसीना निकल आता है, किसीके काटनेसे जाडा लगता है. किसीके काटनेसे जलन पडती है, प्यास बढने लगती है, किसीके काटनेसे विच्छूके डंड मारने समान पीडा होती है. इन जीवोंके विषकी शांतिके लिये जोंक विषनिवारणमें लिखी हुई औषधी खाय. मकरीके काटनेपर विषको खींचनेका उपाय करे. गरम शीतल मिलेहुए जलसे थोडी थोडी देर बाद स्नान करावे, जबतक दर्द दूर न हो जाय.

सर्पविष निवारण

अनेक प्रकारके साँप इस संसारमें हैं परन्तु सांपके विषके तीन दरजे मानेगये हैं. पहले दरजेका सांप जिसको काटता है वह प्राणी शीघ्र मर जाता है, कुछ उपाय नहीं चलता. कोई सांप ऐसे विषधर होते हैं कि, जिसके समीप जातेही प्राणी निर्बल होकर मरजाता है, किसीका शब्द सुनतेही मनुष्य निर्जीव

होजाता है ऐसे सांपकी दृष्टि जिस प्राणीपर पड जाती है वह वहीं मर जाता है, वह जिसको काटता है उसका शरीर सूज जाता है और रांगेके समान अंग गलकर पानीके समान बहने लगता है और वह प्राणी तुरंत मर जाता है, उस मृतक शरीरके समीप जानेवाला भी मर जाता है, ऐसे सांप तुरकिस्तानमें बहुत हैं, यहां दूसरे तीसरे दरजेके विषवाले सांप रहते हैं, सांप भिन्न २ देशोंमें भिन्न २ रंगके होते हैं और भिन्न भिन्न देशोंके वायु जलके अनुसार विष होता है, इसी कारण बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था, पुरुषजाति, स्त्रीजाति. पेट भरे, भूंखे इत्यादि समयानुसार अधिक और कमती विष होता है. जैसे एक ही प्रकारके सांप जलके समीप रहनेवाले कमती विषवाले और जलसे दूर रहनेवाले अधिक विषवाले होते हैं, क्योंकि सरदीमें रहनेसे विष कम होता है, गरमीमें रहनेसे विष अधिक होता है, एक सांप सफेद पतला दश हाथसे साठ हाथ तक लंबा होता है, उसका मुख चौडा नेत्र बडे भौंहोंपर बडे बडे बाल होते हैं उसके काटनेपर मल्हम आदि लगानेसे विष शान्त हो जाता है, विषैले सांपसे काटनेपर उस स्थानको किसी तेज धारवाली छुरीसे काटकर अलग करदे तो साथही विष निकल जाता है, जो वह स्थान काटने योग्य न हो तो काटेहुए स्थानपर बहुत गरम लोहा वा आगसे भलीभांति दाग देवे जिससे काटेहुए स्थानका विष जल जाय तो मनुष्य जी सकता है, सांपके दांतोंकी जडमें जो विषपोटली होती है उनमेंका विष सांपके फन चटकतेही अथवा काटतेही उसके दांतोंके छिद्रसे तुरन्त निकल पडता है. सांपका थोडासा विषभी रुधिरमें मिलनेसे सब शरीरमें फैलकर प्राणीको मारदेता है. विष जितनी जल्दी चढता है उतनी जल्दी औषधी अपना प्रभाव नहीं करसकती. सांप काटतेही उसको झटककर फेंक देना चाहिये और तुरन्त आधसेर दूधमें छटांक भर पिसी हुई फटकरी मिलाकर पी लेना चाहिये. क्योंकि फटकरी कलेजेमें पहुँचकर जम जाती है जिससे विष कलेजेमें घुस नहीं सकता. फटकरीसे टक्कर खाकर हट जाता है. बार बार टकराते टकराते विष निर्बल होजाता है और चिकित्सा करनेको समय मिलता है. विष जबतक काटे स्थानपर रहता है तबतक वहां सूजन रहती है, सूजन घट जानेपर जान लेना चाहिये कि, विष आगे बढ गया. यदि ठीक नाडी (नस) पर काटा है तो विष शीघ्र रुधिरमें प्रवेश होकर शरीरमें फैल जाता है. जिस रोमके नीचे विष आता है वह उसी समय चिपक जाता है और विष हटतेही खडा होजाता है. ज्यों ज्यों

विष आगे बढता है त्यों त्यों रोम गिरते और उठते जाते हैं. यह जाननेके निमित्त चिकित्सककी दृष्टि बहुत तेज होनी चाहिये. इसें देखनेसे प्रयोजन यह है कि, यदि विष नाडीमें हो वह निकाल लिया जा सकता है. सांप काटतेही बन्धन लगाना, चूसकर विष निकालना, चीरकर रुधिर निकालना, दागना इनमेंसे जो काम उचित जान पडे तुरंत करे क्योंकि मुख्य चिकित्सा यही है. विष रुधिरमें मिलकर शरीरको शिथिल करता हुआ फेफडेके समीप पहुँचकर कंठमें कफ भर देता है जिससे श्वास बन्द होकर मनुष्य उबककर मर जाता है. कण्ठमें कफ भर जाने पर तेल तूतिया इमली मछलीके धोवनका जल मिलाकर पिलावे इससे वमन न हो तो नीमके पत्ते कालीमिर्च मिलाय नागफनी खिलावे तो वमन होनेसे रोगी बच सकता है. सांपका विष भण्डारमें पहुँच जानेसे रोगीकी मांसकी नलीमें एक प्रकारकी लार उत्पन्न होकर मुखसे फेन निकलने लगता है जिससे श्वास रुक जाती है. फेन निकालनेका उपाय करे, कफस्थान पर्यन्त अँगुली व चिथडा डाले और फेनको निकाले; कुछ कुछ गरम जल पिलावे जिससे फेन नीचे उतरता रहे, नीबूकी खटाई खिलावे, जिससे विषकी तेजी घट जाय. सरसोंके असली तेलमें इमली मिलाकर पिलावे. इसकी चिकित्सा यदि विस्तारपूर्वक लिखी जाय तो ग्रन्थ बहुत बढ जायगा इस कारण यहां संक्षेपरीतिसे लिख दी है.

विषैले जीवोंका भगाना

सनोबरकी लकडीका चूर्ण आगपर रख धूनी देनेसे मच्छर भाग जाते हैं. अथवा सफेद गायके गोबरकी कंडी, सरोंकी पत्ती, गूगल इनकी धूनीसे भी मच्छर भाग जाते हैं. घोडेके पूछके बाल द्वारपर लटकानेसे भी मसा मच्छर भाग जाती हैं. गन्धक और लहसनकी धूनी वर्रके छत्तेपर देनेसे वर्रे भाग जाती हैं. नीली सोसनकी जड, बकरीकी खाल, गन्धक, अकरकरा, बारसिंगेका सींग इनकी धूनीसे सांप भाग जाते हैं अथवा राई नौसादरको पानीमें घोलकर छिडक देनेसे घरमें सांप नहीं आते, बीछूके बिलपर मूलीका छिलका रखदेनेसे बीछू बाहर नहीं निकलता. कनेरकी लकडी और गन्धककी धूनी देनेसे खटमल भाग जाते हैं तथा इन्द्रायनको जलमें मलकर घरमें छिडक देनेसे घरसे खटमल निकल जाते हैं.

सांप कटेपर दृष्टान्त

विक्रमीय संवत् १९५५ में एक दिन हम लखीमपुरसे रेलगाडीपर बैठकर बरेलीको अपनी दूसरी दूकानपर जा रहे थे. जब रेलगाडी मैलानी

स्टेशनपर पहुँची तो वहां सवारी गाडी कभी कभी तीस मिनटतक ठहर जाती है. जब गाडी छूटनेको हुई तब पूरनपुरतक जानेवाले एक ब्राह्मणदेवता हमारे निकट आकर बैठ गये. गांवके रहनेवाला ब्राह्मणोंका प्रायः ऐसा स्वभाव होता है कि, वे दूसरे ब्राह्मणको देखकर गोत्र आस्पद, नाम धाम पूछने लगते हैं. ब्राह्मणदेवताने अपने स्वभावानुसार हमारा गोत्र आदि पूछकर पढना लिखना पूछा और कहा कि, हमारा एक बालक है उसको हम पढाना चाहते हैं. लखीमपुरमें तो हमने एक पाठशाला सुनी है. हमने कहा कि, हां सनातन धर्मपाठशाला है. उसमें तुम्हारा लडका पढेगा तो अवश्य विद्वान् हो सकता है. परंतु गांवके रहनेवाले लोग प्रायः ऐसे हैं जो बाहर पढनेके लिये भेजनेमें संकुचित हैं. यदि पिता अपने बालकको भेजना भी चाहता है तो बालककी माता बालकको अपनी निगाहसे अलग नहीं करना चाहती, फिर बालक कैसे पढ सकता है ? इस प्रकार बातचीत हो रही थी कि, इतनेमें हमारी दृष्टि ब्राह्मण-देवताके हाथकी एक कटी अगुलीपर पडी हमने पूछा कि, यह अंगुली कैसे कटगई ? यह सुन ब्राह्मणने कहा कि, एक दिन हम अपने पशुओंके निमित्त चारा काटरहे थे उस चारामें एक सांप बैठा था थोडा चारा काटकर हमने ज्योंही चाराका मूठा लेनेके लिये हाथ बढाया त्योंही सांपने इस अंगुलीमें काटखाया और मारे क्रोधके चिपटगया. हमारे दूसरे हाथमें गण्डासा था तुरन्त सांपको काटकर मार डाला और इस अंगुलीको भी ओटपर रखकर उडा दिया. अंगुली दुखनेसे दो महीनेतक क्लेश तो रहा परन्तु प्राण बच गये. यह सुनकर हमने कहा कि आपने बडी चतुरतासे काम लिया, ब्राह्मणने कहा कि, ईश्वरने हमको इस समय ऐसीही बुद्धि देदी.

दूसरा दृष्टान्त

विक्रमीय संवत् १९५७ में यहां एक वैश्यको सांपने काटखाया, जब विष शरीरमें प्रवेश होनेलगा और मूर्च्छासी आनेलगी उस समय बहुतसे इकट्ठे होगये. वहीं एक साधु भी आगया, उसने बतलाया कि, मुरगीका बच्चा मँगाओ हम इसको अच्छा करेंगे, मुरगीका बच्चा मँगाया गया. साधुने कहा और भी कई बच्चे मँगाओ. जो बच्चा आया था उसको पकडकर साधुने उसकी गुदाको सांपके काटे स्थानपर लगाया, लगातेही बच्चा लगगया. घावमेंसे विष निकलकर उस बच्चेके कोमल शरीरमें प्रवेश करने लगा. पांच मिनटमें वह बच्चा मूर्च्छित होकर गिर गया. तब साधुने दूसरा बच्चा लगाया. पांच मिनटमें वह भी गिर गया इसी प्रकारसे पांच बच्चे लगाये गये, तब वह वैश्य

निर्विष शरीर होनेसे चैतन्य हो गया, मूर्च्छा जाती रही, साधु चला गया. मुरगी लगानेमें एक बातका ध्यान रहे कि, जिस मुरगीका गुदास्थान बहुत कोमल होता है वह घावपर शीघ्र चिपक जाता है. मुरगीको लगाकर उसे पकडे रहे नहीं तो मुरगी छूटकर फिर उसका लगाना कठिन हो जायगा। जो मुरगी न मिल सके अथवा घावपरअन लगे तो और उपाय करे क्योंकि विलंब करनेसे रोगीका चंगा होना कठिन होजाता है.

अनुभव चुटकले

अब आगे हम अनुभव चुटकले लिखते हैं. रोगके उत्पन्न होनेपर तुरन्त औषध सेवन करना चाहिये. तुरन्त उपाय करनेसे रोग नहीं चढता है. कोईभी रोग प्रगट हो, परहेज अवश्य करना चाहिये, परहेज करनेसे प्राय: रोग शांत होजाता है. लिखा भी है कि–

पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः ।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः ।

अर्थात् परहेजसे रहे तो रोगीको औषध देनेसे क्या प्रयोजन और परहेजसे न रहे तो रोगीको औषध देनेमें क्या लाभ होसकता. जो रोगी परहेजसे रहता है उसको औषधी शीघ्र गुण करती है. जो रोगी परहेज नहीं करता उसका रोग शीघ्र बढ जाता है. परहेज करनेसे रोग आपही शान्त होजाता है, जैसे–,अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति, विना तृणवाली भूमिपर गिरी हुई अग्नि आपही बुझ जाती है.

अजीर्ण आदि रोग निवारण

पिपरमेंट ६ माशे, अजवायनका सत ६ माशे कपूर ६ मासे इन तीनोंको एक निर्मल शीशीमें भरकर डाट लगादे. जैसे अमृतार्णव, अमृतबिन्दु, अमृतधारा, सुधासिन्धु, सुधाबिन्दु नाम हैं वैसे ही इसका नाम नारायणबिन्दु कहना चाहिये, चार बूंद एक बताशेमें डालकर खाय ऊपरसे दो घूंट जल पी लेवे अथवा ताजे जलमें चार बूँद डालकर पीवे तो अजीर्ण और उदरशूल (पेटका, दर्द) शान्त होजाता है. पित्तजनित विकारमें भी चार बूँद बताशेमें डालकर खानेसे पित्त विकार दूर होजाता है.

शिररोग निवारण

केशर ३ माशे, मुचकुन्दके फूल १ तोला गुलाब जलमें पीस मस्तकपर लेप करनेसे गरमी और सरदीसे उत्पन्न शिरः पीडा शान्त होजाती है. तथा बामका तेल सूंघनेसे वा चूना नौसादर हथेलीपर मलकर सूंघनसे शिरदर्द

जाता है. ब्रह्मदंडीका हुलास लेनेसे अथवा गायके घीमें कपूर मिलाकर नासिकाद्वारा ऊपरको चढा लेवे तो शिरका दर्द जाय. यदि शिरकी निर्बलताके कारण पीडा हो तो धनियां चावलोंका आटा १ पाव, घी शक्कर आध सेर इनके लड्डू आधी आधी छटांक प्रमाण बनावै. प्रतिदिन१लड्डू खाकर ऊपरसे दूध पीवे तो शिरकी पीडा शान्त हो अथवा गायके दूधमें आधसेर पोस्तके दाना भिगोवे प्रातः समय पीसकर लुगदी बनावै फिर आधसेर गायके घीमें आधसेर गेहूंकी मैदा भूने और पोस्तके दानाकी लुगदी भी भूने और बादाम गोला, चिरौंजी, किशमिश, दक्षिणी मिर्च ये एक एक छटांक डालें और दो सेर शक्करकी चासनी कर सबको मिलाय आधी छटांकके लड्डू बांधे, एक एक लड्डू प्रातः सायं सेवन करनेसे कैसाही शिरदर्द हो थोडेही दिनोंमें अच्छा हो जाता है.

नेत्रपिडा निवारण

जस्तका सफेदा, फूलका मेल मिलाय मासी लगानेसे नेत्रपीडा शांत हो जाती है, लाली कट जाती है, अथवा छोटे अंडेकी गिरी पीसकर नेत्रोंपर बांधे और सो रहे प्रातः समय खाले तो नेत्रपीडा जाय तथा धतूरेके पत्तोंका अर्क कानमे डालनेसे भी नेत्रपीडा शांत होती है, बकरी वा गायके दूधमें रुईका फोहा भिगोकर आंखपर बांधे सबेरे खोले तो नेत्रपीडा जाय, परंतु दूध कच्चा और ताजा होना चाहिये तथा अधकुटे लोधकी पोटली अफीमके जलमें भिगोकर आंखपर बांध तो नेत्रपीडा जाय. थोडीसी फटकरी पीसकर गायके ताजे दूधमें डाले तो दूध फट जायगा उसका पानी निकालकर फेंकदे और गाढा दूध लेकर रुईके फोहापर रखकर आंखोंपर बांधे तो नेत्रपीडा जाय मीठे अनारदानेका अर्क नेत्रमें डालनेसे भी पीडा शांत हो जाती है. तथा हर्रकी बकली, भुनी फटकरी, अफीम, लोध, रसौंत, आंबाहलदी ये दो दो माशे भर, लौंग १ माशे भर इनका इमलीके पत्तोंके १ छटांक रसमें पकाकर टिकिया बांध लेवे. उस टिकियाको जलमें विसकर आंखोंमें आंजे तो नेत्रपीडा जाय. आकके दूधमें रुईका फोहा भिगोकर बाई आंखमें दर्द हो तो पांवके दाहिने अंगूठेपर बांधे और दाहिनी आंख दुखती हो तो पांवके बायें अंगूठेपर बांधे तो नेत्रपीडा जाय. अफीम और भुनी फटकरी बराबर लेके शहतमें घोंटकर सलाईसे तीन बार रात दिन नेत्रोंमें लगावे तो नेत्रपीडा जाय. त्रिफला (आंवला, हर्र बहेडा), त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च पीपरि), वायविडंग, सेंधानमक, पोस्त, समुद्रफेन इन सबको घोटकर रख छोडे इस अंजनसे नेत्रोंका पानी

बहना, लाल होना और दर्द अच्छा हो जाता है. तथा एक छटांक गुलाब अर्कमें दो माशे फटकरी पीसकर डाले फिर बूँद बूँद कर नेत्रोंमें डाले तो लाली कट जाती है, पीडा दूर होजाती है, तथा फटकरी, अफीम, पोस्त, लोध, भूनी हलदी इनको कांसेके पात्रमें रगडकर सुरमाके समान स्याह करले और अंगुलीसे नेत्रोंमें लगावे तो लाली और पीडा जाय. तथा स्याह हरड, पीपरि, आंवलेकी गुठलीकी मींगी इनको भँगराके रससे घोटकर एक बत्ती कपडेकी बनाकर उसपर लपेटे फिर सरसोंके तेलमें जलाय काजल बनाले उसमें भीमसेनी कपूर बराबर मिलाय सुरमा बनावे. आंखोंमें यह सुरमा आंजनेसे नेत्रोंसे पानी बहना बन्द हो जाता है. तथा आधी बोतल पानीमें कौडीभर फटकरी डालकर हिलावे जब मिल जाय तब रुईके फोहा वा कलमसे एक एक बूँद टपकावे तो नेत्रपीडा जाय. जहां मार्ग आदिमें नेत्र दुखने लगे कोई औषधी न मिल सकै वहां दाहिनी आंख दुखती हो तो बायें पांवके अंगूठेमें और बाई दुखती हो तो दाहिने पांवके अंगूठेमें अपने बराबर डोरा नापकर बांध देवे तो आंख दुखनेसे रुक जाती है. तथा चमेलीके फूल एक सौ, तिलफूल एक सौ सुखाकर काली मिर्च पीपरि धेला धेलाभर मिलाकर बासी पानीसे घोटे सुरमाके समान हो जानेपर गोली बनाले, प्रतिदिन घिसकर अंजन लगावे तो नेत्रज्योति बढे. तथा कालीमिर्च. हर्रकी बकली, सोंठ, नागरमोथा बराबर लेके पीसे और पील्लके रससे कांसेके पात्रमें खरल कर सुरमाके समान स्याह हो जानेपर गोली बनाय प्रतिदिन भीमसेनी कपूरके साथ घिसकर अंजन लगावे तो नेत्ररोग, तिमिररोग जाय. तथा कागजी नींबूकी दो फांक कर एकमें हर्रकी छोटी छोटी दो गांठ रखकर दूसरी थांक ऊपरसे जमाय सूतके डोरेसे बांधे छायामें सुखावे इसी प्रकार सात नींबुओंमें दोनों गांठ धर धरकर छायामें सुखावे सूख जानेपर वे गांठ निकालले फिर शहतमें घिसकर लगानेसे नेत्रोंकी लाली और खुजली दूर हो जाती है. इसीको स्त्रीके दूधमें घिसकर आंजनेसे धुंध दूर हो जाती है. तथा इन्द्रायनके फलोंमें आंबाहल्दी रखकर बन्द करके ऊपरसे कपरौटी कर चालीस दिन पर्यन्त पृथ्वीमें गाडदे फिर निकालकर सुरमेके समान पीस लेवे और सलाईसे अंजन लगावे तो धुंध फूला दूर हो जाय. साबुनके जलमें अफीमको घिसकर आंजनेसे नासूना रोग जाता रहता है. अथवा शहतमें कानका मेल घिसकर आंजनेसे नेत्रोंका नासूना रोग जाता रहता है. फूली कट जाती है. तथा कांचकी हरी चूडी पीसकर एक सौ बार धोयेहुए गायके घीमें वीस पहरतक खरल करे और फूलीपर आंजे तो

इक्कीस दिनमें फूली कट जाती है. तथा सिरसके पत्तोंका अर्क बेसनमें मिलाय रोटी वनाय घी चुपडकर खानेसे रतौंधी जाती रहती है.

कर्णरोग निवारण

जो कन्याकी माता हो उस स्त्रीके दूधकी धार कानमें लगानेसे कानका दर्द जाता रहता है तथा गुलाबका अच्छा इत्र कुछ गरम कर कानमें टपकावे तो कर्णपीडा जाय. तथा नौसादर पीसकर कानमें डाल ऊपरसे नींबू निचो डेतो कर्णपीडा जाय. अथवा आकके पत्तोंपर घी चुपड सेंककर निचौडे और गरम अर्क कानमें डालै अथवा सुदर्शनके पत्तेको गरम कर कानमें निचोडे वा सहिंजनेके पत्तोंका रस कानमें निचोडे, अथवा घोडेकी लीदका रस निचौडे तो कानका दर्द जाय. सेमके पत्तोंका रस कुछ गरम कर कानमें डालनेसे चालिस दिनमें बहिरापन जाता रहता है. कानमें फुंसियाँ हों तो आककी छाल नमक पानीमें पकाय कानमें डालनेसे फुंसियाँ फूटकर बह जाती हैं.

झाई निवारण

कागजी नींबूके रसमें चंपाके फल घोंटकर लगावे अथवा स्याहजीरा काले तिल, सिरसवृक्षकी छाल बारीक पीसकर मले तो मुखकी झाई दूर हो जाती हैं.

नकसीर निवारण

बदामका तेल सूँघे और चिर्चिरेके रसमें एक छटांक गेहूँका आटा मलकर रोटी बनाय सेंककर गायके घीके साथ पांच दिन खाय अथवा सफेद चंदन, रूमीमस्तंगी, इन्द्रजौ, मोथा चार चार माशे लेकर मैदा करे और एक छटांक शहत मिलाकर रख छोडे प्रतिदिन प्रातःसमय छः माशे चाटे तो नकसीर बन्द हो जाय.

मृगी निवारण

काली मिर्चको पानीसे घोटकर नेत्रोंमें लगानेसे मृगीरोगवाले मनुष्यकी मूर्च्छा दूर होजाती है. अकरकराको शहतमें पीसकर प्रतिदिन खाय, आकाश-वेल एक माशा, काली मिर्च एक माशा, एक छटांक जलमें घोंट छानकर प्रातः समय पीवे तो सात दिनमें मृगीरोग जाय, दूध भात शक्कर खाय और कुछ न खाय मृगी आनेके समय कागजी नींबूका रस शक्करके शर्बतमें मिलाकर पिलावे. अथवा पेठेके बीजोंकी मींगी घोंटकर मिश्री मिलाय पिलावे तो मृगीरोग जाय. अथवा छः मासे वच दूध और शहतके साथ चाटे तो मृगीरोग जाय. मृगीकी मूर्च्छाके समय लौंग सोंठ पीसकर सुंघावे तो मृगीरोग जाय.

शीतज्वर निवारण

करलेके आधासेर रसमें एक तोला फटकरी घोंटकर चनेके बराबर गोली बनावे. जाडा आनेसे एक घंटा पहले एक गोली खाय अथवा अमलतासकी गूदी, कुटकी, हर्ड, पीपलामूल, मोथा इनका काढा प्रातः समय पीनेसे शीतज्वर (जाडा बुखार) जाता रहता है. अथवा कंजाके पत्ते, मकोय, कुकुरौंधा छः छः माशे, सोंठ तीन माशे इनको थोडे जलमें घोट छान एक तोला शर्बत व जूरी मिलाय पीनेसें शीतज्वर जाता रहता है अथवा कपूर तीन माशे शहतमें घोंटकर हाथ पांवके तलुवोंपर मले तो जाडा जाय अथवा भांग काली मिर्च नमक मिलाकर फंकी बनावे. जाडा आनेसे एक घटा पहले चार माशे अथवा जितनेमें नशा आजाय उतनी फंकी फांके ऊपरसे एक घूंट गरम जल पीवे तो जाडा नहीं आवे. अथवा सुहागेको खील जाडा आनेसे तीन एक घंटा पहले एक एक घंटापर बताशेमें रखकर खावे तो जाडा जाय. अथवा कपूर कत्था घोटकर चना बराबर गोली बनाय एक घंटा पहले एक गोली खाय तो जाडा जाय. अकरकरा दो मासे शिंगरफ एक माशा बारीक पीस बादामके तेलमें गरम कर हाथ पावके तलुए छोडकर किहुनी और गोडोंतक मले, कमरपर भी एक घंटा पहलेसे मले तो जाडा नहीं आवे. अथवा अगस्तको पत्तोंका अर्क टकाभर एक घंटा पहले पीवे. अथवा कुकुरौंधेका आधपाव अर्क गरमकर पीवे तो चौथियाज्वर जाय. साधारण ज्वर हो अदरख सैंधानमक खानेसे क्षुधा बढती है, कफ दूर हो जाता है. ज्वरका अंश नहीं रहता, अथवा ,गुडूची ज्वरं निवारयेत् ,जो गिलोय ,गुर्च नीमवृक्ष पर होती है वह अनुमानसे लेकर जलके साथ पीसे, कुछ सेंधा नमक मिलाय गरम पीवे तो तीन दिनमें ज्वर जाता रहेगा. कालीमिर्च, तुलसीपत्र खानेसे अथवा गुर्च और सोंठका काढा पीनेसे अथवा गुर्च और सोंठका कांढा पीनेसे ज्वर नहीं रहता है ।

विषमज्वरपर दृष्टान्त

एक वैद्यजीको ज्वर आनेलगा, वैद्यजीने कोई उपाय नहीं किया एक कहावत है कि, "नाईन सबके पांव धोते लजाती है" वैद्य सबकी दवा करते हैं पर अपनी दवा नहीं करते, कोई २ वैद्य बीमार होनेपर कह देते हैं कि अपनी दवा अपनेसे नहीं होती. यह भूलकी बात है, जो रोग अकस्मात् बढकर नष्ट कर दे तो बात दूसरी है परंतु साधारण ज्वर आज़ानेपर उसके दूर न करनेमें आलस्य करना कितनी बडी भूलकी बात है, वैद्यजीके शरीरमें ज्वर बढते बढते क्षुधा मन्द होगई, शय्याकी शरण लेनी पडी तब वैद्यजीका ज्ञान नष्ट

होगया, वैद्यजीको बडी चिन्ता हुई छोटे साधारण वैद्य आकर दवा करने लगे, ज्योतिषी आकर ग्रह दशा देख वर्ष निकालकर ग्रहोंका दान कराय महा-मृत्युंजय जप करना प्रारंभ किया, टोनावालोंने झाडफूंक करना आरंभ किया, अच्छे वैद्यजी तो बीमारही थे, सामान्य वैद्य जो उस ग्राममें थे सबकी दवा दो दो चार चार दिन दी गई कुछ आराम न हुई, अन्तको एक साधु वहां उस गांवमें आया, वैद्यजीके एक मित्रने साधुजीको अपने साथ लाकर वैद्यजीको दिखाया उसने कहा कि इनकी असावधानीसे ज्वर बढ गया और नस नसमें अपना स्थान करलिया है, इसका उपाय एक है, उस उपायसे इनके प्राण बच सकते हैं यह सुनकर विनयपूर्वक वैद्यजीके मित्रने पूंछा, तब साधुने कहा कि एक पीपरि लेके गुलरी वृक्षकी शाखामें गोंदकर शामको रक्खी जाय कि जिससे रातभर वह पीपरी गुलरीका दूध पीती रहे, सबेरे उस पीपरिको लाय असली शहतमें मिला कर चाटनेसे कुछ समयमें ज्वर शान्त हो जायगा, परन्तु इनका ज्वर एक वर्षसे ठहर रहा है, चालीस दिनमें ज्वर जायगा यह कहकर साधु चला गया, वैद्यजीने चालीस दिन पीपरिका सेवन किया, ज्वर जाता रहा, शरीर आरोग्य हो गया.

कासश्वास निवारण

खांसी और दमा बढजानेपर प्राण संकटमें होजाते हैं, इस कारण खांसी दमाके दमनका उपाय शीघ्र करे काली मिर्च एक तोला, पीपरि एक तोला, अनारकी छाल दो तोले, जवाखार छः माशे इनको कूट पीस चूर्ण बनाय आठ तोले गुड मिलाकर चार चार माशेकी गोली बनावे यह गोली मुखमें रख चूसनेसे खांसी दमा रोग शांत होजाता है, एक खट्टे अनारमें अजवायन, पीपरी, काली मिर्च काला नोन, स्याह जीरा और थोडीसी अफीम रखकर बन्द कर देवे और कपडमिट्टी कर भूभलमें डालदे, भली भांति पक जानेपर निकालले, उसमें अनुमानसे सेंधानमक मिलाय पीसकर गोली बना लेवे. झरबेरीके बेरके बराबर गोलियां बनावे. इस गोलीका रस चूसनेसे खांसी जाती रहती है. तथा कहुरु आसमई ६ माशे, सकरती गाल ६ माशे, सफेद इलायचीके दाने ६ माशे, जूफा खुश्क ३ माशे, बबूलका गोंद ६ माशे, खेसूस. (मोरठीकी सत) ६ माशे, मौरेठीका मेदा ६ माशे, बाकलाके बीजका आटा १ तोला, इनमें बबूलका गोंद पानीमें भिगोवे बाकी दवा कूट पीसकर गोंदमें मिलाय झरबेरीके बराबर गोलियां बनावे, इस गोलीका रस चूसनेसे भी

खांसी जाती रहती है तथा अदरखका रस शहदके साथ पीनेसे दमा रोग जाता रहता है.

हृदयरोग निवारण

बंशलोचन, काली मिर्च, अतीस, काकडासिंगी, गुर्चका सत, चौकिया सुहागाका लावा ये छः छः माशे, पिपरमेंट १ मासा शहत डेढ पाव, अदरख तीन छटांक पहले अदरख पीसकर लुगदी बनावे उसको शहतमें पकावे फिर वंशलोचन आदि छः औषधी पीसकर मिलावे ऊपरसे मिलाय रख छोडे भोजन करते समय पहले ग्रासके साथ एक पल भर खाय अथवा भोजनोपरान्त एक अंगुलीके साथ जितनाआवे उतना खाय तो हृदयकी निर्बलता (माद्दा जोफ) दूर होजावे है.

प्लेगरोगनिवारण

अफीम, काली मिर्च, कुचिला एक एक तोला लेकर बंगलापानके अर्कमें घोंटकर गोली बनावे. बलानुसार यह गोली प्रतिदिन खानेसे प्लेगका भय नहीं रहता.

अहिफेननिवारण

यदि मनुष्यको अफीम चढगई हो तो तितली वृक्षका रस अथवा वृक्ष बांटकर छानकर पिलावे तो अफीमका नशा उतर जाता है. बालकको अफीमका नशा बढ गया हो तो केलेका पट्टा भुलभुलाके निचोडले और एक दो बार पिला देवे.

उदररोगनिवारण

काली मिर्च, छोटी पीपरि, वायविडंग, धनियां, पांचों नमक, स्याह-जीरा, पीपरामूल, नागकेशर, चव्य, अमलवेत, पत्रज ये दो दो तोले, सफेद जीरा, भुनी सोंठ एक एक तोला, इलायची छः मासे, अनारदाना पांच तोले, तज छः मासे इन सबका चूर्ण बनाय प्रतिदिन प्रातःसमय चार माशे प्रमाण फंकी फांककर ऊपरसे गायका मठा अथवा दहीके पानी अथवा ताजा पानी पीनेसे सब उदरविकार दूर होजाते हैं.

कृमिनिवारण

छः माशे वायविडंगका चूर्ण शहत मिलाय चाटनेसे अथवा नीमकी पत्तीका रस शहत मिलाय चाटनेसे पेटमेंके कीडे (चुनचुने) मर जाते हैं.

रक्तपित्तनिवारण

पीपरिका चूर्ण शहत मिलाय चाटे अथवा अडूसेके काढेमें शहत मिलाय पीवे तो रक्तपित्तरोग शान्त हो जाता है.

हिचकी निवारण

सोंठ और पीपरिका चूर्ण शहत मिलाय चाटनेसे और जेठीमधुका चूर्ण शहत मिलाय सूंघनेसे हिचकी रोग शांत होजाता है.

पांडुरोगनिवारण

त्रिफलाके काढेमें थोडा शहत मिलाय पीनेसे पांडुरोग शान्त हो जाता है.

तृषादाहनिवारण

मुनक्का मिश्री खानेसे और धनियांके काढेमें मिश्री मिलाय पीनेसे तृषा दाह शान्त हो जाता है.

दादखाजनिवारण

पंवारके बीज, वायविडंग, कूठ, सरसों, सेंधा, हलदी इनको बराबर ले चूर्ण बनाय नीमकी पत्तीके रसमें घोंटकर लगावे तो दाद, खाज जाय. और गुम्माके रसमें अफीम मिलाकर लगानेसे दाद जाता रहता है. मरिच्यादि तेल लगानेसे खाज जाता रहता है.

वानरव्रणनिवारण

यदि वानर काट खाय और घाव हो जाय तो अरहरकी पत्ती कुछ नमक डालकर पीसे और कडछीमें कुछ घी गरम कर उस पिसी पत्तीको छौंक देवे और गरमागरम रखकर बांध देवे अथवा सफेद तिल्ली पानीमें पीसकर घावपर लगावे तो घाव अच्छा हो जाता है.

अग्निव्रणनिवारण

जौ जलाकर तिलीके तेलमें मिलाकर लेप करे अथवा जीरा, मोम, रार, सिरका इनको घीमें पीसकर लेप करे अथवा दहीके जलमें पुराना गुड पीसकर अग्निसे जल जानेपर लेप करे.

मूत्रकृच्छ्रनिवारण

सफेद इलायचीके दाने १ तोला, वंशलोचन १ तोला, सतविरोजा १ तोला, कबाबचीनी १ तोला, गुर्चका असली सत १ तोला, जंदनका तेल १।। तोला, चंदनके तेलमें सब दवा पीस छानकर मिलाय बेर बराबर गोली बनावे. १ गोली १ पाव गोदुग्धके साथ प्रातः समय खानेसे सुजाक रोग शांत हो जाता है. तथा आंवला आध पाव, बहेडा आध पाव, रसौंत १ छटांक, कबाबचीनी आधी छटांक, मुरदाशंख १ छटांक, तूतिया छः माशे, सफेद इलायची दो तोले, पहले आंवला और बहेडेको अलग अलग हांडीमें आध आध सेर जलमें

भिगोवे, तीसरे दिन एक हांडी आंचपर चढाय सब औषधियोंको कूट पीसकर मिलादे और डेढ सेर जल डालदे और मन्द मन्द आंच करे, जब औटते औटते आधा जल रह जाय तब गाढा गाढा छान लेवे, कुछ शीतल होनेपर बोतलमें भरलेवे और रख छोडे, जब पिचकारी लेना हो तब कांचकी पिचकारीसे पिचकारी लेवें, छ : छ : घडी उपरांत पिचकारी ले, दवाई लेते समय बोतलको हिलादे जिससे दवा एक समान हो जाय. इन्द्रीकी खाल उठाय हाथकी अंगुलियोंसे पकडकर उसमें पिचकारी रख दवा भरदे और वारंवार हिलावे जिससे दवाका असर सीवनतक पहुंचे. यह पिचकारी परीक्षित है इससे सुजाक रोग जाता रहता है, परंतु लाल मिर्च, खटाई अधिक गरम वादी वस्तु व तेल कडुवा न खाय, परहेज करे.

उपदंशनिवारण

सौंफको निरन्तर प्रातःसमय सेवन करे अथवा सौंफका पाक बनाकर सेवन करे तो उपदंश, बवासीर, आमवात, वमन ये रोग शांत हो जाते हैं. नीमकी पत्तीके काढेसे गरमीके घावोंको धोवे और त्रिफलाकी भस्ममें शहत मिलाय लगावे तथा नीलाथोथा, सिन्दूर, कबीला, मुरदाशंख, गन्धक, रसकपूर, पारा इनको पीसकर एक सौ वार धोये हुए गायके घीमें मिलाय लगानेसे उपदंश (आतशक–गरमी) के छाले अच्छे हो जाते हैं.

अर्श निवारण

काली मिर्च १ तोला, पीपलामूल २ तोले, जीरा १ तोला, बडी हर्डका बक्कल ५ तोले, पीपरि १ तोला, चीतेकी छाल ४ तोले, शुद्ध भिलावा ८ तोले, जवाखार २ तोले, जिमीकन्द १६ तोले इन सबको कूट पीस छानकर सबसे दूना गुड मिलाय झरबेरीके बेर बराबर गोलियां बनावे. प्रातःसमय १ वा २ गोली जलके साथ खानेसे छः प्रकारका असाध्य भी बवासीर रोग शान्त हो जाता है, मस्सेपर निबौलीकी मींगी, रसौंत, चीनियाकपूर जलके साथ बारीक पीसकर लेप करे अथवा थहरके दूधमें हलदी भिगोवे दूसरे दिन घिसकर मस्सेपर लेप करे.

प्रमेहनिवाण

हलदी १ तोला, आंवला १ तोला थोडे जलमें भिगोय प्रातःसमय घोंट छानकर शहत मिलाय पीनेसे प्रमेहरोग शांत हो जाता है. तथा गुर्चका रस १ तोला, छः माशे शहत मिलाय पीवे अथवा आंवला, हर्र, बहेडा, देवदारु, हलदी, नागरमोथा छः छः माशे ले काढा बनाय एक तोला शहत मिलाय

पीवे. अथवा १ रत्ती वंगभस्म शहतमें मिलाकर खाय, गोखरूपाक सब प्रकारके प्रमेहोंको शान्त करता है, परन्तु चिंता, श्रम, तीक्ष्ण वस्तु, मद्य, मांस, खटाई, कफकारक पदार्थ, गुड इनसे परहेज करता रहे.

सफेददागनिवरण

सफेद दागको तुरन्त दवा करना चाहिये, नहीं तो बढकर शरीरमें फैल जाता है. थूहरका दूध दागपर मले, भिलावेका रस मले तो स्थान सूजकर पानी निकल जायगा, सफेदी दूर होजायगी. अथवा नीमके सौ पत्ते पीसकर खाय और नीमके पत्तोंके काढेसे दागको धोवे अथवा सुहागा, चीता, मंजीठ महीन पीसकर अँगूरी सिरकामें मिलाय लगावे, मले तो सफेद दाग जाता रहे.

वन्ध्यादोषनिवारण

मिथ्याहार विहार करनेसे वात पित्त कफ कुपित होकर स्त्रियोंकी योनिमें रोग उत्पन्न हो जाता है, तथा स्त्रियोंके सात दोष होते हैं जिनसे गर्भ नहीं रहता, १ जिस छोटी स्त्रीका पुरुष बडा हो उसके संभोगसे फूल जल जाता है, गर्भ नहीं रहता. २ स्त्रीके फूलमें पवन बैठनेसे गर्भ नहीं रहता. ३ स्त्रीके फूलमें मांस बढ जानेसे गर्भ नहीं रहता. ४ स्त्रीके फूलमें अग्नि प्रवेश होनेसे गर्भ नहीं रहता. ५ स्त्रीके फूलमें शीतला होनेसे गर्भ नहीं रहता. ६ स्त्रीके फूलमें जाला होनेसे गर्भ नहीं रहता. ७ स्त्रीके फूलमें कीडा बैठ जानेसे गर्भ नहीं रहता तथा भूतादि बाधा होनेसे भी गर्भ नहीं रहता इन दोषोंकी परीक्षा यह है. १ स्त्री रजस्वला होने उपरान्त जिस दिन स्नान करे उस दिन संभोग करने उपरांत पुरुष पूछे कि, हे प्रिये ! तुम्हारा कौनसा अंग दुखता है, जो स्त्री कहे कि, माथा दुखता है तो जाने कि, फूल जल गया है. उसकी औषध यह है कि, सेंधा, लहसुन, समुद्रफेन तीनो बराबर लेकर घिसे और फोहा बनाय तीन दिन योनिमें रक्खे चौथे दिन स्नान करे तो पुरुष योगसे गर्भ रहेगा. २ जो स्त्री कहे कि, अंग कांपता है तो जाने कि, फूलमें पवन भरा है. उसकी औषधी यह है कि, हींग १ टंक प्रमाण लेके तिलके तेलमें फोहा बनाय तीन दिन योनिमें रक्खे चौथे दिन स्नान कर पुरुष योगसे गर्भ रहे. ३ जो स्त्री कहे कि, कमर दुखती है तो फूलमें मांसका बढना जानना. उसकी औषध यह है कि, हाथीका नख, कालाजीरा, अंडीका लेत मिलाय पीसकर फोहा बनावे तीन दिन योनीमें रख चौथे दिन स्नान कर पुरुष योगसे गर्भ रहे. ४ जो स्त्री कहे सब शरीर दुखता है तो जाने कि, फूलमें अग्नि पडी है. उसकी औषधी यह है कि, तिलके तेलमें सेवतीके फूलके रसका फोहा रुईका बनाय तीन दिन

योनिमें रक्खे चौथे दिन स्नान कर पुरुषयोगसे गर्भ रहे. ५ जो स्त्री कहे कि, पिंडुरी दुखती है, तो जाने कि, फूलमें शीतला है. उसकी औषधी यह है कि, राई कायफल, हर्र, बहेडा इनको पीस गोली बनाय साबुनके पानीसे फीहा बनाय गोली लपेट तीन दिन योनिमें रखे चौथे दिन स्नान कर पुरुषयोगसे गर्भ रहे, ६ जो स्त्री कहे कि, पेट दुखता है. तो जाने कि, फूलमें जाला है. उसकी औषधी यह है कि, जीरा, सुहागा, वच पानीमें पीस फीहा बनाय तीन दिन योनिमें रक्खे, चौथे दिन स्नान कर पुरुषयोगसे गर्भ रहे. ७ जो स्त्री कहे कि, पेडू दुखता है तो जाने कि, फूलमें कीडा बैठ गया है, उसकी औषधी यह है– केशर, कस्तूरी एक एक माशा लेके ४ गोली बनाय तीन दिन योनिमें रक्खे. चौथे दिन स्नान कर पुरुष योगसे गर्भ रहे. आँखें दुखनेको कहनेसे भी फूलमें जाला जानना उसकी औषधी आंबला, बहेडा पीस शहतमें गोली बनाय तीन दिन योनिमें रक्खे, चौथे दिन स्नानकर पुरुष योगसे गर्भ रहे. जो स्त्री कहे कि, कुछ नहीं दुखता है चित्त भ्रमसा होता है और भय लगता है, स्त्रियां दिखाई देती हैं तो भूतादि दोष जानना उसकी औषधी अनेक यंत्र मंत्र तंत्र हैं.

हितैषी दोहे

पितु माता युवती तनुज, होयँ जासु अनुकूल ।
निरुज शरीर विचार धन, यही स्वर्ग मत भूल ।। १ ।।
जो नर परनारी निरत, परनर रत जो नार ।
इक पल पावत शांति नहिं, चिंता दुःख अपार ।। २ ।।
अबल अग्निसमान दोउ, देखि रहै न भुलाय ।
दूरि कि आंच सुहावनी, छुए तुरत जरि जाय ।। ३ ।।
जगत समुद्र अगाध है, सुख दुख भोग तरंग ।
उपजत मिटत स्वभावसे यही सनातन ढंग ।। ४ ।।
अँधियारे घरमें पवन, आवे जहां न जाय ।
भूत बसै त्यहि गेहमें, मानुष चुनि चुनि खाय ।। ५ ।।
दिवा शयन निशि जागरण, क्षुधा रहित कछु खाय ।
निश्चय उपजै रोग तन, कहत वैद्य मन लाय ।। ६ ।।
जब लग शुद्ध क्षुधा नहीं, तब लग कर उपवास ।
यही एक औषधि बडी, भाषत करि विश्वास ।। ७ ।।
मधुर वचनसों बोलिये, सुख उपजै चहुँ ओर ।
वशीकरण यह मंत्र है, तजिये वचन कठोर ।। ८ ।।
विना पथ्य औषध वृथा, समुझिलेहु बुधिधाम ।
पथ्यसहित जग नरनको, नहिं औषधसे काम ।। ९ ।।

अन्न वस्तु संयोगसे, तनमें उपजे व्याधि ।
विन विचार वरतैं जु जन, मनमें प्रगटै आधि ।। १० ।।
आधि कष्ट है चित्तका, ताको हरै विचार ।
व्याधि कष्ट है, देहका, त्यहि औषधसे टार ।। ११ ।।
मिश्रीयुत गोदुग्धमें, डारैं निर्मल नीर ।
बाढै बुद्धि विवेक वल, करै पान मतिधीर ।। १२ ।।
समय साधि भोजन करैं, समय साधि सब काम ।
यह उपाय आरोग्यहित, भाषत सब गुणधाम ।। १३ ।।
बहु विजारि दोहे लिखे, नारायण सुखकन्द ।
वरतैं नर हितकर समुझि, भोगैं परमानन्द ।। १४ ।।

महर्षियोंने प्रकृतिके गूढ रहस्यपर ध्यान देकर स्त्रीजातिकी संरक्षा और उनके सम्मानपर पूरा ध्यान दिया है. जिस प्रकार एक शरीरके दो भाग हैं एक बायां, दूसरा दाहिना; बायां निर्बल और दाहिना निसर्गत: सबल होता है. इसी प्रकार प्रकृतिके वामभागसे स्त्री और दक्षिण भागसे पुरुष हुआ है इस कारण अबला वामा, वामांगी आदि नाम स्त्रियोंके हुए । स्त्रियाँ स्वयं अपनी रक्षा आप करनेसे सर्वथा असमर्थ हैं. इस लिये आत्मरक्षार्थ पुरुषोंके आधीन रहनाही उनके लिये श्रेयस्कर है. यदि स्त्रियोंको स्वतंत्रता देदी जाय तो वे कदापि अपनी रक्षा आप नहीं कर सकतीं, किन्तु गार्हस्थ्यके सारे सुखोंका विनाश हो जायगा. संसारसे पतिव्रत सरीखा पुनीत धर्म उठकर व्यभिचारका प्रचार हो जायगा. सन्तानोत्पत्तिमें भो बाधा पडजायगी और सन्तानोंका पालन पोषण भी ठीक न होसकेगा । व्यापारादिद्वारा स्त्रियाँ विशेष रीतिसे धनोपार्जन नहीं करसकतीं और बालक जनने उपरान्त बहुतकाल पर्यन्त निर्बल रहती हैं. बालकके पालन पोषणकी चिन्तासेही उन्हें अवकाश नहीं मिल सकता है. नैतिक वा समाजिक दृष्टिसे ऐसी स्वतंत्रता तो विषके समान है जिस स्वतंत्रतासे उनको हानि पहुचै. गृहेश्वरी और गृहलक्ष्मी बनकर रहनेहीमें उनका और सबका परमहित है. वर्तमान कालमें जो कुछ सुधारकी आवश्यकता है वह केवल इतनीही है कि, उनको नैतिक और धार्मिक शिक्षा अवश्य दी जाय. गृहस्थोपयोगी आवश्यक काम सिखलाये जाँय. धातृशिक्षा और पाकविद्या भी बतलाई जाय. धार्मिक कामोंमें वे पुरुषकी गांठ जोड संगिनी बनी बनाई ही हैं. पुरुष स्त्रीका बाह्य करण है तो वे अन्त:-करण हैं. यदि शरीर है तो वे प्राण हैं. प्रकृतिने जैसा उनको कोमलांगी और स्वभावत: भीरु बनाया है वैसेही उनको गृहदेवी बनाकर शिशुपालनका सुखद काम

सौंपकर अपनी उचितज्ञताको पूर्ण पालन किया है. धर्मशास्त्रका एक एक अक्षर सामाजिक दृष्टिसे स्त्री और पुरुषोंके लिये सदा सुखप्रद है. धन्य हैं वे गृह जिनमें पतिपरायणा सती देवियाँ और एकपत्नी व्रतधारी पुरुष निवास करते हैं. संसारसुखके लिये यही एक कल्याण मार्ग है कि, दोनों दाहिने बायें अंगके समान कार्य विभाग रखते हुए एक तनु होकर रहें जिससे वे उभय लोकमें परमानन्दके भागी रहें. आगे कोका पंडितने जो देशान्तर परिभ्रमण करके देशदेशके स्त्री पुरुषोंके स्वभाव, रीति, व्यवहार और स्वरूप आदिका वर्णन किया है उसको हमने केवल मन बहलावका हेतु समझकर लिखना उचित नहीं समझा है.

दोहा–पर उपकार विचारि उर, गुरुपद शीश नवाय ।
कोका वैद्यक सार यह, लिख्यो सुअवसर पाय ।। १ ।।
त्रिनग नन्द शशि वर्ष शुभ, विक्रमाब्द शुचि मास ।
शुक्ल सप्तमी शुक्ल दिन, पूर्यो चित्त हुलास ।। २ ।।

इति श्रीमदयोध्यामण्डलान्तर्वर्तिलखीमपुरखीरीनिवासि ज्योतिर्वित्पण्डितनारायण-प्रसादमिश्रविरचिते कोकसारवैद्यकग्रन्थे उत्तरभागः समाप्तः ।।

श्री:

इंक्षागिरी-कृत

कामकलासार

वन्दना और प्रस्तावना

सो०—गणपति शरण तुम्हारि, कर जोरे वन्दन करौं ।
करिवरवदन मनाय, शिवशंकर पायन करौं ।।

दोहा—गुरुचरणनकी वंदना, करौं जुगुल कर जोरि ।
करिय अनुग्रह ज्ञानमें, शुद्ध होय मति मोरि ।।
चरणकमल श्रीशारदा, राखि हिये धरि ध्यान ।
कछु भाषामें कहत हौं, मोहिं दीजिये ज्ञान ।।
नगर सुहावन देखिये, नदी गोमती तीर ।
लाखूपुर अस नाम है, बहु धनाढ्यकी भीर ।।
राज बिसेनोंकी सदा, अचल रहत तेहि ठौर ।
जीतिलेत परभूमिको, इन तन तकै न और ।।
तेहि कुलसागर कमल ज्यों, मदारबकस सरदार ।
राज करत विक्रम मनो, सदा धर्म-आधार ।।
चतुर शील औ शूरमा, धर्म करत अधिकाय ।
परजा पालत पुत्रसों, बिना भेद चित लाय ।।
राजामें गुण बहुत हैं, मोंसे कहे न जायँ ।
शेष सहस जीभन कहैं, तऊ न कहि नियरायँ ।।

सो०—जबलग सूरज चंद, शंकर शक्ति बिराजई ।
अचल करैं महिराज, चिरंजीव तबलगु रहैं ।।

दोहा—ता लाखूपुर नगरमें, चार वर्ण शुभ धर्म ।
ब्राह्मण छत्रिय जानिये, वैश्य रु शूद्र सुकर्म ।।

सो०—धर्म आपने माहिं, सदा दास लवलीनता ।
अतिथि बसत इक ताहिं, बानारस गिरि नाम है ।।

दोहा—नाती तिनको मैं भयों, इंक्षागिरि कहि नाम ।
वेद भेद जानो नहीं, अवगुग ही को धाम ।।
नहिं विद्या पौरुष कछू, कुटिलक्रूर अज्ञान ।
शम्भु भरोसे रहत हौं, उर तिनहीको ध्यान ।।

हमरे कुल मा भूलि कोउ, भयो न पर-आधीन ।
जनै अलीदीं खानतें, मैं मुसाहबी कीन ।।
खान बहादुर कृपा कै, सादर राखै पास ।
कछु दिन याही भांतिसों, साथै रह्यो निवास ।।
खान तबै सूबा भयो, कोडा जहानाबाद * ।
तब हमको आज्ञा भई, जाहु अकबराबाद ।।
आयो आगरा बीच मैं, आज्ञा धरिकै शीश ।
डालचन्द पंडित मिले, विप्रनके गुरु ईश ।।
नौ व्याकरण बखानई, बाँचै वेद पुरान ।
सामुद्रिक संगीत अरु जोतिष, आगम ज्ञान ।।
सो हम पै किरपाल ह्वै, सदा रहत इकभाय ।
तिन भाषाको ज्ञान कछु, हमको दियो बताय ।।
और सुसंगति आगरा, कहौं कहाँ लगि मित्र !
चतुर कला परवीनता, अति ही बुद्धि पवित्र ।।
तहाँ मोहिं अति सुख मिल्यो, रह्यों बसत दिन मास ।
तब इनने खत यों लिख्यो, आओ हमरे पास ।

सो०–तब यों कियों बिचार, यारों को क्या लीजिये ।
डालचन्द समुझाय, ग्रंथ एक परगट करो ।।

दोहा–पंडित ते बहुविधि कहा, जोरि पानि जुग हत्थ ।
लघु दीरघ जानों नहीं, कहाँ मोहिं समरत्थ ।।

पंडित बोले

दोहा–जो काहू के नाम को, ग्रंथ कीजिये मित्त ।
फला अफल के भेद को, तहाँ विचारो चित्त ।।
बहुत भाँति समझायके, मोहिं दियो बहु ज्ञान ।
तब मैं मित्रन भेंट हित, कीनों ग्रंथ सुजान ।।
ता कारन रचना रची, मित्रन भेंट अनोख ।
बुद्धि भेद कछु है नहीं, बुध जन देहु न दोख ।।
कोक ग्रंथको शोधि कै, वैदक कियों विचार ।
सामुद्रिक मत कछु लिख्यों, यथाशक्ति निरधार ।।
नाम धर्‌यों या ग्रंथ को, कामकलाका सार ।
दोहा चौपइ छन्द है, रसिकन को सिंगार ।।

सो०–इक इक बात नवीन, पांच खंड यामें लहैं ।
पढ़ै याहि परवीन, स्वारथ परमारथ लहैं ।।

---

* यह स्थान जिलाफतेपुरकी पश्चिमी सीमापर स्थित है ।

दोहा–प्रथम खंड में काम को, जन्म बताऊं तेहि ।
दूजे में दम्पति कला, फिर सिंगारहिं लेहि ।।
चौथे में बन्ध्या कही, पंचये कामहिं ज्ञान ।
जबलग यह जानै नहीं, तबलग सुखकी हान ।।
सम्बत अठरहसौ कहे, औ सैंतिस आधार ।
भादौं सुदि तिथि पंचमी, भयो ग्रंथ अवतार ।।

अथ प्रथम खंड

कामका जन्म

चौ०–पुर पटना इक नगर बताऊँ । सूरसेन राजाकर नाऊं ।।
सो राजा निरसन्तति रहई । कालीकी सेवा नित करई ।।
सेवा करत बहुत दिन गयऊ । तब काली परसन कछु भयऊ
"मांगसि राज देहुँ सो तोहीं । सेये बहुत दिवसतैं मोहीं" ।।
हाथ जोरि राजा भो ठाढो । करि दंडवत वचन मुख काढो
"माता मैं अनपुत्री अहऊँ । पुत्र एक अब तोसों चहऊँ" ।।
"राजा तैं नहिं कछू विचारे । पुत्र नहीं है भाग तिहारे ।।
बिना कर्म संतति नहिं होई । कस न पचै शत ब्रह्माकोई ।।

दोहा–बिना पुरबिले भाग पुत्र न आँखिन देखिये ।
जो विधि लिख्यो सुहाग, सोई मनमें लेखिये"

चौ०–इतनी बात सुन्यो नरनाहा । नैननीर बह्यो परबाहा ।।
धीरज छूटि गये मनकेरा । जान्यो भाग फूट अब मेरा ।।
कृपावचन फिर बोलि भवानी । ,,रोवसि जनि मन धीरज आनी
सेवा बहुत दिवस तैं कीनी । जा अब इक पुत्री तोहिं दीनी,, ।।
राजा तब चरणन गिरि परेऊ । भयो निहाल मोह उर भयऊ ।।
"जा राजा अपने घरमाहीं । लियो उठाय मात धरि बाहीं ।।
जब कन्या तेरे घर होई । दीजो ताहि जो जीतै कोई ।।
मनुज रूप जीतै नहिं ताको । जो जीतै तब दीजै ताको" ।।

दोहा–कृपासिन्धुके वचन सुनि, राजा आयो धाम ।
'इंछा' चलि देवी गई, शिव शंकरके धाम ।।

शंकर बहु विधि आदर कीनो । बाईं दिशि आसन तब दीनो ।।
"कहहु बात मनकी तुम सारी । जो तुम आयहु हृदय विचारी" ।।

हाथजोरि ठाढी भइ अंबा । स्तुति करन लागि जगदंबा ।।
"जो मेरे मन बात सुहाई । कहत डराउँ कही नहिं जाई" ।।
आयसु लै देवी तब बोली । पर उपकार काज हिय खोली ।।
"सेवा भूप अपुत्री कीना । ताको मैं कन्या इक दीना ।।
आज्ञा वेगि जु देहु गुसांई । साथकी जोगिन देहुँ पठाई" ।।

सो०–"मान्यो बात तुम्हारी, मन आवै सो कीजिये ।
इक है चिन्ता प्यारि, बरै कौन नर नारि यह" ।।

दोहा–नयन मध्य तें कामको, देवी लयो निकार ।
'इंक्षा' लै आगे धर्‌यो, शंकर रहे निहार ।।

चौ०–आशिष वचन ताहिको देई । पुत्री नृपकी जीतै सोई ।।
आज्ञा शंकरकी जब भयऊ । काम सजीवरतन ह्वै गयऊ ।।
ठाढो काम कम्प तनु होई । करै दंडवत जुग कर सोई ।।
कहै सदाशिव सुनो अनंगा । जीतो पृथ्वी धरि बहुरंगा ।।
बिनती करन काम बहु लगा । रोम रोम तन हर-हित जागा ।।
"बिनती मोरा सुनहु गोसाई । मोपै पृथ्वी जीति न जाई" ।।
"पृथ्वी जाहु सुनहु हो कमाल अवतार कामको धामा ।।
राजा भोजनसेनके द्वारे । बड़ो वजीर ताहिके बारे ।।

दोहा–भोजसेनको राज हैं, पुहुपवती सुस्थान ।
कमलनयन कायथ तहाँ, है ताको परधान ।।
प्रगट होहु ता गेहमें, मानो कहा हमार ।
पृथ्वी जीतौ जाय कै, लाग्रो तनिक न बार ।।

षोडस वर्ष उमर परमाना । जोगिन इक तहँ मिलहि निदाना ।।
ताको जीति सुयशको लहेऊ । तब कछु कथा आपनी कहेऊ ।।
ताको पढ़ि क्रीड़ा जो करिहैं । ते नर सुख आनदँको लहिहैं ।।
अबहीं त्रियाजीत विधि कोऊ । जानत नाहिं कामको भेऊ * ।।
ताते जाहु करहु नहिं बेरा । रूप आपनो धरहु घनेरा,, ।।
आयसु धरो शीश तब कामा । बिदा भयो करि बहुपरनामा ।।
आशिर्वाद सदाशिव दीना । मदन पयान पुहुपवति कीना ।।
तहां जन्म मकरध्वज पायो । कमलनयनके मंदिर आयो ।।

दोहा–कमलनयनके गेहमें, काम लियो अवतार ।
देवीसों शंकर कह्यो, जोगिन लेहु हँकार ।।
जब 'इंक्षा' आज्ञा भई, शिवको शीशनवाय ।
जोगिन अपने साथकी, अम्बा लई बुलाय ।।

अथ योगिनीका अवतार

चौ०–योगिनि आयकीन्ह परनामा । "आयुसुहोय करों सोकामा"
,,पुर पटना इक नगर बताऊँ । सूर्यसेन राजाकर नाऊँ ।।
ताके गेह लेहु अवतारू । बिन संतति वह राजकुमारू ।।
पुत्री होहु जाहि तिहिकेरी । आज्ञा मान लीजिये मेरी ।।
कछू दिना बेटी ह्वै रहेऊ । फिर जोगिनकर रूप धरेऊ ।।
राजा रचैं स्वयम्बर तेरो । ता दिन तुम धरि रूप घनेरो ।।
जीतेहु तब तुम राज-समाजू । होयहु योगिनि तजिकै लाजू ।।
दोहा–जोगिनि ह्वै खप्पर लिये, सब जीतेहु नरनाह ।
जो जब तुमको जीतिहै, तासन करेहु विवाह" ।।
कालीकी आज्ञा लई, चरणन शीश नवाय ।
योगिनि तब 'इंक्षा' चली, पटना पहुँची आय ।।
राजा सूर्यसेनके गेहू । रानी कामसेतिपर नेहू ।।
सो रानी जब गर्भिणी भयेऊ । अति आनंद राउ मन करेऊ ।।
दान पुण्य विप्रनकहँ दीन्हा । कालीकी अस्तुति बहु कीना ।।
यत्न सुफल आपनकरि माना । जब आगम संतति गृह जाना ।।
हती आश हियकी सब पूजी । यहि आनँदते और न दूजी ।।
सकलराजको करि चौथाई । करि संकल्प विप्र बुलवाई ।।
नगभूषण दछिना बहु दीना । चरण धोय चरणामृत लीना ।।
आशिष वचन द्विजन बहु दीना । बीते ऐसे नवों महीना ।।
दोहा–पूरे नवयें मास में, भो कन्या–अवतार ।
राजाको सुख अतिभयो, सुखके खुले किंवार ।।
चन्द्रवदन सी दीप्तिहै, सुचि राजत सब अंग ।
दान धर्म 'इंक्षा' सकल, लै उपजी निजसंग ।।
भूप बहुत आनँदको लहेऊ । अंध चक्षु पावत जनु भयेऊ ।।
चौथो अंश राज फिर दीना । स्वस्तिवाद विप्रनसों लीना ।।
हय हाथी दीनों जो दानू । ताको कहँलगि करों बखानू ।।
आनँद भयो गेह अति भारी । गावत बहुतक मंगल नारी ।।

सारे नगर बहुत सुख भयऊ । घर घर मंगल साजत भयऊ ।।
वाजत राजदुवार बधावा । नगर निवासिन अति सुख पावा ।।
नेगी–जोगिनको बहु दीना । नगरके विप्र अजाची कीना ।।
बहुत दिवस आनँदमें गयऊ । कन्या योग्य विवाहन भयऊ ।।

दो०–वर्ष सात की जब भई, राजा कियो विचार ।
रचौं स्वयम्बर शुभ घरी, पूजौं पायँ पखार ।।
रैन समय रानी निकट, राजा कियो विचार ।
'इंक्षा' होत प्रात ही, सबसों करि निरधार ।।

चौ०–बारादरि नर बैठे जहँवाँ । सकल संतरी बैठे तहँवाँ ।।
पूँछै सबसों राउ सलाहू । "पुत्री है अब योग्य विबाहू ।।
देहु सलाह करौं मैं सोई । जामें शुभ कारज यह होई" ।।
हाथ जोरि मंत्री भो ठाढो । मंत्र वचन सबही मुख काढो ।।
"भली बात तुम राउ विचारे । यहै रहै प्रभु हृदय हमारे ।।
विप्र बोलाय लगन शुभ साधौ । शुभ साइत कारज अवराधौ
याते नीक बात नहिं कोई । कन्या चरन पूजिये सोई" ।।
मत करि राजा विप्र बोलायो । सुभग स्वयंबर–लगन धरायो

दोहा–पंडित सब मिल बैठिकै, लगन गनी चित लाय ।
'इंक्षा' शुभ साइत लबै, राजै दई बताय ।।

पत्रिनमें साइति लिखि राऊ । देश देशके भूप बोलाऊ ।।
पाती विप्रन लीन उठाई । सब भूपनसों जाय सुनाई ।।
सुनि सुनि राजा हर्ष मनावैं । देवी पित्तर देव मनावैं ।।
अस कछु होय कि सुता भुआला । हमरे गर डारै जयमाला
इक इक साइत वर्ष बितावैं । अस कब होय कि वह दिन आवैं
ज्यों ज्यों दिन नेरे करि पावैं । त्यों त्यों सब सिंगार बनावैं ।।
इहाँ राउ सब सामा करई । लोकरीति वेदन उच्चरई ।।
दिवस स्वयंबर जब नियराना । सब भूपन मिलि कीन पयाना ।।

दोहा–यज्ञ दिवस इक रहत ही, भूपति पहुँचे आय ।
सूर्यसेन राजा तबै, डेरे दियो बताय ।।
यथा उचित सबको भयो, आदर औ सन्मान ।
'इंक्षा' आनँद में गई, रजनी भयो विहान ।।

चौ०–हरे बांस मांडवकी शोभा । देखे मुनि देवन मन लोभा ।।
यज्ञ भूंमि बहुभाँति बनावा । राजा मोतिन चौक पुरावा ।।

मोतिन झालर माँडौ बना । मानौ दृश्य इन्द्रसिरतना ।।
भाँति भाँतिके रतन लगाये । कंचन खम्भा बहुत बनाये
भूमि छिरक चंदनसों कीनी । माँडौतर शोभा अतिकीनी
चौक पुरायकलसधरिदीना । दीपकज्योतिबहुत विधिकीना
मणिसों जटिल सकल है सोऊ । उपमा ताकि न पावै कोऊ ।।
बरसै पुहुप मालिनी ठाढी । अति शोभा माँडव तरबाढी ।।

दोहा–सब विधि माँडों छाय कै, दीनीचौक पुराय ।
जनु शोभा बैकुण्ठकी, तहाँ बिराजी आय ।।
नारी मंगल गावहीं, पंडित वेद सुनाय ।
'इंक्षा' तब राजा कही, लावो भूप बोलाय ।।

चौ०–आयसु पाय भूपको लोगू । चले बोलावन जो जहि योगू ।।
जाय शीश भूपनको नावा । करौ कृपा अब राउ बोलावा ।।
करि सिंगार चले नृप तहँवा । रंगभूमि विरची है जहँवा ।।
इकते इक हैं महा अनूपा । मानहु विदित कामके रूपा ।।
चलिकै नृप आये तेहि ठाई । जहाँ राउ बैठे हैं आई ।।
उठि कैं राउ भयो तब ठाढ़े । रामजोहार सबहिं मुख काढ़े
मिलन कीन सबहीसों राजा । यज्ञ भूमि चले सहित समाजा ।
बैठो सबको लै नरनाहू । यथा–उचित आसन सबकाहू ।।

दोहा–देवलोकसों देवता, गें देखनको जज्ञ ।
दुर्गा देवी देव सब, आइ गये सर्वज्ञ ।।
'इंक्षा' सखी बोलाइकैं, भूप कह्यो समुझाय ।
सकल सिंगार करायकैं, कन्या लेव बोलाय ।।

चौ०–सहचरी राजमहलमें जाई । रानीते नृत बात जनाई ।।
"पुत्रीको अब यज्ञ बोलावैं । ताते अब हम आज्ञा पावैं" ।।
कह रानी "सुनु सखी सयानी । बहुत नीकजो राउ बखानी ।।
कन्याको सिंगार कराओ । तब लै राजसमाज दिखाओ" ।।
तब चलि सखी कन्यापहँ आई । प्रथमैं सकल स्नान कराई ।।
फिर सोलह सिंगार कराये । बारह आभूषण पहिराये ।।
कमल बरन झलकै जो काया । मानहु विधि निज हाथ बनाया ।।
शोभा जाकी नहिं कहि जावै । को कवि कहै बुद्धिकहँ पावै ।।

दोहा–कुन्दनरंग फिकाइ, देखत गोरे बदनके ।
मीन छिप्यो जल जाइ, चंचल नैन निहारिकै ।।

चौ०–ऐसे बदन कीन सिंगारा । दीपति फैल गई संसारा ।।
मानहु चंद उदित ह्वै आयहु । ताके कर जयमाल सुहायहु ।।
आगेकरि कन्याको लीना । पाछू भईं सब सखी प्रबीना ।।
गावैं मंगल मोद उछाहू । कन्या रूप बढो परबाहू ।।
गान करत लै चलीं सहेली । इकते एक बहुत अलबेली ।।
वर्षा कुसुम चहूंदिशि होई । गूँजैं भ्रमरजूथ तहँ सोई ।।
देखि मात हिय भयो सुखारी । भये अजाची भाट भिखारी ।।
न्योछावर मुक्तामणि कीन्हों । जिन पायो ताहाँ तिन लीन्हों

दोहा–सकल सखी मिलि ल्याइकै, ठाढ़ि कीन जहँ भूप ।
शीश अरध सब करि लियो, देखि कन्यका रूप ।।
शशी अंग कन्या उदय, कमल वरण हैं भूप ।
देखत ही सम्पुट सबै, 'इंक्षा' चन्द्र–स्वरूप ।।

चौ०–खलित काम सबको ह्वै गयऊ । पुरुष रूप कोऊ नहिं रहेऊ ।।
शिथिल अंक कम्पन अति होई । सन्मुख देखि सकै नहिं कोई ।।
कोउ सहचरिको रूप दिखावै । कोऊ लागि कान बतरावै ।।
तबजिय खोलि कन्यका बोली । भरि सुगन्ध पवन जिमिडोली
"सुनहु सखी अचरज अस होई । इनमें पुरुष अहै नहिं कोई
जो देखौं सो त्रिया सामाना । मेलि माल पाछू पछताना ।"
चुप ह्वै रही सखी सुनि बाता । मनमें कह का करत विधाता ।।
कन्या कहै सबन मुख जोही । अस कोउ है जीते जो मोही ।।

दोहा–'इंक्षा' भूपन हेरिकै, बोली बोल सुनाय ।
अब जो जीतै मोहिको, माला तेहि पहिराय" ।।

चौ०–सुनिकै बचन धीर नहिं धरहीं । आपुसमें मसलहतें करहीं
ऐसो रूप लखो नहिं भाई । मानो इन्द्र अप्सरा आई ।।
जाको हाल देखि भये जैसे । मुखसों कहा जात नहिं तैसे ।।
फिर राजनते पुत्री बोली । "मुखसों ज्वाब देहु वच खोली" ।।
हाथ जोरि भूपति भये ठाढे । वचन अधीन दीन मुख काढ़े ।।
"हमें नाहिं सामर्थ भवानी । त्रियाजीत विधि हम नहिं जानी ।।
हम हारे जीती तुम नारी" । तब कन्या दिशि पितहिं निहारी ।।
आज्ञा मोहिं पितहिं जो होई । ढूँढों पुरुष आपनो सोई ।।

दोहा–वचन कन्यका सुनतही, राजा भये अधीर ।
सोच बहुत हिरदै भयो, लोचन बहि चल नीर ।।

रोवत ही नरनाहके, सखियन करी पुकार ।
रानी अति मद्यौ कियो, काह भयो करतार ।।

चौ. पुत्रीकहै " सुनो पितु माता । होइहि सोइ जो लिखा विधाता
करम अंक मेटो नहिं जाई । जो शत ब्रह्मा होय सहाई ।।
जन्मको साथी सब कोइ होई । करमको साथी है नहिं कोई ।।
ताते अब आयसु देहु मोहीं । पति आपन ढूंढौं मैं सोहीं" ।।
माता रोइ रोइ करै चिरौरी । पुत्री कहा कहति है बौरी ।।
बहुत भांति सब मिलि समुझावै । एकौ बात न मनमें आवै ।।
जोगिन रूप धरो तत्काला । नगन भई अति भेष कराला ।।
राज रंक सब देखत रहेऊ । काहू कछू वचन नहिं कहेऊ ।।

दोहा–कन्या जोगिनि भेष धरि, गृहसों कियो पयान ।।
राजा रानी सोच बड़ा, धर पुत्रीको ध्यान ।।
'इंक्षा' आतम शोकको, सो जानै जिहि होय ।।
देखनवाले दुइ घरी, लियो सबन मिलि रोय ।।

चौ० राजा गेह भयो दुख भारी । खानपान बिसरी सुधि सारी ।।
दुख वर्णन मैं कहा बताऊँ । हृदय कठोर कहाँ अति पाऊँ ।।
जहाँ सुक्ख दुख तहँवाँ होई । सुक्ख देखि भूलै जनि कोई ।।
भूपन कूच नगार बजाये । जितने तलक स्वयम्बर आये ।।
जोगिन छूरी खप्पर लीना । नगन भेष आपन तब कीना ।।
फिरै देश देशनमें जाई । रूप महा विकराल बनाई ।।
जीते देश नेशके राऊ । नर जीते जहँ लग जग गाऊं ।।
बहुत दिवस यहि भाँति बिताई । चलि जोगिन पुहुपावति आई ।।

दोहा–भोरसेनके नगरमें, जोगिन पहुँची आय ।
जहाँ भूप बैठे सभा, ठाढ भई तहँ जाय ।
खप्पर छूरी हाथमें, नगन रूप विकराल ।
नपुंसता सबने लही, 'इंक्षा' सहित भुवाल ।।

चौ०–मुरछावंत भयो दरबारा । पलक एकमें राउ संभारा ।।
जब मुरछासे राजा जाग्यो । गाढो मनकरि पूछन लाग्यो ।।
"की तैं सुरी किन्नरी कोई । नागकन्यका रम्भा सोई ।।
देवी है की दानव नारी । स्त्री रूप जु आपन धारी" ।।
"इनमें गज एक नहिं होई । सूर्यसेनकी पुत्री सोई" ।।

बोले वचन फेरि तब राजा। "जोगिन रूपधरेहु केहु काजा"
"पृथ्वीको जानौं मैं लोई। स्त्री रूप अहै सकोई ॥
कहौं भूप तुम सुनो विशेषा। पुरुष कोउ प्रबलन नाँहि देखा ॥
दोहा–जीतै पुरुष मोंहिको, करै काम-संग्राम।
दासी ह्वैके मैं सदा, रहौं तासुके धाम ॥"
चौ०–सुनिके बात कुचित भे राऊ। मन विस्मय का करिय उपाऊ ॥
तब राजा मुख वचन उचारे। "तीन सौ साठ वजीर हमारे ॥
तिनतें पूँछि लखौं मैं नारी। फिर तुमते है बात हमारी ॥
अच्छा कहो नरनको राई। डेरा हमको देहु बताई,, ॥
सुनिकै किंकर राउ बोलाया। तिन जोगिनको डेरा बताया ॥
साज रसोईको भिजवायो। तब राजा मंदिर बिच आयो ॥
राजा गह सहस हैं नारी। इकते इक हैं प्रेम पियारी ॥
बैठो आइजहाँ नरनाहा। आइ गई नारी सब ताहां ॥
दोहा–नरपति सबको देखिकै, ऊँची लई उसांस।
उनमें जो चातुर सखी, बोली बचन मिठास ॥
चौ०–,कहौ नाह कुचितं बहु अहहू। मनकी बात आपनी कहहू,
कहै "नाह अचरज बड़भारी। जोगिन रूप आय इकनारी ॥
पूरण चंद्र पद्मिनी काया। नैन देखि मृग मीन लजाया ॥
है उर्वसी कि देवननारी। लई रूप जोगिन बिस्तारी ॥
सूर्यसेनकी पुत्रि बतावै। पुरुष सकल सो नारि गिनावै ॥
काम-युद्ध जीतै जो घेरी। सो पूरुष ताकी हम चेरी ॥
सुनिकै मोंहि भयो सन्देहू। पुरुष होय जो जीतै एहू" ॥
सखी कहै "चिन्ता जनि कीजै। देशन ग्रामन डोंडी दीजै ॥
दोहा–तीनसौ साठ वजीर हैं, प्रभू तुम्हारे द्वार।
टका कोटि सौ खात हैं, तिनसों करो विचार" ॥
भूपति मन्दिर मध्यमें, निशा कियो निघार।
'हंसा' होतै प्रातही, आय कियो दरबार ॥
चौ०–परिखानेमें आयो राई। तुरत जोगिनी दियो दिखाई ॥
"देखौं वजीर तोर अहैंकहाँ। कौन पुरुष है तिनमें तहाँ ॥
बहुत राउ राजा मैं जीते। कई वर्ष मोंहि यहि विधि बीते ॥
तातें बेगि वजीर दिखाओ। नाँहि हारको बचन सुनाओ" ॥
भूप कहै "तुम सुनो भवानी। एक वृद्ध बिनकी हो परवानी ॥

ता पाछू बजीर खलैहौं । तुमसों बचन सत्य करि पैहौं,, ।।
बहुत भाँति बचनन समझाई । जोगिनहिं राजा डेरे पठाई ।।
राजा तबै वजीर बोलायो । नगर देशमें डोंडी फिरायो ।।

दोहा–जोगिन को जो जीतई, ताको करौं वजीर ।
'इंक्षा' सुनिकै बात यह, चुप रहि गे मतिधीर ।।

चौ०–केहु जवाब कछू नहिं दीना । राजा मन चिंता बहु कीना ।।
तब सुनि बात कोककी नारी । गृहसों उठि रनिवास पधारी ।।
बैठी जाइ मध्य रनिवासा । वात चलत तब बात प्रकासा ।।
"बड़े वजीर राउके जेऊ । जीत्ति दिखैहैं जोगिनि तेऊ ।।
त्रियाभेद वे सब विधि जानैं । नरनारी लक्षण पहिचानैं ।।
तिन्हैं बुलाइ राउ कहि देई । जोगिनि जीति छिनकमें लेई ।।
रानी कहि गृह अपने गयऊ । राजा तब गृह आवत भयऊ ।।
राजा मनमें करैं बिचारा । बड़ि रानी तब बात निकारा ।।

दोहा–"बन्दी खाने रहत हैं, कोकदेव जेहि नाउँ ।
स्वामी लिहैं बुलाइ कै, सकल कहौ समुझाउँ ।।
तिरिया गुण औ दोषको, कामकला परबीन ।
निश्चय 'इंक्षा' करैंगे, जोगिनको आधीन" ।।

चौ०–सुनत बात राजहिं सुधि आई । ,साँच कही प्रिय बात सुनाई
त्रियाचरित्र कोक सब जानैं । चौंसठ कलाभेद पहिचानैं, ।।
तब चलि राउ कचेहरी आयउ । सकल सभा उठि शीश नवायउ
बैठे राउ कचेहरी जाई । तब सब मंत्रिन लीन बुलाई ।।
"कहौ काह अब करैं उपाऊ । सब मंत्रिन मोंहि मंत्र बताऊ ।।
नरपपिते मंत्री सब कहई । सबतें चतुर कोक इक अहई ।।
तिन्हैं बंदिते लेहु बोलाई । सकल कथा यह ताहि सुनाई ।।
जो कछु कोकदेव बतलावैं । सोइ महाराज करनमें आवैं" ।।

दोहा–कोकदेव को राउने, तुरतै लियो बुलाय ।
आदर औ सन्मानसों, पास दियो बैठाय ।।

चौ०–,कोकदेव ! अचरज है भारी । जोगिरूप आय इकनारी
कहै राजकन्या मैं आही । जीतै मोंहि बरौं मैं ताही ।।
जीते देश देशके राऊ । तुम हू हारे बचन सुनाऊ ।।
ताते तब मैं वादा कीना । डेरा बताय रहनको दीना ।।

ताको कोकदेव ! तुम जीतो । तुमते चतुर और नहिं चीतो ।।
कोकदेव तब उठि भे ठाढ़े । दोउ करजोरि वचन मुख काढ़ो ।।
बंदीखाने फेरि न जाऊँ । आठ रोज कर वादौ पाऊँ ।।
अरु सब सामा देहु मँगाई । तब हम जोगिनि जीति देखाई,

दोहा—कोकदेवके बचन सुनि, सिरोपाउ पहिराय ।
'इंक्षा' राजै तुरतही, बँदिते दियो छुड़ाय ।।
किरपा करि राजा कही, "कोकदेव ! सुनि लेहु ।
कोटि पंच जो तुम टका, खाये सो नहिं देहु" ।।

चौ०—कोटि पंच टक और दिवाये । अरु जोगिनको बोलि पठाये ।।
जोगिनो आइ ठाढ़ि भई जहाँ । बैठे राउ कोक बुध जहाँ ।।
राजा कहै "सुनो हो नारी । जो कुछ अब हम हृदय बिचारी ।।
कोकदेव जीतैंगे तोहीं । वादा आठ दिवसते ओही ।।
कोकदेवको त्रिया निहारी । जान्यो पुरुष विचक्षण भारी ।।
कोकदेव जोगिनसे बोला । "अस निरधारौ नैन बिलोला ।।
अष्ट दिवस पीछू हम कहबै । तुम्हरी कृपा जीतिको लहबै" ।।
जोगिनि चलि डेराको गयऊ । भूपति कोकदेवसों कहेऊ ।।

दोहा—"कोकदेव घर जाइकै, सब विधि होउ तयार ।
जोगिनिको जब जीतिहौ, आधी राज तुम्हार" ।।

चौ०—आज्ञा भइ भूपतिकी जबहीं । शीश नवाइ चले वे तबहीं ।।
कोकदेव मंदिरमें आये। तेल फुलेल शरीर लगाये।
काया पोषण सबविधि करई । काम–युद्धते जा विधि लरई ।।
चितसारी बहु भाँति बनावा । कुंकुम चंदनते छिरकावा ।।
अगणित भाँति कचेहरी आनी । लै ताखनपर धरी वितानी ।।
तिथि पदमिनिको जा दिन पाई । बहु बिधि ता दिन सेज बनाई ।।
पँचरंग वस्तर सकल मँगाये । सो लै कंचन पलंग डसाये ।।
तापर झीन पिछौरा डासा । बहुबिधि श्वेत फूलको बासा ।।

दोहा—फूलन सेज बनायकै, छिरको अतर फुलेल ।
तापर गेंदा लै धरचो, अति कोमल अनमेल ।।
दीप्रक बहुपरकारके, दिये सेजके पास ।
'इंक्षा' अति शोभा भई, छाई खास सुवाह ।।

चौ०—श्वेत अरुण बहु कुसुम सुहाये । तिनके निजकर हार बनाये
नागबेल कुंकुमके नीरा । धोय बनाय लगायो बीरा ।।

लौंग कपूर इलाची आनी । बिरी बनाय जयित्री जानी ।।
पाटि बिछौना सब गृह कीना । सम्भन लाइ अरगजा दीना ।।
चोवा चंदन मृगमद आनी । अगर मिलाय धूप तहँ ठानी ।।
महको गृह अति भयो सुवासा । मनहु अहै यह इन्द्र–निवासा ।।
यहाँ सकल जब साज बनाये । जाय राउको माथ नवाये ।।
"जोगिन आज भेजो नरनाहा" । इतनी कहि आये घरमाँहा ।।

दोहा–कोकदेव सिंगार करि, बैठो सेज सँवारि ।
'इंक्षा' सुर औ देवता, मोहे सकल निहारि ।।
"जोगिनि एउ बोलाइकै, कही सकल समुझाइ ।
जाहु कोकके गेहमें पठयो तुम्हें बोलाइ ।।"

चौ०–जबहीबात जोगिन यह सुनेऊ । चलिकै कोकमँदिरमेंगयेऊ
कोकदेव जहँ सेज बनाई । चलिकै जोगिनि तहँ पै आई।।
आदर बहुत कोकदेव कीना । आगे ह्वै जोगिनिको लीना ।।
कर गहि बाम बाम कर लीना। लै बैठाय पलँगपर दीना ।।
मलयज अतर देहमें लाये । कुसुम धरे लै शीश सुहाये ।।
पुहुपमाल ग्रीवा पहिराई । बीरा लै निज हाथ खवाई ।।
बेनीमूल गही कर जबहीं । जोगिनि बचन उचारे तबहीं ।।
"सोचहु कछुतुम चिन्त हमारी । जौमैं पूँछन चित्तबिचारी

दोहा–नरदेही तुम पायकै, काहे कोक कहाय ।
'इंक्षा' सो अब मोहिंको, दीजै यही बताय ।।"

सो०–कोक कही गहि बाँहि, "यह मत पूँछौ मोहिते ।
कहन जोग यह नाँहि, और सबै मैं कहौंगे ।।"

चौ०–फिर पूँछयो जोगिनि लघु होई । कोकदेव टारा दै गोई ।।
करसों गह्यो अंग इकबारा । झटकि दियो करि कोप अपारा ।।
"एक बात मैं पूछयों तोहीं । अब जनि हाथ लगावहु मोहीं ।।
लघु अस बातन मोहिं बतावा । प्रीति निकास निकससब आवा ।।
भलि भलि कोकदेव समुझावें । एकौ बात न मनमें आवैं ।।
ज्यों ज्यों मान करै यह बामा । जाग्यो देह कोकके कामा
काम वश्य कोकामें जबही । लागे कहन कथा निज तबहीं
"सुन जोगिनि ! मैं नर नहिं अहऊँ । कामदेव अवतारी भयऊँ

दोहा–एक दिना कैलासमें, शिवको व्याप्यो जाय ।
क्रोधवंत अति होयकै, दीनी श्राप सुनाय ।।

कह्यो जाय मृतलोकमें, परगट कुल विस्तार ।
तेहि कारण आवन भयो, कायथ कुल अवतार ।।

चौ०–चौदह विद्या मैं पढ़ि लीना । चौंसठ कला भयों परबीना ।
एक दिवस कछु कीन सिंगारा । आपन रूप सकल मैं धारा
देवलोकसों देव सिधाये । देखत मोंहि बहुत सुख पाये ।।
जब उठि चले आपने धामा । कोकदेव कहिगें मम नामा ।।
तबते कहैं कोकदेव लोगा । शिव सराप नर ह्वै हम भोगा ।।
एक दिन राजहिं मोंहि बोलावा । आदर करि नियरे बैठावा
सिरोपाउ भूपति मोंहि दीन्हा । तब वजीर सबसों बड़ कीन्हा
यहि बिधि रह्यों राउके पासा । बीते बहु दिन भोग बिलासा

दोहा–कारण मेरे नामका, सुन जोगिनि धरि ध्यान ।
अबलगि काहू ना सुन्यो, तोसों कह्यो निदान ।।"

चौ०–जोगिनी कह्यो "सुनो हो देवा । चिन्ता पाई सुनकै भेवा"
जोगिनि उठि बहु स्तुति कीना । बिनती करि परिदक्षिण लीना
कोकदेव तब उठि गहि लीना । आइ डारि पलंगा पर दीना
हाँसी तरक बहुत विधि करही । बीरी लाइ अधरमें धरहीं
आलिंगन कीने बहुभाँती । चुम्बन कियो लगायो छाती ।।
नाना विधि खंडन विस्तारे । मानहु मदन तानि शर मारे ।।
कामबास बहु विधि सहरावा । तुरतै मदन जागि तब आवा
जान्यो कोक काम तिय जागा । सुरति रीति करने तब लागा

दोहा–कामेश्वर गोली लई, जबहीं असर जनाय ।
कोकदेव तब जोगिनी, रहिगें कण्ठ लगाय ।।

चौ०–चौरासी आसन जब कीना । काम विकल कामिनि तब कीना
छूटचो काम न रह्यो सम्हारा । कटिसों चिपटि गई तब दारा
शिथिल अंग कछु रह्यो न चेता । मदन द्रवत तिय भई अचेता
बिजना कीन कोक तव जागी । अश्रु पात करने बहु लागी ।।
कोक कहेउ कारण का भयऊ । सुखमें दुःख दिखावन भयऊ ।।
जोगिनि कह्यो सुनो हो नाहा । कामसिन्धुते कढचो प्रवाहा ।।
महाकालि देवीके पासा । रहै सर्वदा मोर निवासा ।।
अब तुम मोंहि दीन रतिदाना । कालीकी बानी सच जाना ।।
सत्त मोर अब रह्यो विधाता । रह्यो सत्त पिय पितु औ माता

दोहा–सत्त धर्म औ शील सुख, रह्यो अवनिमें आय ।
काम–सिन्धुते तरि गई, तुम सों भर्ता पाय ।।

चौ०–मैं अबला हौं बहु अज्ञाना । पक्ष तुम्हारा गह्यो निदाना
जो तुम मोहि राउको देहौ । प्राण मोर तबही तुम लेहौ ।।
रसना रदन काटिकै मरिहौं । तुमको त्यागि घरी नहिं जीहौं
प्राणनतें तुम अधिक पियारे । चरण लाइ ना करो बिछारे ।।
तुम स्वामी मैं चेरि तुम्हारी । चरणकमल सुख लहौं निहारी
पूरब जन्म लिख्यो जो कर्ता । तब मैं नारि भई तुम भर्ता ।।
कहै कोक सुनु परम पियारी । "तुमका अपने चित्त बिचारी
अस कहँ तीन लोकमें भयऊ । आपनि नारि औरको दयऊ ।।

दोहा–सूर शंक नहिं मानहीं, गही खड्ग जो हाथ ।
लग्यो नेह जो सुजनसों, प्राण प्रीतिके साथ ।।

सो०–सुननेह अस जान, मछली ज्यों पानी चहै ।
बिछुरत देवै प्रान, तऊ नीरकी चटपटी ।"

चौ०–इतनी सुनिजोगिनिसुखपायो । रहसिरहसिपिय कंठ लगायो
दोऊ करैं कोलाहल सेजा । राजा दूत तहाँ इक भेजा ।।
तैं जा सहज भावकी रीती । कोकदेव धौं जोगिनि जीती
दूत जाय राजासों भाखा । जीत्यो कोक भवानी साखा
कहिकै दूत दुवारे गयऊ । राजा मन आनंदित भयऊ ।।
प्रातःकाल कोकजी आये । आय राउकहँ शीश नवाये ।।
पूछो नृप जोगिनि तुम जीती । "प्रभू-कृपा जोगिनि हम जीती
शिरोपाउ राजा मँगवावा । सो निजकर लै कोक ओढावा

सो०–सिरोपाउ पहिराय, धन्यवाद बहु बार दै ।
कागद कलम मँगाय, आधी पृथ्वी लिख दई ।।

चौ०–पुनि इक दूत भेज महराजा । जोगिनि लाउ बुलाय समाजा
चलिकै दूत जोगिनिपहँ गयऊ । राज-संदेशा कहि सब दयऊ ।।
जोगिनि कह्यो सुनो रे भाई । मोहिते सभा आय नहिं जाई
फिरिकै दूत राजपहँ आवा । सकुचत ताकी बात सुनावा ।।
तब फिरि कह्यो राउ "जादूता । मैं हौं पिता मोरि वह पूता"
लाउ लिवाइ तहाँ पुनि जाई । कहु आवै कन्याकी नाँई ।।

जाय दूत बहु विधि समझावा । चलौ तुम्हैं महराज बुलावा
चली जोगिनी धरि बहु धीरा । डूबी जाति सकुचके नीरा

सो०—नखशिख ओढे पाट, वह चलि राजापै गई ।
अलसानो अति गात, वचन शुद्ध नहिं उच्चरैं ।।

दोहा—मनसा वाचा कर्मणा, तिय चाहति हैं भोग ।
बिनु पूरुषकी कामिनी, भूषण जानति रोग ।।

चौ.—चलिकै त्रिया राउपै गयऊ । महा सकुच ठाढी तब भयऊ
कन्या कहि बोले नर राऊ । पुत्री ! अब मोहि बात सुनाऊ
तबजोगिनि कहसकुचित सुरीति।हां महराज ! मोहिं इन जीती
कोकदेव नहिं नर हैं राई । बडे देव मैं तोहिं बताई ।।
क़ामदेवको हैं अवतारू । मनुजरूप नहिं इन्हें निहारू ।।
तुम हौ राज बडे भगमाना । जिनके द्वारे अस परधाना ।।
जो कछु मनमें संयश होई । पूँछौ इन्हैं बतावैं सोई ।।
नारायण–देवन–गति जानैं । भक्ति चरित्र सकल पहिचानैं

दोहा—जो कछु पुंछा चाहिये, पुंछौ कोक बुलाय ।
तीन-लोकको बात सब, 'इंक्षा' देहिं बताय ।।

चौ०—सुनिकै राजा भयो अनंदा । मानहु कुमुद देखिकै चन्दा
मन वच क्रम पुत्री कहि राई । कोकसहित तब गेह पठाई ।।
तब फिर राउ गेह निज आये । भोर होत बहु विप्र बोलाये
शुभ शाइति पूँछी नरनाहू । कोक-जोगिनिको भयो विवाहू
जोगिनि दुःख गयो तब भागी । सुखक्रीड़ा आनँद-रस पागी
राजा आनँदमें बहु रहई । इक दिन वचन कोकसों कहई ।।
तियचरित्र कछू मोहिं पढ़ाओ । दैकर ज्ञान, अज्ञान भगाओ
जो कछु त्रिया-पुरुषकी बाता । सकल पढ़ाओ सो मोहिं ताता

दोहा—लगे पढ़ावन राउको, सकल कथा समुझाय ।
गुण औगुण जीवन मरण, वैदक दई बताय ।।
कह्यो कोक भूपालसों, याहि पढ़ै जो कोय ।
सो पूरुष संसारमें, मोहिं समान बुध होय ।।

अथ द्वितीय खंड

स्त्री और पुरुषका वर्णन

चार प्रकारके पुरुष

सो०—प्रथम शशा पहिचान, दूजो मृग बखानिये ।
तीजो वृषभ बखान, चौथ तुरंगम जानिये ।।

शशा पुरुषका लक्षण

अरिल्ल—कोमल मूरति अंग वचन, कोमल हैं जाके ।
बंकट भाह विशाल, लाज नैनन है ताके ।।
चतुर कलान-प्रवीन, शील बहु अंग विराजै ।
थोरी निद्रा भूख, भोग थोरो चित राजै ।।

चौ०—रूपवंत गुणवंत कहावै । चतुर विनोदी राग सुहावै ।।
अर्थ राग वेदनहिं जनावै । रोष नहीं कामिनि मन आवै ।।

मृग—पुरुषका लक्षण

सो०—अति लघु अति न विशाल, मध्यम अंग विचारिये ।
चपल बुद्धि सब काल, मन नहिं कबहूँ थिर रहै ।।
मधु भोजन अति रूप, प्रिय वाणी बोलै सदा ।
गायन-ज्ञान अनूप, गति बहु चपल सुहावनी ।।
बुद्धि बहुत गम्भीर, साधु सुभाये देखिये ।।
हँ—मुख कनक—शरीर, ,इंक्षा, से ही लेखिये ।।
मृग नायक सो जान, मृग लक्षण बहु अंग है ।
चंचल चित्त महान, प्रेम-वशी सदई रहै ।।

वृषभ पुरुषका लक्षण

चौ०—वृषभ पुरुष भारी बहु होई । उदर भुजा भारी अति सोई
जंघा थूल होय जेहिकेरी । गति गयंद मानहु कहि मेरी ।।
बलवंता गर्वित बहु होई । विषम वचन बोलै अति सोई ।।
चित-कपटी निजस्वारथकर्ता । व्यभिचारी चित लाज न धर्ता

सो०—अति भोजन अति मान, बहुत विरोधी होय मनु ।
दुखसुख एक समान, कामी करनी दोषयुत ।।

दाता क्रूर कठोर, नहिं कछु जानत केलि-रस ।
दीरघ अंग अथोर, रहै बहुत रूखे बदन ।।

तुरंग पुरुषका लक्षण

चौ०—दीरघ तन स्थूल विचारौ । कै भोजन कै नींद निहारौ
अंग अंग विपरीत बताई । दशन देखि जेहि अति डर पाई
हियमें लाज भूलि नहिं जानै । रस क्रीड़ा नियरे नहिं आनै
बरियाई रति करै बढंगा । डारि रहै मनु द्रवै अनंगा ।।

सो०—सुरति अंग मुरझाय, जुआ हारि जनु बैठ है ।
थोरे माँहि रिसाय, शंक न जियमें कछु करै ।।

चौ.—तनदीरघ दीरघजेहि चरणा । नखशिखअंगदीरघजेहिबरणा
चिबुक थूल जुग नैन विशाला । अवलम्बित बहु चलै उताला
जंघ चरण जेहि कुटिल बताऊँ । काम चतुर रुचि बचन सुनाऊँ
चञ्चल मन नारी नहिं भावै । ,इंक्षा, लक्षण तुरँग बतावै ।।

अथ इंद्रिय वर्णन

चौ०—अंगुल चार शशाकी जानौ । सप्तांगुल मृगकी पहिचानौ
नौ अंगुल बिरषभकी कही । द्वादस ,इंक्षा, तुरगम सही ।।

सो०—,इंक्षा, पुरुष सुनाय, त्रिया चार तैसी कहै ।।
काम रु तृप्ति बुझाय, दोनोंको रति सुख लहै ।।

चौ०—चार जात पूरुषकी जैसी । त्रिया बताऊँ चारौं तैसी ।।
नखशिख शोभा अंग बताऊँ । जुदे जुदे चारौं गुन गाऊँ ।।

चार जातिकी स्त्रीका वर्णन

दोहा—पदमिनी, चित्रिनी, हस्तिनी, और संखिनी जान ।
नखशिख शोभा अंगकी, 'इंक्षा' करत बखान ।।

पद्मिनीका लक्षण

कुंड०—नहिं ऊँची नहिं नीच अति, नहिं पातरि नहिं मोटि ।
अंगबास निशि दिन रहै, गुञ्जत मधुकर कोटि ।।
गुञ्ज मधुकर कोटि, अंक कोमल अति जानौ ।
इन्दुमुखी मृगनैनि, वरण जेहि पदुम बखानौ ।।
कह ,इंक्षा, मति-धीर, बार लम्बे घुँघरारैं ।
दाडिम दशन बिराज, भुजा कञ्चनकी डारैं ।।

सो०–चाल हंसके ढंग, चितवनि अम्मृतवृष्टिसम ।
कुच नारंगी रंग, अति ही सुभग बखानिये ।।

दोहा–नाभि गँभीरी कुच कठिन, सूक्षम काया जानु ।
भूख अल्प वाणी अलप, काम अल्प पहिचानु ।।

अरिल्ल–खीर खांड आहार पान, कूचन चित राखै ।
श्वेत वसन सिंगार, कण्ठ कोकिल सम भाखै ।।
श्वेत पुष्पको हार, श्वेत वस्तु मन राजै ।
बोलनि हँसनि अमोल, हंसनारी गति लाजै ।।

चौ०–चलै नारि धरती पगु डारी । पदम–रेख ता बीच निहारी ।
आपन पुरुष पुरुष करि जानै । और पुरुष सब पितु करि मानै
अपने पतिकी सेवा करै । की देवी–पूजा चित धरै ।।
सेवा करै गुरू जन केरी । सासु ससुरकी होहै चेरी ।।
नित प्रति करति रहै सिंगारा । चौसठ कला हियेमें धारा ।
सोवति जागि परै जो नारी । नैन दृष्टि अमृत बिस्तारी ।।
चितवनि एक पहर लौं दीजै । ता पाछे संभोग करीजै ।।
पुहुप–सुबास पसीना आवै । कमलबास कामिनि जल द्रावै ।।

दोहा–कीर तुण्ड नासा तरुणि, कर पल्लव कटि लीन ।
अधर अरुण ता नारिके, 'इंक्षा' कवि कहि दीन ।।
सुघरि कलाई श्याम कच, श्याम बहुत तिल होई ।
श्याम पुतरि सुकुमारि अति, श्वेतखंडसों जोइ ।।

चौ.–कुचमुख श्याम देखि मन मोहै । भौंह कमान बान ज्यों सोहै
अन्तरज़ामी पियके जियकी । मानो गिरह चाह सब घरकी
बानी वेद शुद्ध मन गावै । अपने पिय के मनमें भावै ।
बिना अर्थ कछु बात न बोलै । पुष्पसुगन्ध बचन मुख खोलै ।।

दोहा–बहुत भाँति ते पद्मिनी, होति विचक्षण नारि ।
बरणी मतिपरमान मैं, ग्रन्थन सकल निहारि ।

चित्रिणीका लक्षण

सवैया–ऊँच न नीच बढै घटि अंगन सोहति है मनु चित्र बनाई
छाती बडी कटि छीन बिराजति दंत दिखे दाडिम दरकाई ।।
शोणित बुन्द कपाल रहैं अरु, अंगुल चार लिलार सुहाई ।।
लाँबे मुख ,इंक्षा, जानि परै अरु मुक्तन रेख गरे बिखराई ।।

सो०–कोकिल शब्द सुनाय, चित्रपाट देखै तरुणि ।
चंपक वरण दिखाय, बिंब अधर जानो अरुण ।।

दो० लारो लाटो प्रति रुचै, अमृत पांच अहार ।
सुरति समयकी चातुरी, पियसों करै विहार ।।
नाक ऊँचि भौंहैं जुरी, श्याम केश सटकारि ।
पदमिनि ऐसी देखिये, अंग सुभग सुकुमारि ।।

स०–लोचन लाज भरे अतिही तिय देखि कटाक्षनसों मन बोधै
बस्तर भाँतिन भाँतिनके अरु नाद सुरीलो हिये अवरोधै ।।
जाके हिये रिस होति न 'इंक्षा' रु जो कहुँ होय तो भौंह विरोधै।।
रतिमें मुख अंचल ढाँकि रहै रसबात सदाई सिंगारन सोधै ।।

दोहा–मनमें कपट न देखिये, महा सुलक्षण नारि ।
जैसे पदमिनि गाइये, तैसी चित्र निहारी ।।
रेखा तीनो देखिये, चरणन तले लखाय ।
संख चक्र औ पद्ममय, 'इंक्षा' दई बताय ।।

चौ०–पहर दोइमें भोग सुहावै । मधुकी बास पसीना आवै ।
सेवतीवास मदनजल द्रावै । जागै भाग जौ असि त्रिय पावै ।।

दोहा०–पदमिनि चित्रिनि एक सम, दोऊ एक सुभाय ।
चित्रिनिमें गुण अधिक यह, भग नाँहि बार दिखाय
मृगनैनीके नयन शर, वेधत प्राणन धाय ।
अस 'इंक्षा' को जगतमें, जो नाँहि रहै लुभाय ।।

हस्तिनी कालक्षण

सवैया-लंक रु जंघ भुजा कुच ये अति मोट अहैं भय देखत लागै
चाकलि देह नितंब बड़े अरु ठामक डील हरै जिय भागै ।।
बोलति बोल भयानक भाजत काम दिनौ निशि अंगमें जागै
भूख व भोजनकी नितही अमिली अरु आम खटाइहि माँगै

दोहा–चाल चलै गजगामिनी, नासा मोटी होय ।
कल पल्लव छोटी महा, मोटी भौंहैं सोय ।।
ऊँचो मुख मोटे अधर, कलह करत दिन जाय ।
दशन स्वेत रूपे वरण, मोटी खाल दिखाय ।।
अरुणमुखी औ भोगरुचि, बहुत कर्कशा होय ।
चरण बड़े मोटे महा, पल्लव बंकट सोय ।।

चौ०–बस्तर रँगे अधिक तन धारै । निशिदिन हिय व्यभिचार विचारै ।।
ग्रीवा छोटि पेटकी पेटी । मानहु है बहु पर्त लपेटी ।।

दोहा–पीठ पेट कटि एकसम, मद्यउन्मत्त लखाय ।
बूँद परयो जनु रेतमहँ, रतितें नाहिं अघाय ॥

चौ०–रूखे वचन क्षमा मुख बोलै । आदरभाव बीभ नहिं डोलै ॥
मदकी बास पसीना आवै । गजमदबास काम जल झावै ॥

दोहा–छिन छिन रति चाहति रहै, निडर निसंक बनाइ ।
निज स्वारथ हिरदै, बसै, गुरुजनलाज न ताइ ॥
लाजशीलके वृक्षको, जड़तें देइ उखारि ।
अपजसकी सरिता धँसै, चहै करै सो नारि ॥

संखिनी का लक्षण

सवैया–जंघ रु अंग भुजा अति दीरघ सूखे शरीर सदा रहती ॥
सुख पातर अंग सबै कहिये अल्मूड़ बडो अति ही लहती ॥
पेट रु चूचुक सूखे महा बहु कामकी ज्वाल नहीं बहती ॥
अधरानके बाहर दाँत रहैं भग ऐसिय हस्तिनको चहती ॥

कुंडलिया–अंग बार अति देखिये, बरन करेला होइ ।
ओंठ बड़े कारे बहुत रँग जामुनके सोइ ॥
रँग जामुनके सोइ, घींच बहु बैठी जानो ।
सांकर लांब लिलार, चरण चौड़े पहिचानौ ॥
पुरुष लड़ाकी जोय, नखनको रंग सुपारी ।
गरो खांखरो जाहि, भूख भोजन बहु भारी ॥

दोहा–अंग पसीना बाससों, होइ महा दुरगंध ।
नयन चीपटे देखिये, दूरिते मानहु अंध ।

चौ०–तिक्त बास जा मुखकी होई ।कबहूँ मुख धोवै. नहिं सोई ॥
नित्त पुरुषसों लरिबो जानै । काहुकी लाज न उरमें आनै ॥
घर पाहुन आवै जो कोई । ता दिन लरिकै करै रसोई ॥
बस्तर महा मैल तन धारै । अपने लरिकन बहुतक मारै ॥
आठों जाम भोग चित लावै । आपन छोंड़ि परावा भावै ॥
रूखे बदन रहै मन डारी । चाल चपल बहु चलै सुनारी ॥
सबसों लरै झगर बहु भावै । राह चलतमें रज उधरावै ॥
जिवकी दया न मनमें राखै । व्यभिचारहिकी बानी भाखै ॥

सो०–आँचर छोटो जान, आँगन तनक न झारई ।
नित उठि भही सयान, पूरुषपर टोना करै ॥

दोहा—पूरुष तनकौ रिस करै, तब ही होय पुकार ।
अपाघात करि प्रोणको, हतै न लागै बार ।।

चौ०—नित उठिकै लरिबो संधानै । पुरुषकी प्रीति न उरमें आन ।।
लरिकै बैठै औरके गेहा । पियसों रखै न तनिकौ नेहा ।।

सो०—अपने पियकी बात, जासों मिलि तासों कहै ।
पाप पुरबिले तात, ऐसी नारीको लहै ।।
नित ही राखै बैर, पूरुषं देखे जरि मरै ।
सूधे बोले फैर, निशिदिन ही लरिबो करै ।।

दोहा—संखिनिके लरिका, कबौं, जियें न होंय सयान ।
जो एकौ जीबो करै, भाग पुरुषको जान ।।
राते पाटन चाह अति, राते पुहुपन हार ।
ढीली मगमें बहु चलै, खाय मास अधिकार ।।

चौ०—शोभ पराई देखि न सकै । आपनि स्तुति आपुहि बकै ।।
पान रु फूल सुबास न जानै । कुल कलंक उर एक न आनै ।।

सो०—जा दिन पूरुष पास, त्रिया और ठाढ़ी लखै ।
केश उखारै खास, मूड फोरि लोहू करै ।।
नींद भोजन व्यभिचार, और कछू जानै नहीं ।
ग्रंथन सकल विचार, ,इंक्षा, असि संखिनि कही ।।

योनिका प्रमाण

दोहा—पदमिनि अंगुल चारकी, चित्रिनि षट परमानु
द्वादस अंगुल हस्तिनी, संखिनि नौ भग जानु ।।

मदनका वास

दोहा—कमलवास पदमिनि मदन, चित्रिनि बहुत सुवास ।
मधुवासा हस्तिनि कही, संखिनि महा कुवास ।।

अथ स्वभाव

दोहा—पदमिनि सुख इच्छा रहै, चित्र चित्रिनी नारि ।
कामको इच्छति हस्तिनी, संखिनि कलह बिचारि ।।

अथ पुत्रका लक्षण

दोहा—पदमिनि राजा महा, चित्रिनि शोभावान ।
हस्तिनि-सुत जोधा कहा, संखिनि क्रोधी जान ।।
जैसे पूरुष चार हैं, तैसे तरुणी चार ।
यथा-उचित संयोगते, बढ़ै प्रीति निरधार ।।

अथ संयोग-वर्णन

चौ०–शशा पुरुष पदमिनी संयोगा । मृगा चित्रिनी जानो भोगा ।।
वृषभ पुरुष तिय संखिनि होई । पुरुष तुरंत हस्तिनी जोई ।।
इहि भांतिन संयोग करावैं । महामोद दोनों जन पावैं ।।
अति आनन्द लहैं नर-बाला । समरति ,इंछा, याको नामा ।।

पंच रतिके नाम

दोहा–समरति, ऊंची, नीच रति, अति ऊंची, महानीच ।
सुरति पांच परकारको, तिय–पुरुषनके बीच ।

१ ऊंचा रति–

दोहा–मृग नायक अरु पद्मिनी, वृषभ चित्रिनी होय ।
तुरंगम संखिनि तिया, यही ऊँच,रति सोय ।।

२ नीच रति–

दोहा–चित्रिनि शश मृग संखिनी, वृषभ हस्तिनी जान ।
कहत नीच रति याहिको, चातुर लीजो मान ।।

३ अति ऊंचीं रति–

दोहा–पदमिनि वृष चित्रिनि तुरी, महाऊँच रति जानु ।

४ अति नीच रति–

संखिनी शशा गयंद मृग, महानीच पहिचानु ।।

फलाफल–

सो०–रति ऊंची अति ऊंच, सम लघु ये सुखको लहैं ।
नीची अरु अति नीच, देह सदा दुखसों दहै ।।

स्त्री–पुरुषके सामुद्रिक लक्षण

कुंड०–गुण औगुण जीवन मरण, लिखे विधाता देह ।
प्रगट किये कछु वेद मुख, सोइ फलाफल एह ।।
सोइ फलाफल एह अंग-चिन्हनिते जानो ।
कह्यो वेद परमान सत्य उर अन्तर आनो ।।
कह ,इंछा, चित लाइ पढ़ै जो मूरख कोऊ ।
आगम-पंथ लखाय, भेद जानै सब सोऊ ।।

दोहा–वेद सुनै गुरजनन मुख, नर नारीके चीन्ह ।
कठिन संस्कृत पढ़नमें, तब मैं भाषा कीन्ह ।।

पुरुष परमाण लक्षण

चौ०–बावन श्रंगुल पूरुष जानो । सो बावन दैवत करि मानो ।।
भूपति-गेह लेइ अवतारू । तबहूँ भिक्षा करै अहारू ।।
असी अँगुल पुरुष जो कोई । महाक्रूर कपटी सो होई ।।
कुटिल बिचारहु ताको देहा । भूलि न तासों कीजै नेहा ।।
नब्बे अँगुल अधम बताऊँ । मध्यम सौ अंगुष्ठा गनाऊँ ।।
एकसौ आठ होइ जो प्रानी । उत्तम मनुष ताहिको जानी ।।
नब्बे अँगुल पूरुष रहै । तीस वर्ष आयुर्दा लहै ।।
नब्बेते जै ऊपर चढ़ै । पाँच वर्ष प्रति अंगुल बढ़ै ।।
सौ अंगुल जो मनुज बतावा । असी वर्ष आयू सो पावा ।।
सौते अंगुल जेते बढ़ई । सात वर्ष प्रति अंगुल चढ़ई ।।
पुरुष दहोत्तर-सौ को होई । वर्ष डेढ़सौ जीवै सोई ।।
बाहोत्तर-सौ सों अधिकाई । अंगुल प्रति दस वर्ष गनाई ।।

दोहा–बीसासौ सों जो पुरुष, ऊपर अंगुल होय ।
चिरंजीव जानौ सदा, मरै न कबहूँ सोय ।।

चरण लक्षण

दोहा–सुमिल आंगुरी शुभ्र नख, मंजुल लाले होंय ।
चरण कमल कोमल महा, बड़ो सुलक्षण सोय ।।
उडुगन नखन निहारियै, बड़ी चरनकी पीठ ।
भूमि न परसै मध्य पग, राजमंत्रि करु दीठ ।।
नख फाटे रूखे कुटिल, स्वेत पीत रँग सोय ।।
चरण भूमिसों गहि मिलै, महादरिद्री सोय ।।

चौ०–अँकुश रेख चरण-तल होई ।मन बच भूप विचारौ सोई ।।
अँगुठा एँडी मिलै जु रेखा । रुद्ररेख नामक तिहि लेखा ।।
अँगुरी अँगुठा अमिल जु होई । नितप्रति दुखी रहै नर सोई ।।
अप्रिय बोली सदा सुनावै । कबहूँ द्रव्य दृष्टि नहिं आवै ।।
अँगुरी अंगुठा सम जो होई । लघु दीरघ न दिखावै सोई ।।
मिश्रित राते × चरण दिखाय । जानो ताको राज-सुभाय ।।
अँगुठासों अँगुरी बडि जानो । सो पुरुष नायक पहिचानो ।।
निपट बड़ी नरजनिया होई । पहिले मरै तासुको जोई ।।

× राते=लाल ।

अँगुठासों अँगुरी घटि होई । ताको दुष्ट कहै सब कोई ।।
बहु छोटी अँगुरी जो होई । चोरी चित्त बिचारै सोई ।।
सरवर अँगुरी अँगुठा होई । उत्तम ताको कह सब कोई ।।
करन मध्यमा लांबी होय । लघु द्यौसनमें मरिहै जोय ।।
चरन मध्यमा जो लघु होय । तिरिया चरन बिचारो सोय ।।
सुरति स्वाद सा नर नहिं पावै । ताको करकस नारि मिलावै ।।
दीरघ अँगुरी मधिमके पासा । जो छिगुनीसों होइ उकासा ।।
सो नर भाम सुहागिन पावै । विद्या वेद बहुत अधिकावै ।।
छिगुनी-तट अँगुरी बहु छीना । विद्या बुद्धि न ताको दीना ।।
मिलै कुकर्मी नारी जाही । कर्म कुटिल पहिचानौ ताही ।।
अँगुरीते छिगुनी बड़ि जानि । ताको लेहु अपजसी मानि ।।
छिगुनी छोटी चरनकी जानि । बसै लक्ष्मी ताकी पानि ।

दोहा-नहीं पसीना चरनमें, सरवर अँगुरी होय ।
सुख संपति संसति बढ़ै, महा सुलक्षण सोय ।।

नखका लक्षण

चौ०-कुंचित फाटे जो नख होइ । श्वेत हरे नख जानौ लोइ ।।
अति पापिष्ठ ताहिको कहो । जन्म दरिद्री दुखिया रहो ।।
नख चरननके काले होंय । बदिमें सदा रहै नर सोय ।।
भ्रमै देश देशान्तर प्रानी । ता नर निश्चय तस्कर जानी ।।

दोहा-चिकने अरु तांबे बरन, नख चरननके गोल ।
महाराज सो जानिये, लक्षण बड़े अमोल ।।

एड़ी के लक्षण

चौ०-लांबी एड़ी करम सों जानो । थोरी एड़ी दुःख बखानो ।।
मांसल एड़ी चोर कहावै । सम एड़ी नित ही सुख पावै ।।

चरण-वरण-लक्षण

चौ०-चरण धूम लासी लिये होई । ताको लरिका जियै न कोई ।।
सकल कुलक्षण जानौ सोई । ,इंक्षा, कह्यो ग्रंथमत जोई ।।
जरी मृत्तिका रंग जु होई । ब्रह्म हात जानौ नर सोई ।।
भूलेहु अरस-परस नहिं कीजै । महा कुलक्षण सो लखि लीजै ।।
पीत बरन जाके हैं चरना । रहै अगम्या ताके सरना ।।
प्रगट होय नीचहु कुल कबहूँ । राजा भौन रहै नर तबहूँ ।

---

२ तस्कर=चोर

टकनेका लक्षणं

चौ०—टकने सम पुरुषके दोऊ । पृथ्वी भूप कहावै सोऊ ॥
महिषाकेसे टकने होई । ताको मिलै सुहागिनि जोई ॥
वृभष बराह टाकने देखो । दीरघ अति ही जो तुम पेखौ ॥
निशिदिन पुरुष बंदिमें रहई । मैं नहिं कहौं बेद अस कहई ॥

पिंडुरीके लक्षण

चौ०—अति लांबी अति टेगुनी सोई । बार बहुत संतति तिन होई ॥
ऐसी पिंडुरी पाप करावै । मलिन बहुत अति दुःख दिखावै ॥
गोलपींडुरी नरकी होई । लघु बिररे बारनकी सोई ।
लक्षण राज बखानौ एही । वेद प्रमान कहौं मैं तेही ॥

घुटनेके लक्षण

चौ०—सबलमसीले घुँटने दोऊ । लक्षण-राज जानिये सोऊ ॥
जाके घुंटने मांस न होई । मरै विदेशी पूरुष सोई ॥
बियो × घूँट लघु दीरघ होई । द्रव्य न देखै आंखिन सोई ॥
घुँटने जुगुल कुटिल दिखरावैं । सो नर कबहूँ द्रव्य न पावै ॥

दोहा—घूँटने नीचेको नये, महा कुलक्षण तासु ।
रहै सवाई जन्म भर, सो नर तियको दासु ॥

जंघाका लक्षण

चौ०—सिंह जंघ धनवंत बताऊँ । भूपति जंघ कुरंग सुनाऊँ ॥
लांबी टंगुनी दुखकी खानी । जंग तुरंग वेदधर ज्ञानी ॥

रोमके लक्षण

चौ०—एक रोम तन भूपति जानो । दोइ रोम धनवन्त बखानो ॥
तीन रोम मध्यम नर होई । चार रोम दारिद्री सोई ॥
वृष-मकरी सम रोमा जेही । निश्चय पंडित जानौ तेही ॥
महारसिक सुखसों नर रहई । नारि सुलक्षणि सो नर लहई ॥
जाकी जांघ रोम बहु होई । ताको नारि मिलै नहिं कोई ॥
जाकी जांघ रोम नहिं देखौ । महा दरिद्री ताको लेखौ ॥

× बियो=दोनों

दोहा–पतरे रोवां देखिकै, सकल कुलक्षण जानु ।
सो दुख देखै सर्वदा, महा दरिद्री मानु ।।

अथ लिंग लक्षण

चौ०–लाँबे लिंग दरिद्री होई । ठिंगने गुनो भूमिपति सोई ।।
ऊँच नीच बहु घटि बढ़ि नाहीं ।धनवन्ता जानौ तुम ताही ।।
दाहिनी ओर लिंग जो ढरई । ताके पुत्र बहुत अवतरई ।।
पतिव्रता नारी सो पावै । संपति सुख अतिही दिखरावै ।।
बाईं ओर जु लिंग विचारी । ताको मिलै कर्कसा नारी ।।
सुख सपने नहिं आँखिन देखै । संतति कन्या सो नर लेखै ।।
नीची शिखा लिंगकी होई । ऊँची पीठ बताऊँ सोई ।।
रतिमें सुख कबहूँ नहिं पावै । द्रव्य न कबहूँ दृष्टि दिखावै ।।

दोहा–ऊँची शिखा जु लिंगकी, पीठ जु नीची होय ।
महा धनी नर जानिये, रति–सुख पावै सोय ।।

चौ०–इन्द्री निपटि छोटी जो होई । ताके संतति होय न कोई ।।
लम्बा सिर टेढ़ी कछु जानौ । महा दरिद्री ताको मानौ ।।
हेठको टेढ़ी इन्द्री होई । सुख आँखिन देखै नहिं सोई ।।
जर नीची कछु लिंग दिखावै । संतति थोरि पाप बहु पावै ।।

दोहा–मोटी नस जो लिंगपर, कन्या संतति देह ।
ऊँचो कोमल मास बहु, ताहि रोग परमेह ।।

चौ०–सरल गोल नस पातरि जानौ । सिर ढकि खाल लिंग लघु आनौ
महाभाग मानी नर होई । वेद बतावत लक्षण सोई ।।

दोहा–लाल लिंग को शीश जो, चमकै कहिये भूप ।
मैलो श्वेत दिखावई, लिंग बिपतिको रूप ।।

अंड लक्षण

चौ०–एक आंड जल बूड़ै प्रानी । सम विष आंडते भूप बखानी ।।
लपटि लिंगसों लपटै आंड । ताको तुरत कालको कांड ।।

दोहा–लम्बे आंडे सम बियो, लटकै अति ही जासु ।
सौ बरसों जीवित रहै, सदन लक्ष्मी बासु ।।

अथ मूत्रधार लक्षण

चौ०–एक धारको भूपति जानौ । दोई धारको कुशल बखानौ ।।
तीसर धार साधु सो आनी । चौथी धार दुखी नित जानी ।।

दोहा—शब्द महा तीक्षण महा, पेरे बाँहनी ओर ।
महाराज जानौ यही, गज गूंजारै पौर ।।

अथ धातु लक्षण

दोहा—करी बास जिहि मदन जल, भैंस मऊ तिहि धाम ।
प्रबल देह बहु जानिये, मधु बासा जो काम ।।
विषकी बास जा मदनमें, चक्रवर्ती सो होइ ।
दूध दहीकी बास जो, महाबली नर सोइ ।।
लाख गंध वीरज लहै, महा झूठ न सोइ ।
मीन बास व्यभिचार बहु, विधि कुंडम प्रति होई ।।
जाके वीरज थोर है, दुहिता संतति होय ।
मांस बास जा मदनमें, सुत उपजावै सोय ।।
बीज खराइँध जासुको, महा दरिद्री जानु ।
द्रवै बेगि सो रति समै, जियै बहुत दिन मानु ।।
बहु बिलम्ब लगि रति करै, द्रवै देरकै काम ।
सो नर थोरे दिन जियै, जाय कालके धाम ।।

गुदा लक्षण

चौ०—मोटि मसील गुदा जो होई । धन विस्तार कहै सब कोई ।।
सो नर कबहूँदुख ना पावै । घर बाहर लक्ष्मी अधिकावै ।।
गुदा हरी चीताकी नाईं । भूपति कहौ पुरुषकी ताईं ।।
बाँदर सुवर स्यारकी देखो । ताको महा दरिद्री लेखौ ।।

कटि लक्षण

चौ०—चीता केहरिकी कटि होई । ताको भूप कहैं सब कोई ।।
मर्कट गजकी जो कटि पावै । महा दरिद्री रंक कहावै ।।

नाभि—लक्षण

चौ०—नाभि गँभीरी बादुर होई । ताको सुख्ख बिलावै सोई ।।
मंजुल नाभि पुरुष जो पावै । ताको अन्तहु दुःख बिलावै ।।

उदर—लक्षण

चौ०—दादुर मोर कुरँग रँग रूपा । ताको जानहु सब विधि भूपा
सकल भूमि जितै सो प्राणी । महा सुलक्षण वेद बखानी ।।
ऊँचो नीचो कछु ना होई । सुमिल उदर शुभचार बताई ।।
ऊँचो नीचो गोल दिखावैं । सोई कुलक्षण उदर कहावै ।।

पंजर–लक्षण

दोहा–सुमिल बराबर पांसुरी, सो प्रानी धनवंत ।
टेढ़ी नीची पाँसुरी, दुःख दिखावै अंत ।।

चौ०–दिगपति पांजर आठ बताई । नौ पांजरको भूप जताई
दस पांजरको जोगी होई । ग्यारह सिद्ध कहावै सोई ।।
बारह पाँजर दुःख दिखावै । तेरह पांजर धनहि बढ़ावै ।।
चौदह पांजर कुमति बखानै । महाक्रूर कछु सुमति न जानै

पीठ–लक्षण

चौ०–पीठ ठेगुनी जाकी होई । ताको भूप कहै सब कोई ।।
लाँबी पीठ दरिद्र बतावै । अन्तहु प्रानी सो दुख पावै ।।

हृदय–लक्षण

चौ०–स्तन जुग भारी जेहि होई । धनी जानु पुरुष है सोई ।।
सम स्तन रँग लालहि देखो । मन वच कर्म भूप सो लेखो
स्तन बाईं दिशि भारी होवै । शुभ स्त्री ताके गृह जोवै ।।
जो दहिनी दिशि स्तन भारी । जियै वर्ष सौ आठ निहारी ।।

दोहा–चकरो सम लाली लिये, हिया भूपको जान ।
दुरबल हिया दरिद्रता, मानो दुखकी खान ।।

लोहू–लक्षण

चौ०–लाल रुधिरको भूपति जानो । श्याम रुधिरको दास बखानो
कमलवरण सोणित दिखरावै । कन्या संतति दुःख दिखावै ।।

हाड़–लक्षण

चौ०–लांबे हाड़ देह सब होई । ,इंक्षा, नृपति बखानहि सोई ।।
ठेगुने हाड़ मसीसे जाहीं । नर सदा रहै सुखमाहीं ।।

कर रेखा–लक्षण

चौ०–आल-बाल रेखा कर होई । बहुतक बणिज करै नर सोई
मत्स्यरूप रेखा दिखरावै । होइ सिद्धिता कर बतलावै ।।
रेखा करपर चेले रूपा । दुष्ट पपिष्ठ चोरका भूपा ।।
अंकुश सोम रेख कर होई । धनी सूर अति होवै सोई ।।
करतल रेख नैन जो परई । सो शठ झूठ बचन उच्चरई ।।
रेख चौखुँटी जो कर परै । महा सूरमा ताको करै ।।

दोहा–इक श्रौगुन रेखा करै, जब तब बदिमें देइ ।
'इक्षा' कछु जानै नहीं, कहत वेद गुनकोइ ।।

भंडार–लक्षण

छन्द–हेठ खुला भंडार द्रव्यको नास है ।
खुल्यो उपर भंडार लक्ष्मी-वास है ।।
उदर खुला भंडार तो तस्कर खाइगौ ।
कै पावक जरि जाइ नृपति धन लेइगौ ।।
जा नरके भंडारकी खुली पीठ देखौ ।
मन वच कर्म विचार ताहिको दुखिया लेखौ ।।

अन्य रेखाएँ

अरिल्ल–पहुँचे सो चलि रेख मिलै तरजनिया श्राइकै ।
जानहु भूप विशेष छुवै मधिमा जाइकै ।।
ऊपर ह्वै भंडार रेख श्रावै जो सोई ।
यश कुल कीरति धर्म धनी श्रति ही नर होई ।।

त्रिशूल वर्णन

दो०–जाकी अँगुरी मांझमें, रेखा होय त्रिशूल ।
ताकी श्री दिन दिन बढ़ै, दुःख न देखै भूल ।।
छिगुनी–मधिमा मध्यमें, एक त्रिशूल दिखाय ।
व्यभिचारी सो जानिये, परनारी चित लाय ।।
रेखा यही त्रिशूलकी, कनगुरियापै देखि ।
बुधि प्रकाश ताको करै, महा तेजसी लेखि ।।
रेखा होय त्रिशूलकी, तरजनियापर मित्त ।
वेश्या–रत नर जानिये, श्रौर न राखै चित्त ।।
सब श्रँगुरीपर देखिये, एक एक त्रिशूल ।
दुखी रहै धनधामको, सुख नहिं पावै भूल ।।

अन्य रेखाएँ

दोहा–महासुखी नर जानिये, जो देखौ बुध लोय ।
संख चक्र 'इंक्षा' पदम, गदा विचारौ सोय ।।

चक्र लक्षण

चौ०–एक चक्र जानौ धनवंता । दूजा चक्र कहौ गुणवन्ता ।।
तीन चक्रसों ज्ञानी होई । चार चक्र बहुतै सुख देई ।।

पाँच चक्रसों भोगी होई । महारसिक षटचक्रसों होई
सात चक्रसों योधा जानौ । आठचक तन चक्र बखानौ ।।

दोहा—होय चक्र नौ हाथमें, भूपति जानौ सोइ ।
पदवी सिद्धि विचारिये, चक्रपाणि बल होई ।।

संख—लक्षण वर्णन

चौ०—एक संख बहु जानौ सुखिया । दोइ संखको अति ही दुखिया ।।
जगको गुरू तिन जो संखा । चार संख सोई गुन पंखा ।।

दोहा—अशुभ महा जो पाँच है, शुभ याते बढ़ि होय ।
राज करैं भुव—लोकमें, दुख बारिद सब खोय ।।

पद्म—लक्षण वर्णन

चौ०—एक चार लगी पदुम जो होई । महाधनी नर भाखौ सोई ।।
याते और पदुम कर बढ़ै । राज करैं हाथीपर चढ़ै ।।

गदा लक्षण वर्णन

चौ०—एक पाँव लगु गदा जु देखौ । मन वच कर्म साधु तिहि लेखौ ।।
याते बढ़ै गदा करमाही । महासिद्ध पहिचानौ ताही ।।

दोहा—बहुत रेख नर—पाणिमें, लहै दुःख संताप ।
लखि ग्रंथन 'इंक्षा' कही, कहे होय नहिं पाप ।।

अँगुरी—रेखाका लक्षण

चौ०—पल्लव दक्षिण करहि विचारौ । अँगुठा छाँड़ि लीजिये चारौ ।।
तीन पोर रेखा जहँ-ताई । गनिकै करो बुद्धि इक ठाई ।।
पन्द्रह रेखा चौर बखानौ । सोलह रेख दरिद्री जानौ ।
सत्रहते व्यभिचारी होई । धर्मी पुरुष अठारह सोई ।।
उनइस रेखा साधु सुभाऊ । तपसी रेखा बीस गनाऊ ।।
महादुष्ट मर इकइस रेखा । प्रगट कर्यो जो ग्रंथन देखा ।।

पहुंचा रेखाका लक्षण

चौ०—रेख एक धनवंता जानौ । रेख दूसरी पंडित मानौ ।।
तीजी रेख भक्त भगवाना । चौथी रेख दरिद्र—निदाना ।।

भुजा—कलाईका लक्षण

चौ०—भुजा कलाई सम नहिं होई । जब जब जानौ बौरा सोई ।।
अच्छे लक्षण लेहु निहारी । ताके प्रगट विभेद विचारी ।।

भुजाका लक्षण

चौ०–लांबी भुजा होई नरनाहा । दासु बिचारौ छोटी बाहा ।।
दोऊ सम लघु दीरघ नाहीं । ना सुख ना दुख जानौ ताही ।।
लांबी बाँह दाहिनी होई । महा सूरमा जानौ सोई ।।
बाईं बाँह बड़ी जो देखौ । महा दरिद्री ताको लेखौ ।।

कंधेका लक्षण

दोहा–वृषभकंध वाराह गज, लक्षण राज विचार ।
महा दरिद्री जानु नर, मृगसा कंध निहार ।।

ग्रीवाका–लक्षण

चौ०–लाँबी ग्रीव दरिद्री होई । नीची ग्रीव दुष्ट नर सोई ।।
ऊंची ग्रीवा कर्महा जानौ । सम ग्रीवा संतुष्ट बखानौ ।।
ग्रीवा गोल करै अभिमाना । कंबु-ग्रीव नरपति पहिचाना ।।

दोहा–लक्षण ये 'इंक्षा' कहे, कंबु देखिये ग्रीव ।
दारिद ता नरको कबौं, भूलि न चाँपै सींव ।।

मुखका लक्षण

चौ०–मृग आनन मूसेको ऐसा । दुष्ट दरिद्री बहुत अनैसा ।।
कंठीरव गज चंद निहारौ । मन वच क्रम धनवान बिचारौ
सो०–बदन भयानक देखि, चोर विचारौ ताहिको ।
अर्ब तुंड मुख पेखि, महादुखी नर जानिये ।।

अधरका लक्षण

चौ०–सूखे सूखे परे जु होइ । मोटे घरघर श्यामल सोई ।।
लटके रहैं ओंठ जिनकेरे । ताके द्रव्य न आवै नेरे ।।
सो०–भूपति कहिये ताहि, जासु मसूढ़े श्याम कछु ।
अतिश्यामता लखाहि, दुखकी खान बखानिये ।।

जीभका लक्षण

चौ०–मोटी रसना पूरुष लहै । रोग दुःख अति ही सो गहै ।।
श्याम पीत रँग जीभ दिखावै । सो नर भोग–विषयको पावै ।।
शुभ अरु शुक्ल जु रसना होई । बहु आचाररूप है सोई ।।
लांबी पातर चकरी जानौ । कमल जीभको भूप बखानौ ।।

दोहा–लघु रसना सूखी कछू, अरु जो गहिरी होय ।
ज्ञानी विद्याको धनी, पंडित अति ही सोय ।।

दाँतका लक्षण

चौ०–फूटे फाटे सूखे होई । टेढ़े दीख परैं अति सोई ।।
नील दांत अति घाटि दिखावैं । महादीनता सो नर पावैं ।।
दसन–पंक्तिपर दसन विराजै । सो नर पापकर्मको साजै ।।
मुक्त कुंद रद दाडिम जाना । मन वच कर्म भूप पहिचाना
मृगसाखासे दाँत जु देखौ । दुखित बहुत ता नरको लेखौ ।।
कुंभी रद जा नरके होई । करै नाश कुलको रद सोई ।।
अर्व-छुरासे जो रद होई । दारिद-बास भवन तिहि होई ।।
इकतिस रद भूपाल बखानो । बत्तिस रद भोगी पहिचानो

दोहा–तीस रदनको जानिये, मंजुल बदन निहार ।
उन्तिस रद दुखिया महा, 'इंक्षा' लेहु विचार ।।

तालूका लक्षण

चौ०–राती तालू धनी कहावै । तालू पीत राज पद पावै ।।
तालु श्याम ज्योतिषी होई । श्वेत तालु दुख जीतै सोई ।।

शब्दका लक्षण

दोहा–हंस शब्द धनवन्त नर, बहु माया तिहि जानु ।
बलवन्ता घन-शब्दको, सुजश सुनै, निज कानु ।।
केकिशब्द बोलै, पुरुष, चक्रवर्ती सो भूप ।
पुंडरीक कल शब्द जो, 'इंक्षा' ज्ञानस्वरूप ।।
साधु पुरुष सो जानिये, कोकिल शब्द सुनाय ।
कंबु दुंदुभी शब्दको, राज-भूमिको पाय ।
मन्द-बुद्धि सो जानिये, बोलै बानी काक ।
गदहा सों बोलै पुरुष, दुखी जन्मको रांक ।।
कष्ठ खांखरो शब्द जिहि, सो पापी बहु होय ।
ग्रीवा बोलत फूलई, महा संठ नर सोय ।।

कपोलका लक्षण

चौ०–होहि मसीले शुभ अरु गोल । गाल लाल रँग होत अमोल
सदा कृषी धन ताके होई । भाषत वेद बुद्धजन लोई ।।
सिंह बाघ गज सम जुग गाला । पावै भोग राज तत्काला
हँसत कपोलन गढ़ा दिखावै । तौ न चैन दिन रैनहु पावै ।।

दोहा—बात कहत कछु हँसत ही परैं कपोलन कूप ।
महाराज ताको कहौं, सिंह बाघके रूप ।।

कानका लक्षण

दोहा—छोटे बडे न पातरे, मोटे सूखे नाहि ।
सुमिल कान धनवंतके, सुजश बढै जगमाँहि ।।

सो०—दीरघ पतरे कान, फै राजाकै सिद्धके ।
छोटे मोटे जान, महा दुखी नर जगतमें ।।

नासाका लक्षण

चौ०—कीर-करीसी नासा होई । ऊँची सुमिल सुढार जो सोई ।।
सो धनाढच नर भूपति जानौ । गज गुंजारै शंक न आनौ ।।
मोटी चपटी गोल दिखावै । लघु कुंचित नासा दुख पावै ।।
लटकी बहुत होय जों नासा । दुखी मनुज सुखकी नहिं आसा
दीरघ छेद नाक दिखरावै । सहजहि मास दृष्टि जो आवै ।।
नीलोफर-सम जिहिकी नासा । पापी नर नहिं जीवन आसा ।।

दोहा—दीरघ नासा मुख तनक, कण्ठ खांकरो बैन ।।
कपटी पापी दुष्ट नर, जानि लेहु दुख ऐन ।।

नयनके लक्षण

चौ०—लाल असीत सीत चख होई । ताको महा बली कहु सोई
सिंह नैन नर रसिक बखानौ । तमचुर नैन दोष अति जानौ

दोहा—पापी नर सो जानिये, चख मंजार निहार ।
माइ बाप देखैं नहीं, नयन हरन—उनहार ।।

भौंहका लक्षण

चौ०—धनुष भौंह धनबंता जानौ । ऊँची भौंह भूप पहिचानौ
मिली भौंहको तस्कर होई । हीन रोम दुख देखैं सोई ।।

भालका लक्षण

चौ०—ऊँचो भाल धनाढच विशाला । दुखिया मनुजनीच जोभाला
अर्धचन्द्रसों भाल दिखावै । सो नर पृथ्वीराज कहावै ।।

भाल—रेखाका लक्षण

चौ०—एक रेख धनवंता जानौ । रेख जुगुल पंडित पहिचानौ ।
भाल रेख जो तीन बिराजै । भूपति होय करी चढि गाजै ।।

दोहा–रेख चार नर भालमें, सो जोगी अवतार ।
गुन औगुल सब नरनके, ग्रन्थन कियो विचार ।।

कंठ–रेखाके लक्षण

चौ०–आयु बहुत रेखा इक होई । जुगुल रेख धनवता सोई ।।
तीन रेख धनवंत बखानो । रेख चार भूपति सो जानौ ।।

वालके लक्षण

चौ०–भूरे फाटे दारिद रूपा । चिकुर श्याम चीकनसों भूपा ।।

दोहा–घुंघरवारे बार जेहि, कारे चिकने होवें ।
बहुत बढै परिवार तिहि, सुखी रहें नर सोवें ।।

तिलके लक्षण

चौ०–जाके लिग ऊपर तिल होई । कामी पुरुष जानिये सोई
भागवन्त तिल भाल विराजै । तिल करतल लक्ष्मी अति राजै

सो०–तिल जिहि चिबुक विराज, करै नपुंसक ताहिको ।
धरै नारिको साज, जन अनेक चुम्बन करै ।।

बत्तीस लक्षण

दोहा–शील सुकृत परबीनता, रूप शोच बुधिमानु ।
सत्य धर्म विद्या सुजन, आत्माभ्यासी जानु ।।
पराकर्म सन्तुष्ट बहु, परदारा नहि हेत ।
सुलभ शास्त्रको ज्ञान जिहि, मित्र हेत चित देत ।।
कुल न विवादी देखिये, मात पिता गुरु सेव ।
अर्थगुन्य उपकार बड, इन्द्री दृढ हित देव ।।
मानै लोक विचक्षण, फाम-रसहि लव-लीन ।
नींद भूख थारी लहै, भक्ति ईश चित दीन ।।
बत्तिस लक्षण शुभ महा, बुध जन लेहु निहारि ।
अब लक्षण नारीनके, 'इंक्षा' कहत बिचारि ।।

अथ स्त्री–लक्षण वर्णन

चरणके लक्षण

चौ०–राते कोमल शुभ दिखरावै । चरन उपटि जो धरनि मिलावै
रमनी शुभ लक्षण यह जानौ । ताको पुरुष धनी अति मानौ ।।
राते लांबे चरण दिखावै । पतिव्रता सो नारि कहावै ।।
बहु सपूत सुत तरुणी जावै । गुन औगुन सब बेद सुनावै ।।

अंगूठेके लक्षण

चौ०–चरण अँगूठा पतरे लेखौ । कर समान जा तियके देखौ ।।
महा–सुलक्षनि नारी सोई । पतिव्रता जानौ बुध लोई ।।
अति दीरघ स्थूल दिखावै । अँगुठा जा तिय चरण लखावै ।
महाकुलक्षण जानौ कामा । ताको पुरुष जाइ जम-धामा ।।

पगतलके लक्षण

सो०–तिय तरवामें देख, चक्र पदम जितने परहिं ।
उतने शुभ सुत लेख, महाराज सो देखिये ।।

चौ०–ध्वजा-रेख जा चरण निहारी । महासुखी जानौ सो नारी ।
महा छिनारि नारि है सोई । रुद्ररेख जाके पद होई ।।

दोहा–जा नारीके देखिये, चरण रुद्रकी रेख ।
पुरुष अनेकनसों रमै, कहिये भरनी भेख ।।

पद–पल्लवके लक्षण

चौ०–अँगुठासों अँगुरी बडि होई । नारि पिया मन भावै सोई
चरण मध्यमा दीरघ जाकी । बढै द्रव्य संशय नहिं बाकी ।।
छिगुनी पास अँगुरिया देखो । अति ही बडी सबनसों लेखौ ।।
सो नारी कछु रहै उदासा । सौत संग तीनो पन बासा ।।
छिगुनी बडी नारिकी देखौ । पर पुरुषन सँग ताको लेखौ ।।
कर व्यभिचार शंक नहिं आनै । कुल कलंक तिय एक न जानै
छिगुनी छोटि चरन अति होई । चपटि भूमिसों लागै सोई ।।
चतुर बहुत सबके मन बसई । जैसे सूम द्रव्य हित करई ।।

दोहा–छोटी अँगुरी जानिये, चरन अँगूठा पास ।
बचन सदा करकस कहै, कहौ करकसा तासु ।।

चौ०–सोई छिगुनी जो बडि होई । महा छिनारि जानिये सोई ।।
पुरुष रमै तिय बैसि कुमारी । महाकुलक्षणि लेहु बिचारी ।।

पगतलके अन्य लक्षण

चौ०–पोले पाइ तरुनि जो होई । तीन पुरुष करिहै तिय सोई ।।
अंकुश रेख चरनतल देखौ । ताको नाह भूप जग लेखौ ।।

दोहा–परै रेख जो संखकी, जा तरुनीके पाइ ।
मनसा वाचा कर्मणा, कलहा ताहि सुभाइ ।।

एड़ीके लक्षण

चौ०-जा तरुणीकी एडी देखौ । दक्षिण दिशि दीरघ कछु लेखौ
महासाधु नारी सो होई । पतिव्रता पुत्रि जानौ सोई ।।
एडी लांबी कामिनि देखौ । सदा सुहागिनिभामिनि लेखौ ।।
एडी मोटि निपट जो होई । रहै बंदिमें कामिनि सोई ।।

टकनेके लक्षण

चौ०-मोटे टकना चरण दिखावै । महिषीके परमान बतावै ।।
संतति पग-बन्धन तिहि परई । छोटे सुखपर मान उचरई ।।

पिंडुरीके लक्षण

चौ०-मोटी पिंडुरी देखौ नारी । भैंस रूप आकार बिचारी ।।
नारी रहै सदा दुखरूपा । बडो कुलक्षण विपतिको कूपा ।।

जंघाके लक्षण

चौ०-जाके जंघ रोम बहु होई । काम-जंघ तिय देखौ सोई ।।
आप दुखी पियको दुखरावै । महा कुलक्षण वेद बतावै ।।

भगके लक्षण

दोहा-ऊंच नीच भग जासुकी, जानौ महा छिनाहि ।।
और पुरुषकी सहज है, सुतसों रमै सु नारि ।।
मासिलि भग जा तरुनिकी, महा पापिनी सोइ ।
लांबि सरस बिन मासकी, करै नास कुल दोइ ।।

सो०-कोमल कमल समान, गोल तरुनि भग जानिये ।
ताको पुरुष महान, जग-भूपति सो मानिये ।।

दोहा-लांबी मोटी कठिन कछु, ऊपर कारे रोम ।
निश्चै दासी जानिये, उपजै राजा खोम ।।
ऊंची दहिनी ओर भग, सो तिय दारिद रूप ।
जो ऊंची बाई दिशा, पतिव्रता गृह भूप ।।
पास छछुंदर मदनजल, सघन होइ जो बार ।
लक्षण दासी जानिये, नास करै भरतार ।

चौ०-भखै ससुर जो लांब लिलार । लांबी भग भखिहै भरतार ।
लॉबे उर देवरको मारै । चतुर होय सो भेद विचारै ।।

नाभिके लक्षण

चौ०-सदा सुहागिन बाम बखानौ । सुन्दर नाभि गँभीरी जानौ ।।
दासी तासु, कहै, सब कोई । बडरी नाभि मसीली होई ।

उदरके लक्षण

चौ०–परै पनारी उदर सुहाई । बैठे नाभि हियो मिलि जाई ।।
उदर सुरँग झलकै जिहिकेरा । दुख नहिं तनकौ सुखहि घनेरा
ऊँच नीच दहिनी दिशि देखौ । सुत सपूत तेहिके बहु लेखौ
बढ़ै धर्म धन अति अधिकाई । शुभ लक्षण में दीन बताई ।।
दाँत बडे नासा लघु होई । मोटी जंघ मोटि कटि सोई ।।
तालू जिभ्या श्याम दिखावै । ताको भूलि अंक नहिं लावै ।।

नसके लक्षण

चौ०–नीली नस जा उदर निहारी । पुरुष होइ अथवा सो नारी ।।
राजा रानी ताको जानौ । यामें शंक न तनको आनौ ।।
दम्पतिकी नीली नस होई । बहु धन-धाम बढै तिहि सोई ।।
रातीं नस उर देखौ कामा । ताको कहिये गणिका नामा ।।
पूरुष उर राती नस होई । व्यभिचारी जानौ नर सोई ।।
दम्पतिकी राती नस देखौ । ता बिच हेत न कबहूँ लेखौ ।।

लहसुनका लक्षण

चौ०–जाके उदर जु लहसन होई । नारी पुरुष होइ जो कोई ।।
तपसी रूप तपस्या करई । देश देशान्तरमें सो फिरई ।।
तिरिया मृगनैनी जो होई । चित्त पिया हरिहै तिय सोई ।।
मिर्ग पेट नारीको होई । कबहूँ दुःख न देखै सोई ।।
सो०–मृगनल नारि विचारि, सो प्रीतमको धन हरै ।
कब्रहुँ न होइ सुखारि, निशिदिन दुख देखति रहै ।।
चौ०–दादुर पीठ पेट जो होई । इक सपूत सुत जन्मै सोई ।।
तेज-निधान पुत्र सो होई । चकवर्ती राजा कहं सोई ।
कोमल पिकसे बचन सुनावै । दाडिम दसन स्वच्छ दरसावै
दृग दीरघ कटि खीन निहारौ । अतिसुन्दर रति-ऐन निहारौ
दोहा–ये लक्षण सुख सर्वदा, 'इंक्षा' कह्यो विचारी ।
बिना पुरबिले पुण्यके, मिलै न ऐसी नारि ।।

हृदयके लक्षण

दोहा–हिया अरुण जा नारिको, लक्षण लेहु निहारि ।
तीन पुत्र 'इंक्षा' जनै, कामिनि दुहिता चारि ।।

अति लांबे हिरदै तरुणि, दुखी रहै सो बाम ।
सुफल उरज सरवर मनो, सुखी सो आठौ याम ।।
लघु दीरघ जाके उरज, महादुखी सो जानु ।
अधर गाल कुच कठिन जिहि, ताहि सुखी पहिचानु
सुख सम्पति सन्तति बढ़ै, सुखसों आठौ याम ।।
बड़े भाग्य ता पुरुषके, कामिनि ऐसी धाम ।।

सो०-मुख नाभी भग खास, जा तियकी चमकै महा ।
सदन लच्छिमी बास, ,इंक्षा, ग्रंथन लखि कह्यो

पीठका लक्षण

दोहा-ऊँची सूखी जासुकी, सूखी देखौ पीठ ।
सो दासी पहँचानिये, द्रव्य न देखै दीठ ।।

सो०-कुबिजा नारी पीठ, विधवा ताको देखिये ।
पीठ लोम बहु नीठ, महा दुखी सो लेखिये ।।
पीठ लांबि अतिहोय, सो गनिका दुखिया महा ।
लहसुन पीठहि जोय, राजा-मंदिर देखिये ।।
परिमल कमल समान, छोटि वडी नहि देखिये ।
थोरो स्वेद प्रमान, नारि सुलक्षणि लेखिये ।।

दोहा-रोम कठिन जा नारिके, तासों करो न नेह ।
शीश देह रोवाँ घने, लाज नहीं उर तेह ।।

करपल्लवके लक्षण

चौ०-कोमल करपल्लव जुग होई । कमल-परन देखौ बुध सोई ।
सुख संतति सतीत तिहि होई । जैसी नारि जानौ तुम सोई ।।
कर अँगुठातर जेती रेखा । सुत सपूत तेते तिहि लेखा ।
जेती रेख तरजनी होई । तेती सुता जनै तिय सोई ।।
अरुन बरन कर करन दिखावै । सुख सुहाग नारी अति पावै ।।
एक एक तन रोम जु होई । महासुखी नारी है सोई ।।

दोहा-नील कमलसे चख दियौ, शुक्ल पक्ष जो सोम ।
ताकी श्री बाढ़ै सदा, दुःख करै सो होम ।।

चौ०-मैली काक दन्त मुख बासू । बांझ बिचारौ नारी तासू ।
लाल जीभ मुख होहि सुबासा । कुटुमवृद्धिनी पुत्र बिलासा ।।

अंगवास–लक्षण

सो०–अंग अनंगकी बासु, कपट भरी नारी कहै ।
रुधिर बास तन जासु, रहै न चञ्चल कंथ सँग ।।

दोहा–अंग गन्ध जाके बुरी, पियको सुख नहिं होइ ।
सुत आंखिन नहिं देखई, जों जीरेकी बोइ ।।
रुधिर–वास जा मदनमें बहु उदास ता धाम ।
अंगबास गौमूतकी फुल नासै सो बाम ।।
दूधबास जा अंगमें, महा दुष्ट तिय सोइ ।
भलि प्रीति नहिं कीजिये, सीख मानिये लोइ ।।
बास होइ मंजारकी, जा तरुनीके अग ।
सदा होय व्यभिचारिनी, रहै न पियके संग ।।

बरण लक्षण

चौ०–गौर बदन नारी जो होई ।गर्वित महा जानिये सोई ।
ज्ञानी दृढ धर्मी सो होई । पावै सुख पुरुष जो होई ।।
कमलपत्र दोऊ चख देखौ । गोरे बदन तियाको लेखौ ।
बिहंसत गाल गढा परिजाई । व्यभिचारिनि सो नारि बताई
अधर मधुर राते जो होई । गजगौनी लोनी अति सोई ।
पिकबैनी मृगनैनी होई । महासुलक्षण जानौ सोई ।।

दोहा–चरण कमलसम अंग जिहि, लघु दीरघ नहिं होइ ।
सुखी महा तिय जानिये, शुभ लक्षण हैं सोइ ।।

चौ०–क्षुधा नीन्द थोरी तिय होई । महा सुलक्षण जानौ सोई ।
चिबुक बडी राते चख देखौ । व्यभिचारी नारी सो लेखौ
भौरी भाल जासुके होई । महा कुलक्षण जानौ सोई ।
पलक स्याम तिल जाके होई । कुलवंती नारी है सोई ।।

दोहा–रसना जाकी स्वेत हो, वाल-रांड सा होइ ।
'इंक्षा' मासिल तालुतें, कुल नासैगी जोइ × ।।
सास नंदनको त्रास बहु, देय जो तालू श्याम ।
हरित रंग तालू तरुनि, पाप करै अठ याम ।।
दासी छोटी नासिका, शुभ नासा जो मोटि ।
शुकनासा शुभ सर्वदा, कुलटा चिपटी खोटि ।।

× जोइ–स्त्री

चौ०–चलदल पत्र सरीखे काना । अतिही पतरे सौख्य निदाना ।
मोटे कान बहुत जो होई । दासी तासु कहैं सब कोई ।।
दोहा–लोचन बक्र जु देखिये, दुखी रहे सो नारि ।
मेचक लोचन देखिकै, नारी कहो छिनारि ।।
तिल भूरे हिय देखिये, महा दुखित तिय होइ ।
जियै न संतति तासुकी, महा कुलक्षणि ओइ ।।
मिली भौंह जा तरुनिकी, मरैं नाह तत्काल ।
कंठ लांब राते नयन, महा दुखी सो बाल ।।
मोटी कटि पीले चरन, करसों छुवो न ताहि ।
महादुखी तिय जानिये, केश विरल हैं जाहि ।।
भाल रेख जा तरुनिके, अंगुल तीन विचारि ।
सुख सम्पति बाढ़ै सदा, जैसी होय सो नारि ।।

अथ वार लक्षण

दोहा–कठिन रोम मोटे अधिक, खाइ पुरुष सो नारि ।
दुखित रहै ना सुत जियै, पीत केश उनहारि ।।
सो०–जाके छोटे बार, काहूको देखै नहीं ।
महा करकसा नार, भूरे बार निहारिये ।।
दोहा–चिबुक मुंछ अरु श्रवनमें, जाके बार लखाइ ।
रोम दरिद्री जानिये, दुखिया महां लखाइ ।।
सटकारे कारे बरन, अति चमकैं जो बार ।।
वास लक्ष्मीको सदा, ताके भवन निहार ।।
चौ०–कुंचित कच मेचक जो होई । छूटे छुवैं पदन जो आई ।।
पतिव्रता नारी सो जानो । महा सुलक्षणि ताहि बखानो ।।
छोटे मोटे भूरे होई । ठाढे होंइ फूलिकै सोई ।।
महा दुखी सुख देखै नाहीं । याते और कुलक्षण नाहीं ।।

अथ नाम–लक्षण

चौ०–बन फल अरु सरिताके नाऊं । नर देवी बिरछा अरु गाऊं ।।
इनके नाम होइ चो भामा । निश्चै रांड जानिये बामा ।।
दोहा–नैनन झपकी भूख बहु, अलसाने सब अंग ।
सदा रहै तिय रोषमें, सकल कुलक्षण संग ।।
जेते पुरुष दोष हैं, तेते लक्षण जान ।
शुभ लक्षण तिय अंगमें, हैं सब औगुन-खान ।।
इति द्वितीय दम्पतिखंड समाप्त ।। २ ।।

अथ तृतीय--खण्ड ३.

संयोगका वर्णन

प्राक्कथन

दोहा—'इंक्षा' प्रीति न कीजिये, नारी विषकी बेलि ।
जो नर आयो तिया-मग, दुख पायौ सुख ठेलि ।।
तरुवर देखि सुहावना, छाया बैठि न भूल ।
विष फल फूल बिचारियै, बिष शाखा बिष मूल ।।
लई पुरन्दर सहस भग, चन्द्र कालिमा लागि ।
तिया-प्रीति दुखको लह्यो, समझो बुद्धिसभागि ।।
रामचन्द्र चिन्ता भई, लई जु सीता साथ ।
दस-मस्तक रावण मर्यो, परनारी गहि हाथ ।।
सकौ तो नारी परिहरौ, भूलि न करौ प्रसंग ।
ज्ञान घटै दरसन किये, देह घटै परसंग ।।
जिन जानी तिन परिहरी, चितसों दई भुलाय ।
भल्यो न जान्यो तिया-रस, गोपी दई लुटाय ।।
दुःखखानि तिय जानिये, रस अरु बिरस बिचार ।
बिरस किये चिंता बढ़ै, रसमें जिय संहार ।।
धनकारन सब धन दियौ, जानौ धनक शरीर ।
कामिनि गुण मानै नहीं, फिर आवै नहिं तीर ।।
ताते संग्रह ना करौ, देखौ नहीं सुभाव ।
तन मन शीशहुके दिये, तजै न अपनी दाँव ।।
कामवश्य कामिनि सदा, जो देखौ मदअंध ।
यहै ज्ञान चित धारिकै, करहु सुरति-परबन्ध ।।
काम बियापै पुरुष-तन, थिर न रहै तब चित्त ।
तन मन कामिनि संचरै, समुझि देखिये मित्त ।।
जो पुरुष बस कामके, थिर न रहै बिन नारि ।
याते बुध जन देखिकै, कीजै सुरति विचारि ।।
सुरति न करै बिचारिकै, भली बुरी जो नार ।
स्वाद परापति ना लहै, होय प्रान-संहार ।।
शुभ नारी सुखिया महा, ताहीसों चित लाइ ।
दुख सुख साथी नारि वह, सदई एक सुभाइ ।।
परनारीको चित कहै, रहि न सकै बुधि ज्ञान ।
और सबनसों रति करौ, इतनी तजौ निदान ।।
महापाप इनमें रमे, कुलको होइ कलंक ।

इनते अति दूषन लहै, ताते तजौ निसंक ।।
धर्म रहे सब रहत है, धर्म गयें सब जाय ।
ताते नारी त्याग दे, रमौ न बुद्धि भुलाय ।।

अथ त्याज्य नारी

छन्द–प्रथम महीपति–नारि, बंधु ब्राह्मणि ठकुरानी ।
बिधवा पतित कुमारि, और सहचरी बखानी ।।
शरणागत कुल–नारि, नीच गृहबधू बखानौ ।
जोगिनि मूरख मित्र, कपिल थाती धरि जानौ ।।
गुन–विदग्ध रसभ्यास, दुचित जानौ जो नारी ।
सैनदूति इत बाईस, सहित जानौं रँग कारी ।।
दोहा–त्याज्य नायिका बहुति हैं, बुध जन करहु विवेक ।
'इंक्षा' इत बाइस कही, अंग छुवो नहिं नेक ।।

सैन–दूतिकाके भेद

दोहा–सैनदूतिका कामिनी, आवै अपने पास ।
तासों प्रीति न कीजिये, छिनमें होइ विनास ।।
ऐसी कामिनि जानिये, प्रीति बढ़ावै आनि ।
चलन चारु सब देखिये, यहै सयानप जानि ।।
तन मन प्रीति न कीजिये, मुख नहिं सूखे बोल ।
निकट जाईकै देखिये, दूरि सुहावन ढोल ।।

रसाभ्यास दुचित्त नारी

दोहा–पिया केलि कीनो चहै, तिय विरक्त मन–माँहि ।
परि पायन पिय अति रहै, कहै तऊ तिय नाँहि ।।
पिय मुख हेरै वायको, तिया रहै मुख मोरि ।
वात कछू पूछो चहै, कहै न नैना जोरि ।।
निरखै दृगसों दृगनको, तिया पीठ तब देद ।
पिया देइ भूषन कछू, तिया न हँसिकै लेई ।।
प्रीतम करसों कर गहै, तिय तन व्याकुलताइ ।
पिया लगावै हीयसों, कामिनि अति अकुलाइ ।।
पिय कपोल–चुम्बन करै, पोंछि डारै तत्काल ।
पिय सँग सोवै रैनिको, कामिनि चित्त बिहाल ।।
पिया कहै अनुराग कछु, तिया धरै नहिं चित्त ।।
सत्तु बिचारै ताहिको, होय पियाकी मित्त ।।
पिया बहुत सेवा करै, तिय बिरक्त जो होइ ।
मरिबो पियको नित चहै, रसभ्यास है सोइ ।।

अथ मलीना वर्णन

सो०–बसन मलीन अंग, मन कच रूखे देखिय ।
रूख बदन निहंग, सूख अधरन लेखिये ।।
निंद्य करम चित लाय, कामिनि जग-निन्दा करै ।।
ऐसीसे बच जाय, ता नरको उत्तम गिनौ ।।

दोहा–मौन गहै बहु कामिनी, चित चिन्ता बहु होय ।
मर्म न काहूसों कहै, घर न सँभारै सोय ।।

चौ०–पिय तौ हँसिकै भोजन मांगै । क्रुद्ध तियाको अनइस लागै
ताते तेल परै जनु बुंदा । कामिनि करै बहुत फरफंदा ।।
झूठो रोग कहू नहिं भांपै । नित उठि क्रोध ताप-तन सापै ।।

दोहा–रारि करै नित पीयसों, सबसों लरै बिसेखि ।
क्रोधवंति नितही रहै, रसभ्यास चित लेखि ।।
रसभ्यास बिधि कोन है, क्यों बिरक्त ह्वै तीय ।
सो कारन सुनि लीजिये, रमनी तजती पीय ।।

अरिल्ल–कामिनि होइ विरक्त, प्रेम पियसों परिहरै ।
सेवा पियकी छाँडि, चित्त निज अनतै धरै ।।
ताक भाव विकार, विचारौ बुध बुद्धितें ।
तिय दुचित्त रसभ्यास, होत भाव पच्चिसतें ।।

पच्चीस भावके नाम

सो०–पिया निठुर नित बोल, तियसों जो बोलत रहै ।
कै विदश बहु डोल, संतति–प्रापति ना लहै ।।

दोहा–अप्रियसों जो रस करै, क्रोधवंत नर जोइ ।
पर–कीरति धारै सदा, कै विपतामें होइ ।।
नहिं विचार गुन-दोषको, कै पूरुष धनहीन ।
कै तरुनी मैके सदा, कै बंध्या सुत हीन ।।
बालकपनमें पिय मरै, नाह नपुंसक होइ ।
कै गृह सौत विचारिये, शक्ति-हीन पिय जोई ।।
कै विगंध × पियतन लहै, कै दंपति रसहीन ।
कै तरुनी तिय जानिये, व्याह वृद्धसों कीन ।।
कै बालक कै रोग वश, पिया होइ इहि भाइ ।
कै मूरख पिय जानिये, चतुर नारि दरसाइ ।।

× दुर्गन्ध

पिय व्यभिचारिन-सँग रहे, कै अतिकामी होइ
कै बहु-पुरुषनलों फिरै, जानो चतुर सुलोइ ।।
कै मादिक कै मद पियै, भाव पचीसो होइ ।
कामिनि नहिं चूकै क्यों, व्यभिचारिनि ह्वै सोइ ।।
भाव सबनके बरनिये, बाढ़ै ग्रंथ अनंत ।
तातें कह्यो संक्षेपसे, 'दंपा' समझहु संत ।।

अथ बैसि वर्णन

दोहा—भाव दोइ सब तियनिमें, रहत बैसिकै संग ।
लज्ज अलज्ज दोनों बढ़ै, ज्यों पुरइन-जल-संग ।।
लाज दसगुनी अष्टगुनी, काम भामकी देह ।
हठ अठगुन दूनी क्षुधा, समुझि बुद्धिजन लेइ ।।

बैसिके नाम

दोहा—प्रथम बैसि कन्या कही, दूजी गौरी जानु ।
तीजी बाला बैसि कहि, चौथी तरुनी मानु ।।
पंचम प्रौढा लेखिये, छठवीं वृद्धा होइ ।
अपनी अपनी बैसि गुनि, सुख मानत सब कोइ ।।

छः अवस्थाओंका प्रमाण

दोहा—सात वर्षलों कन्यका, लाज बहुत तिहि अंग ।
काम किलोल न कीजिये, होत धर्मको भंग ।।

गौरी वर्णन

दोहा—गौरी द्वादश वर्षकी, लाज काम सम सोइ ।
ताकौ बिलसौ बुद्ध जन, महा मोद तन होइ ।।

बाला-वर्णन

दोहा—बाला जानौ बीस लगु, लाज काम अधिकाय ।
तासों निरभै भोग करु, दोनों दिशि सुख पाय ।।

तरुणी वर्णन

दोहा—तरुणी जानौ तीस लगु, काम धाम भुज जासु ।
जो जस चातुर रस चहै, सुख बिलसै लै तासु ।

प्रौढा-वर्णन

दोहा—प्रौढ़ा चालिस वर्षकी, ताहूसों रति मानु
प्रेम बढ़ावै नारि सो, महा चतुर जिय जानु ।।

वृद्धा वर्णन

दोहा—वृद्धा चालिस उपरतें, तासो नहिं रति मानु ।।
बात करौ रति ना करो, ताहि हलाहल जानु ।।

उन्मत्त भामिनी

छट्पद—जो कामिनि मद मंत । चहै सुरति रस कंत ।।
है हुलास मुख हास । चित्त बसै रति तास ।।
भाव भौंहन अवगाहै । काम ज्वाल तन दाहै ।।

चौ०—रचि रचि भूषण करै सुनारी । सकल द्योस प्रति अंग सुधारी ।।
मुखसों तिय रसबोल निकारै । सुरस राग रागिनी उचारै ।।
मँजै कपोल अँजै तिय नैना । सुरँग श्याम रद मधु मुख बैना ।।
कर गहि दरपन बदन निहारै । अंग अंग सिंगार सुधारै ।।
रोवाँ होंहि अंग जहँ ताई । लहि फुरहरी तिया सुहाई ।।
कौन समै व्यापै तिय कामा । प्रगट करौं ताहूके नामा ।।

दोहा—कौन समै तिय काम वसि, आइ बियापत अंग ।
रमै पराये पुरुषसों, लाज करै तिय भंग ।।

काम—व्याप्ति समय

जब जौबनवश कामिनि होई । छोड़ि सुभाव पुरुष चह सोई ।।
कामिनिपन तिय जानौ तबही । भामिनि मान तजै उर तबहीं ।।

दोहा—काम अग्नि जा तीय तन, तपै बैसिपर आनि ।
कहौ ज्वाल कैसे बुझे, पुरुष न लागै पानि ।।

अन्य समय

चौ०—पुहुपवती कामिनि जब होई । सीप तियातन खोलै सोई ।।
जबलगि स्वाति बुंद नहिं पावै । तबलगि चितथिरता नहिं आवै
जबही गर्भ धरै तिय कोई । बीते मास दोइ रुचि होई ।।
उठै काम ज्वाला अति भारी । पूरुष चहै समै पर नारी ।।
मोचै गर्भ होय परसूता । चालिस दिन जब होइँ व्यतीता ।।
तहाँ काम कामिनि तन दाहै । मन वच कर्म पुरुषको चाहै ।।

दोहा—काम व्याप भै सब समै, 'इंक्षा' कहत पुकारि ।
आपन नहिं पावै पुरुष, रमै परावा नारि ।।

अन्य कामव्याप्ति—समय

चौ०—कै बसन्त पावस निरखाई । कै देखै घनघोर सुहाई ।।
कै दामिनि पिकवचन सुनावै । कै कहुँ नाचत मोर दिखावै
कै वनके मधुकर गुंजारै । कै दीपक कै चंद निहारै ।।

सवन सुहावन सेज निहारी । शीतल मंद सुगंध बयारी ।।
पुहुपवास औ पान कपूरा । सरस राग सुनि मदन अकूरा
सुनि रसकथा दूतिक बचना । कर बर पन जागत तब मदना

दोहा–कै सुन्दरता आपनी, परखि भाव तिय कोइ ।
उठै भभूका मदनको, सुस्थिर रहै न सोइ ।।
हैं विकार येते जहाँ, उठै मदनकी ज्वाल ।
नहिं पावै पिय आपना, रमै परावा बाल ।।

सो०–बिना सुरति अकुलाइ, मदन व्याप तिय अंकमें ।
धरैं हिंडोल पांइ, सो बिनु झूल क्यों रहै ।।
करैं जु अपना दाँय, कै नैनन कै बदन मिलि ।
तहाँ न प्रेम बसाय, द्रव्य दइ जब हाथमें ।।
परैं मदनके फंद, ऐसे गुन कामिनि करैं ।
मिटै न हियको द्वंद्व, जब लगि रति ठानै नहीं ।।

चौ०–सो कामिनि द्वैभांति बताऊँ । संगम और असंगम नाऊं ।।
व्याही होय सुसंगम कहिये । होइ कुमारि असंगम लहिये ।।

संगमा नारीके भेद

चौ०–जाको नाम संगमा नारी । सो जानै पुरुष व्योहारी ।।
करैं कुलाहल तिय बहु भाई । चलिकै मिलै पुरुषसों आई ।।
कै दूती कै सखी मिलावै । स्वयं दूतिकरि तब ही आवै ।।
सुरति कुलाहल कामिनि रचई । जा विधि भेद लखै नहिं कोई

असंगमा नारीकी अवस्था

चौ०–कामिनि जाहि असंगम नामा । ताकी देह वियापै कामा ।।
श्रवन न काम कुलाहल सुनई । तन हुलास बाढै तिय सोई ।।
दिनदिन काम-केलि-रस बाढै । मदनज्वाल दिनप्रति तन दाढै ।।
अग्नि तेल डारैं जनु कोई । उठै ज्वाल प्रजुलित अति होई ।।
आलस अंग अधिक तिहि होई । घर आंगन न सुहावै कोई ।।
सखी धाय कोऊ नहिं भावै । विकल अंग कामुक-चित लावै ।।
छिन छिन काया छीन दिखावै । पुरुष मिलनको चित ललचावै ।।
मनमें चिंता यही बिचारैं । पुरुष मिलै सुरति बिस्तारैं ।।

सो०–त्यों त्यों कछु न सुहाइ, ज्यों ज्यों व्यापै सुरति-रस ।।
लाज-सिंधु तरि जाइ, साहस करि माया रचै ।।

अथ सुन्दररूप पुरुष

चौ०–कामवंत बलवंत दिखावै । धनवंता पूरुष दरसावै ।।
कला-निपुण अति सुन्दर होई । चौदह विद्या जानत जोई ।।
अतिदातव्य होइ परस्वारथ । गहै खड्ग जीतै तब भारथ ।।
चढ्यो न अंग तेल यदि जाहीं । आनै दृष्टि तियाकी ताहीं ।।

छन्द–कै कोइ उत्तम नारि, प्रेम बसि ताके होई ।
कंठ–नाद अति होइ, बचन छलबल है सोई ।।
बांचै वेदवानी सुघर, काम कथा नौ रस करै ।
चंचल ,इंक्षा, सुभाइ, चित्त कामिनि हरै ।।

सो०–पुरुष पान बहु खाइ, बिहंसत मुख बोल बचन ।
तासों तिया लुभाइ, बिन देखे चित चैन नहिं ।।
कै सुन्दरता देखि, कै बालापन सँग रहै ।
उपजै प्रीति बिशेखि, चितवै नैना जोरिकै ।।
रंहसि होहि मनमाँहि, देखै सुन्दर पुरुष तिय ।
पावै शीतल छांहि, जैसे प्यासा नीरका ।।
सुरति कुलाहल–हेत, अंग अंग चातुर करै ।
,इंक्षा, सो कहि देत, प्रगटै मनकी कामना ।

असंगमा नारीकीचेष्टा

दोहा–तिया असंगम काम बसि, चाहै सुरति किलोल ।
छिन छिन ये लक्षण करै, समझै चतुर बिलोल ।।
पल पल पुरुष-बदन तकि, रहै तिया मुसकाय ।
छिन पट मखपर ढांपई, छिन मुख देति दिखाय ।।
छुटे केश लटकी अलक, कंचुकि कसै उरोज ।
कुच-मरदन निज हाथ ही, जब ही दहै मनोज ।।

सो०–भौंहन तकै मरोरि, सखी पकरि अंकहि भरै ।
तिया उभै कर जोरि, पौरि जाई चितवति रहै ।।
झलकि झाँकी छिपि जाइ, पुरुष मिलनका लोभ अति ।
कबहुँ बिहँसि लजाइ, भुजा दोउ सिरपर धरै ।।

दोहा–चित उदास कबहूँ तरुनि, कर-पल्लव चटकाइ ।।
कान खुजाव आंगुरी, तक भौंह मटकाइ ।।
पल पल आव जाइ तिय, फिरि फिरि रहै निहारि ।।
कंठमाल मग ठाढि ह्वै, सुरझावै सो नारि ।।

उरज नाभि मुख खोलिकै, नारी देय दिखाय ।
बालकको गहि प्रेमसों, उरतें लेय लगाय ।।
चुम्बन मुख शिशुको कर, पंथ चलत थकि जाइ ।
बिन बोले बेकाज ही, बोलै बचन सुनाइ ।।
अभरन सकल सँवारिकै, तिया चलै मग सोइ ।
भुकिकै अनवट कर गहै, जहाँ पुरुष कोउ होइ ।।

चौ०—दसनन अधर गहै सो नारी । लिखै अंगूठा भूमि निहारी ।।
चंचल चपल भाव दिखरावै । हाव-भाव करि मन ललचावै ।।
ये लक्षण कामिनि दिखरावै । जानौ तिया सुरति-रस भरवै ।।
जैसी आतुर कामिनि होई । तैसो पुरुष मिलै जो कोई ।।

दोहा—कामातुर जो कामिनी, मिलै जु वैसो छैल ।
पावै मनमथ सारथी, एकै रथको बैल ।।

चौ०—ऐसो ढंग कामिनि जो करई । देखि पुरुष धीरज नहिं धरई
कहौ कौन विधि आवै सेजा । बुझै अग्नि जो दहै कलेजा ।।
नायक चतुर राग-रस जानै । सखी सुजान प्रेमवशि आनै ।।
साम दान करि मान बढ़ावै । तासों प्रेम-हेत जिय लावै ।।
साम जु मीठे बचन सुनावै । दान जु कछु भूषण पहिरावै ।।
मान बहुत आदरके नामा । तासों बश्य करै सो भामा ।।

दोहा—तासों कछू उपाय करि, पुंछै तियको नाम ।
तापर यह टोना करै, बसीकरनको धाम ।।

वशीकरण. मंत्र

'ॐ पिशाचरूपेण ,अमुकस्य, लिंगं परिचुंबयेद्भुगं विसिंचयेत् ।।,

चौ०—हाथ हथेरी जल भरि लेई । इकइस बेर मंत्र पढ़ि देई ।।
प्रातः सात बार मुख धोवै । अरध रात येही विधि पीवै ।।

दोहा—अरध रात जब जल पियै, ऊपर कछू न खाय ।
कछू दिवसमें अवेसिकै, नारी बसि ह्वै जाय ।।

अन्य वशीकरर्ण मंत्र

"ॐ नमो भगवते रुद्राय चामुंड ,अमुक, हृदय पिबामि चामुंडनी स्वाहा ।।

चौ०—दक्षिण पाणि लेइ जल कोई । इकसौ आठ मंत्र पढ़ि सोई ।।
पीवै नीर अरध निशि होवै । तीन बार तत्क्षण फिर सोवै ।।

दोहा–आवित्ततें आरम्भ करि, पीके चुप रहु सोय ।
यहु कछु दिन पूरब कर, तिय निश्चै बसि होय ।।

दूसरा मंत्र

" ॐ ऐंक्लींह्रौं रक्तपद्मावत्यै नमः ।"

चौ०–जाको नाम जपै लै माला । निश्चै बस्य होय सो बाला ।।
अष्टोत्तर माला बनवावै । तीन बार इक बार फिरावै ।।

दोहा–प्रात दुपहरे सांझको, जपै तियाको नाम ।
सात दिवसमें होयगी, वस्य तुम्हारे भाम ।।
जासों त्रियको नाम गहि, तासों प्रीति बढाइ ।
अपने मनकी बात सब, सखिसों कहै सुनाइ ।।
चतुर कलानि-प्रवीन जो, कारज कर विचारि ।।
गई जु मनको जीतिकै, सोई पांसा डारि ।।

चौ०–हियसों सखी करै चतुराई । कहै तियासों जाइ-बुझाई ।।
सुनै तिया जब पुरुष–कहानी । तिय अनुराग बढावै जानी ।।

दोहा–तिय अनुराग बढावई, सुनिकै पुरुष-वियोग ।
सखी मिलावै आनिकै, हरै विरहको रोग ।।

प्रथम मिलन–संकेत

दोहा–प्रथम मिलन संकेत, चित्त न आतुर कीजिये ।
सकल नेहके हेत, तियतनमें बुधि लेखिये ।।

चौ०–प्रेम सहित बातें उच्चारै । कछु आतुरता चित्त न धारै ।।
आतुरता अनुराग घटावै । हरै प्रेमबल बुद्धि नशावै ।।

सो०–नूतन कामिनि साथ, हलराये रस कीजिये ।
चांपे चढै न हाथ, जैसे पानी रेतका ।।
चतुर-पुरुषसों नार, मिलती धाय असंगमा ।
प्रेम देत नहिं बार, अंग देनकी को कहै ।।
चेटक और उपाइ, नैन बिलोकन बैन सुनि ।
कामिनि हर्ष बढाइ, नायक चित्त दिखाइकै ।।

दोहा–सखी न चातुर देखिये, तिया-संगकी कोइ ।
ता कारन 'इंक्षा' सकल, दूति बतावै सोइ ।।
जान नारी भेद सब, औषधि देउ बताइ ।
कंचन रिपु ज्यों देखिये, तुरतै देह मिलाइ ।।

दूतीप्रभाव वर्णन

कुण्डलिया

नहिं मन्त्री बिन राज कछु, अधिक नहीं बिन बाल ।
जंभी बिन बीणा कछू, नहीं पुरुष बिन बाल ।।
नहीं पुरुष बिन बाल, धनुष बिन बाण न होई
जल बिन हीनो ताल, बिना गथ गरू न कोई ।।
कहि ,इंक्षा, यहि भाँति, मित्र आपन अति पूरुष ।
केवट बिन ज्यों नाउ, दूति बिन कामी पूरुष ।।

दोहा—ते पचीस दूती कहौं, लेहु चतुर जिय जानि ।
कर दूतपन बुद्धिबल, दम्पति मिलवैं आनि ।।

दूतीके नाम

कुण्डालिया ।

धाइ सखी बुढिया तिया, चेरी मालिनि होइ ।
गाँधिनि चितेरी जोगिनी, तिया परोसिनि जोह ।।
तिया परोसिनि जोइ, ढेढ, गायबि लोहारी ।
रामजनी मनिहारि, बढैनी और कहारी ।।
धोबिनि नाइन ग्वालि, और बारिनि पहिचानौ ।
सुजन कुटीचर-नारि, तँबोलिनि दूती जानौ ।।

दोहा—बैर केसरू बेंचही, ब्योपारिन-तिय होई ।
'इंक्षा' ये संसारमें, कर दूतपन सोइ ।।
जो तिय डेहरी ना चढी, बुधि-बल ल्यावै ताहि ।
'इंक्षा' राजा रंकके, सबके ही घर जाहि ।।

सो०—इनसों रहौं सचेत, जो चाहौ लज्जा रहै ।
बैठें तापन हेत, आग लगावैं परभवन ।।
मिल उपजावे हेत, इत्यादिक दूती सकल ।
आनि करैं संकेत, दम्पति राग बढायकैं ।।
जोरि करैं इक ठौर, पर नारी पर-पुरुषको ।
बैठि बिराजैं पौर, पान मिठाई द्रव्य लै ।।
दूती चतुर जु होइ, इत्यादिक मधि जानिये ।
बीजी ×लखौं न कोइ, तासों मनका भेद कहि ।।

× बीजी दूसरी

अथ मधु दूती

चौ०—बुद्धिवन्त गुनवन्त वखानौ । चतुरा ज्ञान तीय पहँचानौ ।।
कुशल कला उत्साह बढावै । प्रेम बहुत मधु बचन सुनावै ।।
हँसमुख अरु साहसी गँभीरा । होइ बहुत ही चितमें धीरा ।।
प्रेमवस्य दूती जो होई । मधुदूती जानत सब कोई ।

दोहा—करु आदर बहु हेत, मिल ज ऐसी दूतिका ।
दम्पतिको संकेत, आनै अपने बुद्धि—बल ।।

अथ संकेत वर्णन

दोहा—प्रथम मिलनके ठाँउ जे, प्रगट कहे तिन नाइ ।
निरभै थल जानौ चतुर, तहाँ मिलौ चित लाइ ।।
धाइ-सहेली-भौंनमें, कै सूनो गृह होइ ।
देव—पूजमें जाइये, कै तीरथपर सोइ ।।
जनी-सदनमें कीजिये, अभ होइ उत्साह ।
कै पनिघट स्थानमें, जानौ चतुर विवाह ।।

सो०—प्रथम मिलनके हेत, उत्तम येते ठौर सब ।
तहाँ करौ संकेत, जो थल निरभै जानिये ।।
जैसी कहौं बनाइ, तैसी बिधि सेजा रचौ ।
बाढ़ै बरसन काम, परस भये अति सुख लहै ।।

सेज—वर्णन

सो०—सवन सुहावन होइ, बहु पवित्र चित्रित करैं ।
झालरि चँदवा सोइ, छात सर्वसों तानिये ।।

कुंडलिया ।

भाँति भाँति वस्तुको, ताखन धरै बनाइ ।
भूमि सुहावन विविधविधि, डारै चतुर छिपाइ ।।
डारै चतुर लिपाइ, स्वेत डासन भुइँ डासै ।
तापर ल्याइ प्रयंक, बहुत विधि डोरिन कासै ।।
कहि ,इंक्षा, यहि रीति, बनावहु सेज सुहाई ।
अरस परसि सुख होइ, देखि चित जाइ लुभाई ।।

दोहा—तहां दीप बहुभांतिके, बरैं सुगन्धित होइ ।
पँचरँग बस्तर लाइकै, रचौ प्रयंकहि सोइ ।।

चौ०—प्रथम तुलाई सेज बिछाम्रो । तापर पँचरँग बसन डसाम्रो ।।
तापर झ्मीन बिछौना डासौ । महा श्वेत फूलनसों बासो ।।
पुहुप पिछौरा तापर परई । डोरी कसि ताको दृढ करई ।।
तापर गेंदा धरै सुहाये । और गलसुवा पुहुप पुहाये ।।
स्वेत अरुन बहु पुहुप मृगावै । ताके निज कर हार बनावै ।।
सकल भौन चन्दनसों छिरकै । देखत मदन जागि तन धरकै ।।
मृगमद केसरि आनि कपूरा । जावित्री जातीफल तूरा ।।
पान धाइ कुंकुमके पानी । बीरी लौंग इलाची आनी ।।

दोहा—अगर धूप दै भवनको, मलजय घँसि छिरकाय ।
तहँ कामी बठे चतुर, अपनो अंग बनाय ।।

अथ पुरुष बानक

सो०—मंजन सुषमामूल, बहु सुगंध अँग-अंग सनि ।
उत्तम स्वेत दूकूल, कण्ठमाल अति सोहिनी ।।

दोहा—यहि बिधिते कामी पुरुष, बठे सेज बनाइ ।
तब कामिनि सिंगारयुत, दूती मिलव आइ ।।

अथ कामिनीका सिंगार

सो०—षोडस करि सिंगार, द्वादस अभरन साजिये ।
कामिनि करन विहार, दूतीके सँग आवई ।।
करत सकल नर नार, जो सिंगाँर अभरन सुन्यो ।
इंक्षा, सो व्योहार, एक एक बरनन कर ।।

आभरनके नाम

अरिल्ल—प्रथम कर सुस्नान, शीश कच गूँधि संवारै ।
मुख तंबूल दृग आंजि, हार उर ऊपर धारै ।।
कंचुकि मलयज ठानि, नाक बेसर अति साहै ।
शीशफूल भुजपान, देखि अति ही मन मोहै ।।
करनफूल अतिबिदित, किंकिनी कटि तिय गाजै ।
द्वादश अभरन जानि, चतुर जो भूषन बाजै ।।

सो०—कोई लेइ उतारि, कोई कंचुकि कुच ढकै ।
लीजौ चतुर विचारि, दोइ भांतिकी कामिनी ।।

दोहा—यहि प्रकारसों कामिनी, चल सुरतिरस हेत ।
नायक उठि आदर करै, उठि आगे ह्वै लेत ।।

चौ०–सिरहाने कामिनि बैठावे । आप विहँसि कै पायन आवै ।।
बहु आधीन तकै तिय रूपा । अंग लखै मुददृष्टि अनूपा ।।
ज्यों ज्यों मिलै नैनसों नैना । त्यों त्यों मन मिलि बोलै बैना ।।
हाव भाव करि मन हर लेई । हांसी खेल करै तब सोई ।।

अथ बीरी वर्णन

चौ०–कामी पाडर पान मँगावै । खैर सुपारी साथ लगावै ।।
करसों फेरि सुपारी लेई । ताको धरि बीरी पर देई ।।
सो बीरी कामिनि मुख देई । नहीं खाइ कै हितसों लेई ।।
बीरी सहजहि खाइ जु नारी । एक हिया इक चित्त बिचारी ।।
काढि सुपारी करमें दाबै । बीरी नहिं जो हितसों चाबै ।।
निश्चै तिया कपट जिय जानौ । मनसों मन नहिं मिला बखानौ ।।
कामी निज कर बीरी लेई । करसों कर नहिं मुखमें देई ।।
अधर छुवै करपल्लव नेका । देखै तियको भाव विवेका ।।

सो०–बिकसै नैन कपोल, अधर छुवत मुसकाइ कछु ।
त्रिया न डारै बोल, निश्चै मनमें जानिये ।।
त्यों त्यों लेइ उसांस, ज्यों ज्यों पान चबाइ तिय ।
मुख ल्यावै मुख-पास, खास–बासके कारने ।।

चौ०–मुखसन मुख इक ठौर मिलावै । बाम कंध गहि कण्ठ लगावै ।।
बहु अधीन तियसों बतलाई । तब रस–वचन कहै कछु गाई ।।

सो०–चाहै पुरुष तुरंत, मदन–जोति जागै हिये ।
जौ न होइ मदमंत, कामिनि पिय चाहै नहीं ।।

दोहा–सुरति–समै ज्यों पुरुषतन, मदन बियापत आय ।।
तैसे कामिनिके हिये, लीजो चतुर जगाय ।
जौन-भांति तिय-अंगमें, मदन जगावै कंत ।
सो 'इंक्षा' बरनन कर, सुनो सकल बुधिवंत ।।

काम–जगावन विधि

दोहा–सात अंग चुम्बन करै, षष्ठ अंग नख-वानु ।
पांच अंग चुम्बन करै, द्वादश लिंगन जानु ।।
मनको बहु ढाढस करै, कामवंत नर होइ ।
रसहीसों रसको करै, चतुर कहावै सोइ ।।

सो०—लावै केश सुधारि, करसों बेनी—मूल गहि ।
सकुचि प्रेमसे नारि, करतल परसै पीठिसों ।।
गाढालिंगन देइ, भुजा धरै लै कंधपर ।
तैसी ही करि लेइ, जैसी विधि बरनन करौं ।।

चुम्बनस्थान निरूपण

दोहा—दृग अरु अधर कपोल पुनि, चिबुक ग्रीव हिय जान ।
भाल—पटल चुम्बन करै, होवै मोद महान ।।

छः अंगोंमें नखदान

सो०—अधर पयोधर ग्रीव, कटि अरु पीठ विचारिये ।
काँखमाँहि पुनि पीव, नखाघात मुदयुत करै ।।

पंच खंडन—स्थान

सो०—अधर चिबुक अरु गाल, नैन हीय पांचों कह्यो ।
खंडन करौ गोपाल, तिया बहुत आनँद लहै ।।

आलिंगनको रीति

दोहा—आलिंगन सहजहि करौ, ज्यों न चित्त अकुलाइ ।
दम्पतिके चित रस बढ़ै, सुरति केलि सरसाइ ।।

द्वादश आलिंगन नाम

सो०—आमोद उदित रु प्रेम, आनँद रुचि जानौ चतुर ।
सुरति—चाहके नेम, काम-दिपन हियहर्ष कहि ।।
दम्पति मधुसो नाम, काम—कुलाहल लेखिये ।
है मनहरन अराम, ,इंक्षा, कवि वर्णन कियो ।।

प्रथम आमोद—आलिंगन

चौ०—भाम—कंध कर बाम गहाई । तियको पिय लै गोद बिठाई ।।
पान खवावै प्रीति सनेहा । आलिंगन आमोद है एहा ।।

द्वितीय उदित आलिंगन

चौ०—तरुनीको बिच जंघा लेई । मधु खवाइ ताहीको देई ।।
महाहर्ष दोनों तन होई । उदितालिंगन कहिये सोई ।।

तृतीय प्रेम आलिंगन

चौ०—पतिकटि एक चरन लपटाई । द्वितिय जांघपर जानु सुहाई ।।
उर प्रीतमके परिमल लावै । सो आलिंगन प्रेम कहावै ।।

चतुर्थ आनन्दालिंगन

चौ०–विविकट व्यभिचारिन लपटाई । भरहि अंक सुखकंद सुहाई ।।
मुख–चुम्बन कुच–मर्दन करै । आनँद नाम ताहिको धरै ।।

पँचम रुचि–आलिंगन

चौ०–तिया, पियाकी जँघपर रहै । कंध बाम कर पीठहि गहै ।।
दोऊ मनमें आनँद लहैं । ,इंक्षा, रुचि-आलिंगन कहैं ।।

छठा सुरति–चाह आलिंगन

चौ०–भुजा दोउ ग्रीवामें मेलै । हियसों हियल पटाये खेलै ।।
करै आलिंगन पिय अरु बामा । सुरति–चाह है ताको नामा ।।

सप्तम कामदीपन आलिंगन

चौ०–एक भुजा कांधेपर डारै । दूजी भुजा लंक गहि धारै ।।
तिया पुरुष आलिंगन करई । नाम काम–दीपन तिहि धरई ।।

अष्टम हिय–हर्ष आलिंगन

चौ०–कामिनि–कंठ पिया भुज गहै । पिय कटि भामिनि पायन लहै ।।
हियसों हिय लपटै तियकर्षा । सो गाढालिंगन हिय–हर्षा ।।

नवम दम्पति आलिंगन

चौ०–पिय–जंघापर प्रेम लगाई । बैठे तिय मुखसों मुख लाई ।।
हियसों हिय लपटै सुख बाढ़ै । नाम आलिंगन दम्पति काढ़ै ।।

दशम मधु आलिंगन

चौ०–तियको पिया जंघ मधि लेई । गाढो आलिंगन अति देई ।।
भुजा कण्ठ दम्पति जौ गहै । मधु–आलिंगन ताको कहै ।।

एकादश काम–कुलाहल आलिंगन

चौ०–तियकी जंघबीच पिय आवै । तिय निज कर पिय कंठ लगावै ।।
दोनों इकमन हितसों होई । काम कुलाहल जानो सोई ।।

द्वादश मनहरन आलिंगन

चौ०–चरन चरनजुग गूँथैं दोऊ । अधरन अधर मिलावै सोऊ ।।
उरसों उर हिय हिया मिलावै । आलिंगन मनहरन कहावै ।।

सो०–चुम्बन औ नखदान, खण्डन आलिंगन कहे ।
यदि बिलसै मतिमान, सुखी दोउ तन देखिये ।।

दोहा–काम जगे बिन रति करै, तिया तृप्ति नहिं होय ।
पुरुष सुखी तिय दुखित रति, मिथ्या जानौ सोय ।।

कामबास तिय अंगमें, बरनन करौं विचारि ।
सुरति स्वाद दम्पति लहै, जीति पुरुष जो नारि ॥

अथ कामवास वर्णन

सो०–पाख दोइ एकमास, पंद्रह तिथि वर्णन करौं ।
जहाँ कामको बास, अंग अंग लखि लीजिये ॥

दोहा–पुरुष दाहिने अंगमें, भामा बाम निवास ।
एक रैन इक दिन सदा, एक अंगपर बास ॥
चढै चरनतें शीशको, फिर पग आव सोइ ।
जब नर जान भेद यह, तिया तृप्ति तब होइ ॥

सो०–जानहु कामनिवास, शुक्ल पक्ष नखसों चढै ।
सिखलौं पूरन मास, कृष्ण पक्ष फिर पग मिलै ॥
ज्यों नासाको स्वांस, आवागमन करै सदा ।
उतरि बसै तिहि बास, तिहि मग चढत मनोजतन ॥

दोहा–जहाँ जतन जसी कहौं, करै तहाँ चित लाइ ।
ता पाछे रति कीजिये, तरुनी मान मनाइ ॥

अथ शुक्लपक्षपन्द्रह तिथि वर्णन

चौ०–परिवा रचन अँगूठा जानौ । भाम बाम पदमें पहिचानौ ॥
हँसि हँसि पुरुष मिलै सहलावै । अतिही काम उपज तन आवै ॥
दुतिया पगतलुवामें आवै । खोजै चतुर खोज तब पावै ॥
ज्यों ज्यों पिय तलुवा सहरावै । काम कुलाहल तिय मन भावै ॥
तीज बसेरा एंड़ी कीन्हा । वेद प्रमान तहाँ में चीन्हा ॥
ज्यों नींबू नारंगी चापै । त्यों ही काम तिया तन व्यापै
चौथि मदन फीलीमें बासा । बुद्धि विचारौ यही निवासा ॥
चाँपै अति प्रीतम सहरावै । तत्क्षण काम जागि तन आवै ॥
पंचम बास जंघपर होई । जो यह खोज लगावै कोई ॥
कोमल पाणि सहज नख लावै । सुरति स्वाद कामिनि तब पावै
छठये रहै मदन मंडारै । तब यह चितसों पुरुष विचारै ॥
तिया-काम मोचन नहिं होई । मदनांकुश टकटोरै सोई ॥
जौने दिना सप्तमी होई । काम भाम कटि ऊपर सोई ॥
कै नखदार आलिंगन कीजै । काम जगाइ तियातन लीजै ॥
होइ अष्टमी नाभि बसेरा । करि मर्दन कीजै बहुतेरा ॥

परसै उदर हृदयसों लाई । बुध जन तहँ इति भाँति जगाई
नवमी हिरदै मदन बिराजै । उदर उदर सों समरस साजै
कै नखदान देइ पिय जबहीं । काम-तेज परकासै तबहीं ।।
दशमी मदन पयोधर जानो । कर-मर्दन नखदान बखानो ।।
उरसों उर हियसों हिय गहै । तत्क्षण काम तिया-तन दहै ।।
एकादशि मकरध्वज कांखा । गाढो आलिंगन तब भाखा
जागै काम केलि उपजावै । सुरतिसमै तरुनी सुख पावै ।।
द्वादशि काम ग्रीवमें जानौ । आलिंगन नखदान बखानौ ।।
कै चुम्बनतें मदन जगावैं । तिया पुरुष दोनों सुख पावैं ।।
तेरसि काम कपोल निहारौ । काम कुलाहल अति बिस्तारौ
भाँति भाँति चुम्बन करई । खंडन करत काम संचरई ।।
चौदसि अधर मधुर मधि बासा । अधर पान करि कामनिवासा
सोवत मदन जगावै कोई । सुरति स्वाद पावै नर सोई ।।
पूनौ मद दृग लेहु विचारी । जो तिहि जोति मिलाइनिहारी
दृग चुम्बन बहु करौ सुजाना । जागै काम कला उन्माना ।।

दोहा—शुक्ल पक्ष बरनन कियो, तिथि पन्द्रह सब अंग ।
कृष्ण—पक्षमें लेखिये, 'इंक्षा' बास—अनंग ।।

अथ कृष्ण—पक्ष पन्द्रह तिथि वर्णन

चौ०—कृष्णपक्ष परिवा तिथि जानौ । कामबास तियअंग बखानौ ।।
तहँ नख खुरज देत रुचि लागै । । निश्चै काम तियातन जागै ।।
दुतिया काम नैनमें आवै । तब तिय नैना जोरि मिलावै
अलक पलक धरि चुम्बन करई । काम जगाइ सुरति रस भरई
तीज अधर मनसिजको बासा । बुध जन जानौ काम विकासा
चुंबन और पानि पिय लावै । तब मनसिज करि प्रेम जगावै
चौथि कपोल काम फिर आवै । कर मर्दन चुम्बन चित लावै ।।
रदखंडन प्रीतम बिस्तारै । जागै मदन तिया रति हारै

ग्रीवा मदन पंचमी जानौ । भुजा कंठ आलिंगन ठानौ ।।
ततछिन काम तियातन जागै । प्रीतम सुरति केलि अनुरागै
छठको कांख काम बतलाऊँ । सब आलिंगन रीति सुनाऊँ ।
पानि परसि नख-कोर लगावै । तब ही काम तिया तनतावै
मदन सप्तमी उरज बसेरा । कर मर्दन नखदान घनेरा ।।
उरसों लाइ लेइ लपटाई । यहि विधि तिय-तनकामजगाई
हिये अष्टमी मदन विराजै । ता दिन पिया प्रेम अतिसाजै
चुम्बन पानि परस अति करई । हियसों लाइ मोद उर भरई ।
नौमी मदन नाभिपर होई । कामवास जानै जो कोई ।।
करसों परस करै बहुभाँती । हियसों हिया लगावै छाती
दशमी लंक कामको बासा ।बाईं दिशि तिहि होइ निवासा
आलिंगन नखदान बताऊँ । जिहिविधितियनकामजगाऊँ
एकादशि भग-अन्तर जानौ । सुरतिकुलाहल बहुविधिठानौ
सहजहि लीजै काम जगाई । महा तृप्ति तन जाय बुझाई ।।
द्वादशि तिया जंघ मधि आवै । करसों परसि नखक्षत लावै
जागै मदन तियातनमाहीं । सुखकोलहै दुःख मिटि जाहीं
तेरसि घोंटू मदन—निवासा । ताहि जगाइ पूजिये आसा
सजहिं चांपि नखक्षत लावै । तुरतहिं काम जागि तन आवै
चौदसि ऐंडीमाहिं निवासा । वेद बतावत मदन प्रकासा ।।
करसों चांपि चुटकियां लेई । काम जगाइ तियातन देई ।।
तलुवा-चरन अमावस जानौ । ता दिन गतिचंचलतियमानौ
कोमल कर सहजहि सहरावै । तिय—तन काम जागि तब आवै

दोहा—शुक्ल पक्षकी प्रतिपवा, चरण अँगूठा होइ ।
काम चढै फिर शीशको, पहुँच अँगूठा सोइ ।।
जौन भाँति 'इंक्षा' कह्यो, ता विधि काम जगाइ ।
सुरति केलि कामी रचै, दंपति प्रीति जगाइ ।।

कामवासचक्र

शुक्लपक्षतिथि	स्थान	कृष्णपक्षतिथि
१	अँगूठा, पादतल	३०
२	एँडी	१४
३	घोंटू	१३
४	जंघा	१२
५	योनि	११
६	कटि	१०
७	नाभि	९
८	हृदय	८
९	स्तन	७
१०	कांख	६
११	ग्रीवा	५
१२	कपोल	४
१३	अधरोष्ठ	३
१४	नेत्र	२
१५	माँग	१

सो०–एक द्योस इक रैन, काम तियाके अंगमें ।
चार घरी थिर मैन, सौ ,इंक्षा, बरनन करै

दोहा–जान चार दिन बाम अंग, पगसों चढ़ै मनोज ।
रन-समै उतरन चलै, चौघरियाको चोज ।।
रजनी प्रगट विचारिये, दहिने अंग निवास ।
अष्टम चौघरिया–समै, मदन वाममें बास ।।

अथ चौघरियां स्थान

दोहा–प्रथम चौघडी द्योसकी, काम अँगूठा बास ।
दूजी चौघरिया मदन, जानौ नेर निवास ।।

चौ०–तीजि चौघरी घूँटे जानौ । चौथीमें जंघा पहिचानौ ।।
पँचईमें भग करै निवासा । छठईं गाल कामको बासा ।।
कर्ण–मूल सतईमें रहै । अठईमें तालूको गहै ।।
यहि विधि रहै द्योसकरि वासा । वाम अंग तिय-काम निवासा ।।
दक्षिण दिशि नवयीं कनपटी । दसईं काम कण्ठ चौघटी ।।
ग्यरहीं कांख कामको बासा । बरहीं कुचमें करै निवासा ।।
कटि तेरहीं मकरध्वज ,होई । चतुर्दशी घुटनेमें सोई ।।
पूनो चौघटि नेर विराजै । सोरहींमाँहि नखनपै गाजै ।।

दोहा–चौघटिकाके भेदको, जानै चतुर विचारि ।
सुरति समै अति सुख लहै, तृप्त होहि अति नारि ।
दोइ पक्ष जे तिथि कही, मदन अंग तिय चारि ।
भिन्न भिन्न बरनन करौं, कामकला उनहारि ।।
जा तिथकी जो तिथि कहौं, बुद्धिमान लखि लेइ
चार चार तिथि कामिनी, कामवस्य रति देइ ।

चार तिथि पद्मिनी नायिका

दोहा–काम चार तिथि जागई, तिया पद्मिनी देह ।
परिवा द्वैज निहारिय, चौथि पंचमी एह ।।

चित्रनी चार तिथि

दोहा–चित्रिनि चाहै काम–रस, एक पक्ष तिथि चारि ।
छठी अष्टमी द्वादशी, दशमी लेहु विचारि ।।

संखिनी चार तिथि

दोहा–कामातुर बहु शंखिनी, तिथि चारौ परमान ।
तीन एकादशि सप्तमी, तेरसि लखौ सुजान ।।

हस्तिनी चार तिथि

दोहा–हस्तिनि हत्ती जानिये, काम बली बहु होइ ।
नौमी चौदसि पूर्णिमा, और अमावस सोइ ।।

सो०–कामातुर अति होइ, चार द्योस ये कामिनी ।
बहु सुख पावैं दोइ, नखशिख अँग परसन किये ।।

चारि पियाको राज, चारि जामकी जामनी ।।
सुरति–भोगसों काज, एक जाम इक कामिनी ।।

चारों पहरके नाम

दोहा०–निशि–विलास चौथा पहर, तीजा विभ्रम होइ ।
दूजा पहर विराम कहि प्रथम राम है सोइ ।।

चारोंके पहर

चौ०–निशि-विलास पद्मिनि चह भोगा । राम चित्रिनी करौ सँजोगा ।।
संखिनि विभ्रम सुरति सुहावै । रति विराम हस्तिनि मन भावै

दोहा०–जोग भोग सम दोइ जग, जो साधे सुरज्ञान ।
दृढ आसनको चाहिये, रिद्धि सिद्धि बढ़ि जान ।।

सो०–दम्पति एक सुभाइ, मदन–जोति जागै हिये ।
एक एक बिलगाइ, चौरासी आसन रचे ।।

दोहा–सोवैं सेजा पुरुष तिय, हियसों हिय लपटाइ ।
एक प्रेम चित एक ह्वै. क्रीडा करैं अघाइ ।।

चौ०–परसैं अधर गाल तियकेरे । कुच परसैं कर भाँति घनेरे ।।
हृदय नाभि नींवीको परसै । भग परसै मकरध्वज सरसै ।।
प्रथम अंग तिय बसन उतारै । बैठे हियसों फूलि निहारै ।।
तब दोनों मिलि आसन देहीं । सुरति-स्वाद अति ही सो लेहीं

सो०–चतुर सुजन सुनि लेहु, अब आसन बरनन करौं ।
'इंक्षा, दोष न देहु, कर न सकौ बिन धातुके ।।
प्रेम–बन्ध तिय होइ, काम–बन्ध काया करौ ।
करैं कुतूहल दोउ, पुनि आसन-प्रतिबन्ध सब ।।

दोहा–ये आसन यों कीजिये, जैसे कहौं विचारि ।
एक एक सुनि लीजिये, कामकला उनहारि ।।

चालीस आसनोंके नाम

दोहा–रति१ संयोग२ रु मदनदुति,३ इंदा४ लालस५ होइ ।
विपरित६ औ अंबज७ कह्यो, रुचिपोषक८ हित९ सोह ।।
मृग१० रु परस्पर जानिये११, तथा तमाल१२ मृनाल१३ ।
सुख पल्लव१४ सुतिअंत१५ कहि, आलस१६ शिथिल१७ विलास ।।
कंदुक१८ उदबिध१९ जानिये, महा विलास२० संकोच२१ ।
पारस२२ जानु२३ रु सरल२४ ये इतौत२५ इकंगी२६ सोच ।।

कलकंठी२७ अरु उर्द्ध२८ कहि, अरघ२९ जेठर३० पहिचानु ।
पगपल्लव३१ उत्ताल३२ अरु, लावुक३३ उतंग३४ बखानु ।।

खेम३५ अधुक३६ हिंडोल३७ कहि, और महाबल३८ सोइ ।
रतिनायक३९ द्रावन४० सुबा, आसन चालिस होइ ।।

कोकदेव आसन कह्यो, चौरासी परमान ।
इनमें मं चालिस कहे, रतिको सुगम निदान ।।

शेष चवालिस अति कठिन, काहूपै नहिं होइ ।
ता कारन चालिस रचे, सुगम रु द्रावन सोइ ।।

१. रति आसन

चौ०–तिय-जघा पिय-जंघा-ऊपर । पिय कर गहै पीठ कामिनि तर ।।
तिय केपची पिय-ऊपर करै । सुरति स्वाद दम्पति रस भरै ।।

२. संजोग आसन

चौ०–तिय-जंघा निज पालथ करै । पालथ लै हिय ऊपर धरै ।।
पिय गहि करसों तियको लेई । तिय गहि मूल उन्नतर देई ।।

३. मदनदुति आसन

चौ०–पिय-जंघापर तिया बिराजै । पिय कुच गहि क्रीडा अति साजै ।
काम-कुलाहल चितमें होई । यहि विधि आसन साधै कोई ।।

४इन्दा आसन

चौ०–पिय-कटि तियके चरन विराजै । सन्मुख बैठि सुरतिको साजै
भुजतें पीठ दोंऊ मिलि गहैं । सुख स्वारथको दोऊ लहैं ।।

५लालस आसन

चौ०–पियकोकटिपर तियके चरना । तियकी कटि पिय निजभुज भरना
करैं सुरति-रस परस सुहाई । सन्मुख दोनों बैठे आई ।।

६. विपरीत आसन

चौ०–पौढ़ै पिय निज पांय पसारी । कटि उन्नति ऊपर चढि नारी ।।
कामिनि सुरति करै विस्तारा । तिय पूरुष लूटैं रस-धारा ।।

७. अंबुज आसन

चौ०–पिय कटि ऊभि परै निज सेजा । जंघ बैठि तिय सुरति सनेजा ।।
पिय-कटि तिय कटि एक मिलावै । पियको तिय गहि अंग लगावै

८. रुचिप्रोपक आसन

चौ०–भाम-जंघ मधि पिया विराजै । तियके चरन पुरुष कटि राजै ।।
करवट ह्वै तिय पाटी गहै । करै सुरति-रस अति सुख लहै

९. हित आसन

चौ०–पांउ पसारि पलँगपर परै । तियको उलटि कंथ तब धरै ।।
सन्मुख बैठे आनि दम्पति । सुरति-के कीजै बहु गती ।।

१०. मृग आसन

चौ०–मृगनैनी मिर्गिनिकी नाई । मिलै पुरुष मिर्गाकी भाई ।।
तिय पिय मुखइक ठौर मिलावै । तियकी पीठ पिया उर लावै

११. परस्पर आसन

चौ०–पिय पाछे तिय चरन न दीठा । पिय कर गहै तियाकी पीठा ।।
गहै परस्पर दम्पति अंका । ठानैं दोउ मिलि सुरति निसंका

१२. तमाल आसन

चौ०–कामिनि–कटि पिय अंगन गहै । तिय-जंघा-मधि पूरुष रहै ।।
ठाढे दम्पति रतिको ठानैं । जहँ परंजंक न पावत जानैं ।।

१३. मृणाल आसन

चौ०–खंभ तिया निज पीठ लगाई । आलिंगन गाढा बतलाई ।।
अंतरिक्ष कामिनी रति होई । जब भुज अंक गहै पिय सोइ ।।

१४. मुखपल्लव आसन

चौ०–पौढि तिया जुग जंघा गहै । दोनों तियसों लाये रहै ।।
पिय निज कर तिय कटिको गहै । तियके चरन पिया सिर रहै

१५. सुरतिअंत आसन

चौ०–कामिनिकी कटि प्रीसम गहै । अंतरिक्ष कामिनि तब रहै ।।
तियके चरन पियाके काँधे । मानहु काम सरासन साधे

१६. आलस आसन

चौ०–पौढे दैके पीठ कामिनी । पिय करसों कटि गहै भामिनी
तिय-नितंबपर पियकी जंघा । सुरति करै यहि विधि तियसंघा

१७. शिथिल आसन

चौ०–दक्षिण पग महि तिया पसारी । बामचरन पिय कंधे धारी ।।
कामिनि प्रौढि पिया रति मानै । कटि अरु ग्रीव भुजा गहि ठानै

१८. कदुक आसन

चौ०–तियके चरन पिया भुज धरै । तियको पिय दृढ अंकम भरै
तियकी जंघ बैठि पिय रमै । तियको काम द्रवै रति समै

१९. उद्विद्ध आसन

चौ०–चरन चरनसों गूंथन करै । करसों कर पग सोधो धरै ।।
आलिंगन पिय बैठे करई । सुरति सुरस मुद मनमें भरई ।।

२०. महाविलास आसन

चौ०–तिय पिय भुजपर पाँउ पसारैं । पिय दृढ़ बैठि सुरति विस्तारैं ।।
महाविलास आसनको नामा । द्रवै काम सुख पावै भामा ।।

२१. संकोचन आसन

चौ०–तिय महि चरन पसारै सोई । पिय तहँ बैठें कुच गहि दोई ।।
करै कुलाहल सेज सुहाई । संकोचन आसन मन लाई ।।

२२. पारस आसन

चौ०–तिय पग जुगुल सेजपर परसै । उभै जानु कामिनिकी दरसै ।।
भुंइसों ऊंची तिय कटि करै । प्रीतम सुरति तियहिं भुज धरै

२३. जानु आसन

चौ०–पिय जंघापर कामिनि जंघा । पीछू लटकि रहै जुग खम्भा
पिय रति करै भुजा भरि नारी । तियकी कटि अति उच्च उचारी

२४ सरल आसन

चौ०–कामिनि पग लांबो अति करै । ऊपर पिया चिपटि भुज धरै
मुखसों मुख हियसों हिय लाई । उदर उदरसों सुरति सुहाई ।।

२५. इतौत आसन

चौ०–कामिनि पगताल जोरै दोऊ । लै हिय धरै पुरुषके सोऊ ।।
कामी जुग जंघा गहि लेई । सुरति-स्वाद कामिनिको देई

२६. इकगी आसन

चौ०–एक चरन तिय सेजा राजै । दुजी जंघ पिय-कंध विराजै
पुरुष तियाकी कटि भुज गहै । सुरति-स्वाद अति ही सुख लहै

२७. कलकंठी आसन

चौ०–चरन कमल कामिनिके सोऊ । कंठ बिराजै पियके दोऊ ।।
पिय भुजमाल तिया गल मेलै । सुरति कुतूहल सो नर खेलै ।।

२८. ऊर्ध्वं आसन

चौ०–तियको शीश कंघ नीचे । कटि नितंब जानौ बहु ऊंचे ।।
पिय कर कपंचो तियकटि गहै । उसरि सीस अवलंबित रहै ।।

२९. अरघ आसन

चौ०–इक तियचरन शुद्ध भुंइ जानौ । दूजा चरन जंघपर आनौ ।।
पिय कटि कामिनिको कर गहै । पिय पग शुद्ध तियाहिय लहै

३० जेठर आसन

चौ०–कामिनि पग तल ओरै दोऊ । पिया–उदरपर रावै सोऊ ।।
पुरुष तियाको कटि भुज गहै । लहै सुरति तिय बल नहिं सहै

३१ पगपल्लव आसन

चौ०–चरन अंगूठा कामिनि पकरै । तियकी कटि पिय अंकमें भरै
जंघा मधि पीतम भुज डारै । पीठ गहै क्रीडा विस्तारै ।।

३२ उत्ताल आसन

चौ०–कामिनि निज भुज जंघा वाहै । उलटि हाथसों ग्रीवा गाहै ।।
तिया–पीठ पिय करसों गहै । सुरति-स्वाद दम्पति अति लहै

३३. सावुक आसन

चौ०–वावै कांख रु घुटना दाऊ । पग अंगुठा कर गहि रहै सोऊ
यहि विधि कामिनि होइ उतंगा पुरुष अलगरति कर तिय संगा

३४. उत्तंग आसन

चौ०–कामिनि प्रीतमकी कटि पकरै । तियकी कटि पिय अंकमें भरै
तिय-जंघा-मधि प्रीतम आवै । आवै । मुखसों मुख हिय हिया मिलावै

३५. खंभ आसन

चौ०–ठाढो तिय ह्वै खंभ लगाई । एक चरन पिय लेइ उठाई ।।
एक चरन तिय ठाढो रहै । आसन खंभ बहुत सुख लहै ।।

३६. अत्रुक आसन

चौ०–वामा वाम करौट विराजै । दक्षिण पग तिय कांधे राजै ।।
प्रीतम बैठि जंघ रति करै । एक जंघ पिय अंकमें भरै ।।

३७ हिंडोल आसन

चौ०–कामिनि पौढि हिंडोले होई । पियकी कटि गहि चरनन सोई
गहैजुगुलकर लरविय कामिनि । कंथ झुलावै झूलै भामिनि ।।

३८. महाबल आसन

चौ०—पिय तिय चरन भुजापर धारै। अंक भरै पिय पांउ पसारै ॥
चरन अंगूठा पृथ्वी मेलै। जैसे कोऊ डंडै पेलै ॥

३९. रतिनायक आसन

चौ०—तियकी जांघ दाहिनी लेई। निज जंघा दहिनी धरि देई ॥
पिय कुच मर्दै चुम्बन करै। तिय कर पियके माथे धरै ॥
वाम घूंट तियको पियचरना। इकठे रहैं सुरति–रस भरना

४०. द्राव आसन

चौ०—कामिनि चरन पिया भुज धारै। कामिनिको जानू बैठारै ॥
करै सुरति अति अंकमें भरै। द्रवै तिया दंपति सुख तरै ॥

दोहा—ये चालिस आसन कहे, करैं चतुर नर नारि।
सुख उपजै दोन्नों हिये, बाढै प्रीति अपारि ॥
आसन चवालिस अति कठिन, करि न सकैं नर कोइ।
सुख उपजै नहिं केलिमें, महा दुखी तन होइ ॥
ताते मैं चालिस कहे, सुरति सुगम अति सोइ।
चौरासी 'इक्षा' करैं, नारि चतुर जब होइ ॥
ये चालिस अति सुगम हैं, बहु सुखदायक ढंग।
जासों पूरन कामना, तासों कौन प्रसंग ॥
ये चालिस आसन चतुर, करौ तिया बस होइ।
प्रथमहि काम जगाइ कैं, करै पुरुष जो कोइ।
कोटि कला कामी करैं, द्रवैं न जबलगि नारि।
तबलगि सुख पावैं नहीं, जानो चतुर विचारि ॥
तिय द्रावनको भेद सब, अरु आसनके दांव।
'इंक्षा' कवि बरनन कियो, सुख हित काम जगाव॥
तिया जहां लगि द्रवै नहिं, चितमें लहै न चैन।
काम अनल नाहीं बुझै, कस न रमो दिन रैन ॥
इहि प्रकार जो पिय करै दुख तियाको काम।
ता कारन 'इंक्षा' कह्यो, गुप्त कामको धाम ॥

नारी द्रावन–गुप्त भेद

कुंडलिया—उदर मध्य सब तियनके, नारि एक है सोइ।
तामें मनसिज रहत है, खोज लगावै कोइ ॥

खोज लगावं कोइ, मदन अंकुश अवगाहै ।
जब लगा मिलै न सोइ, काम कामिनितन दाहै ।।
कह 'इंक्षा' सुनि लेहु हनेउ, नहिं तबलग ताको ।
चिह्न तिया उर नारि, नहौं नहिं इकठैं जाको ।।

दोहा—सुररि आदि मादक भाखै, स्वांस मनहिं मन बांधि ।
गुनसों तिया नवाईकै, पंच श्वास सुख साधि ।।
यहि विधि कामी रति करैं, बेक्षा नहीं चुकाइ ।
द्रवै कामिनी मदनजल, उठै वेगि अकुलाइ ।।
अरध उरध अरु वाम दिशि दक्षिण पिय सहराइ ।
तब भग अन्तर साधनहि, डारैं हिय हर्षाइ ।।
इमि संजोवै पुरुष जो, बार बार रति केलि ।
निश्चै द्रवती कामिनी, बुधजन जानैं खेलि ।।
मदन गेहको मुखै खुल, द्रवै तहां सो नारि ।
कमललिंग परसन किये, लीज्यो चतुर विचारि ।।

सो०—त्यों त्यों द्रवती नारि, ज्यों ज्यों घर्षण पिय करै ।
अंग अंगसों वारि, रोम रोम सुख ऊपजै ।।

द्रव लक्षण

चौ०—लेइ फुरहरी तिय सब अंगा । तबही जानौ द्रवै अनंगा ।।
नयन मूंदि दोनों तब रहई । गहलर बचन कामिनी कहई ।।
तन कांपै अरु बदन निकाई । कामिनि दिखै अंग सहराई ।।

दोहा—दोइ बेर रति कीजिये, एक रैन तिय संग ।
दोइ बाढि कामी करै, बल घटिहै तिहि अंग ।।
दीखै जबही कामिनी, पुरुष द्रवै तिहि काल ।
एकचत्ति पिय तन लखौ, धीरज धरै न बाल ।।
सुरति समै कामनि द्रवै, कामी करै अवार ।
ताते 'इंक्षा' कहतु है, कामकला व्योहार ।।

पुरुष—अंग कामवास

सो०—दृग अरु नाभी जंघ, पुरुष दाहिने अंगमें ।
रहता सदा अनंग, सो ,इंक्षा, परगट कियो ।।

पुरुष द्रवन विधि

चौ०—सुरति-समै जानै जो नारी । काम बन्ध प्रीतम मैं हारी ।।
पिय-जंघा कामिनि सहरावै । तुरतै छूटि कामजल जावै ।।

संकोचन और दृढ़ विधि

दोहा—पिय पोवै तत्ते उदक, तिय लै शीतल तोइ ।
मदनांकुश अति दृढ़ बनै, भग-संकोचन होइ ।।

सो०—योनि द्रवै कोइ नारि, काम-बन्ध कोइ कामिनी ।
,इंक्षा, कहत विचारि, देश-देशकी भामिनी ।।

देश–देशकी नारीका वर्णन

दोहा–देश–देशकी कामिनी, बरनो मति–अनुसार ।
जो लक्षण तिय करति है, 'इंक्षा' कहत विचार ।।
उत्तम थल तीरथ–निकट, बहै त्रिवेणी संग ।
गंग जमुन-मधि सुरसरी, त्यों दुति तिय पिय-अंग ।।
नीक देश परयाग है, बिसो जात दुख देख ।
सुन्दर अरु अति शुद्ध हिय, बसन झीन तन लेख ।।
अति सुगन्ध तन धारई. आलिंगन-रुचि होइ ।
सुरति-समै रस बात कहि, करै केलि तिय सोइ ।।
सुरति-अंतसी कामिनी, नख प्रीतम तन देइ ।
सेवा कर अनेक विधि, चित पियको हरि लेइ ।।
पिया होइ तब अति सुखी, कामिनि देश प्रयाग ।
चतुर पुरुष दरसन करै, रहै सदा चित लाग ।

अन्य देश

सो०–चीन और गुजरात, देश फिरंगहि लेखिये ।
सुनहु तहाँकी बात, तियके सब लक्षन कहौं ।।
आलिंगन नखदान, खण्डन अरु चुम्बन सबै ।
भुजा कंठ लपटान, पिय-सँग क्रीडा अति रुचै ।।

दोहा–कुच मर्दन ज्यों ज्यों करै अंग अंग कसि जानि ।
त्यों त्यों तियतनमें जग मदन पंचशर तानि ।।
रति उपजै तिय अंगमें. ठानै भाव अनेक ।
को कवि वरनै तिआ गुन, जाके जिह्वा एक ।।
ज्यों ज्यों तियके कुचनमें, पिया लगावै हाथ ।
कामज्वाल त्यों त्यों बढ़ै, ज्यों पुरइन जल-साथ ।।

अन्य देश

दोहा–मालव अरु पंजाब पुनि, सिबादाव संधार ।
सिंध सिंहनद देशको, तियके सुनु व्योहार ।।

छन्द—पुरुष वचन सुनि नारि, गेहके बाहर आवै ।
हँसि हँसि मन ललचाइ, तिया पिय-मन ललचावै ।।
मदन कुंडपर ज्वलित, ताहि सोई तन जारै ।
चहै पुरुष सब छोंड, चित्त धीरज नहिं धारै ।।
काम अंग तन चाहि, तिया सब अंग दिखावै ।
पुरुष मिलनको चाहि, अग्नि जिमि घृतहि जलावै ।।
सो०—करैं पुरुष सों संग, कामातुर ये कामिनी ।
नर-बल रहै न अंग, लीजै ऊखनिचोरि ज्यों ।।

अन्य देश

दोहा—देश सुराड उत्तर कहा, मेरु सर्वदा खानि ।
भद्र देशकी कामिनी, 'इंक्षा' कहत बखानि ।।

सवैया—कमला जिमि सूरज देखि खिलै तिय प्रीतमको ज्यों ही मिलई ।
डारब बोल तिया पियको निशि श्रौर बसै अपुही उरई ।।
केलि-समै पिय-बोल सुनै तिय कंपति अंकनमें भरई ।
सिसकै सतराइ अलोलनसों तिय प्रीतमके चितको हरई ।।

अन्य देश

सवैया—देश तैलंग बसै मकरध्वज कामिनि लाज न चित्त धरै ।
भगज्वाल तपै फरकै अतिही जिमि जानु तुरंग निसंक करै ।
करि कोटि कलाहिय आतुर ह्वै पियको तबही तिय अंक भरै
विधि कोटि करौ नहिं काम जगै तबहीं कर पल्लव जोनि करै ।

दोहा—मदनज्वाल अति ही दहै, लाज न जाने सोइ ।
अवधदेशकी कामिनी, यही भाँतिकी होइ ।।

अन्य देश

दोहा—पश्चिम देश विचारिये, परे रोहते मित्त ।
पगस्थान चलि दीजिये, धाम्र सुरति रम चित्त ।।

सो०—चुम्बन औ नखदान, आलिगन खंडन चहै ।
आदि अंत सम मान, रस हुलास चितसों गहै ।।

दोहा—तजै न पियको एक पल, रहै सदा लौ-लीन ।
काम-कुलाहल रस कथा, सब विधि महाप्रवीन ।।

अन्य देश

दोहा–तुरुक देशकी कामिनी, कामबली अति होइ ।
जा पुरुषसों रति कर, जीत ताको सोइ ।।

अन्य देश

दोहा–जौनपूर दिल्ली तईं, एक भांतिकी नारि ।
तासों रीझ चतुर नर, निज बल बुद्धि विचारि ।।
ठीक बचन मधुसम कहै, रस हांसी बिस्तारि ।
यहि प्रकार पिय–मनहर, चित्त चतुर सो नारि ।।
अपने सब विधि गुननतें, पियको जीतें सोइ ।
पिय–औगुनको कामिनी, प्रगट कहै नहिं कोइ ।।

अन्य देश

सो०–काशी अरु गुजरात, सम हैं दोनों प्रान्तको ।
जानि अबल पिय-गात, उत्तम अपना लहतु हैं ।।

दोहा–सकल-कला पिय हीन कहि, अपुना उत्तम होइँ ।।
अपनि बडाई निज-वादन, पिय-निंदक तिय-सोइँ ।।

अन्य देश

सो०–तिया-राज एक साथ, अब हौं बरनौ कामिनी ।
सब नर तियके हाथ, नाचत मरकट सम सदा ।।

छप्पय–बोलैं बचन रसाल, मधुर कोमल मदमाती ।
अंग महा सुकुमारि, हंस–गतिको लजवाती ।।
क्रीडा–केलि तरंग, सुरतिमैं हंसी सुहाती ।
चुम्बन खण्डन और, आलिंगनसे सरसाती ।।
ह्वै तियके रस वशी पिय, सुरति करै अति प्रेमसे ।
क्रिया करै विपरीत सब, अपने मनके नेमसे ।।

दोहा–दशनन तिय खंडन कर, पिया अंग नख लेइ ।
ज्यों सब पुरुष करत हैं, तिया सुरति-रस देइ ।।

अन्य देश

दोहा–तिय बंगाले देशमें, बेद कहै जिमि भाइ ।
सो 'हंसा' बरनन करं, सुनो चतुर चित लाइ ।।

अरिल्ल—पान फूल अति खाइ, मांगमें सेंदुर रांजे ।
सकल अंग सिंगार, तेल लै बेनी लावै ।।
मधु बानी तिय बोलि, पियाको वशी बनावै ।
जंत्र मंत्र बहु ठानि, पुरुषको नाच नचावै ।।

दोहा—टोना-टामर अति करै, मिलै चलो जो छैल ।
आंखि मूंदि ता पुरुषको, करि राखै तिय बैल ।।
आलिंगन नखदान अरु, खंडन चाहै तीय ।
अनुचरसम राखै सदा, अपने वशमें पीय ।।

अन्य देश

सो०—जहां तियनको राज, अब बरनौं सैलानको ।
सदा भोगसों काज, करै जुगत सो जोगिनी ।।

दोहा—अति निलज्ज तहँ कामिनी, करै सदा निज स्वार्थ ।
जा तियके लज्जा नहीं, ताको जनम अकार्थ ।।
तिय सिंहासन बैठिकै, राज करै चित लाइ ।
पुरुष कपट तजि हृदयसे, करै, सकल सेवकाइ ।।
जा पुरुषको तिय चहै, ताको लेइ बुलाइ ।
सुरति-केलि नहिं करि सकै, पावै मार अघाइ ।।
पुरुष कोइ जो रति करै, गड़ै तियाके चित्त ।
सकल नायिका ताहिसों, करै सुरति–रस नित्त ।।
रति करि पुरुष अघाइ जो, जरै तियनिको अंग ।
कर सहरावै लिंगको, रमै पुरुषके संग ।।
सुरति बिना कछु और नहिं, राखति मनमें तीय ।
लाज काज सब छांडिके, रमण करै नित पीय ।।
जो कछु तियके मन बसै, सोई करै विचारि ।
पुरुष सेज हारै सदा, जीति रहै सो नारि ।।
पुरुष तिया तिय पुरुष ह्वै, केलि करै चितलाइ ।
को कवि बरनन करि सकै, सुनि कै बुद्धि हेराइ ।।

सो०—जान पुरुषको खाइ, अति निलज्ज तहँ कामिनी ।
जब लगि मर्म न जाइ, तब लगि तिया न परिहरै ।।
अपनी अपनी रीति, देश देशकी भामिनी ।
लियो जगत सब जीति, पै वेश्या अपघातिनी ।।

दोहा—बरनो गणिका सुन्दरी, बाढ़ ग्रंथ अपार ।
जहँ कंटक तहँ फूल है, बुध जन करो विचार ।।

उदर काज सो बहु कला, कर जगतमें सोइ ।
ताके बरननके किये, भल न कहै तिहि कोइ ।।
वेश्या–स्नेह न कीजिये, तन मन वित्तकी हानि ।
जाके परसनके किये, देह-धर्म–वित–हानि ।।
तिनसों बंचै सो सुख लहै, महा दुखी मिलि होइ ।
'इंक्षा' सकौ तो परिहरौ, नेह करौ नहि कोइ ।।

इति तृतीय खंड संपूर्ण ।। ३ ।।

अथ चतुर्थ खंड

वन्ध्या स्त्रियोंका वर्णन

दोहा–अब वन्ध्या जो कामिनी, ताको भेद विचारि ।
"इंक्षा' कछु बरनन करै, कामकला अनुहारि ।।
एक समै कैलासमें, पारवती शिव पास ।
अति आनंद चित मगन बहु, दोऊ करै विलास ।।
हर्षवन्त शिवको निरखि, कीन्ह्यो उमा विचार ।
'इंक्षा' परकारन सदा, शक्ति करत निरधार ।।

पार्वतीजी बोलीं

चौ०–कर जुग जोरि अम्बिका ठाढ़ी । परस्वारथ बानी मुख काढ़ी ।।
"कछु मोरे उर संशय स्वामी । हरहु पीर तुम अन्तर जामी" ।।
कृपा–वचन तब शंकर बोले । शक्तीहेतु बचन मुख बोले ।।
"कहौ सकल चिन्ता मनकेरी । करि उपचार हरौं प्रिय ! तेरी"
पूछा आयसु पाय भवानी । शीश चरनको नाइ सयानी ।।
"काहे तिया बांझ ह्वै जाई । सो प्रभु मोहिको देहु बताई ।।
दोहा–क्यों मरि बालक रोग रहि, तिया बांझ ह्वै जात ।
सो कारन उपचारयुत, कहो नाथ ! सो बात" ।।

शंकरजी बोले

चौ०–चित्त लाइ तुम सुनो भवानी । सकल कहौं तुमते सब बानी ।।
पृथ्वी तिया बांझ जो होई । दूषनते जानैं सब कोई ।

दूषण वर्णन

दोहा–निबल पुरुष कै वृद्ध है, नारी वैसि नवीन ।
अथवा यों तुम जानिये, पुरुष बली तिय हीन ।।

तिया वृद्ध पिय तरुन है, नारी चामी लेइ ।
निश्चै ऐसे योगते, फल प्रापति नहिं वेइ ।।

अन्य दूषण

चौ०—रजस्वला नारी जो होई । रुधिर तीन दिन लखिये सोइ ।
उपजो दोष जानिये जबही । ताको जतन कीजिये तबही ।।
जुदे भवन राखै दिन चारी । काहूको मुख लखै न नारी ।।
जा दिन तिया करै स्नाना । ता दिन पुरुष पास नहिं जाना ।।

दोहा—जा दिन तिय स्नान करि, पुरुष पास नहिं जाइ ।
जो ता दिन रति भोगवै, कमल फूटि बिगसाइ ।।

चौ०—कमल फूटि तिय बंध्या होई । ऐसो जतन बताऊं सोई ।।
दिन तीन तिय अन्तर देई । ता पाछे नारी रति लेई ।।
गर्भ धरै निश्चै करि जानौ । खुला कमल दिन बारह मानौ
प्रथम महीना ऐसे जानौ । दूजे यह लक्षन पहिचानौ ।।

गर्भ लक्षण

चौ०—बार बार तिय अंग पसीना । भंग अरु शीश दुखै मन खीना ।।
मुख डकार नख कारे जानौ । श्यामरंग कुच अधर बखानौ ।।

दोहा—खारो खाटो मृत्तिका, इत्यादिक रुचि नारि ।
गर्भ धरै सो कामिनी, लक्षण लेहु विचारि ।।

उसका यत्न

चौ०—तब तियको यहि बिधिसे राखैं । जो कछु जतन शास्त्र श्रुति भाखैं
थोरो अन्न तिया चित धरै । खारो खाटो अति परिहरै ।।

दोहा—गर्भ धरै जब कामिनी, अग्नि पास नहिं जाइ ।
पुरुष भोग थोरो करै, सारह बेर बियाइ ।।

चौ०—याके उपर जतन कछु करै । चार गर्भ नारी फिर धरै ।।
चौदह बरसकेर पिय होई । तासों भोग करै तिय सोई ।।
तीन मास लगु गर्भित नारी । भोग करै जिहि भांति अगारी ।।
अल्प भोग इहि ऊपर करै । षष्ठ महीना जब लगु भरै ।।
षट उपरान्त भोग नहिं करै । करै भोग तो लरिका मरै ।।
जो जीवै तो रोगी होइ । ताको जतन बताऊँ सोइ ।।
पुत्र होय यह ज़तन करीजै । बांधि बसन आंडा करि दीजै ।।
अरु जो जाके कन्या होई । बसन लपेटि सकल तन देई ।।

दोहा—यहि विधि बालक वृद्ध रहै, बायु लगन नहिं देइ ।
मास एकलौं जानिये, सीख मानि बुध लेइ ।।

धायके लक्षण

चौ०—धाई वर्ष बीसकी होई । करै स्नान बिना प्रति सोई ।।
श्वेत बसन ताको पहिरावै । प्रथम जन्म बिन भोजन करावै ।।
धाईको रिस करन न देई । हँसमुख सदा ताहिको लेई ।।
एक बेर भोजन कर धाई । खाइ न पावै पेट अघाई ।।

दोहा—पुरुष पास नहिं जाइ, जब लगि बालक पय पियै ।।
धाइ पुरुष पै जाइ, ततछिन और लगाइये ।।

चौ०—दूरि न करै ताहिको रावै । महा निषिद्ध वेद अस भावै ।।
बालक लक्षन हीन दिखावै । कर्म हीन शोभा नहिं पावै ।।
ताते धाई और लगावै । सो बालकको छीर पियावै ।।
मिलै न तुरत धाइ जो कोई । तुरत दुहावै गौवै सोई ।।

दोहा—गौ पय सम पय और नहिं, पारवती जग कोइ ।
सो बालकको दीजिये, महापुष्ट तन होइ ।

अन्य भेद

दोहा—पुरुष लिंग लघु जानिये, नारी भग गंभीर ।
कहौ गर्भ कैसे रहै, कमल परै नहिं नीर ।।

उसका यत्न

चौ०—ऋतुवंती कामिनि जो होई । जब स्नान करै तिय सोई ।।
औंधि परै तिय चरन उठावै । पीछू ह्वै पुरुष रति पावै ।।
तिया कमल मुख सूधी रहै । तामें बिन्दु जाइके लहै ।।
अवास कामिनी गर्भित होई । यामें संशय करै न कोई ।।

अन्य भेद

दोहा—लघु भग तियकी जानिये, दीरघ लिंग विचारि ।
सुरति किये बिनसै कमल, गर्भ धरै नहिं नारि ।।

उसका यत्न

चौ०—जब कामिनी ऋतुवंती होई । अरु स्नान करै तिय सोई ।।
जब यह जतन नारि सो करै । पांउ पसारि सूधि महि परै ।।
चरन बांधि बहु होइ तनैनी । ऊपर पुरुष सुरति रस दैनी ।।
उरसों उर मुखचुम्बन करै । अवसि गर्भ नारी सो धरै ।।

दोहा–यहि उपायसों रति करैं, कमल न छूटै नारि ।
प्रवसि गर्भ धारण करै, बुध जन लेहु विचारि ।।

ऋतुमती होनेका उपाय

चौ०–देवकपास तंदुल लै आवै । स्वेत दूबको ढूंढि मँगावै ।।
पंच पंच टांक लेई परमाना । अष्टाविधि तिय पियै सुजाना

दोहा–तीन दिवस यहि विधि पियै, सारो खाट बराइ ।
पुहुप प्राप्ति नारी लहै, औषधि देई बताइ ।।

स्त्रीके छः दोष

चौ०–कहैं सदाशिव सुनो भवानी । षट्क दोष तियअंग बखानी ।।
ताते गर्भ धरै नहिं नारी । कहौं सकल कारण निरधारी ।।

प्रथम दोष

चौ०–प्रथम दोष रतिरूप बखानो । कमलवदन औषधों तुम जानो
पुरुषबीज बीचहि गिर परै । ताते तिया गर्भ नहिं धरै ।।

उसका लक्षण

दोहा–रजस्वला तियका जबै, रव अरु शीश पिराइ ।
पलक मसूढे सूजई, लक्षण दिये बताइ ।।

उसका उपचार

चौ०–रजस्वला नारी जो होई । जब स्नान करै तिय सोई ।।
ता दिन बरत करै सो नारी । दूजे दिन यह धर्म विचारी ।।
रीती × गऊ बसन दे लाल । यथाशक्ति संकल्पै बाल ।।
ता पाछे पारन सो करैं । जो कछु रीति वेद मुख धरैं ।।

दोहा–भात मूंगकी दाल अरु, तामें मिरच मिलाइ ।
घोरक घीउ मिलाइके, यहिविधि तिरिया खाइ ।।

औषधि

चौ०–पंचांगो बनबूट मँगावै ।जारि ताहिको भस्म करावै ।।
रुईकी बाती सो तिय ठानै । अंगुल तीन लँबाई जानै ।।
भस्म घोरि पानीमें लेई । बाती बोरि ताहिमें देई ।।
सो बाती भग अन्तर राखै । दिना तीन यह बिधि बुध भाखै

× राती=लाल

चौथे दिना पुरुषपै जाई । निश्चय गर्भिणि तिया दिखाई
जबहीं गर्भ कामिनी धरै । दोइ मास पूरुष परिहरै ।।

दूसरा दोष

चौ०—दुसरे मांस-वृद्धि भग होई । हेटा बढ़ो कहै सब कोई ।।
बिन्दु ढकेलि देइ सो मांसा । याते नहीं गर्भकी आसा ।।

उसका लक्षण

दोहा—पुहुपवती जब होइ तिय, देह फिर घुमराइ ।
बार बार हिचकी चलै, मांस-वृद्धि बतलाइ ।

उसका उपचार

चौ०—रजस्वला नारी जो होई । अरु स्नान करै तिय सोई ।।
पहिले दिना बरत हिय ठानै । दुसरे दिन फिर दान बखानै ।।
शुक्ल गऊ अरु गजी मँगावै । रूपा दही वस्तु लै आवै ।।
यथा शक्ति संकल्पै नारी । पारन करै याहि निरधारी ।।

दोहा—गेहूँ केरी रोटिका, तज नोन, घी खाइ ।
यहि विधि पुनि औषधि करै, औषध देउँ बताइ ।।

औषधि

चौ०—तीन टंक तिय हींग मँगावै । कोचिला टांक तीन लै आवै ।
अकरकरा त्रय टंक बताऊं । तीनों पीसि करै इकठाऊं ।।

दोहा—मधुसों सानै औषधी, भग में राखै तीय ।
दिना तीन यहि विधि कर, चौथे दिन रति कोय ।
गर्भ धरै सो कामिनी, यामें संयश नाहिं ।
शिवशंकर भाषत भयो, 'इंक्षा' गौरीपाहिं ।।

अथ तीसरा दोष

चौ०—तीजे गर्भयोनि तिय होई । गर्म बीज पूरुषको सोई ।।
घत जिमि पिघलि बहै भगबिंदा । बांझ कहै तिय ते मतिमंदा ।।

उसका लक्षण

चौ०—पुहुपवती नारी जो होई । दुखित परै तप तनमें होई ।।
भग पिराइ तन होइ पसीना । चढै चक्षु राते कछु खीना ।।

दोहा—यें लक्षण तिय-अंगमें, गर्भयोनि कहि सोइ ।
बीज पिघलिकै बहुत है, तिय गर्भित नाहि होइ ।

उसका उपचार

चौ०—ऋतुवंती नारी जो होई । जब स्नान करै तिय सोई ।।
ता दिन वर्त तिया सो करै । पीछू धर्म जानि चित धरै ।।

दोहा—भूरी गाय मँगाइकै, कम्मल स्वेत विचारि ।
पीतरको भाजन कछू, पुन्य कर सो नारि ।।

पारण

चौ०—दही भात सो कामिनि खाई । ता सँग जीरा नोन मिलाई ।।
फिर पैसाभरि चँदन मँगावै । जलसों घिसि हिय उरज लगावै

औषधि

चौ०—घीमें तली मूंगकी पपरी । मूंगाकी पीतौ सम करी ।।
दवा लागि गांडर-जर लावै । नीमछाल सम सोइ मँगावै ।।

दोहा—बांधि सकल पुटरी करै, सो लै भगमें देइ ।
तीन दिना यहि विधि करै, चौथे दिन रति लेइ ।।
गर्भ तिया धारन करै, फल प्रापति सो होइ ।।
योनि-दोष ताको हरै, करै तिया जो कोइ ।।

चौथा दोष सर्दयोनि

चौथे भग तिय शीतल होई । परत बीज ठिठुरै तब सोई ।।
याते तिय गर्भित नहिं होई । ताते बांझ कहैं सब कोई ।।

उसका लक्षण

चौ०—पुहुप-समै तिय अंग निहारौ । जूड़ होइ तब दोष विचारौ ।।
बुजकि रहै नासा तियकेरी । अन्न-स्वाद जानै नहिं फेरी ।।
कफकी वृद्धि मूड़ कछु चढ़ै । सर्दयोनि लक्षण ये कहै ।।
ताको जतन सुनौ बुध ज्ञाना । 'इंक्षा' लिख्यो ग्रंथ-परमाना ।।

उसका उपचार

दोहा—ऋतुवंती ह्वै कामिनी, जबै करै स्नान ।
बरत ठानि ता दिन पिया, फेरि देहु यह दान ।।
कुम्हड़ा पचरतनीसहित, धरै बांसको पात्र ।
एते बसन लपेटिकै, गऊ-सहित एकात्र ।।
सब संकल्पौ विप्रको, तिया करै परिहारु ।
वंशवृद्धि ताको बढ़ै, पारवती चित धारु ।।

पारण

चौ०—मसुरीकी खिचरी तिय खाई । दोइ टांकभरि पिपरि मिलाई ।।
ता ऊपर बीरा मुख धारै । तब कछु औषधि चित्त विचारै ।।

औषधि

दोहा—गुर पुरानं अधपाव लै, अजवाइन नौ टंक ।
पाँच टांक पीपर तहां, लडुवा करै निसंक ।।
तीन दिना भक्षण करै, चौथे दिन पिय-पास ।
निश्चै गर्भित कामिनी, वचन करौ बिसवास ।।

पंचम देव-दोष

चौं०—पंचम देवदोष तुम जानौ ।छीट लगी ताको पहिचानौ ।।
याते तिय गर्भित नहिं होई । निश्चै जानौ बांझिनि जोई ।।

उसका लक्षण

दोहा—सहजै जैसे नारि सब, पुहुपवती तिय होइ ।
फल-प्रापति नहिं कामिनी, देवदोष कह सोइ ।।

उनका उपचार

चौ०—रजस्वला नारी जो होई । जब स्नान करै तिय सोई ।।
करै बरत पहिले दिन नारी । ता पीछे कछु पुण्य विचारी ।।

दोहा—गुरसों भरि गोमिथुन को, गऊ मीन दे दानु ।
ता पीछे पारन करै, सीख हमारी मानु ।।
दोहा—भात खांड घृत कामिनी, पारन करै सँवारि ।
ता पाछे औषधि कछू, 'इंक्षा' कहै विचारि ।।

औषधि

चौ०—टांक दोइ कर्पुर मँगावै । टांक दोइ हरिपुष्प बतावै ।।
दोनों पीसि पोटरी करै । सो लै भग-अन्तर तिय धरै ।।

दोहा—तीन दिवस औषधि करै, चौथे दिन रति मानु ।
गर्भ धरै सो कामिनी, निश्चै लीजौ जानु ।

गर्भसजीव रहनेकी विधि

दोहा—बाल रहै जा नारिको, होइ सजीवन सोइ ।
सो 'इंक्षा' बरनन करै, समुझि लेइँ बुध लोइ ।।
पांच टांक लै मूल अरु, भँयावरी मँगाइ ।
लाली गौको दूध तिय, सेर एक पी जाइ ।।

इकइस दिन धारन करैं, छाल सजीवन सोइ
तारवती सुनि लीजिये, करैं तिया जो कोइ ॥

अन्य औषधि

चौ०—ऋतुवंती ह्वै करि स्नाना । ता दिन औषधि करौ सुजाना ॥
गुर असगंध राई मँगवावै । पंच पंच टँक वजन करावै ॥
दोहा—करि एकत्र भक्षण करै, तिया पुरुषपै जाइ ।
गर्भ धरै सो कामिनी, औषधि दई बताइ ॥

अन्य औषधि

चौ०—पुहुपवती ह्वै करि स्नाना । ता दिन तिय-संग रमै सुजाना
ऊपरसे यह औषधि करै । निश्चै गर्भ नारि सो धरै ॥
दोहा—मूल बिजौरा टांक दस, लाल धेनु पय संग ।
पियै अघौटा कामिनी' गर्भ धरै सुति संग ॥
दोहा—मूल लक्ष्मणाल्यावई, पुष्य नखत जब होइ ।
गो पय-संग धारन करै, गर्भ धरै तिय सोइ ॥

अन्य उपचार

चौ०—पुहुपवती ह्वै करि स्नाना । तीन दिना सो पियै विधाना ॥
चौथे दिन पुरुषपै जाई । औषधि बंध्या दई बताई ॥

अन्य वन्ध्या उपचार

दोहा—मुंडीको तिय बाँटिकै, अजा-दूधसों छानि ।
पियै तीन दिन कामिनी, गर्भ धरै जिय जानि ॥

अन्य बन्ध्या उपचार

दोहा—असगंध षोड़स टांक लै, गौ पय सेर मँगाइ ।
पीसि मिलावै दूधमें, औटे अग्नि चढ़ाइ ।
चौ०—अठवाँ अंश दूध जब रहै । लेइ उतारि बैद इमि कहै ॥
तीन दिवस तिय भक्षण करै । निश्चै नारि गर्भ सो धरै ॥

अन्य बन्ध्या उपचार

चौ०—टांक चार फूली जन × लेई । गो-पय आध सेर कहि देई ॥
सो बासीमुख पीवै नारी । तीन दिवस पय-भात अहारी ॥
दोहा—रहै गर्भ बालक जनै, बचन करौ विश्वास ।
इमि शिवशंकर कह्यौ, पारबतीसे लास ॥

× पानकी जड़

अन्यय वन्ध्या उपचार

चौ०–कोदोंकेर पयार मँगावै । छैः टांक परमान बतावै ।।
सर आध जल कूप विचारो । दोउ मिलाइ अग्निपर जारो ।।

दोहा–अष्टमांश जब जल रहै, टांक तेल तिल डारि ।
ऋतुवन्ती स्नान करि, पियै कुनकुनो नारि ।।
तीन दिना यहि विधि, दूध भात सो खाई ।
गर्भ धरै सो कामिनी, औषध दई बताई ।।

व्यानरहित स्त्रीके लिये औषधि

दोहा–वृद्ध भई जो कामिनी, व्यानरहित ह्वै जाइ ।
गर्भ धरै बालक जनै, औषधि देहु बताइ ।
गाजर-बीज मँगाये, चार टांक बुधिमान ।
पीसि पियै गौ-दूधमें, तीनं दिना परमान ।।
गर्भ गहै वृद्धा तिया, दूध भात जो खाइ ।
'हंसा'. शिवके बचन यह, भाषा लिख्यो बनाइ ।

केवल पुत्र होनेके लिये औषधि

दोहा–सदा तियाके देखिये, कन्या संतति होइ ।।
ताको औषधि कीजिये, पुत्र वृद्धि तिहि होइ ।।
कारे बिछिया वृक्षको, आवै ज्योति अगार ।
अतिवारको मूल तिहि, लावै खोदि सवार ।
जा दिन नारी शीशको, धोवै धरिये चित्त ।
बासी पानी दीजिये, दोइ टांक जर नित्त ।।
तीन दिना औषधि पियै, चौथे दिन रति जानु ।
कोख पलटि बालक जनै, सीख हमारी मानु ।।

अन्य उपचार

चौ०–पंचअँगुरिया' को * फल लावै । जाम एकै बीज दिखावै ।।
पुष्य नक्षत्र जाहि दिन होई । ता दिन तेहि लै आवै सोई ।।
रजस्वला नारी जो होई । जब स्नान करै तिय सोई ।।
उत्तर मुख बैठे तब जोई* । पुरुष नगन ह्वै देवै सोई ।।

दोहा—तियको यहि विधि देइ पिय, सुरति करै चित लाइ।
गर्भ धरै बालक जनै, औषधि दई बताइ ।।

अन्य उपचार

दोहा–जा दिन तिय स्नान करि, नरा पुत्रको लेइ ।
बेसन चना लपेटिकै, छांडि हलकमें देइ ।।

---

* शिवलिंगी * जोइ. स्त्री

गमन करै तिय पुरुषपै, पुत्र अवसिकै होइ ।
नारि पलटि बालक जनै, करै औषधी कोइ ।।

अन्य उपचार

दोहा—तिय आ विन स्नान करि, क़रों भँवर मँगाइ ।
गुर पुरान लै सानि तिहि, तिया ताहिको खाइ ।।
तब पुरुष तियसों रमैं, पालट होइ सुजान ।
तिया पुत्र निश्चै जनै, औषधि कही निदान ।।

अन्य उपचार

दोहा—नारी गर्भित देखिये, साठ दिना परमान ।
मासा विजया-बीज लै, तियको देहु सुजान ।।
याते ऊपर फिर कहौं, बार इकासी होइ ।
टांक बीज बिजया भखै, तिय गर्भित है सोइ ।।

चौ०—भखै टांक तिय दिवस बयासी । टांक एक जब होइ पिरासी
यहि विधि औषधि कामिनि करै । होइ पुत्र कन्या परिहरै ।।

अन्य उपचार

चौ०—ऋतुवन्ती तियकरि स्नाना । तब यह औषधि करै सुजाना
नींबू-जरको अर्क मँगावै । तंदुल जलमें ताहि मिलावै ।।

दोहा—दोनों अर्क मिलाइकै, पीय तिया दिन तीन ।
ता पाछे संभोगते, पुत्र होइ परबीन ।।

अन्य उपचार

दोहा—बीट कबूतर लीजिये, कञ्चनरिपुसम कोइ ।
लिंग लेपि जल पीसिकै, रति मानै सुत होइ ।।

अन्य उपचार

दोहा—काकसिकी जड़ लीजिये, अदितवार जब कोई ।
तन्दुलके जलसों पियै, तिय अन्हाइ जो सोइ ।।
तीन दिना धारण करै, चौथे दिन पिय पास ।
पुत्र होइ ता नारिके, वचन करौ विश्वास ।।

* मृतवत्साका उपचार

दोहा—छोटि इलेची बालछड़, पित्तपापरा लेइ ।
अबरख हल्दी जानिये, खुरासानि बच देइ ।।

---

* जिसका बालक महीने छै महीना या दो वर्षका होकर मर जाता हो उसे मृतवत्सा कहते हैं ।

हर्र मूसली पीपरी, लावै बाइबिडंग ।
चंदन रक्त मँगाइकै, अरु विजया * तेहि संग ।।
देवदारु अजमोदको लै कचूर सम कोइ ।
करि चूरण, भक्षण करै, ठंढे पानी सोइ ।।
छै: महीना तिय भखै, दिन प्रति मासा एक ।
ताको सुत जीवित रहै, दुःख न देखै नेक ।।

अन्य उपचार

दोहा—मेंहदी गुड़ कटु तोमरी, चंदन रक्त-मँगाइ ।
छाल कुड़ेकी सब सबै, गर्दभ विष्ठा ल्याइ ।।
चौ०—गधे—मूत्रसों बटी बनावै । घूंटी सो बालकको प्यावै ।।
सात दिवसलौं ताहि पिलाना । प्रति दिन एक एक रती परमाना

अन्य उबटन

रोला—लौंग इलैची मिर्च, जालका फूल मँगावै ।
अजवाइन अजमोद, पीपरी हर्र बतावै ।
चीता बीजा बाल, सोंथ अरु बाइविडंगा ।।
येलुवा सिंगरफ और, अतिस कंचनरिपु संगा ।।
नौसादर अरु हींग, सोनमक्खी पहिचानो ।
हर्र बहेडा जानि, बीज तुलसीके आनो ।
दोहा—भारंगी अरु खपरिया, कनयर कोंप मँगाइ ।
कहै छुहारे बालछड़, पांचौ लौन बताइ ।।
सम औषधि सब लीजिये, मानुसमूत्र मिलाइ ।
मिर्च बराबर गोटिका, बुध जन धरो बनाइ ।।
होइ जबै बालक यहै, प्रथमहि घूंटी देइ ।
दिन इकइसलौं दीजिये, वंश वृद्धि करि लेइ ।।

अथ प्रदरकी चिकित्सा

दोहा—लोध पठानी कायफल, क्वार कनी इक पाउ ।
बीज सहित पुस्ता तथा, घृत अरु खाँड मँगाउ ।।
खांड रु घृत सम औषधी, कूटि छान इक ठाँय ।
मोदक तोला, चारके, 'इंक्षा' धरै बनाय ।।
होत प्रात इक मोडको, भखै तिया जो कोइ ।
अंग लाल रँग देखिये, रोगमुक्त तिय होइ ।।

---

* भाँग

अन्य उपचार

दोहा—फल खजूर अरु केदली, दोनों फल समय लेइ ।
दोनों ते दूनों तहाँ, तालमखाना देइ ।।
गो-पय सँग जो कामिनी, पियं सात दिन कोइ ।
हरं व्याधि तनकी सफल, काम-कला अंग होइ ।।

अन्य उपचार

चौ०—कदली फल परिपक्व * मँगावै । तामें खांड समान मिलावैं ।।
अँवला नीर डारि औटावै । तामें औषधि गेरि मिलावैं ।।
दोहा—औंला रसमें औषधी, घोरि पियं दिन चार ।
कुंदन-रंग काया दिपं, रोग होइ जरि छार ।।

स्त्रीके पैर छूटनेपर उपचार

दोहा—दाड़िम पात मँगाइके, साग रांधि तिय खाइ ।
सात दिनोंमें देखिये, रोग दूर ह्वं जाइ ।।

पैर छूटनेपर अन्य उपचार

दोहा—तिवा कायफर पीसिकं, पुटरी धरं बनाय ।
पैर-छूटनेकी दवा, 'इंक्षा' दई बताय ।।
चौ०—पुटरी इक भग तिया दबावै । भीज जाइ तब काढि बहावै ।।
पुटरी और जोनिमें धरै । यहि विधि नारि सात दिन करै

पैर छूटनेपर अन्य उपचार

दोहा-मैदा गेहूँ धोइकै, तिया पीसकै छानि ।
कच्चे फल अंजीरके, ताके रससों सानि ।।
चौ०—तिलके तेल गुलगुला बनावै । तोला तीन प्रमान बसावै ।।
चार गुलगुला नित उठि खाइ । सात दिना दुख दूर बिलाइ
दोहा—अमशेब दौसी-तिब्बमें, ये तीनों उपचार ।
अजमाये बहु निपुन हं, भाषा कियो विचार ।।

स्त्री के प्रसूत रोगका उपचार

अमृतरस

चौ०—शीशा कलई पारा कहै । इक इक तोला तीनो लहै ।।
छं तोला तहँ मिर्च बखानो । तोला तीन हलाहल जानो ।।
अग्नि-उपर इक भाजन धरै । ताम शीशा कलई करै ।।
दोनों टहकि नीरसम होई । तामें पारा डारै सोई ।।
दोहा—तब भाजन मुख मूँदिये, चढा रहै तिहि आग ।
शीतल ह्वै टिकरी बँधे, काढि लेहु बड़भाग ।।

---

* पका हुआ

मिर्च हलाहल ठीकरी, सकल बरतनमें डारि ।।
ताको बुधजन घोटिये, हावन जाम बिचारि ।।
ताको लै डोंबला धरे, तंबुल द्वै परमान ।
नागबेलसों दीजिये, हरै व्याधि सब जान ।।

बाल बढ़ानेकी दवा

चौ०–हरें बहेरा अध अध पाउ । तहाँ आँवला सेर बताउ ।।
सेर भैंनफल छोटी लेहु । बडी तहाँ प्रति सेरे देई ।।

दोहा–सब औषधिको पीसके, हांडी भरै सुजान ।
सरसों तेल मँगाइकै, डारै सेर प्रमान ।।
हांडीको मुख मूंदिकै, गाडै चूल्हे पास ।
दिन इकइस गाडी रहै, पीछू लेइ निकास ।।
धोवै कच मलि औषधि, इक मंडल जो कोई ।
कारे वृद्ध दीरघ महा, बार तासुके होइ ।।
जमशेद दोसी-तिब्बमें, औषधि देखी जाइ ।
सो 'इंशा' अजमायकै, भाषा दई सुनाइ ।।

बाल बढ़ानेकी अन्य दवा

चौ०–हस्तीदंत जरावै जोई । ताको छार करै तब सोई ।।
अजा-दूधम ताहि मिलावै । ताको तिय लै केश लगावै ।।

दोहा–मंडलभर तिय कच मलै, आँला–जलसों धोइ ।
वृद्ध ह्वै बाढै अलक अति, श्याम मधुपसम होई ।।

उबटनकी विधि

चौ०–हर्द मूसली खांड मिलावै । टांक टांक नखमोथ बतावै ।।
चार टांक लै रात्रा चंदन । सब औषधि सम कुसुम बिचक्षन
सो०–पीली सरसों टांक, लेहु चिरौंजी टांक दस ।
कडुवा तेल निसाफ, पीसि छानि सब घोलिये ।।

दोहा–भूनै चौका उबटना, सबसों दूना सोइ ।
करै उबटना कामिनी, चंदबरन दुति होई ।।

अन्य उबटन ।

दोहा–हर्दी गुखरू मोथ नख, पीली सरसों लेहु ।
टांक टांक औषध सकल, तहां जु धाना देहु ।।

चौ०–तहाँ चिरौंजी तोला डारौ । तोला मुखचंदन निरधारौ ।।
कूटि पीसि मैदा करि छानौ । दिन प्रति ताको मर्दन ठानौ ।।

दोहा–मुख सो माँसा उबटना, घोरि लगावैं नीर ।
कंचन रँग झलकै बदन, कह 'इंक्षा' मतिधीर ।।

झाईंका उपचार

दोहा–मूलीबीज मँगाइकै, पीसि लगावै जोइ ।
झाईंमूल न देखियें, चंद बरन दुति होइ ।।

झाईंका अन्य उपचार

सो०–खरहा रुधिर मँगाइ, जो कोऊ लेपन करै ।
झाईं मूल हिराइ, कुंदन रँग काया दिपै ।।

झाईंका अन्य उपचार

चौ०–पीली सरसों सेंधा नोन । हर्दी और कतीरा तौन ।।
अजा दूधसों लै सम सानै । सो झाईं पर लेपन-ठानै ।।

दोहा–तीन वेर इकदिन करै, कळू दिना इहि भाइ ।
दूरि होइ झाईं तबै, 'इंक्षा' दई सुनाइ ।।

अथ संकोचन विधि

दोहा–माजू फल औ मोचरस, छोटि मैनफल आनि ।
बडी मैनफल बीजबँद, समुदसोख पहिचानि ।।
तालमखाना गोखरू, सालिम मिश्री होइ ।
बवारकनी अरु रीसवर, तहां स्याम तिल सोइ ।।
छाल अनार मँगाइये, और छाल कचनार ।
द्वै द्वै तोला सकल मिलि, बुधजन करहु विचार ।
कूटि पीसिकै औषधि, धरै चतुर जो नारि ।।
होत प्रात तोला भखै, गौ-पयसंग विचारी ।।
सात दिवस यहि विधि भखै, पियसों रहै वराइ ।।
अति संकोच न होत है, साधन नाहिं समाइ ।।

अन्य उपचार

चौ०–मधुकर केंचुवा सम जुग लेई । पीसि पोटरी भगमें देई ।।
तीन दिना यहि विधि तिय धरै । संकोचन अति ही दृढ करै ।।

दोहा–अति संकोचन जानिये, औषधि दई बताइ ।
दही डारि धोवै नहीं, साधन नाहिं समाइ ।।

अन्य संकोचन उपचार

दोहा–माँजूफल दस टांकले, बीज धतूरा पांच ।
शिलाजीत रस गोटिका, जुनरी सम कर सांच ।।

छाँह सुखावै गोटिका, भगमें धरै बिचारि ।
बँसिकै हिंगुवाबीजको, उपर लगावै नारि ।।
अति संकोचन होइ तब, वृद्ध ज्वान ह्वै जाइ ।
कोक-कलापरमान विधि, औषधि दई बताइ ।।

अन्य संकोचन उपचार

चौ०-अकरकारा अजमाद मँगावै । नागरमोथा मिर्च मिलावै ।।
जटामँसी माँजूफल कहै । सोंठ मँजीठ बहुत विधि लहै ।।
दोहा-सुरमा स्याम भँगाइकै, दालचिनी तहँ देउ ।
अरु कवाबचीनी तथा, लाल अनारहिं लेहु ।।
सम औषधि सब जानिये, कूटि पीसिकै छानि ।
जा विधि अब बरनन करौं, ता विधि भगमें ठानि ।।
चौ०-भात रांधि इक भाजन धरै । तामें माड़ नित्त उठि परै ।।
जब अति आमिल होइ सो भाता । तब ही छानि लेहु विधि ज्ञाता
दोहा-ता रस सानै औषधी, पुटरी करै सुजान ।
सो भग अन्तर लै धरै, मासाभर परमान ।।
अति सुवास भगबास लहि, संकोचन अति होइ ।
सब औषधिको मूल है, 'इंक्षा' करै जु कोहु ।।

अन्य संकोचन उपचार

दोहा-छाल अनार मँगाइकै, बसन पुराना झीन ।
दोनों जल दै औटिये, भाजन तांब नवीन ।।
घरी चार तिहि आँच दै, काढि सुखावै छाँह ।।
कपरासों चिटकारिकै, लै राखै भगमाँह ।।
सबन भीग भगमें जबै, काढि पुरुषपै जाय ।
अति संकोचन जानिये मदनांकुश नहिं जाइ ।।

कुच कठोर करनेकी विधि

चौ०-अतरछाल सेमरकी लावै । नीर डारि ताको औटावै ।।
बसन छानि रस तिया निकारे । चौथे अंश शिलारस डारै ।।
दोहा-शीशेकी बेली करै रस चुपरै लै ताहि ।
सो बेली तिय गाढ़िकै, कसै पयोधरमाँहि ।।
तीन दिना सो कामिनी, पुरुष-पास नहिं जाइ ।
पीन पयोधर महादृढ़, खाटी वस्तु न खाइ ।।

बाल दूर करनेकी औषधि

दोहा-चूना कली मँगाइकै, गौदन्ती हरतार ।
सम सिरकासों पीसिये, दूरि करे तिय बार ।

पीछू तिलके तेलसों, मलै तिया स्थान ।
कबहूँ बारन पेखिये, मानौ सीख प्रमान ।।

अन्य औषधि

चौ०—न्योरा-रुधिर लगावै कोई । तुरत दूर कच ताके होइ ।।
तीन बार तिय हिय विधि करै । कबहूँ बार न तन संचरै ।।

अन्य उपचार

दोहा—कोचिला-नीर लगाइये, दूर होय तन बार ।
सोई गुन याको कहै, खरहा-रुधिर विचार ।।

अन्य औषधि

चौ०—गेहूँ मैदा लै आवै । दोइ बार तिहि बसन छनावै ।।
बालक तिया जनै जब कोई । बालकके मैदा मलि सोई ।।
दोहा—होइ अवस्था तरुण जब, देखि परै नहिं बार ।
अलीशाहकी तिब्बतें, 'ईक्षा' लिख्यो विचार ।।

अन्य औषधि

दोहा—संख जारिकै भस्म करि, तिहि कदली रस डारि ।
लेपन करिकै अंगमें, दूर करै कच नारि ।।

अन्य औषध

सो०—गोवंती हरतार, सम कोदौं दै पीसिये ।
चूना-रसको डारि, तप्त अग्निपर कीजिये ।।
दोहा—सो लै लेपन कीजिये, दूर होई कच ताहि ।
औषधि अजमूदा कही, यामें संशय नाहि ।।
प्रथम बार सब दूरिकै, लावै कदली-नीर ।
तहाँ बाल जामें नहीं, कह 'ईक्षा' मति धीर ।।

कष्टानारी उपचार

दोहा—इन्द्रायनकी कोपलैं, गऊ-मूतसों पीसि ।
भगमें बाती करि धरै, कष्ट मोच बिसिबीस ।।

मृत गर्भका उपचार

दोहा—गौ गोबर दस टांक लै, वासी पानी घोलि ।
पियै नारि तत्काल ही, मृतक गर्भ भुइँपेलि ।।

मृतगर्भका अन्य उपचार

दोहा—गाजर-बीज मँगाइये, आधपाव परमान ।
भगतर धनी दीजिये, जा विधि कहौं बखान ।।

गढ़ा खोदि तहँ आग भरि, तापर बीजा देइ ।
ऊपर बैठे कामिनी, भगमें धूनी लेइ ।।
धूवाँ जाइ भग मध्य जब, मृतक गर्भ भुइँ आइ ।
औषधि अजमाये निपुन, 'इंक्षा' दई बताइ ।।

अन्य मृतगर्भकी विधि

दोहा—मूल कनेरा लाल लै, जलसों पीसै कोइ ।
हाथ पांव मेंहदी तरह, नाभि लेपि करि सोइ ।।
बाती करि भग-मध्यधरि, मृतक गर्भको मोचु ।
औषधि 'इंक्षा' मूल है, यामें तनक न सोचु ।।

बन्ध्या करनेका उपचार

दोहा—धानुतूस चीता कहा, सम दोनों औटाउ ।
पुहुपवती जो कामिनी, ताको नीर पियाउ ।।
तीन दिना यहि विधि पिय, गर्भ धरै नहिं नारि ।
कोकफला-परमान विधि, औषधि लेहु बिचारि ।।

बन्ध्या करनेकी अन्य विधि

दोहा—टंक बदाम घृत पीसिकै, भगमें लावै नारि ।
ऊपरसे पिय रति करै, निश्चै बांझ विचारि ।।

अन्य बन्ध्या करनेकी विधि

दोहा—गाजर-बीजा टांक दस, बीस कुलींजन लेहु ।
पुहुपवती स्नान करि, गो-पय-सँग तिहि देहु ।।
दिना तीन यहिविधि पियै, तिया बाँझ ह्वै जाइ ।
सपने फल प्रापति नहीं, औषधि दई बताइ ।।

अन्य बन्ध्या–करण उपचार

दोहा—बालक-मुखको दांत जब, टूटै धरै उठाइ ।
आवित दिन रूपे मढ़ै, पहिरै, ताहि गुहाइ ।।
कोटि पुरुष जो रति करै, गर्भ धरै नहिं नारि ।
'इंक्षा' सब औषधिनते, लीजौ सरस विचारि ।।

गर्भ–द्रवनकी विधि

दोहा—गर्भ धरन सब तिय चहैं, मोचनको नहिं हेत ।
लाज–काज मोचन चहै, सो औषधि कहि देत ।।
ऐसो कारज जो करै, ताहि होइ अति दोष ।
महापापको मूल है, गर्भ–पातको दोष ।।
गर्भ तियाके उदरमें, तीन मास बिन जीय ।

ऊपर जिवधारी लखौ, भूलि जतन नाँहि कोय ।।
लिख्यों ग्रंथन देखिकै, मोंहि पाप नाँहि होइ ।
अपस्वारथ परकाज हित, कियौ चहै सुनु सोइ ।।

गर्भद्रवनकी औषधि

दोहा—मूल अरंड मँगाइये, कद्दू—बीज सम पात ।
इन्द्रायनफल गूद कहि, अरु कसीस बुधज्ञात ।।

चौ०—बंदाल कलौंजी इक इक टंक । पीसै सिलपर तिया निसंक ।।
बाती करि भग—अन्तर धरै । तुरत गर्भ-मोचन सो करै ।।

अन्य गर्भद्रवन उपचार

दोहा—सोवा साग सुखाइकै, अरु मेथी तहँ देइ ।
गाजरके बीजा तथा, कद्दू बीज पुनि लेइ ।।

चौ०—दस दस टांक औषधी कहै । सेर दसक जल तामे लहै ।।
धरि भाजन औषधि औटावै । जरि पानी जब सेर दिखावै ।।

दोहा—चौदह दिन सो जल पियै, गर्भ द्रवन ह्वै जाइ ।
कोककला—परमान यह, औषधि दई बताइ ।।

स्त्रीके ग्रोनिचटको उपचार

दोहा—गोपय अरु मधु आनिकै, सम औटावै सोइ ।
करि जलाव शीशे धरै, जबहीं शीतल होइ ।।
फाहा करि भगमें धरै, चट नाँहि मूल दिखाइ ।
सेहुरघाव पीवहिं हरै, औषधि दई बताइ ।।

अन्य भगचट—उपचार

चौ०—एक जायफल नारि मँगावै । कूटपीसि पैसों औटावै ।।
फाहा करि भगमें पैठाई । पीबपरि चटमूल हिराई ।।

भग सूजन उपचार

दोहा—इसबद अलसी आनिकै, मधुसों सानै नारि ।
रुई पुरानी जानिये, फाहा करै विचारि ।।
भगपर फाहा धरत ही, सूजनमूल हिराइ ।
'इंक्षा' ग्रंथन देखिकै, औषधि दह बताइ ।।

इति चतुर्थ खंड समाप्त ।। ४ ।।

अथ पञ्चम-खण्ड

पुरुषोंकी चिकित्साका वर्णन

दोहा—नारीकी औषधि कही, 'इंक्षा' मति-अनुसार ।
अब पुरुषनहित औषधी, बुधजन ! करौ विचार ।।
पुरुष कलानि-प्रवीन अति, तियसों रमै जु कोइ ।
जबलगि द्रवै न कामिनी, तबलगि सुखी न होइ ।।
निबल पुरुषोंसों कामिनी, सुख देखै नहिं कोइ ।
सो निर्बल-व्योहार सब, सुनो सुमति-जन लोइ ।।

चौ०—कै कामी बसि रोग दिखावै । कै इन्द्री बलहीन बतावै ।।
ऊंच नीच टूटी नस होई । कै इन्द्री जागै नहिं सोई ।।

दोहा—कै पुरुष हथरस करै, रमे बेढिके संग
ये नर निर्बल होत हैं, अवमि सुरतिको भंग ।।

चौ०—कै पुरुष गाडर रति ठानै । भोगि गर्दभीको मुद मानै ।।
सोतघात खुलि मानै हारा । तिया न तृप्तै करौ विचारा ।।

दोहा—रजस्वला नारी रमै, जाय धातु तिहि फूट ।
प्रथमहि क्रीडाके समैं, जात काम तन छूट ।।

चौ०—पुरुष-मैथुन करै कुपंथा । ताते निर्बल हो मनमन्था ।।
शिखा लिंग स्थूल बनावै । मूलहीन ताको दिखरावै ।।

दोहा—सो फल कैसे देखि है, तोरै फूल अगार ।
जतन किये फिरके फरै, बुधजन करौ विचार ।।

दोहा—जतन-नीर तन वृक्षको, प्रति दिन सींचै कोइ ।
फूल देखि फलको, लहै, जतन मानिये सोइ ।।

सो०—बढै कायकी जोति, योग्य जतन कामी करै ।
शय्या सुख अति होति, सेवै सुन्दरि कामिनी ।।

चौ०—करू तेल तन मर्दन करै । नितस्नान तात जल करै ।।
झीने बसन स्वेत तन धारै । पुहुपवास मुख पान विचारै ।।
हरे कुंज बन देखै सोई । सरिता निरखि राग सुनि होई ।।
सूरति सुने तहाँ चलि देखै । पांचो अमृत भाजन लेखै ।।

दोहा—यहि विधि जो कामी रहै, बाढै काम अपार ।
मदन-कोप फिरिकै उठै, पुरुष होइ कै नार ।।

लवा बटेरा गर्गरा, तीतर सखा कपोत ।
गेहूँ गुड़ अरु उर्द भखि, काम तेज अति होत ।।

चौ०—मुंडी अरु असगँध पहिचानो । संखाहुली मोचरस जानो ।।
कोंचबीज-सत जानु गिलोई । मिर्च पीपरी दूधी होई ।।

दोहा—मुसली श्याम सतावरी, बढ़ै रुदन्ती काम ।
आठौ धात कमाइकैं, खाइ होइ बसि बाम ।।
कामतेज ये औषधी, जस जानै तस खाइ ।
सब औषधिको मूल है, सुरति अंततक पाइ ।।
तन-नगरी भूपति-मदन, भूप सबहिं सुख देइ ।
राजा भयौ कुचैन तब, परजा सुखी न होइ ।।
काम तेज जैसे बढ़ै, तैसै ही करि पोषु ।
निबल भये तन देखिये, ग्रसित होइ बहु दोषु ।।
जग चिंता सब त्यागिकैं, जतन करो चित लाइ ।
अवधि अल्प सुखसों रहौ, चिंता करै बलाइ ।।
आप सुखी तब जग सुखी, सब आपन तब होइ ।
दुख व्यापे नहिं आपनो, यह जानत सब कोइ ।।
जबलगि जी काया बसै, तब लगि घर औ बार ।
नौ नारी कोठा तजे, छोड़ देत परिवार ।।
लेहु भलाई जगतमें, बुरा पंथ तजि देहु ।
थोरे दिनकी आयु है, सब सों करौ सनेहु ।।

सो०—तीरथ करै अघाइ, जबलगि जिंदगानी रहै ।
दुरजन चित्त सकाइ, जबलगि जी काया बसै ।।
जो काया बल होइ, खड्ग गहै सम्मुख लरै ।
सूरपुरुष को जोइ* बरै अप्सरा तासुको ।।

दोहा—जो काया पोषण करै, दूषण लगै न अंग ।
जोग भोग 'इंक्षा' भले, करौ जुगुल इक संग ।।
तीन बातके कारने, जन्म दियौ करतार ।
धन उपजावन हरिभजन, भामिनि भोग विचार ।।
ये तीनौ तब ही बनै, जब काया बल होइ ।
याते बुधजन चित्त धरि, जतन करौ सब कोइ ।।

मदनमोदक गुटिका

दोहा—पुहकरमूल सतावरी, नागकेसरी होइ ।
संखाहूली मुरहठी, कौंचबीज कहि सोइ ।।

* देखकर

श्याम श्वेत जीरा जुगुल, जुगुल मूसली देहु ।
पीपर चीता सोंठ गहि, भारंगी तहँ लेहु ।।
तेजपत्र अरु पीपली, सेमर छालि बिचारि ।
गुखरू दाडिमबीज लै, केसर मिर्च निहारि ।।
धनिया मोथा कायफल, सोंठ कचूर मिलाइ ।
हर्र बहेरा आंवला, दीजै छर्र बताइ ।।
असगँध अजमोदा कहा, ककरासिंगी डारि ।
कंदबिदारी हेरि गहि, इक इक टंक बिचारी ।।
कूटि पीस मैदा करै, ये सब औषध ल्याय ।
पाँच सेर गौ-दूध को, 'इंक्षा' लेय मँगाय ।।

चौ०—आध पाव विजया लै आवै । झीने बस्तर पुटरि बनावै ।।
सो पुटरी लै पयम डारै । मधिम आंचते ताको जारै ।।

दोहा—जरै कराही दूध जब, आधा रहै निदान ।
भांग पोटरी मींजिकै, पयसों काढ सुजान ।।
कूटि पीसि औषधि धरी, सो लै दूध रलाउ ।
जबलगि पय खोवा बनै, तब लगि ताहि जराउ ।।
दूध औषधी औटिकै, खोवा करै बनाइ ।
तब ये औषधि आनिये, 'इंक्षा' देत बताइ ।।
लौंग इलैची जायफल, गरी छुहारा आनि ।
जावित्री इसबंद लै, दाख चिरोंजी जानि ।।

चौ०—दालचिनी दस औषधि कही । इक इक टंक सकल विधि लही
कूटि पीसि तिहि बस्तर छानै । ताको लै खोवामें सानै ।।

सो०—गाढा करै जलाव, सबसों दूनी खाँड लै ।
औषधि ताहि रलाव, कर मर्दन बहु कीजिये ।।

दोहा—गुटिका करि पंचासलौं, एक सकारे खाइ ।
रहै न तनमें रोग कछु, कामिनि नित्य सुहाइ ।
गुटिका इक संध्या समै, खाइ पुरुष जो कोइ ।
करै सुथंभन रुचि लिये, तिया मगन अति होइ ।।
भूख बढै तन शुद्ध ह्वै, काम तेज अधिकाइ ।
खाइ मदनमोदक पुरुष, कंचन रूप दिखाइ ।।
अमल बाइको परिहरै, जबलगि गुटिका खाइ ।
कामकला-परमान यह, 'इंक्षा' दयौ बताइ ।।

महामदन-मोदक गुटिका

दोहा—चन्दन कूट रु गोखरू, सेंधा दाख मँगाइ ।
कोंचबीज धनिया हरद, केसर तगर बताइ ।।
उरद कपूर इलायची, ब्राह्मी अगर मुलेहु ।
हरं बहेरा आंवला, दालचिनी तहँ देहु ।।
देवदारु जीरा तहां, लौंग सतावर होइ ।
मोथा पुहकरमूल गहि, अकरकरा लै सोइ ।।
जेठीमधु नागकेसरी, कमलगटा पहिचान ।
बिरवा कौडी मिर्च गाह, तुलसी श्याम बखान
अजवाइन दोनों तहां, भारंगी कंकोल ।
लै अतीस खुरमा-तहां, तालमखान अमोल ।।
जावित्री अरु तेजबल, दाड़िम-बीज गिलोइ ।
गांडरजर अजमोद छड़, केलकंद कहि सोइ ।।
कंद बिदारी रेनुका, कुड़ा-छाल लै आउ ।
गाजर-बीज सिंघार लै, गजपीपल चित लाउ ।।
हाऊबेर रु कसेरा, माँजूफल तहँ लेहु ।
समुदसोख अरु इन्द्रजौ, पहरु उटंगन देहु ।।
और कुलीजन औषधी, चंपा-बीज निपाति ।
'इंक्षा', गोंदी-गोद पुनि, लेहु अडूसा-पाति ।।

चौ०—तहाँ हलाहल लेहु मँगाई । अरु तालीसपत्र चित लाई ।।
तिन तिन टंक आध तहँ कस्तुरी, बुधजन लेहु मँगाइ ।

दोहा—टांक आध तहँ कस्तुरी, बुधजन लेहु मँगाइ
तोर सुपारी दीजिये, बीस टाँक बतलाइ ।।

चौ०—धावा बीस तहँ टंका । बीसै टांक मँजीठ सिसंका ।।
चालिस टांक ताँबरस जानौ । बंग टंक चालिस पुनि आनौ ।।

दोहा—बिजया सेर मँगाइकै, मिसरी सेर बताइ ।
पीसि कूटि सब औषधी, मैदा करौ बनाइ ।।
सेर डेढ़ मधु लीजिये, खांड सेर जुग होइ ।
करि जलाव मधु खांडको, औषध मिलवै सोइ ।।
कर-मर्दन करि औषधी, डेढ़ टांक परमान ।
'इंक्षा' गुटिका कीजिये, कोककला-परमान ।।
होत प्रात गोली भखै, काम-तेज अधिकाइ ।
बल बढ़ि तेजीको करै, कुंदन रंग दिपाइ ।।
रोग हरै थंभन करै, मदन अंग सरसाइ ।

दिनप्रति नौ नारी रमै, रतिते नहीं अघाइ ।।
तिया खाइ यह गोटिका, महाशुद्ध तन होइ ।
रूप बढ़ै ता नारिको, मुख सुबाह लह सोइ ।।
रक्त बात तन दूरिकै, मंद अग्नि जरि जाइ ।
पित्त सहित कफको हरै, इन्दु-ज्योति सरसाइ ।।
'इंक्षा' बास गुलाब तन, जबही उठै पसेउ ।
महामबन मोवक यहै, फरै लालसा बेउ ।।

कामेश्वर गुटिका

दोहा–तालमखाना आनिकै, बीजबंद पुनि लेहु ।
अकरकरा लौंगें तहाँ, आनि जायफल देहु ।।
जावित्री अरु पीपरी, मिर्च गोखरु होइ ।
बीज उटंगनके तहां, मुंडी और गिलोइ ।।
श्वेत मूसली आनिकै, कौंचबीज तहँ देहु ।
सिंगरफ और सतावरी, दालचिनी बुध लेहु ।।
गुजराती तहँ लायची, हर्द इन्द्रजो होइ ।
मालकांगनी ल्याइकै, अरु समुद्रफल सोइ ।।
मदनमस्त अरु बहुफली, चीनी लेहु कवाब ।
गारके बीजा तहाँ, नागकेसरी दाब ।।
दस दस टंक विचारिये, जै औषधी कहि दीन ।
केसर मृगमद मस्तगी, पच पच टंक प्रवीन ।।
पीसि कूटि सब औषधी, धरौ बसनमें छानि ।
जातीफल सम गोटिका, कीजै गुडमें सानि ।।
गुडप्रमान मैं नहिं लिख्यो, लीजौ बुध जन जानि ।
जेतेमें औषधि मिलै, तेतेमें लै सानि ।।

चौ०–गुटिका एक खाइँ परभात । बल बाढ़ै बाढ़ै अति घात ।
नैन–जोति कायारँग धरै । मदननीर कायामें भरै ।।
भोजन करि संध्याकोखाइ । नागबेल × ऊपरसे पाइ ।।
* जाम एक स्तंभन लहै । बिन खटरस नहिं द्रावन लहै ।।

दोहा–साहिब औदीके लिये, प्रगह कियौ लुकमान ।
सो 'इंक्षा, भाषा लिख्यो, कामेश्वर धरि नाम ।।

× नागबेल–पान * एक प्रहरतक

काम-कल्लोल गुटिका

चौ०-पुस्ताबीज लौंग लै आवै । अकरकरा असगंध बतावै ।।
मुसली स्वेत बहुफली लहै । अरु कवाबचीनी तहँ कहै ।।

दोहा-सम औषधि सब लीजिये, कूठि पीसि इक ठाँउ ।
मधु मिलाइकै औषधी, गुटिका टंक बनाउ ।।
होत प्रात गुटिका भखै, खटरस देइ बराइ ।
कामतेज अति ही बढै, मदन अंग सरसाइ ।।
खाइ नपुंसक गोटिका, कछू दिना चित लाइ ।
षट नारी इक दिन रमै, औषध दई बताई ।।

स्तम्भन विधि

दोहा-तज पत्रज अरु सौंफ लै, अकरकरा तहँ होइ ।
जातीफल तहँ दीजिये, जावित्री लै सोइ ।।
नागकेसरी लीजिये, टंक टंक परमान ।
नीली पास मँगाइकै, बांधौ बटी सुजान ।।

चौ०-दोइ टांककी गोली करै । भोजन उपर सांझ मुख धरै ।।
काम बढ़ै स्तम्भन होइ । जो ,इंक्षा' करि है यह कोई ।।

अन्य स्तम्भन विधि

दोहा-लौंग कलौंजी आनिये, सम दोनों बुध जानि ।
गुर पुरान लै गोटिका, दोइ टांक तिहि सानि ।।

चौ०-सांझ समय इक गोली खाइ । ऊपरते मुख पान चबाइ ।।
हारै नहीं करै परसंगा । स्याद लहै तब द्रवै अनंगा ।।

अन्य स्तम्भन उपचार

चौ०-कगहिबीज बलबीज मँगावै । मुखरू काकजंघ बतलावै ।।
जातीफल जावित्री कहै । अकरकरा लौंगै तहँ लहै ।।

दोहा-कूटि पीसिकै औषधी, शक्कर तिहिसम होइ ।
पोस्त उबाल जल लीजिये, खरल सात पुट सोइ ।।
झरबेरी-सम गोटिका, संध्याको जो खाइ ।
'इंक्षा' स्तंभन लहै, द्रवै अमिल रस पाइ ।।

अन्य स्तम्भन विधि

दोहा-सूखे फूल कनेरके, श्वेत देखिकै लेइ ।
जातीफल मिरचै तहां, समुवसोख लै देइ ।।

खुरसानी अजमोद लै, सोंठ अफीम अभंग ।
सम लै पिसि करि गोटिका, पोस्त नीरके संग ।।
झरबेरी सम गोटिका, बांधि खाइ जो कोइ ।
द्वादस टंक घृतं पीजिये, अति स्तंभन होइ ।।

अन्य स्तम्भन विधि

चौ०–जातीफल अरु पीपरि लीजै । तहाँ लाइ कंकोलहि दीजै ।।
श्वेत कनेराकी जर आनै । जमीकंद अरु लाची जानै ।।
खीरकन्द अरु लागै कहै । अकरकरा जावित्री गहै ।।
डेढ़ डेढ़ टँक सब लै लीजै । तीन टँक अहिफेन करीजै ।।
द्वादस टंक मधूमें सानै । बेर बराबर गोली ठानै ।।
गोली खाइ दूध पीजावै । 'इंक्षा' स्तम्भनते सुख पावै ।।

स्तम्भन और तेजीके लिये दवा

दोहा–लौंग जाइफल लीजिये, पीलूकी जर छालि ।
टंक टंक तीनों कहै, जुग लै लेपी घालि ।।
आकपत्र–रस गोटिका, औषधि पीसि बनाउ ।
प्रथम भोगते गोटिका, जल घँसि लिंग लगाउ ।।
तेजी करि थंभन करै, नारी प्राप्ति लखाइ ।।
'इंक्षा' ग्रन्थन देखिके, कहै सुनौ चित लाइ ।।

अन्य स्तम्भन–विधि

दोहा–सोंठ सतावर लीजिये, अरु मुंडीदल होइ ।
सम औषधि तीनों कही खांड तिगुन कहि सोइ ।।
करि जलाव गोली करै, दोइ टांक परमान ।
करि भोजन गृटिका भखै, सुस्तंभन पहिचान ।।

अन्य स्तम्भन–विधि

दोहा–जातीफल अहिफेन × अरु, केसर कस्तुरि ल्याइ ।
मधु मिलाय सम औषधी, गोली धरै बनाइ ।।
दोइ रती परमान यह, सांझ समय जो खाय ।
अति स्तंभन होत है, तरुनी हिये अघाय ।।

अन्य स्तम्भन–विधि

चौ०–कनइर मूल स्वेतकी लीजै । पिपरी और अफीम मलीजै ।।
पचरस गाजर स्वेत बखानो । पच पच टांक सबनको आनो

× अहिफेन–अफीम

दोहा—पीसि कूट सब औषधी; भांटा-सरसों सानि ।
गुटिका करै बनाइकै, मासा भरि पहिचानि ।।
बासी पानी पीसिकै, लिंग-लेप करि देहु ।
जाम एक थंभन रहै, सुरति-स्वाद अति लेहु ।

अन्य स्तम्भन विधि

चौ०—सेर घुंघुची स्वेत मँगावै । सेर धतूरा—बीज बतावै ।।
सेर कनेराकी जर आनो । बुधजन स्वेत दूब पहिचानो ।।
भेड-दूधते इक दिन खरलै । अजा—दूध दूजा दिन डरलै ।।

दोहा—महिषी—दूध मँगाइकै, तीजे खरल कराइ ।
छांह सुखावै औषधी, गुटिका प्रथम बनाइ ।।
तेल निकारै ताहिको, करि जंतर पाताल ।
तेल चुपरि बीसौ नखन, द्रवै नहीं उत्ताल ।।

पुष्टिकी औषधि

चौ०—गाजरदल इक सेर मँगावै । चौराईदल सेर बतावै ।।
दोउ उबालि मींजि रस लेई । दोई सेर गो-पय तहँ देई ।।

दोहा—रँग अरु दूध मिलाइकै, अग्नि—उपर औटाइ ।
खाइ दिना प्रति औषधी, तासँग सहद मिलाइ ।।
कामवृद्धि अति जानिये, बढै सुरतिको अंस ।
'ईक्षा' यह औषधि कही, बढै बहुतविधि बंस ।।

अन्य पुष्टिकी औषधि

दोहा—असगँध—सत औ सोंठि लै, पच पच टंक प्रमान ।
पीसि पियै सँग दूधके, इकइस दिना सुजान ।।

अन्य पुष्टिकारक दवा

दोहा—असगँध सेर मँगाइकै, कपरछान करि लेहु ।
दूध औटि तासँग भखौ, दोइ टांक चित देहु ।।
पहिले फंकी फांकिकै, उपर दूध पी जाइ ।
अंग धातु अति ही बढै, कंचन—रूप दिपाइ ।।

अन्य पुष्टिकरण दवा

दोहा—कीकर फली मँगाइकै, आम—टिकोरा लेहु ।
सेमरकी मुसली तहां, लहसोरा-फल देहु ।।
सिरसबीज मंडी तथा, धायफूल मँगवाइ ।
कली पलास विचारिये, गोंद पलास बताइ ।।

तालमखाना गोखरू, श्याम मूसली होइ ।
पांच पांच तोला सकल, करै मायदा सोइ ।।

चौ०–औषधि–सम तहँ खांड़ मिलावै । छैःटांक प्रतिदिना बतावै ।।
होत प्रात औषधि मुख डारै । सेर दूध कच्चा निरधारै ।।

दोहा–काम बढै अति बल बढै, इन्द्री-बल अति होइ ।
अंग अरुण 'इंक्षा' लहै, करै औषधी कोइ ।।

अन्य पुष्टिकी फंकी

दोहा–तालमखाना गोखरू, कौंच बीज सुनि लेहु ।
समुदसोख अरु मोचरस, तहाँ सतावर देहु ।।
सम औषध सब लीजिये, चीनी खांड मिलाइ ।
तीन टांक नित खाइये, ऊपर गो-पय पाइ ।।

अन्य पुष्टिकरण फंकी

दोहा–सालिम मिश्री आनिये, बंसलोचन मँगवाइ ।
असगँध रूमी मस्तगी, सम चारों बतलाइ ।।
कूटि पीसि मैदा करै, सम तिहि खांड मिलाइ ।
होत प्रात उठि खाइये, पुनि गो-पय पीजाइ ।।

प्रमेहकी चिकित्सा

चौ०–मेद और महमेद मँगावै । तज पुस्ता सम सकल बतावै ।।
कूटि पीसि मैदा करि छानै । मिश्री ताहि बराबर ठानै ।।

दोहा–हो प्रात तोला भखै, ऊपर गौ-पय पाइ ।
अमिल बाइको परिहरै, सात दिवस चितलाइ ।।
तब प्रमेहको दूरि करि, गाढो बीज दिखाइ ।
'इंक्षा' उत्तम औषधी, अंग रूप सरसाइ ।।

अन्य प्रमेह–उपचार

चौ०–कली अनार बीस गनि लेई । छब्बिस फूलअदुहली देई ।।
सिरसबीज दो टंक बतावै । मासा डेढ अफीम जतावै ।।
डेढ जाइफलको फल दीजै । कौडी एक नारिकै लीजै ।।
कूटि पीसिकै बुकनी करै । प्रात सांझ टंक फाँका करै ।।

दोहा–वाम खटाई परिहरै, दूर होइ परमेह ।
कंचन रँग काया दिपै, इकइस दिन भखि एह ।।

अन्य प्रमेहकी ओषधि

दोहा–सप्त टंक अँवला कहे, सोंठ अढाई लेहु ।
सौंफ टंक चौदह लहौ, खांड टंक दस देहु ।।

टांक तीन प्रातः भखै, बासी पानी आनि ।
खटरस 'इंक्षा' परिहरैं, हो प्रमेहकी हानि ।।

अन्य प्रमेह–उपचार

दोहा–तोला तोला लीजिये, वंग मिर्च मँगवाइ ।
कूटि पीसि औषधि सकल, पुरिया खंड बनाइ ।।
होत प्रात इक पूरिया, बासी जल सँग खाइ ।
खट्टा बादी परिहरैं, रोग प्रमेह नसाइ ।।

ढीली इन्द्रियका उपचार

दोहा–जीरा जावित्री तहाँ, लौंग कपूर बताइ ।
सब औषधि सम लीजिये, कूटि पीसि चित लाइ ।।
चीनी खांड मिलाइये, सम औषधि लै सोइ ।
पांच टांक इक दिन भखै, बासी पानी कोइ ।।
इकइस दिन धारण करैं, इन्द्री दृढ अति होइ ।
धातु बढै अति बल लहै, खाइ औषधी जोइ ।।

हथरससे ढीली हुई रगकी दवा

चौ०–अकरकरा जातीफल कहै । मिर्च लौंग जावित्री लहै ।।
दालचिनी अरु बीज धतूरा । टंक टंक औषध भरपूरा ।।
दोहा–पीसि कूटिकै औषधी, गर्दभचरबी लाइ ।
सानि लिंग लेपन करैं, दृढ अति लिंग दिखाइ ।।

नामर्दकी इन्द्रियका लेप

चौ०–पिपरामूल गजरके बीजा । कथ अरु हींग लौंग तहँ दीजा ।।
मूरीबीज अफीम मँगावै । पीपरि मीठा साम (?) बतावै ।।
दोहा–विनवरकी मींगी तहाँ, जुग जुग टंक विचारि ।
पीसै नन्हीं औषधी, चरबी बाघ निहारि ।।
चौ०–चरबी बाघ पुरुष नहिं पावै । तो चरबी बाराह मँगावै ।।
ताम मिलै लेप लिंग करै । दिन इकइस औषधि चित धरै ।।
दोहा–लिंगलेप 'इंक्षा' लिख्यो, तिब्बसहाबी देखि ।
हरै नमर्दी पुरुषकी, महाबली तिहि लेखि ।।

दीर्घ और स्थूली करण

चौ०–दादुर चार पकरि लै आवै । रँग पीले स्थूल दिखावै ।।
तिनको लै मटकामें राखै । जौनी विधि ग्रंथनमुख भाखै ।।
भोजनको केंचुवा तिहि दीजै । अरु अधिकार नीरको कीजै

दिन चालिस बीतें जब जाको । मटकाते काढ़ै तब ताको ।।
खंड खंडकरि दादुर सोई । जल दै औटावे नर कोई ।।
जाम एक पावक औटावै । तब लै ताको ओस धरावै ।।

दोहा—होत प्रात तिहि देखिये, उपर तेल उतराई ।
जलते तेल थिराइ लै, धरै कचेहरी ताइ ।।
लिंगलेप ता तेलते, करै पुरुष जो कोइ ।
दीरघ अति स्थूलता, कठिन लोहसम होइ ।।
जो जानौ 'इंक्षा' कही, अपने चित्त बनाइ ।
फिरदोभी जमशेदमें, बुधजन देखो जाइ * ।।

लिंग कठोर करनेकी दवा

चौ०—मूल स्वेत कनइरकी आनै । घुंघची स्वेत ताहिको जानै ।।
रतनजोति तिल श्याम मँगावै । मालकांगनी तहां सुहावै ।।

दोहा—बीरबहूटी कहि तहाँ, पैसा भरि भरि देहु ।
सांड़ा एक मिलाइकै, काढि तेल तिहि लेहु ।।

सो०—करि जंतर पाताल, तैल निकारौ ताहिको ।
लिंग कठोर कराल, 'इंक्षा' यदि लेपन करै ।।

अन्य स्थूली करण औषधि

दोहा—हींग सहद इकठौरके, लिंग लेपि जो कोइ ।
'इंक्षा' औषधि सरल है, मूसल सम तिहि होई ।।

नामर्दी दूर होनेके लिये तेल

चौ०—गरी लौंग जातीफल आनै । अकरकरा केचुवा पहिचानै ।।
दालचिनी विष अरु हलदिया । बीरबहूटी जहर संखिया

दोहा—घूंघची स्वेत मँगाइये, माल कांगनी लेहु ।।
जावित्री तिल श्याम लै, तोला भरि भरि देहु ।।
अरुन कगहिके बीज लै, तोला जुग सुनि लेहु ।
विजया-बीज मँगाइकै, जुग तोला भर देहु ।।
श्याम धतूरा बीजको, मासा चार विचार ।
'इंक्षा' मासा चार लै, केसर तहाँ निहार ।।

---

* यह दवा बुद्धिमानोंको नहीं करनी चाहिये, क्योंकि इसमें मेढ़ककी हिंसा होती है । अतएव हिंसाजन्य पापके कारण लाभके बदले हानि उठानी पड़ती है । हां जिस उपचारमें हिंसात्मक प्रयोग नहीं है उसे करनेपर अवश्य लाभ होता है ।

सो०–खरल जाम जुग जानि, सांडा जुग तहँ दीजिये ।
अजादूधको आनि, तेहि सँग गुटिका बाँधिये ।।
करि जंतर पाताल, ताको तेल निकालिये ।
औषध बनै विशाल, लिंग लेप तासों करै ।।

दोहा–पीछेते ता लिंगपै, देइ पान लपटाइ ।
कच्चे धागा बांधिकै, ऐसे रैन बिताइ ।।
एक रती लै तेलको, नागबेल लपटाइ ।
खाइ पुरुष तो वेगि ही, कामकला बढ़ि जाइ ।।
सात दिवस यहि विधि करै, काम तेज अधिकाइ ।
'इंक्षा' नस टूटी जुरै, महाबली दरसाइ ।।

लिंग कठोर करनेके लिये पट्टी

चौ०–कर प्रमान इक बस्तर लीजै । प्रथम रुधिर खरहाको दीजै ।।
मासा तीन अफीम मँगावै । जलसों घोलै बसन भिगावै ।।
फिरि भिगवै तिहि दूध तिधारा । छीर आकमें चतुर विचारा ।।
खुरसानी लै मासा तीन । जलसों पीसि ताहि मलि दीन ।।
लौंग तीन मासा पहिचानौ । जलसों पीसि ताहिकोठानौ ।।
इक इक भिजै छांह सुखरावै । ता पाछे गौ घिरत मँगावैं ।।

दोहा–गौघृत बस्तर भूनिये, अरुण होइ जिहि काल ।
जरै न पावै चतुर जन, काढि लेहु तत्काल ।।
ताते पट्टी फारिकै लिंग लपेटे कोइ ।
'इंक्षा' दिन दस जो करै, अति दृढ साधन होइ ।।

अन्य पट्टी

चौ०–बस्तर स्वेत पुरान मँगावै । तीन बेर पय आक भिगावै ।।
मूल कनेरा स्वेत मँगावै । तीन बेर ता माहिं भिजावै ।।
सहिजन छालि लेंइ रस कोई । तीन बेर भिगवै लै सोई ।।
अकरकरा लै जलसो पीसै । ताको लै बस्तरपर घीसै ।।

दोहा–तब लै गौघृत भूनिकै, राखै पुरुष उठाइ ।
ताकी लै पट्टी करै, लिंग बली दरसाइ ।।

अन्य पट्टी

चौ०–बस्तर अति ही स्वेत मँगावै । आक छीर त्रय बार भिगावै ।।
तीन बेर सेहुंड-पय माहीं । होहि कांटदल लखिये नाहीं ।।

दोहा—मदिरामाँहि भिगाइकै, बस्तर छांह सुखाइ ।
गौघृत भूनै लाल लखि, तबहीं धरै उठाइ ।।

चौ०—पट्टी लिंग चढायो चहै । जेहिविधि कहौं ताहि विधि लहै ।।
बीर बहूँती घुँघची सेता । गनिकै बुधजन दश दश लेता ।।

दोहा—जुगुल औषधी पीसिकै, पट्टीपर बुरकाइ ।
नागबेलि लिंग बाँधिकै, पट्टी उपर चढ़ाइ ।।
होत प्रात तिहि दूरकै, और चढ़ावै कोइ ।
दिना सात यहि बिधि करै, जोइ नपुंसक होइ ।।
कामतेज फिरकै बढै, टूटी नस जरि जाइ ।
चारि तियाको भोगवे 'इंक्षा' करि अजमाइ ।।

ठंडी इन्द्रियका उपचार

दोहा—अकरकरा तहँ दीजिये, कनकबीज * चित लाइ ।
टंक टंक दोनों कही, औषध देहुँ बताइ ।।
लौंग भंग अहिफेन लै, जुग जुग टंक प्रमान ।
चार टंक मिरचै तहां, खांड सवनसम जानि ।।
करि जलाव ता खांडको, औषध पीसि मिलाइ ।
गुञ्जासम गुटिका करै, सांझ सकारै खाइ ।।
जागै इन्द्री बल धरै, जानो चतुर सुजान ।
'इंक्षा यह औषधि कही, कोककला—परमान ।।

काममंजीवन गुटी नामर्दके लिये

चौ०—तेलिया जैफर सात मँगावै । पेट गूद तिहि कोरि धरावै ।।
इकके पेट लौंग भरि दीजै । दालचिनी दुसरेमें लीजै ।।
तीजे छोटी लाची कही । चोथेमें जावित्री लही ।।
पँचयेमें अहिफेन बतावै । अकरकरा छठयेमें नावै ।।

दोहा—जाती फलको गूद जो, कोरि धरयो इकठाइँ ।
सतयेमें सो दीजिये, और सुनो चित लाइ ।।
सात गरगवा आनिकै, मारि निकावै ताहि ।
जातीफल इक इक धरै, सियै उदर सब माँहि ।।
स्वेत कनेरा—मूलको, पौनपाउ तब लाइ ।
पांच सेर गौ—दूधमें, पुटरी करि औटाइ ।।

चौ०—दूध जरे आधा दिखरावै । काढि पोटरी दही जमावै ।।
घृतहि निकारि दहीते लेई । तामें भूनि गर्गवा देई ।।

---

* कनकबीज—धतूरा

दोहा—पकं गर्गवा घीवमें, तत्क्षण लेहु निकारि ।
हाड मास घृत कूटिये, ताहि खरलमें डारि ।।

चौ०—तब तिहि काढि जतनसों धरै । रती चार नित भक्षण करै ।।
कामज्वाल अति ही तन जागै । होइ नमर्द नमर्दी भागै ।।

दोहा—काम जगावै बल करै, अंगरूप सरसाइ ।
कामसजीवन औषधी, 'इंक्षा' दई बताइ ।।

नामर्दीकी अन्य औषधि

दोहा—स्वेत कनेरा आक लै, श्याम धतूरा आन ।
तीनोंकी जर लीजिये, अध अध पाउ प्रमान ।।

सो०—औषध करि जो कोइ, श्याम गऊ दस सेर पय ।
लै औटावै सोइ, जरै छीर आधा रहै ।।

दोहा—ताको दही जमाइकै, मथिकै घीव निकार ।
'इंक्षा' अब जो कहत हैं, सोई जतन विचार ।।

चौ०—द्वादस बुद्ध गर्गवा कहै । पैसाभरि लौंगै तहँ लहै ।।
मारि गर्गवा साफ करावै । लौंगें तिनके पेट भरावै ।।

दोहा—पेट सीव ता घीवमें, भूनै अरुन कराइ ।
मास हाड लौंगे सहित, पीसै खरल रलाइ ।।

चौ०—औषधि भूनि बचै जो घीय । ताते सानि गोटिका कीय ।।
चना—चना भर गोली करै । रहै घीस सो शीशी धरै ।।
होता पात इक गोली खाइ ।घृत रत्ती जुग लिंग लगाइ ।।
कामतेज अति ही तिहि बढै । कायारूप चौगुना चढै ।।

अथमुखवास मंचन

दोहा—मृगमद अगर मँगाइकै, लौंग दोउ सम जानि ।
बुकनी करि मंजन करै, मुख सुवास पहिचानि ।।

अथ मुखवास मंजन

सो०—मृगमद और अबीर, पीसि घरी मुख राखिये ।
काढि बिजौरा नीर, बुरी बास मुख परिहरै ।।

बगलाबासकी औषधि

दोहा—गौपय सहद मिलाइकै, पियै दिना इकतीस ।
बगलबासको परिहरै, 'इंक्षा' विश्वाबीस ।।

नारी—द्रवन विधि

दोहा—कपुर सुहागा लीजिये, जौ दाना तहँ देहु ।
टंकटंक तीनो कहे, पारा आधा लेहु ।।

पीसि कूटि सब औषधी, मधुके संग मिलाइ ।
लिंग लेपि तिय भोगवै, द्रवै महा सुख पाइ ।।

अन्य नारी–द्रवन उपचार

दोहा–दूधी रस चूना मिलै, पान लपेटि खवाइ ।
द्रवै वेगि ही कामिनी, 'इंक्षा' पल न बिताइ ।।

अन्य नारी द्रवन उपचार

चौ०–जौ दाना पारा सम लीजै । पीसि लिंग लेपन तब कीजै ।
ताही समै पुरुष रति मानै । द्रवै कामिनी निश्चै जानै ।

अन्य नारी द्रवन उपचार

दोहा–बीट कबूतर लाइकै, लेइ सफेरी तासु ।
लिंग लेप मधुसों करै, छोडै काम निहासु ।।

अन्य नारी द्रवन उपचार

दोहा–रती सुहागा भूनिकै, चूना रगरि मिलाइ ।
नागबेलसों दीजिये, द्रवै न पलक बिताइ ।।

अन्य नारी द्रवन उपचार

चौ०–कीट शरद ऋतु बनमें होई । मुखतें फेन निकारत जोई ।।
गोंद खैर सिलउपर पिसावै । फेन सानि तिहि गुटी बनावै ।।
दोहा–गुंज बराबर गोटिका, नागबेलसों देहु ।
द्रवै वेगि ही कामिनी, सीख सुजन सुनि लेहु ।।

अन्य नारी द्रवन उपचार

सो०–बैंगन पक्व मँगाइ, पीतरंग जिहि देखिये ।
ताको पेट कुराइ, दोइ टांक पीपरि भरै ।।
दोहा–कै कपरौटी ताहिको, धूप सुखावै सोइ ।
अग्नि पकावै सहज ही, रंग लाल तिहि होइ ।।
पीपरि तातें काढि कै, छांह सुखावै कोइ ।
तब ये औषधि मोलकै, जतन कीजिये सोइ ।।
दालचिनी दस टंक लै, तहां फिटकिरी टंक ।
सहद औटिकै गोटिका, 'इंक्षा' करौ निसंक ।।
लिंग लेपि जल पीसिकै, रमै तियाके संग ।
तृप्ति सुझावै कामिनी, तुरतै द्रवै अनंग ।।

सुजाकका उपचार

चौ०–जीरा स्वेत मुलेहठी आनै । ककरी-खीरा बीज बखानै ।।
धनिया बीज खरबूजा कहै । हंसराज लहसोरा लहै ।।

दोहा–सात सात तोला कही, पुरिया सात बनाइ ।
दिन प्रति पुरिया कूटकै, जलसों पी औटाइ ।।

चौ०–पुरिया सेर नीर औटावै । जरै नीर जब पाउ दिखावै ।।
लेइ उतारि बसनसों छानै । मिश्री डारि पीवनो ठानै ।।

दोहा–सात दिना यहि विधि पियै, भात मूंगकी दारि ।
खाइ और सब परिहरै, रोग होइ जरि छारि ।।

सुजाकका अन्य उपचार

चौ०–खीरा बीज कासनी कहै । सौंफ रु हंसराज तहँ लहै ।।
जीरा स्वेत मुलहठी आनौ । अरु पिस्ता शक्कर पहिचानौ ।।
सात सात तोला सब कहै । कूटि सात पुटरी तब लहै ।।
पुटरी सेर नीर औटावै । छानि पियै जब सेर दिखावै ।।

दोहा–इक इक पुटरी सात दिन, पियै नीर औटाइ ।
चिनक जाइ सब भाँतिकी, 'इंक्षा' करि चित लाइ ।।

भयंकर सुजाकमें पिचकारी

दोहा–नीलाथोथा लीजिये, समुदफेन मँगवाइ ।
मासा मासा दीजिये, तहाँ रूपरस डाइ ।।

चौ०–पीसि पोटरी तीन बनावै । तब इक कोरा दिया मँगावै ।।
दो तोलै जलमें इक पुरिया । भिगै ओसमें ताको धरिया ।।

दोहा–होत प्रात ता नीरकी, पिचकारी जो लेइ ।
तीन दिवसमें व्याधिको, अवसि दूर कै देइ ।।

भयंकर सुजाकमें वफारा

दोहा इंट पुरानी लीजिये, और छाल कचनार ।
चार चार तोला कहै, बुधजन करौ विचार ।।
कूटि पीसि जल सेर लै, औटावै रति पाउ ।
भाजन नये रलाइकै, इन्द्रीसेंक कराउ ।।
सात दिना यहि विधि करै, तो कुरहा मिटिजाइ ।
कुरहा-रिपु यह औषधी, 'इंक्षा' दई बताइ ।।

इन्द्रियजन्य पथरीका उपचार

दोहा–जवाखार तोला कहै, राखै नीर भिगाइ ।
भिगवै दूजे बसनमें, अरवा चाउर नाइ ।।
धरै ओसमें रैनको, प्रात दुहुनको छानि ।
जुगल नीर सम करि पियै, मूतै परई आनि ।।

चौ०–मूत साथ परईमें आवै । ताको देखि प्रतीति सुनावै ।
बात खटाईको परिहरै । तीन दिना यहि विधि चित धरै ।।
दोहा–द्वादस तोला नीम-बल, दोइ सेर जल होइ ।
पीसि औटिये तासुको, लेइ बफारा सोइ ।।
इन्द्रीते पथरी गिरै, देखि लेहु बडभाग ।
'इंक्षा' यह औषधि लिखी, कौडीभर नहिं लाग ।।

वायुका उपचार

दोहा–जुग अजवाइन लीजये, टंक टंक परमान ।
मासा भर पारा तहां, लैके देहु सुजान ।।
चौ०–तिल गुड आनि बहेरा दीजै । जुग जुग तोला तीनों लीजै ।।
प्रथम खरल तिल और बहेरा । फिर पारा अजवाइन फेरा ।।
दोहा–ता पाछे सब औषधी, खरल करै दिन एक ।
चौदह गोली कीजिये, खोवै बाउ अनेक ।।
दही-साथ गोली भखै, जो चाहै सो खाइ ।
दाल मूंगकी परिहरै, तनकी बाइ नसाइ ।।

वायुकी अन्य औषधि

दोहा–जंगी हरैं लीजिये, ताको एक सुजान ।
नीलाथोथा दीजिये, षट मासा परमान ।।
इकइस नींबू कागदी, खरल करे रस डारि ।
चना बराबर गोटिका, बुध जन धरो सँवारि ।।
चौ०–गौघृत-सँग इक गोली खाइ । रोटी घृत ऊपर चित लाइ ।।
आध पाउकी रोटी कहै । ताके रोग बाइ नहिं रहै ।।

अन्य वायु-उपचार

दोहा–लौंग तूतिया पीपरि, मुदसिंख सुलेहु ।
कापापरा आनिकै, तोला भटरी भरि देहु ।।
चौ०–प्रथमै एक एक करि पीसै । तुलसीराम बहुरो सब घीसै ।।
मासा भर भर गोली करै । प्रात होत गुडसों मुख धरै ।।
दोहा–भात मूंगकी दाल अरु, दानकु × घीउ मिलाइ ।
कह 'इंक्षा' जो नेमसे, खाइ बाइ जरि जाइ ।।

वायुका अन्य उपचार

चौ०–हर्रं काबुली मुर्दासंख । दोनों लीजै इक इक टंक ।।
हरी तूतिया मासा दोइ । इकसों निबु कागदी होइ ।।

× दानकु–थोडा

दोहा–नींबूरसमें औषधी, खरल करै चित लाइ ।
झड़बेरी सम गोटिका, बुधजन धरो बनाइ ।।
प्रात एक गोली भखै, सात दिना चित लाइ ।
'इंक्षा' ताके अंगकी, तुरत बात हरि जाइ ।

वायुका अन्य उपचार

दोहा–खुरासानि अजवाइन, श्याम मूसली होइ
तोला इक इक जानिये, पारा ता संग सोइ ।।
गुड तामें बुध दीजिये, जितनेमें मिलि जाइ
लोहे भाजन कूटियै, द्वादश जाम बनाइ ।।

चौ०–झडबेरी सम गोटी करै । दही साथ ऊषा मुख धरै ।।
गोली लगन दांत नहिं पावै । ऐसो खार हलकमे जावै ।।

दोहा–लौंग चार ऊपर भखै, जो चाहै सो खाइ ।
सात दिवस 'इंक्षा' किये, नियरे बाइ न आइ ।।

फिरंग वायुका उपचार

चौ०–मासा अठ जैपाल बताई । काटपापरा जुगुल मँगाई ।।
तहां हलाहल मासा कहै । कञ्चनरिपु पुनि मासा लहै ।

दोहा–कूटि पीसि सब औषधी, अदरख रससों सानि ।
छांह सुखावै गोटिका, झिरबेरीसों आनि ।।

चौ०–जा दिन बदरी गगन न होई । ता दिन गुटी बनावै सोई ।।
दही भात जब ताहि खवावै । ततछिन बेग बंद होइ जावै ।।
जो चट तनमें तऊ दिखावै । ताहि जतन कछु और बतावै ।
दाडिमछाल खैर सम लेई । बुकनी करि चट–ऊपर देई ।।

दोहा–यहि विधि औषधि कीजिये, रहै न वायु फिरंग ।
'इंक्षा' निश्चै जानिये, कंचनरंग हो अंग ।।

फिरंगवायुका अन्य उपचार

चौ०–एक छुहाराको फल लीजै । त्रय जैपाल आनिकै दीजै ।।
तोला तीन खोपरा आनो । पुरिया नोन पीसके ठानो ।।

दोहा–तीन दिन इक इक भखै, वेग बहुत जब होइ ।
पथ पाको तब दीजिये, दही भात कहि सोइ ।।

चौ०–तबहूँ तनमें व्याधि दिखावै । 'इंक्षा' ताकी जतन सुनावै
हर्र काबुली तोला लेई । आनि चिरैता तोला देई ।।

दोहा–तोला औषधि पीसिकैं, तामें नीर मिलाइ ।
रैन ओसमें राखिये, प्रात छानि पी जाइ ।।
ऐसे दिन चालिस करै, ऊपर चने चबाइ ।
जो पावै सो सब भलै, वायु फिरंग नसाइ ।।

अंड सूजनका उपचार

दोहा–तुलसीबीज मँगाइकै, तूपनीर .घँसि लाइ ।
'इंक्षा' चौदह रोजमें, सूजनि आंड मिटाइ ।।

सर्दी से अंड सूजने पर दवा

सो०–छाली लै अंजीर, सिरकासों घँसि लाइये ।
,इंक्षा' सुनु मतिधीर, सूजन आंड मिटाइये ।।

बाल काला करनेका खिजाव

चौ०–अमलबेत माँजूफल कहै । चन्दन रक्त बहेरा लहै ।।
आँश चूक लेहु निलबरी । तोला एक एक लै धरी ।।

दोहा–नन्ही करिके पीसिये, थोडा नीर मिलाइ ।
नौ तोला तिल–तेलमें, तब लै ताहि भुनाइ ।।
जब औषध रंग श्याम लखि, ल्यावो अग्नि उतार ।
लोहे भाजन खरलिये, दोइ जाम निरधार ।।
धरौ कचेहरी नाइकैं, जब चाहै तब लाइ ।
स्वेत बार ततकाल ही, 'इंक्षा' श्याम दिखाइ ।।

अथ तान्त्रिक उपचार

बांदाके गुण

दोहा–बांदा वृक्ष पलासको, हस्त नखतमें लाइ ।
लालि गऊके दूधसँग, पियै गर्भ रहि जाइ ।।
बांदा नीम मँगाइये, अनुराधामें कोइ ।
दक्षिण करमें बाँधिये, सभा मोहनी होइ ।।
नखत जेष्ठा आनिकैं, अमिली-बांदा लेइ ।
पास रहै जा पुरुषके, जुवां जीति तिहि लेइ ।।
नखत अश्विनी होय जब, अंवलाबाँद मँगाइ ।
गऊ–छीरसों बाँझहू, पियै गर्भ रहि जाइ ।।

सो०–भरणि नखत जब आइ, कुशको बांदा लीजिये ।
अन्न धरै चित लाइ, अन्नपूर्णा जानिये ।।

दोहा–कृतिका नखत विचारकें, बांदा लेहु पलास ।
करसों बाधौ बुद्ध जन, तस्कर लखै न पास ।।

बांबा बेल मँगाइये, नखत रोहिनी होइ ।
रहै पास जा पुरुषके, तिहि मोहै सब कोइ ।।
नखत अश्वनी होइ जो, बांदा आम मँगाइ ।
गौ-पय सँग नारी पियै, पुत्र होइ बहु भाइ ।।
लेहु बहेरा बांदको, नखत पुनर्वसु जानि ।
करै शत्रुका नास सो, करसों बंधन ठानि ।।
नखत उत्तरामें जोई, बरगद-बांदा लेइ ।
करसों बंधन ठानिकै, काढि वायुको देइ ।।
अमिली बांदा लीजिये, नखत जेष्ठा जानि ।
जुवां जीति सबसों करै, करसों बंधन ठानि ।।
मृगसिर नखत विचारिकै, बांदा आम मँगाइ ।
शीश बाँधि रनमें लरै, सन्मुख शत्रु भगाइ ।।
सेमर बांदा लीजिये, पुष्य नछत्र विचारि ।
पास रहै जा पुरुषके, राजा बस्य निहारि ।।
महुवा-बांदा लीजिये, पुष्य नछत्तर देखि ।
कबरी गौ-पय तिय पियै, नारि पर्लाटि सुत लेखि ।।
लेइ अश्विनी नखतमें, गूलर-बांदा कोइ ।
राखै लेके खेतमें, महा उपज तिहि होइ ।।

सो०-पूर्वानखत विचारि, संखाहूली-मूल लै ।
पगम लेवै धारि, कंठ रागिनी अति उठै ।।

दोहा-बांद सिहोरी लीजिये, नखत चित्तरा होइ ।
जो कोऊ माथे धरै, ताहि न देखै कोइ ।।
अद्रा होइ नछत्र जो, महुवा-बांदा लेहु ।
खेत ऊखके गाडिकै, बडी वृद्धि कै देहु ।
स्वाती नखत विलोकिकै, बांदा रूस मँगाउ ।
परनारी बिनु जतन हीं, कर-बंधनसों पाउ ।।
बांद चमेली लीजिये, स्वातिनखतमे कोइ ।
नागबेल सँग दीजिये, सो ताके वश होइ ।।

सो०-नखत मृगसिरा होइ, इमली बांदा लीजिये ।
कर बांधै जो कोइ, सो जीतै संग्रामको ।।

दोहा-आर्द्रामें हिंगोटको, बांदा लेहु मँगाइ ।
करसों बंधन कीजिये, घाव न ताहि लगाइ ।।
नखत अश्विनी जानिकै, बांदा ढाक मँगाइ ।
भूरी गौ-पय संग दै, नारी गर्भ धराइ ।।

बरको बांदा लीजिये, नखत पूर्वा होइ ।
जाके करसों बांधिये, तासों जितै न कोइ ।।
पुष्यनछत्र बिचारिकैं, पीपर-बांदा आनि ।
राजसभामें जीति है, करसों बंधन ठानि ।।
पुष्य नखतमें आनिकै, महुवा-बांदा जोइ ।
लैकै गाडे खेतमें, कीरा लगै न कोइ ।।

अथ मूल (जड) के गुण

दोहा—अश्लेषामें लीजिये, स्वेत आककी [1] मूल ।
पास रहै जा पुरुषके, वात × न व्यापै भूल ।।
बांद बहेरा आनिकै, जा दिन पुष्य विचारि ।
करसों बंधन कीजिये, होय शत्रुकी हारि ।।
स्वेत कटाई–मूल लै, हस्त नखत जब होइ ।
पास रहै जा पुरुषके, तिहि मोहे सब कोइ ।।
बरगद–मूल मँगाइये, नखत चित्तरा होइ ।
नर नारी सब मोहि है, पास राखि है जोइ ।।
अश्लेषा वर दूधिया, लै राखै जो कोइ ।
हाथ पांवकी सूजनी, तुरत उतरती होइ ।।
लीलमूल लै आइये, मैत्र *–नछत्तर माँहि ।
बालकके कर बांधिये, दृष्टि न लागै ताहि ।।
इन्द्रायन–जर लीजिये, नखत शतभिषा होइ ।
बालक–ग्रीवा बाँधिये, शंका प्रेत न कोइ ।।
पूर्वभाद्रपद–नखतमें, पथरचटाको मूल ।
जो कर दक्षिण बांधिये, उठै न कबहूँ शूल ।।
स्वाति नछत्र विचारिकै, तिपनी–मूल मँगाइ ।
'इंक्षा' करसों बाँधिये, ताहि तिजारी जाइ ।।
एतवार जर घूंपची, लै कर बाँधै जोइ ।
समरमाँहि तर पुरुषके, घाव न लागै कोइ ।।

सो०—स्वेत कटाई मूल, एतवारको लीजिये ।
करसों बाँधै शूल, आधाशीशीको मिटै ।।

दोहा—श्याम धतूरा–मूलको, एतवारको लेइ ।
पास रहै जा पुरुषके, प्रेत न लागन देइ ।।
रतनमालती–मूलको, लावै दिन इतवार ।

---

[1] आक–मदार × वायुविकार * मैत्र–अनुराधा

नीर पीसिकै लीजिये, बीछी–जहर उतार ।।
बरदूधी लै मूल यदि, नखत विशाखामांहि ।
बाँधै रूप मढ़ाइ कै, तौ कछु भूलै नांहि ।।
अनुराधनमें लै धरै, लील–मूल जो कोइ ।
भुज दक्षिणमें बांधिये, महाइष्ट तिहि होइ ।।
उतरा नखत बिचारिकै, सोंठ–मूल जो लाइ ।
ताको अंजन दीजिये, चख फूली विनशाइ ।।
इन्द्रायन–जर दीजिये, नखत शतभिषा होइ ।
बालकके गर बांधिये, नजर न लागे कोइ ।।
संखाहूली–मूलको, लेइ शतभिखा कोइ ।
गो–पयसँग जो दीजिये, नारी गर्भिणी होइ ।।
पूर्व भाद्रपदमें कहै, ललचिचरा-जर आनि ।
जाइ तिजारी तासुकी, जा कर बन्धन ठानि ।।
नखत उत्तरा जानिकै, पथरचटा जर लाइ ।
करसों बंधन कीजिये, रजनी ज्वरहि भगाइ ।।
तिपनीकी जर लीजिये, हस्त नछत्र विचारि ।
जाइ तिजारी तासुकी, जाकर बंधन धारि ।।
बांदा जर जेती कही, बार नछत्र मिलाइ ।
युक्तिसहित ही कीजिये, तब होइहि फलदाइ ।।

इति 'इक्षा' कविकृत कामकलासारका
पंचम खंड समाप्त ।। ५ ।।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२८२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS